Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ASPTIEW
1971 G.K.U.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Arya Samaj Foundation Chennai ar

lic Domain. Gurukul Kangri Collecti

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

०७९२१६

GC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079216
COMPILED
079216

राष्ट्रीयता, नैतिकता, देशभक्ति, आध्यात्मवाद एवं विशुद्ध समाजवादी विचारधारा का दिशा बोधक !

अस्तित्व

सम्पादक : एस० आर० वर्मा — ★ — संयुक्त सम्पादक : के० पी० सिंह

...भक्त युवक समाज"
का
... समर्थक तथा युवावर्ग
के,
पथ प्रदर्शक ।

... देश भक्ति ही
सर्वोच्च धर्म है !

... २ ★ अङ्क ५

...हिन्दी-मासिक
... जनवरी १९७१

... १ प्रति रु० २५ पैसे
...क शुल्क ६ रु०

...में दो विशेषाङ्क सहित

संरक्षक :
...बुद्धप्रकाश, डी. लिट्.

महामंत्री :
परामर्श समिति
...० नरेन्द्रसिंह यादव

हम विचारें, समझें और करें !

गणतंत्र दिवस विशेषाङ्क

दृढ़ संकल्प रूपी आत्मा के लिए सारा संसार रास्ता छोड़ कर अलग हट जाता है !

हमको व्यक्ति का स्वतन्त्र व्यक्तित्व स्वीकार करते हुए भी यह मानना पड़ेगा की व्यक्ति का सच्चा विकास समाज के द्वारा हो हो सकता है ।

अपनी पूर्णता समाज से अलग होकर प्राप्त नहीं कर सकता वह तो वास्तव में समाज के साथ ही रहकर अच्छी उन्नति कर सकता है । जब मनुष्य अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए समाज को बड़ी या छोटी हानि पहुँचाता है और वह यह नहीं देख पाता कि मेरा सम्बन्ध कितना घनिष्ट इस

(शेष आगे पढ़िए)

सह-सम्पादक : शिवचरणसिंह
,, चन्द्रपालसिंह

कृपया समस्त विद्यालय पत्र के ६) रु० भेजकर शीघ्र ग्राहक बनकर लाभ उठायें ।

प्रधान कार्यालय :
"अस्तित्व" बोमनजी रोड,
पुल दालमण्डी, सहारनपुर
उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय (क्रमशः पृष्ठ प्रथम का शेष)

समाज के साथ है। जब हम दूसरे पहलू पर विचार करते हैं तो यह सिद्ध होता है। कि हमने अपने व्यक्तित्व को ही हानि पहुँचाई है।

किन्तु जब मानव विशाल समाज को सिद्धी के लिए अपने को न्यौछावर करता है तो हमें समझना होगा कि वह वहां पर अपना आत्म-विकास करने की ओर कदम बढ़ाता है तथा वह धीरे २ पूर्णता की ओर बढ़ता है।

दूसरी ओर जब हम संसार की ओर अपनी दृष्टि घुमाते हैं तो प्रतीत होता है कि यह संसार मायावाद के लिये ही तल्लीन है और इसका परिणाम केवल यही निकल सकता है कि हम सभी को इस आधार और विश्वास से शान्ति भी नहीं प्राप्त हो सकती है। इस संसार में जो स्वार्थ रूपी माया-लोभ से बंधा है और दुःखी निर्धन भूखे लोगों को तनिक भी इस विश्व रूपी समाज में वास्तविकता का आभास तक नहीं हो पाता किसी भी प्रकार की शान्ति हमको इस प्रकार के समाज से नही मिल सकती है।

इतना ही नही अपितु सत्य यदि हमको चुनोती देकर पुकार रहा है तो वह केवल यही हो सकता है कि हम सबका वास्तविक सुख वही है जो कि आध्या-त्मिकता से सम्बन्धित हो सकता है।

जब हम यह विचारते हैं कि जहां अमीरी और ग़रीबी का युद्ध है जहाँ स्वार्थ और सिद्धान्त का टकराव है तो ऐसी दशा में वहाँ राष्ट्रीयता ही समाप्त हो जायेगी। इन सबके पश्चात् हमको सोचना पड़ जायेगा तथा हमें वास्त-विकता की ओर बढ़ना पड़ जायेगा, और वह है कि समाज की और मनुष्य की उन्नति केवल कुछ आधार पर ही निर्भर हो सकती है जैसे समाज के नैतिक मूल्य तथा उसके निकट के।

वास्तव में मनुष्य की प्रगति आदर्श मूल्यों से ही आँकी जाती है, किन्तु साथ साथ यह भी आवश्यक है कि उसका व्यवहारिक जीवन ही जो प्रत्यक्ष दूसरों पर अपनी अमिट छाप डालता है एवं समाज में उसको ऊपर उठाने का सुअवसर प्रदान कराता है उसके जीवन का आधार बने।

दूसरी ओर जब हम यह विचार करते हैं कि अब समाज को एकता न्याय तथा अच्छे संगठन को ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांधे तो हमारे सामने कुछ बाधायें तो अवश्य ही आती है जो इसके लिए हमें विवश करती हैं और हमें आर्थिक आधार को भी सुदृढ़ करने के लिये सोचने को विवश

ही तो उसके जीवन के साधन बनकर जीवन का आधार बन सकेंगे। अतः हम जहाँ एक ओर मानव २ से बातें करते हैं कि हम सबको एकता के सूत्र में

दृढ़ संकल्प के साथ एक आवाज से पुकारना होगा, कि हमें समाज से बदलने से पहले पुराने मूल्यों का निर्माण करना होगा जो हमारे जीवन के नैतिक

नम्र निवेदन !

'अस्तित्व' नामक मासिक पत्र गत छः मास से निरंतर प्रकाशित हो कर जनता जनार्दन की सेवा कर रहा है। इसको प्रायः सभी वर्गों में पसन्द किया गया है और सहर्ष इसके ग्राहक बन रहे हैं। यह मानवता और राष्ट्रीयता का सर्वोच्च प्रहरी सिद्ध हुआ है। अतः आपसे विनम्र और विशेष निवेदन है कि इसके लिये छः रुपया वार्षिक शुल्क शीघ्र भेजकर इसके सदस्य बनिये और अपने इष्ट-मित्रों को प्रेरित करके अपना अमूल्य योगदान दीजिये।

धन्यवाद !

—व्यवस्थापक
"अस्तित्व" मासिक
बोमनजी रोड, पुल दाल मण्डी, सहारनपुर

लिये उसका आर्थिक सम्बाध मूल्य आवश्यकीय हैं क्योंकि वे ही उसके जीवन के साधन और आधार हो सकते हैं। अब यहाँ गम्भीरता से विचार करना पड़ता है कि आर्थिक पूर्ति के बिना भी काम नहीं चल सकेगा, वे

डाले, जो सम्पूर्ण समाज में क्रान्ति का बिगुल बजा दे, किन्तु ऐसा विचार करने से पहले सोचना-समझना होगा और हमें अर्थात् अमुक समुदाय को एकता रूपी विचारों की कड़ियों में बंध कर आगे बढ़ना होगा और

नये समाज के बदलने या उसका निर्माण करने से पहले यह जान लेना होगा कि जो विशेष अन्तर आज के समाज में और विद्यालयों में दिखाई पड़ रहा है पहले हम उसे समाप्त कर दें। क्योंकि ऐसा करने से विद्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

(क्रमशः पृष्ठ प्रथम का शेष)

संसार की ओर अपनी दृष्टि घुमाते हैं तो प्रतीत होता है कि यह संसार मायावाद के लिये ही तल्लीन है और इसका परिणाम केवल यही निकल सकता है कि हम सभी को इस आधार और विश्वास से शान्ति भी नहीं प्राप्त हो सकती है। इस

जब हम यह विचारते हैं कि जहाँ अमीरी और ग़रीबी का युद्ध है जहाँ स्वार्थ और सिद्धान्त का टकराव है तो ऐसी दशा में वहाँ राष्ट्रीयता ही समाप्त हो जायेगी। इन सबके पश्चात् हमको सोचना पड़

उसको ऊपर उठाने का सुअवसर प्रदान कराता है उसके जीवन का आधार बने।

दूसरी ओर जब हम यह विचार करते हैं कि अब समाज को एकता न्याय तथा अच्छे संगठन की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांधे तो हमारे सामने कुछ बाधायें तो अवश्य ही आती है जो इसके लिए हमें विवश करती हैं और हमें आर्थिक आधार को भी सुदृढ़ करने के लिये सोचने को विवश करती रहती हैं चाहे हम छोटे २ उद्योगों की ओर सोचें अथवा अन्य रूप में ऐसा सोचने पर आवश्यक हो जाता है कि मनुष्य जाति की संस्कृति का अविच्छिन्नता का प्रवाह अविरल हो।

जब हम मनुष्य मात्र के सम्पूर्ण विकास की ओर बढ़ते हैं तो उसका आधार हमें केवल सत्य-शिव-सौन्दर्य ही मानना पड़ेगा, तात्पर्य केवल यही है कि आध्यात्मिक एवं नैतिक आदर्शों को पाने के लिये मनुष्य के लिये उसको आर्थिक सम्बंधि मूल्य आवश्यकीय हैं क्योंकि वे ही उसके जीवन के साधन और आधार हो सकते हैं। अब यहाँ गम्भीरता से विचार करना पड़ता है कि आर्थिक पूर्ति के बिना भी काम नहीं चल सकेगा, वे ही तो उसके जीवन के साधन बनकर जीवन का आधार बन सकेंगे। अतः हम जहाँ एक ओर मानव २ से बातें करते हैं कि हम सबको एकता के सूत्र में बन्धकर समाज में क्रांति का सूत्रपात अविलम्ब ही करना होगा वहाँ दूसरी ओर हमको बहुत ही गहराई तक पहुँचकर अपनी बौद्धिक शक्ति से अर्थात् जिज्ञासु बन कर वास्तविकता के मूल में पहुँचना ही होगा अब प्रश्न आता है कि वह क्या हो सकता है? तो निः संकोच मान लेना पड़ेगा कि हम कुछ व्यक्ति एक विचार जिन विचारों की जननी इच्छा थी, उन्हीं के आधार भूत अपना समुदाय तैयार करें जो सम्पूर्ण समाज को बदल डाले, जो सम्पूर्ण समाज में क्रान्ति का बिगुल बजा दे, किन्तु ऐसा विचार करने से पहले सोचना-समझना होगा और हमें अर्थात् अमुक समुदाय को एकता रूपी विचारों की कड़ियों में बंध कर आगे बढ़ना होगा और दृढ़ संकल्प के साथ एक आवाज से पुकारना होगा, कि हमें समाज से बदलने से पहले पुराने मूल्यों का निर्माण करना होगा जो हमारे जीवन के नैतिक मूल्य-सभ्यता और संस्कृति को बनाते हैं। इन सबके लिए हमारी शिक्षा प्रणाली ही सबसे बड़ी सहायक हो सकती है।

जब हम ऐसा करते हुए गतिमान होंगे तो राष्ट्र के कर्णधार उस अध्यापक के सम्मुख हमें नतमस्तक होना ही पड़ेगा जिसकी मूल चाबी पूरे समाज को बदलने की उसके हाथ में सुरक्षित और सुनिश्चित है। उस वर्ग की पहले आर्थिक कठिनाई को अविलम्ब दूर करना ही होगा। तत्पश्चात् हमें नये समाज के बदलने या उसका निर्माण करने से पहले यह जान लेना होगा कि जो विशेष अन्तर आज के समाज में और विद्यालयों में दिखाई पड़ रहा है पहले हम उसे समाप्त कर दें। क्योंकि ऐसा करने से विद्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लय और समाज एक दूसरे के निकट आ सकेगें और वे एक दूसरे के अंग बन जायेगें। हमारे नन्हें २ बालक जितने ही वे ऐसे समाज के निकट पहुँचकर शिक्षा प्राप्त करने की जिज्ञासा उत्पन्न करेगें तो हम सभी को निःसंकोच यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि एक दिन होगा और एक निश्चित समय होगा कि हम आशा भरी दृष्टि से उनको देखते रहेंगे, वे अपने आदर्श मार्ग की ओर बढ़ते रहेगें, और वे फिर अपने विचारों के अनुकूल सम्पूर्ण समाज को वैचारिक-व्यवहारिक और आर्थिक रूप में शीघ्र से शीघ्र बदल डालेगें। तो सिद्ध हुआ कि पहले उन बालकों ने अपने को तैयार किया फिर समाज बनाया, इसलिये ही तो विद्यालय सम्पूर्ण समाज के सुन्दर जीवन और दर्शन के प्रतिबिम्ब है और अध्यापक उसका आदर्श रूप।

(७) आज शिक्षा में बहुत कुछ आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है जो शिक्षा मनुष्य मात्र के जीवन में सोचने की शक्ति प्रदान नहीं कराती जो बालकों को जिज्ञासु नहीं बनाती, जो मानव को नम्र नहीं बनाती जो युवकों में तत्परता पैदा नहीं कर सकती, जो सदाचारी नहीं बनाती, जो देश भक्ति की भावना का स्त्रोत नहीं उगाती, जो सादगी की ओर हमारे नौजवानों को नही बढ़ाती जो विश्‍वबन्धुत्व का पाठ नहीं सिखाती, जो अपनी संस्कृति सभ्यता-एवं मातृ भूमि के प्रति अपने को बलिदान करना नहीं बताती वह शिक्षा वास्तव में शिक्षा नहीं है। वह तो कुछ और बताती है और वह हमें पतन की ओर ले जा रही है। वास्तविक शिक्षा के प्रति तो अधिकांश बालकों को सन्देह है जिन पुस्तकों को बालक पढ़ते हैं उसके प्रति ही उन्हें संदेह रहता है तभी तो हम वास्तविक शिक्षा को प्राप्त करने में वंचित रखते हैं, जो हमारी वास्तविक शिक्षा है जो आत्मा में अविलम्ब प्रकाश उत्पन्न करती है उसके प्रति भी हमें संदेह रहता है तो क्या उससे दूर हटकर हम अपने आपको इस योग्य बनाने में समर्थता दिखलायेंगे कि हम विश्व विजेता बने समस्त विश्व को अपने राष्ट्र की ओर से चुनौती दे सकें। मैं तो इसे असम्भव ही मानूंगा। हम वास्तविक शिक्षा के बिना न ज्ञान समझेंगे और न विज्ञान।

आज विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले युवक युवतियां जिस वातावरण के बनाने में आपस में होड़ लगाये हुये हैं, यह सब कुछ उनके लिये विचारणीय प्रश्न है। पूरे राष्ट्र की अधिकांश ज़िम्मेदारी उन्हीं के कन्धों पर है। उन्हें अपने को समय की माँग के अनुकूल परिवर्तित करना होगा, और साथ २ उन्हें वातावरण को बदलने में चार चांद भी लगाने होंगे। छात्र जिस वातावरण में आठ घन्टे रहकर शिक्षा प्राप्त करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और फिर वह दूसरे वातावरण में प्रवेश करता है जिसमें उसको १६ घन्टे रहना पड़ता है । तो उसी अधिकांश वातावरण का प्रभाव उसके ऊपर छा जाता है । आठ घन्टे के वातावरण से छात्र अनुचित दिशा की ओर इतना नहीं बढ़ता जितना की वह सोलह घन्टे के वातावरण का प्रभाव अपने ऊपर रखता है ।

हमें और हमारे राष्ट्र के सभी युवा-युवतियों एव छात्रों को गणतन्त्र दिवस पर ठोस व्रत लेना चाहिये। तथा हमें व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रूप में अपने अपने वातावरण में रहकर पाँच या दस सूत्री प्रतिज्ञायें जो आचार संहिता के रूप में हो अपने जीवन को आदर्शता रूपी विशाल सागर की ओर ले चलने में सफलता प्राप्त करनी चाहिये. समय मूल्यवान है जो तीव्र वेग से जाता हुआ हमें दिखाई पड़ रहा है । ऐसा करने से हमारा वातावरण शुद्ध होगा हमें वास्तविक अनुशासन का विशुद्ध मार्ग मिलेगा हम निम्रता से उच्चता की ओर बढ़ेंगे । विश्व के जितने भी महान व्यक्ति हुए उन्होंने पहले अपने जीवन को किसी सिद्धान्त की भट्टी में ही तपाया था तथा तत्पश्चात वे आगे बढ़े उन्होंने भी आचार संहिता को विधिवत् अपनाया। ऐसा करने से उनमें जिज्ञासा का श्रोत फूटा उन्होंने क्या और क्यों पर विचार करना आरम्भ किया, वे नम्र बने, सहनशील बने वे सदाचारी बने उनमें शुद्ध भावना का श्रोत फूट निकला । भावना और विचारों के तालमेल से वे अपने जीवन के मूल लक्ष्य की ओर गतिमान् हुये । बाद में जब युवकों ने उनके जीवन के इतिहास के पन्ने उलटे तो हमारे देश के नौजवान उनके इतिहास को पढ़कर चकित हो उठे तभी राष्ट्र के नौजवानों ने अपना बिगुल बजा दिया और ऊंची आवाज, व हुँकारों के साथ बताया कि वे थे नेताजी सुभाष चन्द्र, शेखर आज़ाद, वे थे भगत सिंह, गांधी और नेहरु-पटेल ।

हमें नव वर्ष गणतन्त्र दिवस के अवसर पर जिस की प्राप्ति में हजारों व्यक्तियों ने अपनी जान की बाजी लगाई और हंसते २ फांसी के तख्ते पर लटकाये गये, किन्तु भारत माता के बन्धन की बेड़ियां खोलकर ही रहे, तो हमें इस शुभ अवसर पर गौरव रखते हुये राष्ट्र के सभी नौजवान साथियों को बहुत पक्के इरादे से अपनी मातृभूमि के चरणों में नतमस्तक होते हुये हृदय से सौगन्ध लेकर अपने राष्ट्र के प्रति देश भक्ति का आहवान करना चाहिये, हम विश्व के सम्मुख अपनी राष्ट्रीयता का लहराता हुआ ध्वज ऊंचा कर सकने की शक्ति प्राप्त करने लिए के हम और हमारे नौजवान उत्सुक हों, ये तभी सम्भव है जब हम और हमारे सभी नौजवान युवा वर्ग छात्र एवं छात्रायें इस पुनीत अवसर पर अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर के रक्त से अपनी दैनिक डायरी के पन्ने २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस के सुन्दर पृष्ठ पर ठोस प्रतिज्ञा अंकित करें।

प्रतिज्ञा:—ऐ भारत माँ आज तेरे चरणों में बैठकर तेरे ५५ करोड़ो सपूतों के लिये मैं अपने जीवन का समस्त/अधिकाँश/कुछ भाग देश भक्ति और देश भक्ति के लिये ही लगाने का तेरे सम्मुख ऐ माँ—मैं संकल्प लेता हूँ। माँ तू मुझे आज के दिन आशीर्वाद दें कि मैं अपने करोड़ों भाईयों, बहिनों, माताओं के लिये अपन जीवन का क्षण २ भाग उन की कठिनाई उनकी पीड़ा को दूर करने में और उनका प्रेम प्राप्त करने में ही लगा दूं। जिस महान् शक्ति ने मुझे माँ तेरे चरणों में लाकर खड़ा किया मैं अपने स्वार्थ से हटकर उसके प्रति सच्चा बनूं भले ही मुझे अपने जीवन का एक २ कतरा भी क्यों न तेरी ५५ करोड़ पीड़ित आत्माओं के लिए बलिदान करना पड़े। बस देश भक्ति ही मेरे जीवन का आधार बने और यही मेरे जीवन का प्यार, बने! जय भारतमाता! ●

> सिद्धान्त तो वह है जिसके लिए मनुष्य अपना सर्वस्व और प्राण छोड़ने को तैयार हो जाये।
>
> —गांधी जी

गणतन्त्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व पर, जनता को बधाई।

दून घाटी

— का —

गौरव

अमिताभ टैक्सटाइल मिल्स लिमिटेड

देहरादून : उत्तर प्रदेश

श्रेष्ठतम

सूत, होजरी, बँटा सूत के निर्माता :

अमिताभ ! अमिताभ !! अमिताभ !!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थित प्रज्ञ

लेखक:–ताराचन्द गुप्त
सम्पादक "हिन्दी सभा समाचार"

स्थित प्रज्ञ मानव जीवन की सर्वोच्च स्थिति है। मानव को इस स्थिति में सभी प्रकार की क्षमता प्राप्त हो जाती है और जीव जीवन मुक्त हो जाता है। इसके सम्बन्ध में श्रीमद् भगवत गीता में विस्तृत रुप से विचार हुआ है। श्रीमद भग्वद गीता के द्वितीय अध्याय के ५४ वे श्लोक में अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से प्रश्न किया है। कि हे भगवन! जो मानव समाधि में स्थित हो कर परम पिता को प्राप्त कर लेता है और जिसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है। उसके लक्षण क्या हैं। अर्थात उसका जीवन किस प्रकार का हो जाता है। कैसे बोलता है।

कैसे चलता है। कैसे उठता है।

यह प्रश्न करने पर भगवान् श्री कृष्ण चन्द्र जी ने ५५ वें श्लोक से ७२ वे श्लोक तक विस्तार पूर्वक वर्णन किया है उसमें स्थित प्रज्ञ के लक्षण निम्न प्रकार वर्णित हैं।

जिस मानव की समस्त कामनायें निर्मूल हो गई हों और आत्मा से आत्मा में संतुष्ट रहने लग गया हो वह स्थित प्रज्ञ है। २/५५,,

दुःखों की प्राप्ति मन को उद्विग्न न होने दे और सूखों की प्राप्ति में आसक्ति न हो उससे सर्वथा निःस्पृहता आगई हो। राग द्वेष भय और क्रोध का समूल नाश हो गया हो वह स्थित प्रज्ञ है। २/५६

स्नेह रहित, शुभ, अशुभ में सम रहता हो अन्तःकरण में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न न होता हो २/५७,,

जो मानव अपनी इन्द्रियों को विषयों से उसी प्रकार समेटने की क्षमता रखता हो जिस प्रकार कच्छुवा अपने अंगों को समेट लेता है वही स्थित प्रज्ञ है। २/५८,,

जिसकी इन्द्रियाँ विषयों से निवृत हो गई हो और विषय उनको स्पर्श करने में असमर्थ हो गये हों। प्रायः देखा जाता है कि विषयों की निवृति होने पर भी आसक्ति बनी रहती है पर स्थित प्रज्ञ में आसक्ति का भी समूल नाश हो जाता है। २/५९,,

आसक्ति का नाश हो जाने पर इन्द्रियां प्रबल हो जाती है। और बुद्धिमानों के मन से बलात्कार हर लेती हैं अतः साधनों के लिए यह अति आवश्यक है। कि वह इन्द्रियों को पूर्ण रुप से अपने आधीन समाहितः चित्त होकर भगवत् चिन्तन में लगे। इन्द्रियों के प्राधीन होने पर ही बुद्धि स्थिर हो पाती है। मन सहित इन्द्रियों के वश में न होने पर बडा भयंकर परिणाम होता है और मानव की समस्त साधना समूल नष्ट हो हो जाती है इस सम्बन्ध में भगवान् श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज ने श्री भगवद् गीता के दूसरे अध्याय के ६२ वें ६३ वें श्लोक में बतलाया है कि

ध्यायतो विद्यमान् पुंसः
सङ्गस्तेषूप् जायते ।
सङ्गात् संजायते कामः
कामात् क्रोधोऽभिजायते ६२
क्रोधादभवति सम्मोहः
सन्मोहात् स्मृति विभ्रमः
स्मृति भ्रंशाद बुद्धिनाशो
वुद्धी नाशात् प्रणश्यति ६३

जब विषयों का चिंतन होने लगता है, तो उससे आसक्ति की उत्पत्ति होती है और आसक्ति से कामना की उत्पति होती है। कामना जब पूर्ण नहीं हो पाती तो क्रोध की उत्पति हो जाती है। क्रोध के उत्पन्न हो जाने से मूढभाव आ जाता है। बुद्धी के नष्ट हो जाने से सर्वनाश हो जाता है।

कितना भयंकर परिणाम होता है।, कारण विषयों का चिन्तन और विस्तार इतना कि सर्वनाश की भट्टी में ढ़केल देता है।

पर जो मानव इस स्थिति को लाघं जाता है और मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्तन करना बन्द कर देता है। तो अन्तःकरण शुद्ध होकर ब्रह्म में लीन होने के लिये अग्रसर है। जिससे अन्तःकरण की प्रसन्नता हो जाती है तथा जिससे दुःखों की समाप्ति हो जाती है। इसके लिये मन को जीतना अति आवश्यक है। मन के जीते जाने पर ही मानव चिन्तन करने से विरक्त होता है तभी शान्ति की प्राप्ति होती है। और मानव सुख का अनुभव करने लग जाता है। इन्द्रियां विषय रुप जाल फैलाकर बुद्धि का हरण करने में अत्यन्त सिद्धस्थ होती हैं। अतः इन से सदा सावधान रहना चाहिए। ये आतम वेत्ता की दृष्टि ही बदल जाती है। वह संसार में लीन नहीं होता इसके स्वपन वत ही समझता है। जहां स्थिर बुद्धि मानव जागृत। अवस्था में होता है वहां पर संसार के अन्य प्राणियों की पहुंच नहीं होती अर्थात उनके लिए सुषुप्ति अवस्था होती है। और संसार मानव सांसारिक कार्यों में जागृत दिखाई पड़ता है। वहाँ पर वह मानव जो ब्रह्म में लीन हो गया है उदासीन रहता है। उसको उसमेंनराग होता है न द्वेष अर्थात उसके लिये वह रात्रि के समान हैं।

स्थिर बुद्धि पुरुष की प्रकृति समुद्र के समान होती है अर्थात जैसे समुद्र में अनेकों नद नदियों जो मैदानों में खूब उछलती कूदती हैं। पर वहीं समुद में प्रविष्ट होकर अपना अस्तित्व उसमें लीन कर देती है। उसी प्रकार मानव की इन्द्रियाँ पूर्णरुप से उछलती कूदती हैं। एवं चंचलता का परिचय देती हैं पर वे जीते हुये मन में उसी प्रकार लीन हो जाती है। तो उसका मन सागर की भाँति शान्त हो जाता है।

(७) शान्ति प्राप्ति सम्बन्धी सिद्धान्त को भगवान श्री कृष्ण अपनी घोषणा श्री मद् भगवद् गीता में निम्न प्रकार बताते है।

> विहाय कामान् यः सर्व
> पुमांश्चरति निस्प्रतः।
> निर्ममो निरहंकारः स
> शान्ति मधि गच्छति ।७२॥

हे। अर्जुन यदि तू शान्ति चाहता है। तो तू सर्व प्रथम समस्त कामनाओं का त्याग करके स्नेह को विसर्जन करदे। मोह का त्याग कर दे तो शान्ति स्वतः ही आ उपस्थित हो जाती है। उसको उमर भर खोजने की आवश्यकता नहीं रह जाती है उसको ही ब्रह्म स्थिति, स्थित प्रज्ञ का अनुभव होने लगेगा उसी से ब्रह्मानन्द की की प्राप्ति हो जाती है।

जीवन मुक्ति के लिये सभी को इसका अनुकरण करना चाहिये।

लखनऊ फैन्सी जरी साड़ी हाउस

आज़ाद मार्किट अन्सारी रोड़ सहारनपुर।

आज के युग में जहाँ स्वास्थ्य की ओर ध्यान रक्खा जाता है ठीक हमें दूसरी ओर भी ध्यान देना आवश्यक होगा और वह है कपडों तथा सभी वेश भूषा की स्वच्छता जिसकी सजावट व सुन्दरता के बिना भी हमारा काम नहीं चलेगा हमारे यहाँ सभी प्रकार की साड़ियों व हर प्रकार के कपड़ों पर बेल-बूटें-फैन्सी कढ़ाई ज़री से सुन्दर प्रकार के नमूनों को तैयार किया जाता है जो कि हाथ से ही किया जाता है।

प्रोपराइटर—एस० आग़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश भक्त युवक समाज और देश भक्ति

> देश तथा समाज की सच्ची खिदमत वही करता है जो बदले की तथा यश की आशा न रखकर निःस्वार्थ भावसे खिदमत करता है। गांधी जी

के० पी० सिंह
एम०एस०सी०
(संयुक्त सम्पादक)

3 देश भक्ति प्रत्येक व्यक्ति का जो भारतवर्ष की मिट्टी में रहता है, भारत की वायु में श्वास लेता है, सर्वोच्च धर्म है। देशभक्त युवक समाज का मुख्य ध्येय देश भक्ति का प्रचार करना ही है। ताकि भारतवर्ष के प्रत्यक बालक के हृदय में देश भक्ति की प्रबल भावना का विकास हो सके। राष्ट्रीय एकता का महान यज्ञ तभी पूरा होगा जब देश भक्ति तथा देश प्रेम से ओत-प्रोत होकर हम अपने सब कुछ भेदभाव भूल जायेंगे तथा अपनी छोटी इच्छाओं को देश की महानता के लिए, देश के गौरव तथा आन की रक्षा के लिए त्याग करने के लिए उद्यत हो जायेंगे। त्याग तथा तप के बिना देश भक्ति का संदेश अधूरा ही रहेगा। राष्ट्रीय चरित्र की अनुपस्थिति में भी देश भक्ति की भावना का विकास न हो सकेगा। अत: हमारा प्रथम कर्त्तव्य है कि भारत के करोड़ों लोगों को योग, प्राणायाम, तप, सात्विक भोजन तथा चरित्र निर्माण की शिक्षा द्वारा विकास का मार्ग दिखायें। उस मार्ग का निर्माण करें जिस पर चलकर भारत के भावी कर्णधार युवक तथा युवतियां देश भक्ति को जीवन में धारण कर सकें और संयम का जीवन व्यतीत कर सकें।

अपने देश के प्रति जो हमें जीवन देता है, हमारे जीवन की रक्षा करता है यदि हमें प्रेम नहीं तो विश्व में रहने वाले इन्सानों तथा सृष्टि के रक्षक भगवान दोनों के प्रति हमें विश्वास नहीं हो सकता। सामाजिक और आर्थिक न्याय प्रत्येक भारतवासी का अधिकार है किन्तु हमारा कुछ धर्म भी है, कर्त्तव्य भी है और वह है 'देश भक्ति' की परीक्षा में सफल होने के लिए यदि हमें अपना प्राण भी देना पड़े तो प्रसन्नता से देदें ताकि आने वाले भारत के बालक तुम्हारा नाम सुनकर ही नतमस्तक होकर खड़े हो जायें और तुम्हारी याद में कह सकें, "देशप्रेम का संदेश देने वाले महान सेनानी! हम तुम्हें प्रणाम करते हैं। तुमने अपनी आहुति देकर हमें देश प्रेम का मार्ग दिखाया। भगवान की आज्ञा का पालन किया। तुम्हारी ही भक्ति सच्ची है।"

देश भक्ति हमें विश्व बन्धुत्व की ओर प्रेरित करती है। इसके लिए आवश्यक है कि देश के लोग चरित्रवान हों। व्यभिचार, शोषण, पशुओं पर अत्याचार, मांस मदिरा तथा मादक पदार्थों से बचें। सभी धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक व्यवस्थाओं में सहअस्तित्व की भावना का विकास करें। 5 महान विवेकानन्द ने कहा था कि मुक्ति उसी को मिलती है जो अपना सब कुछ दूसरों के लिए त्याग करता है। जो दिन रात 'मेरी मुक्ति' 'मेरी सम्पत्ति' 'मेरा भविष्य, 'मेरा जीवन' पुकारते रहते हैं वे आत्म उद्धार के मार्ग से भटक जाते है। देश भक्ति की भावना का विकास करके हमें 'मेरा' शब्द के स्थान पर 'देश' शब्द का प्रचार करना है। विवेकानन्द जी ने कहा "मैं मुक्ति की इच्छा नहीं करता। मैं सैंकड़ों बार नरक में जाऊंगा ताकि दीन दुखी भूले भटकों की भलाई कर सकूं, उनका उद्धार कर सकूं।" उन्हें देश के सभी प्राणियों से प्रेम था।

"जब तक मेरे देश का कुत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी भूखा है मेरे लिए धर्म का कोई अर्थ नहीं।"

लाखों वर्षो से गंगा इसी प्रकार बहती है। कितने योगी, तपस्वी, साधु महात्मा, गृहस्थी तथा मूक प्राणी गंगा से जीवन पाकर मुक्ति प्राप्त करते हैं। सुनसान बन पहाड़ियों में रात्रि के गहन अन्धकार में ध्यान से सुनो। गंगा के कलकल नाद में एक ध्वनि निकलती है। "पुत्रो ! मैं तुम्हें मुक्ति का बरदान देती हूं। भक्ति और आध्यात्मिकता की प्रेरणा देती हूं। पवित्र बनाकर पापों से मुक्त करती हूँ। जाओ भारत के करोड़ों लोगों के लिए मुक्ति के मार्ग का निर्माण करो। उन्हें सहारा दो। आध्यात्मिक प्रेम का संदेश दो। फिर वह दूसरे देशों की संस्कृति तथा उनके पैसे का सहारा नहीं लेगें।"

अनादि काल से भगवान शंकर हिमालय की विशाल पर्वत मालाओं में भयानक वनों में, हिम तथा तूफानों में तपकर यही संदेश दे रहे है "लगातार तप और प्राणायाम करो। प्रातः शीघ्र उठकर शीतल जल से स्नान करो तथा भक्ति करो। मादक पदार्थों से बचो! इन्द्रियों के स्वादों की तृष्णा से बचो। फल फूल शाक दूध द्वारा शक्तिशाली बनकर देश की रक्षा करो। यहां के बालकों की तथा मूक पशुओं की रक्षा करो।" किन्तु हमने नहीं सुना और राष्ट्र निर्बल बना। विघटन हुआ। जहां तेज तप ब्रह्मचर्य तथा भक्ति नहीं वहां दरिद्रता तथा विघटन का आगमन होता ही है। देश के तपस्वी महात्मा भगवान शिव का संदेश भारत के कोने २ में फैला दें तो राष्ट्र फिर एक हो जायेगा। भारत के सब बालक जब इस संदेश को समझ जायेंगे तो सच्चे अध्यात्मवाद का उदय होगा। धार्मिक अन्धविश्वास तथा साम्प्रदायिक भेद भाव सब दूर होंगे।

सब धर्मों में सहअस्तित्व की भावना का संदेश देकर विवेकानन्द ने विश्व बन्धुत्व की ओर एक नवीन प्रेरणा दी। उन्होंने कहा था 'सामाजिक और राजनैतिक सिद्धान्तों के प्रसार से पूर्व भारतवर्ष को आध्यात्मिक विचारों से भर दो। पुस्तकों से, बनों से, मठों से तपस्वियों से सत्य को देश के समस्त क्षेत्र में फैला दो ताकि यह सत्य देश भर में अग्नि की तरह फैल जाय। हिमालय से कन्या कुमारी तक पूरब से पश्चिम तक।" स्वामी रामतीर्थ, विवेकानन्द तथा अन्य महान देशभक्तों के पदचिन्हों पर चलकर ही हम भारत की ५० करोड़ जनता को एक बिन्दु पर एकत्र कर राष्ट्रीय एकता स्थापित कर सकते हैं।

किन्तु अध्यात्मवाद के साथ साथ हमें अपने भौतिक अस्तित्व को भी संतुलित रखना है। भारत के प्रत्येक बालक को शक्तिशाली सैनिक बनना है। हमें भारत के पशुओं तथा बन उद्यान की रक्षा करनी है। दरिद्रता, विघटन तथा बेकारी पर सहकारिता द्वारा नियन्त्रण करना है। लोगों में यह भावना जागृत करनी है कि प्रजातन्त्र की शक्ति, लोगों की संख्या पर नहीं, उनकी वीरता, कार्य क्षमता, चरित्र शक्ति तथा वैज्ञानिक एवं औद्योगिक विकास पर आधारित करती है।

बृज ट्रान्सपोर्ट कम्पनी

प्रा० लि० पुल खुमरान, सहारनपुर

पूर्ण ट्रान्सपोर्ट ठेकेदार

स्टार पेपर मिल्स लि०, सहारनपुर

कार्यालय	निवास	सनेमा	कार्यालय देहली
फून नं० ३११४	३५१६	४४३३	२६२६१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यावधि चुनाव भारत की जनता के लिए
स्वर्ण अवसर !

ले०—मुल्कीराज भूतपूर्व
एम०एल०ए०

प्रस्तुत रचना मैंने सम्माननीय भूतपूर्व एम० एल० ए० श्री मुलकीराज जी से भेंट करने पर वर्तमान चुनाव के विषय में उनके ठोस विचारों के रूप में प्राप्त की जो वास्तविकता की झलक के निकट प्रतीत होती है। श्री मुल्कीराज जी के त्याग-तप-सिद्धान्त एवं चरित्र से जनता भलि-भांति परिचित है। आपने आज तक छोटे वर्ग में किसान मजदूर एवं कर्मचारियों में तन-मन-धन से सतत कार्य का ही परिचय देकर जन समूह में ख्याति प्राप्त की है। आप सन् १९४८ में जिला परिषद् के अध्यक्ष के पद पर भी सुशोभित रहे। उससे पूर्व आप एक अध्यापक के रूप में भी कार्य करते रहे, आज भी आप राष्ट्र की शिक्षा समस्याओं से विशेष रूचि रखते हैं। आपका हित अध्यापक वर्ग से भी विशेषकर जुड़ा है। —सम्पादक

देश की स्वतन्त्रता जनतन्त्र-समाजवाद, राष्ट्रीयता शान्तिमय क्रान्ति एवं असामप्रदायिकता की सुरक्षा का दायित्व मध्यावधि चुनाव ने भारत की व्यस्क मताधिकार प्राप्त जनता के कन्धों पर डाल दिया है।

गत बीस-बाईस वर्षों की राजनीति में नया मोड़ आया है राजनैतिक दल ध्रुवीकरण की ओर अग्रसर हैं अन्तर केवल यह है कि वह दल के स्थान पर मंच बनाकर चुनाव के मैदान में उतर रहे हैं, यह प्रथम अवसर है जब कि भारत की जनता को केन्द्रीय सरकार की नीति और कार्यों पर विचार करना है। चुनाव में जनतन्त्र के लिये राजनैतिक दलों का सर्वप्रथम महत्व है। फिर भी वास्तव में दलों के साथ व्यक्ति उनकी योग्यता, चरित्र व सेवाओं का अपना अलग अलग स्थान है। दल और व्यक्ति यदि सिद्धान्त नीति और सेवा पर आरुढ़ रहते हैं, तब जनतन्त्र के लिये यह कही गई उक्ति चरितार्थ होती है जनता में से जनता के द्वारा और जनता के लिये होता है आज तक जनता को जनतन्त्र का कटुअनुभव है। पर यह सारा दोष जनता का स्वयं ही तो है कि उसने अपने प्रतिनिधियों को सिद्धान्त नीति चरित्र सेवा और त्याग के आधार पर मत नहीं दिये अपितु उलटे अपने स्वार्थ, भ्रष्ट सेवा जातीयता क्षेत्रियता धर्म और प्रभाव व लोभ में आकर चुनाव में भाग लिया, फिर परिणाम जो निकला उससे अच्छी आशा क्या हो सकती थी, श्रद्धेय प्रधानमन्त्री जी ने एक वर्ष पूर्व मध्यावधि चुनाव करा कर जनतन्त्र को पुष्ट किया और उसमें जनता की आस्था को उभारा है। जनता को एक बार फिर अपने हित की सरकार बनाने का अवसर प्रदान किया ऐसी सरकार जो जनता की राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय समस्याओं का शीघ्रता सुगमता और शान्तिमय ढंग से समाधान कर सके।

> मनुष्य सबको खुश रखना चाहता है, वह किसी को खुश नहीं करेगा। गाँधी जी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायल एन फील्ड मोटर साईकिल

[बुल्ट-क्रूसेडर व स्कूटर]

जहाँ हमने बड़ बड़े कारखाने बड़ी-बड़ी इमारतें तैयार की हैं, ठीक दूसरी ओर हमने सवारी के बढ़िया साधन भी खोज निकाले हैं। आज के युग में मानव जहाँ चाँद तक उड़ाने भर कर संसार के सभी मनुष्यों को चकित कर रहा है। ठीक दूसरी ओर पृथ्वी पर चलने वाले यंत्र भी आज हवा से बढ़कर कार्य कर रहे हैं।

इँग्लैड के सहयोग से निर्मित भारत में सर्वोत्तम सबसे अधिक लोक प्रिय मोटर साईकिल रायल एन फील्ड **बुल्ट** मोटर साईकिल जो केवल हाफकिक में स्टार्ट और हवा से तेज रफ्तार ३.५ हार्स पावर (विल्यर इँग्लैण्ड का इंजन है)।

रायल एन फील्ड़ **क्रूसेडर** १.७५ हार्सपावर (विल्यर इंग्लैंड का इन्जन है)।

रायल एन फील्ड़ **स्कूटर** (विल्यर इंग्लैंड का इंजन है)।

हमारे यहाँ हर प्रकार के मोटर साईकिल और स्कूटर की मरम्मत विश्वास के साथ की जाती है। हमारे यहाँ रायल फील्ड़ मोटर साईकिल व स्कूटर के जनियन पार्टस मिलते हैं और हर प्रकार के मोटर साईकिल व स्कूटरों के भी पार्टस मिलते हैं जिसमें लेम्बरेटा स्कूटर, वसफा, राजदूत, जावा मोटर साईकिल अथवा अन्य मोटर साईकिल के भी पुर्जे मिलते हैं।

हमारे यहाँ हर प्रकार के पुराने मोटर साईकिल और स्कूटर की खरीद व फरोख्त भी होती है।

नोटः—आप अपने मनपसन्द केवल १०० रु० में किसी भी मोटर साईकिल अथवा स्कूटर की बुकिंग कराकर इस सुनहरे अवसर से लाभ उठावें।

अधिकृत विक्रेताः—

काका ऑटोमोबाइल्स

४, प्रताप साईकिल मार्कीट,

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राय: न्यायविद् राजनीतिक कृत्यों और कानूनी अधिकारों में भेद करते हैं। उनका कहना है कि राज्य के कुछ कार्य (एक्ट्स ऑव स्टेट, कानून की मर्यादाओं से बाहर होते है और उन पर किसी न्यायालय को विचार करने का अधिकार नहीं होता। इस प्रसंग में राजनीतिक कृत्यों और कानूनी कृत्यों में भेद बताया जाता है। राजनीतिक कृत्यों को एकदम स्वतंत्र, बन्धन रहित और मर्यादाहीन कहा जाता है और कानूनी कृत्यों को संवैधानिक, न्यायसंबंधी और पध्दतिपरक सीमाओं के अन्तर्गत रखा जाता है। राजनीतिक कृत्यों के लिए राज्य किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं माना जाता उसकी शक्ति ही इनकी सीमा और उसकी क्षमता ही इनका मानदण्ड समझे जाते है, परन्तु कानूनी कृत्यों के लिए राज्य संविधान केप्रति अर्थात् न्यायालयों में उत्तरदायी होता है, संविधान को धाराएं इनकी सीमा और उसको अनुकूलता इनका मानदण्ड समझे जाते हैं। दूसरे शब्दों में, राजनीतिक कृत्य राजनीतिक शक्ति से निष्पन्न होते हैं जबकि कानूनी कृत्य संविधान की परिधि में परिबध्द होते हैं। यों कहिए कि राजनीतिक कृत्य या उसके पीछे काम करने वाली शक्ति उच्छंवल होती है और उसकी रेखा उसका अपना वेग है, यानी जहां तक दूसरे राज्य के कृत्य और शक्ति रोक न दें वहीं तक वह जा सकता है, लेकिन कानूनी कृत्य और उसके पीछे काम करने वाली वैधता संवैधानिक शृंखलाओं में बंधी होती है और उनके अन्तर्गत ही विद्यमान रह सकती है, अर्थात् जहां तक संविधान की धाराएं और विधियां उसे रोक न दें वहीं तक वह पहुँच सकता है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय में, हाल ही में, भूतपूर्व राजाओं की वृत्तियों को समाप्त करने के राष्ट्रपति के अध्यादेश की वैधता पर बहस के समय यह तर्क जोर से प्रस्तुत किया गया किन्तु सर्वोच्च न्यायालय ने इसे स्वीकार नहीं किया जसटिस हेगड़े ने अपने निर्णय में कहा कि अपने नागरिकों के संबंध में राज्य के कोई राजनीतिक अधिकार नहीं होते जिन्हे कानूनी अधिकारों से भिन्न माना जा सकें, अर्थात नागरिकों से व्यवहार करते हुए राज्य उच्छृंखल नहीं हो सकता, उसे उन मर्यादाओं और सीमाओं के अन्तर्गत रहना पड़ता है जो संविधान में निर्धारित हैं। मुख्य न्यायाधीश हिदायतुल्ला ने इस बात पर जोर दिया कि राज्य और उसके नागरिकों के संबंध विशुद्ध संवैधानिक हैं और कानूनी सीमा से बाहर नहीं हो सकते। यह इस तथ्य का सूचक है कि जहाँतक राज्य के नागरिकों का प्रश्न है राज्य उनके साथ मनमानी नहीं कर सकता अर्थात् उनके प्रति उसके अधिकार राजनीतिक नहीं, कानूनी हैं। दूसरे शब्दों में नागरिकों के सन्दर्भ में कोई राजनीतिक शक्ति नहीं है केवल कानूनी अधिकार होता है। राजनीतिक शक्ति बनाम कानूनी अधिकार का अर्थ उच्छृंखला बनाम संवैधानिक मर्यादा है जिसे अधिनायकशाही बनाम लोकतंत्र का पर्याय कहा जा सकता है। अधिनायकशाही (डिक्टेटर शिप) वह राज्य-व्यवस्था है जिसमें राज्याधिकारी किसी कानूनी बंधन या संवैधानिक सीमा को स्वीकार नहीं करते और जैसा चाहें वैसा करने की स्वतन्त्रता का प्रतिपादन करते हैं। लोकतंत्र (डिमोक्रेशी) वह व्यवस्था है जिसमें राज्याधिकारी कानूनी मर्यादाओं और संवैधानिक शृंखलाओं में बधे होते है और मनमाने ढंग से उनमें परिवर्तन करने की क्षमता नहीं रखते, बल्कि उनके निर्वाह में ही अपनी सार्थकता अनुभव करते हैं। इसमें शक नहीं कि अधिनायकशाही (डिक्टेटर शिप) के मुकाबले में लोकतत्र (डिमोक्रेसी) एक सुस्त और धीमी प्रक्रिया है, लेकिन यह भी सच है कि यह एकदम उछल कर गिर पड़ने वाली तेजी के बजाए धीरे २ किन्तु बराबर चलते रहने की प्रगति है। अधिनायकशाही वह बाढ़ है जो एकदम उफन कर चारों ओर की भूमि को आप्लावितकरदेती है और जल्दी ही रुक कर सूख जाती है, लोकतंत्र किनारों के भीतर धीरे किन्तु बराबर बहने वाली वह नदी है जो आस पास के प्रदेश को सदा सींचती रहती है और जिसका यह काम कभी रुकता नहीं। इसलिए विद्वानों और विचारकों ने अधिनायकशाही के बजाए लोकतंत्र को श्रेष्ठ माना है यद्यपि इसकी पद्धतियाँ लम्बी और घुमावदार हैं और कभी २ उन पर चलने में काफी देर लगती है।

राजनीतिक शक्ति के समर्थक

(शेष आगे पढ़िये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'गणतंत्र दिवस' पर अपने प्रिय ग्राहकों को हार्दिक बधाई !

अधिक अन्न उत्पादन से ही देश आत्म निर्भर हो सकता है । इसके लिए कृषि के सर्वोत्तम साधनों की आवश्यकता है । ऐसे ही सर्वाधिक विश्वासनीय साधन हैं—

शक्ति का प्रतीक—

मैक्कॉरमिक

इन्टर नेशनल ट्रैक्टर

बी—२७५

३५ होर्स पावर एवं चार सिलिन्डर वाला एक शक्तिशाली ट्रैक्टर

अच्छी और लहलहाती फसलों के लिये—

रस्टन डीजल इन्जन

६ से ३० होर्स पावर तक के बड़े इन्जन काले तेल से चलाये जाते हैं । शीघ्र ही स्टार्ट हो जाते हैं ।

इनके अतिरिक्त—स्टेन्डर्ड बैटरी, बीको मोटर्स, डनलपिल्लो, ट्रैक्टर के टायर, ट्यूब्स तथा पुर्जे भी मिलते हैं ।

वर्मा एण्ड कम्पनी, कोर्ट रोड सहारनपुर

गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व पर समस्त जनता को बधाई !

ऐस्कार्ट ट्रैक्टरस,

राजदूत मोटर साईकिल,

राजदूत स्कूटर !

राष्ट्र की उन्नति एवं सामाजिक विकास को प्रोत्साहन देन हेतु, समय की बचत तथा उत्तम पैदावार के लिये इन्हीं श्रेष्ठ यन्त्रों का प्रयोग कीजिए ।

मेहता टैक्टरस एण्ड आटो कारपोरेशन अम्बाला रोड, सहारनपुर, रुड़की आटो मोबाइल्स, रुड़की, देवबन्द टैक्टरस देवबन्द ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079216

देशभक्त युवक समाज का नैतिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय जन-जागरण २० सूत्री प्रतिज्ञा पत्र,

देश भक्त युवक समाज जो लगभग तीन वर्ष पूव नगर सहारनपुर में स्थापित हुआ तथा अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु २० सूत्री आदर्श प्रतिज्ञा पत्र का लेकर समाज एवं राष्ट्र के समक्ष आया, जिन नवयुवकों की आस्था प्रमुक प्रतिज्ञा पत्र में हो वे ही संस्था के निकट आकर हृदय से उसकी प्रगति में अपने को न्यौछावर कर अपनी महानता का परिचय दे। पूर्ण जानकारी हेतु संस्था की नियमावली मंगायें, तथा अपने पोस्टकार्ड को संस्था के पते पर प्रेषित करें। एवं युवक अपने जीवन को इस ओर लगाय।

—सम्पादक

नगर सहारनपुर दिनांक २०-१२-७० को गांधी पार्क में, गांधी जी की प्रतिमा के नीचे देश भक्त युवक समाज की एक विशेष बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें संस्था को शीघ्र विकास की ओर ले चलने हेतु नियमावली में संशोधन एवं चुनाव कर २० सूत्री प्रतिज्ञा पत्र को तैयार किया गया कि देहरादून, मुज्जफरनगर, अम्बाला आदि जिलों में भिन्न २ शाखाओं का गठन जायेगा और प्रमुक दृश्य कुछ वरिष्ट कार्यकर्ताओं का ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ मैं प्रतिदिन कुछ समय सर्व शक्तिमान सृष्टि के रचियता एवं रक्षक की भक्ति में लगाने की आदत का विकास करूंगा। सोने से पूर्व अथवा समयानुकूल बैठकर उसका ध्यान करूंगा।

२ मैं राष्ट्र के समस्त बालकों से बिना किसी भेद भाव के निः-स्वार्थ सहानुभूति रखूंगा। कोई ऐसा कार्य या व्यवहार नहीं करूंगा जिससे मेरे राष्ट्र के किसी बालक के चरित्र एवं विकास पर बुरा प्रभाव पड़े।

३ मैं देश भक्ति को अपना सर्वोच्च धर्म समझूंगा। राष्ट्र के हितों के सम्मुख अपने व्यक्तिगत हितों को तुच्छ समझूंगा। जाति और सम्प्रदाय तथा प्रान्त की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता की व्यापक भावना का विकास करूंगा। मैं अपना तन-मन-धन, समय, तथा सब कुछ राष्ट्र की धरोहर समझूंगा।

४ मैं विश्व के प्रत्येक मानव में वास्तविक प्रेम-संयम चरित्र तथा अहिंसा जैसे गुणों के विकास के लिये प्रयत्नशील रहूँगा। विभिन्न प्रकार के 'वाद' संघर्षों को सत्य के प्रचार, चरित्र एवं प्रजातन्त्र की अहिंसक शक्तियों द्वारा हल करने के लिये प्रयास करूंगा।

५ मैं अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिये कम से कम तथा राष्ट्रीय निर्माण, सामूहिक विकास एवं अच्छी शिक्षा के प्रसार के लिए अधिक से अधिक धन सम्पत्ति समय तथा शक्ति लगाने का प्रयास करूंगा, अपनी अनावश्यक वस्तुओं को शिक्षा संस्थाओं को दान देने का प्रयास करूंगा।

६ मैं प्रतिदिन ८-१० घन्टे कोई उत्पादक कार्य करने का प्रयास करूंगा। गरीब, अमीर सबको मिलाकर सहकारिता की भावना से राष्ट्रीय निर्माण के लिये आह्वान करूंगा। मैं अधिक ब्याज, लाभ या किराया लेकर कम मजदूरी देकर मिलावट करके किसी का शोषण न करूंगा।

७ मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि प्रशासन अनुत्पादक, योजनाओं ऊंचे वेतन, दावत, सजावट वातानकुलित गाड़ियों, ऐश्वर्य ऊंचे भवनों पर कम व्यय करके राष्ट्र के सहकारी निर्माण में उत्पादक योजनाओं में जनता का सहयोग प्राप्त करें।

प्रत्येक २-३ गाँव के मध्य उन की भूमि के $\frac{१}{२०}$ भाग पर एक विशाल चरागाह बन, जलाशय, नलकूप, विद्युत युक्त कृषि यन्त्र, वर्कशाप, सांड घर, खादी केन्द्र, एवम् महिला केन्द्र निर्मित किया जाये।

८ मैं प्रतिदिन एक आधा घन्टा हल्का श्वास नियन्त्रित व्यायाम, खेल, प्राणायाम, में लगाने का प्रयास करूंगा, मैं सदैव सैनिक की भांति चलने, गहरी श्वास लेने तथा भोजन धीरे २ चबाकर खाने की आदत का विकास करूंगा।

९ मैं शारीरिक और मानसिक अनुशासन बनाये रखने का प्रयास करूंगा। यदि मन में कभी किसी प्रकार का उद्वेग या उत्तेजना होगी तो घंटों बैठकर भक्ति तथा प्राणायाम करूंगा, उपवास करूंगा। मैं विद्यार्थी जीवन में सदैव खुली वायु में तख्त पर सोने का अभ्यास करूंगा। यदि किसी दिन पृथक सोने की व्यवस्थ तख्त, कम्बल, बिस्तर की न होगी तो बैठकर शयन करूंगा। भक्ति तथा प्राणायाम करूंगा।

१० मै पशु मांस, मदिरा, अन्डे, पान तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, हुक्का, तथा सभी मादक पदार्थों से बचने का पूर्ण प्रयास करूंगा। गन्दी दुकानों से बाजार के कृत्रिम भोजन, गन्दी दूषित मिठाईयां, चाट, आइस-क्रीम, सोड़ा वाटर, खमीरे बिस्कुट बासी चासनी एवं द्रव में डुबी मिठाइयां, सभी से बचने का प्रयास करूंगा। दैनिक जीवन में वनस्पति घी चाय से बचने का प्रयास करूंगा होटलों की पुरानी मिठाई से बचने का प्रयास करूंगा।

११ मैं श्रमदान एवं स्वच्छता अभियान में तन-मन-धन से सहयोग देकर ग्राम, नगर, कुऐं, तालाब,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को स्वच्छ बनाने का प्रयास करूंगा।

१२ मैं राष्ट्रीय एकता के लिये इस बात का प्रचार करूंगा कि राष्ट्र के सभी बालकों का नाम वेष-भूषा, तथा स्कूल एक से हों। नामों के साथ जाति या वर्ण सूचक शब्द न जोड़ा जाय। उपनाम या परिवार सूचक शब्द ही जोडे जा सकने चाहिये। मजदूर तथा राष्ट्रपति के बालकों के लिये समान स्कूल हों।

१३ मैं सामाजिक अपव्यय फिजूल खर्ची मिलावट भ्रष्टाचार, रिश्वत, लाल फीताशाही, अकर्मणयता, अनावश्यक दावत, सजावट, दहेज, प्रदर्शन, आतिशबाजी हुल्लड़बाजी, ताश, जुआ, गुल्ली डन्डा, सड़कों पर नाच के विरुद्ध प्रचार करूंगा।

विवाह के अवसर पर कन्या पक्ष की ओर से केवल एक दावत ही दी जाय। सादगी से विवाह करके धन बचाकर वर वधु के नाम बैंक में जमा कर दिया जाय।

मैं खादी, देशी तेल एवं कुटीर उद्योग की बनी वस्तुयें आवश्यकतानुसार प्रयोग करूंगा, जिससे सबको काम मिले।

अतिथि या मित्र का सत्कार एक कप दूध आयुर्वेदिक चाय या नींबू जल से किया जाय। होटलों की चाय, नमकीन बिस्कुट, मिठाई, पान से नहीं।

१४ मैं प्रत्येक परिस्थिति में सदाचार संयम तथा नैतिकता के मार्ग पर चलने का प्रयास करूंगा जिससे राष्ट्र के चरित्र गौरव एकता तथा आन को कलंक न लगे अपने मित्रों के प्रति सदैव निः-स्वार्थ सहानुभूति एवं अनुशासित व्यवहार को ही अपनाऊंगा। उसके लिये अधिक से अधिक त्याग करूंगा जिससे वे भी अपने मित्रों के प्रति त्याग कर सकने के अभ्यासी बने।

१५ मैं छात्र छात्राओं अध्यापकों अध्यापिकाओं, नेताओं एवं शासकीय अधिकारियों से अनुरोध करूंगा कि वे अपनी अपनी वेश भूषा को सादगी में परिवर्तित कर राष्ट्र का पथ अवलोकित करें।

१६ मैं इस बात का महान् प्रयास करूंगा कि समस्त अध्यापकों, अध्यापिकाओं छात्र छात्राओं के लिए सरकार द्वारा संस्था की समिति द्वारा अथवा विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों-अध्यापिकाओं द्वारा कुछ सूत्री आचार संहिता तैयार की जाये और उसे हस्ताक्षरों द्वारा तैयार कर शीघ्र क्रियान्वित किया जाये तथा उसके अन्तरगत न चलने वाले को संस्था से अलग किया जाये समस्त अनुशासन का आधार आचार संहिता को ही माना जाये।

ऐसा करने पर निश्चित ही एक समय आयेगा कि समस्त राष्ट्र का भ्रष्टाचार तथा अन्य दूषित वातावरण समाप्त हो जायेगा।

१७ मैं इस बात का विशेष रूप से प्रयास करूंगा कि राष्ट्र के विद्यालयों में चाय, कोफी तथा धूम्रपान के प्रयोग करने वाले महानुभावों को शीघ्र से शीघ्र रोका जाये, ऐसा करने से भारत में ब्रिटिश शासन प्रणाली द्वारा लागू किये गये कुछ व्यसनों में हम स्वतन्त्र रूप से वास्तविक संशोधन कर पायेंगे, एवं बौद्धिक शारीरिक शक्ति का संचय भी कर सकेंगे।

१८ मैं जीवन में सिद्धान्त तथा लक्ष्य निर्धारित करने का प्रयत्न करूंगा अपना रुधिर जलाकर स्वयं अपना मार्ग आलोकित करूंगा निर्धन भूले भटकों की अपनी परिस्थितिनुकूल सहायता करूंगा अपने आंखों के सामने विश्वभर के किसी भी प्राणी को किसी भी दशा में भूखा नहीं मरने दूंगा। तथा उसकी दूसरी उचित आवश्यकताओं की भी पूर्ति करने का विशेष प्रयास करूंगा। जो अन्याय मुझे जान पड़ेगा उसके लिये मैं विशेष संघर्ष करूंगा कि वह न्याय में परिवर्तित हो जाये।

१९ मैं अपने जीवन में सबसे अधिक प्रेम ईश्वर तथा अपने राष्ट्र भारत से ही करूंगा। सर्वप्रथम मेरे लिये मेरा देश ही होगा मैं असंख्यक माताओं, बहिनों,

(शेष आगे पढ़िये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ २३ का शेष)

भाइयों, पुत्रों, पुत्रियों आदि को ही वास्तविक रूप में हृदय से अनुभव करता रहूँगा । मैं अपव्यय, अकर्मण्यता, भ्रष्टाचार हिंसा मिलावट तथा बाल विवाह के विरुद्ध अपने विचारों की क्रान्ति को बढ़ावा दूंगा।

२० मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि वे भारत में रहने वाले प्रत्येक प्राणी को मकान की सुविधा प्रदान करें कोई भी व्यक्ति सड़कों पर मकान के अभाव में लेटा हुआ न दिखाई पड़े । ऐसे छात्रों के भोजन-शिक्षा आदि का सरकार व्यय वहन करे जो हाई स्कूल से आगे अपने विद्यालय में सबसे अधिक अंक प्राप्त कर सकते हो । प्रत्येक विद्यालय में अखाड़ा तैयार किया जाये जिस से कि छात्रों में मलयुद्ध की ओर बढ़ने की प्रेरणा उत्पन्न हो सके। वर्ष में एक बार विद्यालय उत्सव मनाया जाये योग्यता प्रदर्शित करने वाले छात्रों को अच्छे प्रमाण पत्र आदि भेंट किये जायें, तथा प्रत्येक जिले से सरकार कुछ ऐसे प्रधानाचार्यों का प्रतिवर्ष चयन कर उन्हें विशेष सुविधा प्रदान करे जिनके शिक्षा सम्बन्धि परिणाम उत्तम हों अनुशासन तथा अन्य कार्य-क्रम सराहनीय हों।

विशेष नोट—राष्ट्र गान की आवाज के समय अपने सभी कार्य बन्द कर अविलम्ब अपने स्थान पर खड़े रहें भारत के सभी प्राणी इस बात का विशेष ध्यान रखें।

[समस्त संविधान भावी अंक में प्रकाशित हो सकेगा] क्रमशः प्रधान कार्यालय, बोमनजी रोड पुलदाल मन्ड़ी, सहारनपुर।

(पृष्ठ १९ का शेष)

अधिनायकशाही के हामी है तो कानूनी अधिकारों के अनुयायी लोकतंत्र के प्रहरी। राजनीतिक शक्ति में विश्वास करने वाले अधिनायकशाही को निमंत्रण देते हैं तो कानूनी अधिकारों की पुष्टि करने वाले लोकतंत्र की रक्षा करते है। राजनीतिक शक्ति बनाम कानूनी अधिकार शीर्षक वाद वास्तव में अधिनायकशाही और लोकतंत्र का पुराना संघर्ष है।

पूर्व पश्चिम में भेद न करें हरेक वस्तु कहीं की हो उसकी तुलना गुण दोष पर करें तब हीं शुध्द न्याय कर सकते हैं।

गाँधी जी

---

२६ जनवरी गणतन्त्र-दिवस

की इन पुनीत घड़ियों में

फोन : ४१६२, ४२४३

श्रेष्ठ चीनी के निर्माता—

लार्ड कृष्णा शूगर मिल्स लिमिटेड

सहारनपुर : उत्तर प्रदेश

सेठ सुशीलकुमार बिंदल
संचालक

सेठ रमेशचन्द बिंदल
संचालक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव सावधान !

प्रो० नरेन्द्रसिंह यादव
एम० ए०

> आदमी अगर निकम्मी बात छोड़े और काम की थोड़े से थोड़े शब्दो में कहे तो बहुत समय अपना और दूसरों का बचा लेता है ।
>
> —गांधी जो

आज के वैज्ञानिक युग में उत्पादन और जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है । किन्तु मानवता का पतन भी तीव्रगति से हो रहा है । आज भोजन, जल तथा वायु का दूषण एक समस्या बन गई है । पशुधन, तथा बन बनस्पति काटे जा रहे हैं । मनुष्य के प्राकृतिक आहार दूध, फल, शाक, अन्न शुद्ध रूप में प्राप्त करना कठिन हो रहा है ।

अप्राकृतिक जीवन ने मनुष्य को नैतिक पतन, तथा कृत्रिमता के द्वार पर भटका दिया है । 'आत्म संयम' ही जीवन की महानता का रहस्य है । संयम के अभाव में हम न जाने क्या २ पाप व दुर्घटनाएँ कर सकते हैं । जीवन की छोटी २ आदतों से, दैनिक खानपान, रहन सहन, व्यवहार से, आत्म संयम का मार्ग निर्मित होता है । भक्ति और प्राणायाम उसमें बहुत सहायक होते हैं ।

मादक पदार्थों एवं कृत्रिम दूषित भोजन से आत्म संयम के जीवन को आघात पहुंचता है ।

मदिरा पान इन में सबसे भयानक है । मदिरा पीने वाला ड्राइवर बस या गाडी को दुर्घटना के मुंह में लेजाकर कितने ही सुन्दर जीवन एक साथ नष्ट कर सकता है । मदिरा पीने वाला गृहस्थी परिवार को विनाश के किनारे ले जाकर खड़ा कर सकता है । मदिरा पीने वाला अधिकारी भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन देकर समाज को दुर्घटना ग्रस्त कर सकता है । मदिरा पीने वाला राष्ट्रीय नेता समस्त राष्ट्र को धोखे में डाल सकता है ।

तम्बाकू, शराब, भंग इत्यादि मादक पदार्थों से स्नायु मंडल एवं मस्तिष्क उत्तेजित हो जाता हैं । कमजोर मस्तिष्क आत्म संयम और सदाचार के मार्ग से हट जाता है । वह पाप, शोषण व्याभिचार, मोह की ओर भटक सकता है । एक पाप समाज में अनेक पापों को जन्म देता है । एक व्यक्ति के चरित्र पर कंलक लगने से कितने ही निर्दोष व्यक्तियों पर भी लांछन आजाता है । माता पिता, भाई बहिन, मित्र और आगे आने वाले बालक सभी उस कंलक से दुखी हो जाते है ।

पशु, मांस, मंदिरा, अन्डे, पान तम्बाकू, बनस्पति घी, कृत्रिम भोजन, गन्दे चाट मिठाई, आइस क्रीम खमीर के बिस्कुट सभी गन्दे भोजन जनसंख्या की अत्याधिक वृद्धि में सहायक हैं । यह प्राकृतिक संयम को आघात पहुंचाते है चाय भी हमारे स्नायु सूत्र तथा पाचन क्रिया को निर्बल करती है । इस का उपयोग भी कम किया जाय तथा वैज्ञानिक ढ़ग से बनाई जाय । समय पर ही ले । बिना उपयुक्त समय के किसी की चाय स्वीकार न करें ।

बनस्पति घी, तम्बाकू तथा गन्दे भोजन पदार्थो के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार किया जाय । दावतों को कम किया जाय तथा उनमें प्राकृतिक भोजन पदार्थो का प्रयोग किया जाय । सारे देश में शुद्ध भोजन तथा स्वच्छता के लिए अभियान चलाया जाय । विशाल भवनों, कारों, दावतों, कृत्रिम भोजन पदार्थों, दिखावट, सजावट, बाजे तमाशे, फैशन से धन बचाकर देश में कुटीर उद्योग, डेरी फार्म तथा शाक

(शेष आगे पढ़िये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी बलिदान की

: और मर्ज बढ़ता ही गया :

लेखक:-सतेन्द्रकुमार त्यागी

यह कहानी नहीं वास्तविकता है जिसे हम भूल नहीं सकते यह दास्तांन है बदलते समाज की। आज हम आजांदी के २३ वर्ष पूरे कर चुके हैं। तथा २४ वें वर्ष में आ गये हैं। लेकिन यदि इतिहास के पुराने पन्नों को उल्टा जाता है तो पता चलता है कि भारतीय जनता को इस दिन को प्राप्त करने के लिये कितनी कुरबानियाँ करनी पड़ी, आजादी की लड़ाई में जिस साहस के के साथ लाठियों और गोलियों का सामना किया यह सब कुछ हमारे इतिहास का गौरव पूर्ण अध्याय है। शायद आप यह भूल गये हों की यह संघर्ष २०० वर्ष तक चलता रहा है। कुरबानियां होती रही आजादी के महायज्ञ में आहुतियाँ पड़ती रही लेकिन जब बाडया का बोझ न बरदाश हो सका तब "सुभाष" और भगतसिंह जैसे देश के असंख्य जवानों ने बलिदान किया तथा हँसते २ फांसी के तख्तों पर चले गये। अंग्रेजी साम्राज्यवादियों के खिलाफ भारतीय दिवानों ने "इन्कलाब" का जयघोष किया। देश भक्तों ने खून की होली खेली इसी के परिणाम स्वरूप १५ अगस्त १९४७ को हम स्वाधीनता प्राप्त कर सके! लेकिन आजादी की लड़ाई के अन्दर

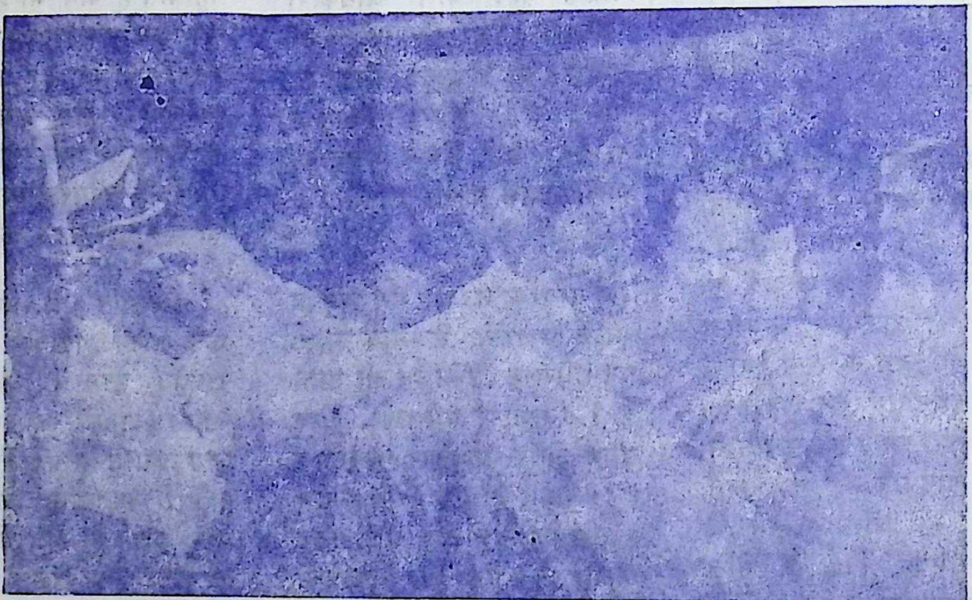

जिस समय पंडित नेहरू जी के शव के अन्तिम दर्शन करने के लिए देहली में अपार भीड़ लगी थी तो उसी समय एक साधु जो तेजस्वी दिखाई पड रहे हैं और चश्मा लगाये हुए हैं पंडित जी के शव के पास खड़े हुए हैं। जनता की इनके प्रति पूर्ण आस्था बनी हुई है कि ये ही नेता जी सुभाषचन्द्र बोस हैं। वास्तव में मैं भी ऐसा ही मानता हूँ, इस साधु की सरकार, नेता जी जाँच आयोग वास्तविक खोज करें कि ये कहाँ पर हो सकते हैं, क्योंकि इनका पूरा चेहरा नेता जी से मिल रहा है और जनता के भ्रम को दूर किया जाये। —सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबानों, की कुरबानियों के पीछे एक आशा थी कि हमारे देश में न चोर बाजारी होगी न बेरोज गारी; न कभी कपड़े की कमी न हाय तौबा ।

लेकिन समय बीतता गया राजनैतिक नेता सत्ता के नशे में जनता को आशा को भूलाते गये। धीरे २ मर्ज बढ़ता गया । जिन्दगी की करवट बदल गई। अबतों सबकों नये स्तर से परखा जाता है । अब तो जमाने लद गये जब लोग ईमानदारी के कारण सम्मान पाते थे। अब तो उनका सम्मान होता है। जिनके पास धन दौलत है अब तो उनकी तूती बोलती है जो झूठ बोलते हैं। आज ऊंचे अधिकारी तक रिश्वत लेते हैं रिश्वत देते हैं। रिश्वत भी रूपये पैसे की और मानव शरीरों की। वे हो बड़े लोग माने जाते हैं। जो दूसरों को रिश्वत देते है। तथा अपनी जेबें भरते है। ये मर्ज बढ़ते २ इतना बढ़ गया कि आज बे इलाज हो गया ; लेकिन राजनैतिक नेताओं कि पत्ते बाजी समाप्त न हो सकी।

जनता की भावनायें कुचल कर रह गयी। आज आवश्यकता है एक ऐसे संगठन की जहाँ हम जाती, साम्प्रदाय, धन दौलत को भूलकर हम एक धर्म एक ही मानव देशभक्ति के आधार पर मानव जाति का जय घोष करें। ताकि हम इस बदलतें समाज को रोक सके, रोक सके हम उस आँधि को उस तूफान को जो इन सत्ता के नशे में बेसुद राजनैतिक नेताओं द्वारा चलाई गई है।

हमारा इतिहास साक्षी है। कि समाज को जब कभी अन्धकार निराशा, शोषण ने आघेरा युवकों, और युवतियों ने उसके विरुध घोर संघर्ष किया तथा समाज में एक नयी चेतना व भावी युवकों को नूतन प्रकाश प्रदान किया। आज के युग की सबसे बड़ी माँग है। युवक, युवतियों के अन्दर राष्ट्रीय एकता की भावना के सूर्य का उदय होना जिसकी किरणों से सारा देश जगमगा उठें।

आज आवश्यकता है। नव युवकों और युवतियों के संगठन की जिसके प्रकाश में हम ऐसे समाज को बदल सकें जहाँ का स्तर ही धन-दौलत है। यह कोई नहीं पूछता की माल, धन दौलत कहाँ से आया यह कोई नहीं देखता कि चोर बाजारी, तथा रिश्वत से बनी कोठियाँ कहां से आयीं। लोग तो यह देखते है। कि यह सब किसके पास है। बस आज तो हमें अपने बड़े से बड़े स्वार्थ को त्याग कर राष्ट्रीयता रुपी स्वार्थ को ही प्रथम रुप में स्वीकार करना होगा और सत्ता-स्वार्थ-संकोर्णता व सिध्दान्त हीनता के दायरे से ऊपर उठना होगा तभी हम सब मिलकर विश्व के अन्य देशों को हरकदम पर चुनौती दे सकेगे।

ऐसा होने पर मुझे प्रसन्नता होगी और आशा भी कि हम सब राष्ट्रीयता के इस महान ध्वज को लेकर प्रेम के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर बहिन और भाई व वृध्दा आगे बढ़ेगें। इन्कलाब जिन्दाबाद इन्कलाब जिन्दाबाद ! जयभारत !! ●

(पृष्ठ २५ का शेष)

उद्यानों का विकास किया जाय। हाई स्कूल तक की शिक्षा का उचित विकास किया जाय। भोजन जल तथा वायु को दूषित होने से बचाया जाय।

परिवार नियोजन के लिए सबसे अच्छा कार्य क्रम है कि गन्दे मकानों, गन्दे भोजन पदार्थो तथा गन्दे वातावरण को नष्ट किया जाय। शुद्ध पेय जल एवं प्राकृतिक भोजन का उत्पादन बढ़ाया जाय। जन साधारण को शिक्षा अच्छे मकान तथा अच्छा भोजन देने की राष्ट्रीय योजना बनाई जाय। लोगों को संतुलित जीवन, सतुलित भोजन, स्वच्छता योग, प्राणायाम, एंव भक्ति के विषय में शिक्षित किया जाय। साधु सन्यासी, योगी, समाज सुधारक, विद्यार्थी एवं अध्यापक इस कार्य क्रम में विशेष सहयोग दे सकते है। ●

सत्य के मुकाबले में कोई चीज रख दीजिये, सत्य सदा ही भारी रहेगा।

—गांधी जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व पर !

सहकारी गन्ना विकास समिति लि० लकसर जि० सहारनपुर

नाम विकास कार्य	आकंडे
	पौधा -- पेडी -- योग
१ –वर्ष १९६९-७० में गन्ने का क्षेत्र फल एकडों में।	२५५०९-५४—२०६०१-१८—४६११०-७२
२—वर्ष १९६९-७० के गन्ने की उपज ला० क्वन्टल में।	६१-४१— ३५-६९— ९७-१०
३ वर्ष १९६९-७० में गन्ना पूर्ति जो हुआ लाख़ क्वन्टल में।	३१-६० चीनी मिल लकसर। ०-७१ चीनी मिल रोहाना कला।
	कुल योग ३२-३१ लाख क्वन्टल।

४—वर्ष १९६९-७० में गन्ना बीज जो को कृषि को वितरण किया गया क्यू० में। १७२२८-५९ क्यून्टल

५—यन्त्र वितरण।— २९ हल, २७ बुग्गी, १४ स्प्रींग मशीन, १७ कल्टी वेटर, २९ हैरो, ४८ यन्त्र के अन्य भाग।

६—सिंचाई साधन जो विभाग दुबारा सम्पन्न कराये गये।— ९ कुऐ, २५ ट्यूब बैल, २ रहट, २५७ पम्पींग सेट।

अवैतनिक मंत्री
सहकारी गन्ना वि० समिति लि० लकसर

चेयरमैन
सुखबीरसिंह

नव वर्ष का संदेश

प्रिय युवकों !

नव वर्ष में आप नवीन उत्साह से आगे बढ़ें और महानता की ओर अग्रसर हों। अंधकार से प्रकाश की ओर चलें।

चरित्रवान देशभक्त बालक ही राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति हैं। अतः आप अनुशासन और संयम का जीवन बिताकर, त्याग और तप का सहारा लेकर, सत्य और सदाचार के ध्वज लिए आगे बढ़ेंगे। राष्ट्र की आशाएं आप पर ही केन्द्रित हैं। राष्ट्र के भविष्य आप ही हैं। आप लोग राष्ट्र के रंग बिरंगे पुष्प हैं। अपनी सुगन्ध से राष्ट्रीय उद्यान को सुन्दर बनाइए।

विद्यार्थियों, युवकों का नैतिक विकास उनके शारीरिक और मानसिक विकास से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। सबसे मूल्यवान वस्तु जो परमात्मा ने आपको दी है वह चरित्र है चरित्र की पवित्रता की रक्षा के लिए यदि महान से महान त्याग भी करना पड़े तो उसके लिए हमें सदैव तत्पर रहना चाहिए।

इस महान देश के गौरव आप ही हैं। राष्ट्र के भावी कर्णधार, आप ही हैं। आप लोग कोई ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे राष्ट्र के चरित्र, गौरव, एकता तथा आन को कलंक लगे।

—: नव वर्ष की शुभ कामनाओं के साथ :—

पी० एन० मराठा
प्रधानाचार्य
एच. ए. वी. इन्टर कालेज, सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

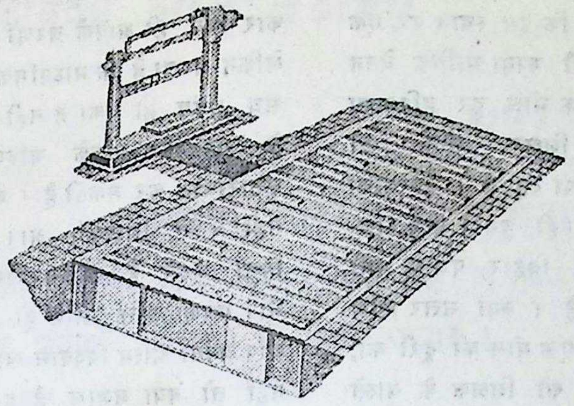

मैस्कौट, गाड़ी तौलने के कांटे

इसके अतिरिक्त —

मैस्कौट खांड की मशीन

" केन क्रेशर

" गेहूँ गाहने की मशीन

निर्माता :

कपूर इन्जीनियरिंग वर्कस

रेलवे रोड, सहारनपुर — फोन नं० ४०१२

शिक्षक का अस्तित्व

चन्द्रपालसिंह करतार
सह सम्पादक

> प्रस्तुत रचना में अध्यापक वर्ग को लेखक ने आह्वान करते हुये स्पष्टीकरण किया है कि वे अपने समूचे अधिकारों को संगठन के रूप में ही सरकार से प्राप्त कर सकते हैं । किन्तु यह आवश्यक नहीं कि सम्पादक पूर्ण रूप से ही लेखक के विचारों से सहमत हो ।
>
> —सम्पादक

शिक्षक, शिक्षा, शिक्षार्थी तीनों शब्द एक दूसरे के पूरक हैं । लेकिन इन सबकी पूरकता शिक्षक है शिक्षा और शिक्षार्थी का पूर्ण आदर्श शिक्षक की गुण सम्पन्नता पर ही निर्भर हैं। शिक्षा एवं शिक्षार्थी तभी ठीक प्रकार फलीभूत एवं विकसित हो सकते हैं, जबकि शिक्षक आदर्शवान हो, और अपनी शिक्षा का पंडित हो, वह चरित्रवान हो, स्वार्थता से दूर हो, आत्मभिमानी हो और उसका मुख्य लक्ष्य देश, शिक्षा एवं शिक्षार्थी को पूर्ण आदर्श देना हो ।

आज हमारा देश प्रगति कर रहा है लेकिन नहीं हमारे देश में प्रगति कर रही है अराजकता, अनैतिकता एवं भ्रष्टता असली प्रगति तभी सम्भव है जबकि हमारे देश वासियों की नैतिकता विश्व को चुनौती दे सके। लेकिन ऐसा हो नहीं रहा है, हमारी सरकार भारत के भविष्य पर तो कुठाराघात कर रही है वह आज के मासूम युवकों कों, विद्यार्थियों को भी पतन की ओर ले जा रही हैं। कल का भारत एव शिक्षार्थी का मार्ग दर्शन ठीक रूप से यदि हो सकता है तो उसके करने वाला एक शिक्षक ही हो सकता है। लेकिन शिक्षक तभी ठीक प्रकार से भारत के भविष्य की अर्थात शिक्षार्थी को योग्य एवं देश भक्त तथा आदर्शवान बना सकता है जबकि उसका अपना जीवन सुखी हो वह अपनी एवं अपने परिवार को जीवनयापन ठीक प्रकार से कर सकता हो। लेकिन ऐसा नहीं है। उत्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदेश सरकार शिक्षक के अस्तित्व को चुनौती देकर कह रही है—कि हे शिक्षक मैं तुझे दीनता की मूर्ति बनाऊंगी और सरकार बना भी रही। उधर शिक्षक को हमारी सरकार बाध्य कर रही है कि शिक्षक तू अपनी विद्या को बेच तू दर-दर का भिखारी बन। तो ऐसी स्थिति में शिक्षक शिक्षार्थी को क्या शिक्षा दे सकेगा ? वह शिक्षार्थी जो कि देश की आन है, जिन पर देश की प्रगति निर्भर है उनको क्या सही शिक्षा दे सकेगा ? इसका उत्तर मैं उत्तर प्रदेश सरकार से जानना चाहता हूँ।

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षक का उत्तर प्रदेश में वेतन इतना भी नहीं कि वह स्वयं ही उसमें अपना जीवन-यापन कर सके। उससे अधिक वेतन तो केन्द्र सरकार और दूसरे राज्य एक अनपढ चपरासी को दे रहें। हमारे माध्यमिक शिक्षकों के साथ तो इतना अत्याचार हो रहा है कि वे आठ-आठ माह से बिना वेतन के शिक्षा संस्थाओं में कार्य कर रहे है। क्या हमारे मन्त्रिगण एवं सरकारी उच्च शिक्षा अधिकारी भी ऐसी स्थिति में कार्य कर सकते हैं। और फिर ऐसी स्थिति में जबकि शिक्षक भूखा है, परेशान है, उसके घर में परिवार में गरीबी है तो क्या वह शिक्षार्थी को देश भक्त एवं आदर्श बना सकता है। कदाचित नहीं। कितना अत्याचार उत्तर प्रदेश सरकार इन पर कर रही है कि इस स्थान पर एक शिक्षक एक सौ रुपया मासिक वेतन और उधर एक मील दूर हरियाणा प्रान्त का शिक्षक तीन सौ रुपया वेतन पा रहा है। हरियाणा प्रान्त में ही नहीं, दूसरी ओर राजस्थान, दिल्ली, बिहार, पंजाब सभी जगह ऐसा है। क्या उत्तर प्रदेश सरकार इस एक मील की दूरी को, सीमा अन्तर को शिक्षक के वास्ते नहीं आंक सकती—'आंक सकती है लेकिन नहीं' और अनुशासन हीनता, एवं अनैतिकता, एवं भ्रष्ठता सही रूप से सरकार ही फैला रही क्योंकि स्कूल में भूख की समस्याओं में उलझा हुआ शिक्षक तब तक क्या शिक्षा दे सकता है जब तक सरकार उनकी ओर ध्यान नहीं देगी।

हे शिक्षकों—

आप सब अपने अस्तित्व को भूल गये हो, आप एक हो जाओ। आपके पास तो वह शक्ति है जिससे सम्पूर्ण सृष्टि हील सकती, है आप तो देश के मार्गदर्शक हो, यह उत्तर प्रदेश सरकार तो क्या आपकोकोई भी विचलित नहीं कर सकता। लेकिन यह सब आप सबकी ही ढील है। मैं उत्तर प्रदेश के माध्यमिक शिक्षक संघ को आह्वान करता हूँ कि ऐ माध्यमिक शिक्षक संघ अपनी निद्रा को त्याग एवं सगठित हो जाओ उत्तर प्रदेश सरकार स्वयं ही आपके चरणों में होगी लेकिन लगता है कि माध्यमिक शिक्षक संघ अपंग हो चुका है नहीं तो क्या ये सरकार आपके भविष्य पर कुठाराघात कर सकती है ? कदाचित नहीं। ऐ शिक्षकों—आप देश को हिला सकते हैं लेकिन लगता है आप सबकी शक्ति क्षीण हो चुकी है आप अपना आत्म विश्वास खो बैठे हो नहीं तो क्या मजाल है इस सरकार की जो एक देश निर्माता राष्ट्र निर्माता, युवक निर्माता के साथ अत्याचार कर सके शिक्षक संघ अपनी निराशा व ढीली नीति को त्याग दे और क्षेत्र में आ अपनी पूर्ण शक्ति के साथ संगठित होकर, आपकी न्यायोचित मांगे तभी पूर्ण हो सकेंगी। कम से कम एक बार तो इस सरकार को चुनौती दे। लेकिन पूर्ण संगठन से, सम्पूर्ण शक्ति से सारा समाज एवं शिक्षार्थी सब तुम्हारे सहयोगी होंगे शिक्षकों अपने अधिकारों की मांग वीर किया करते हैं कायर पीछे हठते हैं लेकिन वीर नहीं। अतः आप अपने स्वंय में ही देखो कि आप कायर हो या वीर यदि वीर हो तो इस सरकार को आप सबकी मांगे माननी होगी। लेकिन तभी जब आप एक होकर इसके समक्ष बढोगे।

असत्य वादी अपने लिए अनेक खिड़कियां रखता है। एक नहीं तो दूसरी खिड़की से निकल जाता है और मानता है "मैं कैसा होशियार"। हकीकत में अपने लिए बड़ी खड्डी खोदता है जिसमें वह पड़ता है।

—गांधी जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य लाभ उठाईए

तथा

सही कीमत पर हमारे यहां से

दवाईयां, फोटो ग्राफी का सामान कैमरा फिल्म, अलारम व हाथ की घड़ियाँ तथा घड़ियों के पट्टे व चेन इत्यादि के लिए तथा सभी प्रकार के फोटो खीचने के लिए पधारे।

ए० किचनर एण्ड को०

फोन नं० ३५४४

स्टेशन रोड, सहारनपुर

विशेष सूचना

गणतन्त्र दिवस १९७१ के इस अस्तित्व अंक में जो देशभक्त युवक समाज का बीस सूत्री प्रतिज्ञा पत्र प्रकाशित हुआ है जो राजनैतिक-पृथकतावादी गति विधियों से दूर है आज के नव युवकों के लिए तो रामबाण ही सिद्ध हो चुका है। अमुक प्रतिज्ञा पत्र में जो नव जवान पूर्ण आस्था रखते हों वे गम्भीर विचार करने के पश्चात् उस महान् वैचारिक क्रान्ति की ज्वाला में शीघ्र अपने तन-मन-धन से आहुति देकर अपने जीवन का समस्त भाग देशभक्त युवक समाज को समर्पित करने में पीछे न रहें समय की मांग है कि हम अधिक से अधिक नव जवान मिलकर समस्त भारत के कौने २ में उप शाखाओं का गठन करने में पीछे न रहें। अस्तित्व समय २ पर ऐसे नवजवानों के कार्यों को प्रकाशित कर संस्था को गतिवान् बनायेगा। जो नवयुवक अपना जीवन दान देश भक्त युवक समाज को देने के उम्मीदवार हैं वे निम्न पते पर अपना पत्र लिख भेजें साथ में छोटा फोटू भी। विचार करने के बाद उन्हें उचित सूचना दी जा सकेगी। कुछ नव युवक इस पवित्र कार्य में जुट गये हैं।

अब देखना यही है कि वे जवान जिनके रोम २ में देश भक्ति की चिनगारी सुलग रही है और उनका शरीर-सम्पूर्ण भारत के असंख्यकों भाइयों माताओं बहिनों के दुःख दर्द को दूर करने के लिए ही है वे ही आगे आयें और अपनी वीरता का निस्वार्थ त्याग का परिचय दें हमें ऐसे ही माताओं के लाल चाहिए भारत माता ऐसे वीरों का बलिदान चाहती है जो देश भक्त युवक समाज को फैलाने में संकल्प ले।

हमें पूर्ण आशा है कि कुछ वीरों के पत्र उनके हृदय से उठे हुये जजबात के साथ निम्न पते पर शीघ्र पहुंचेगे।

भवदीय:
केन्द्रीय मन्त्री
प्रधान कार्यालय:–
बोमनजी रोड़, पुल दालमन्डी. सहारनपुर (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर प्रकार के आधुनिक डिजायनों के आकर्षक एवं उत्तम जूतों के लिए हमारे शो रुम पर पधारें । हमारे यहां बी० एस० सी० कर्मवीर, श्याम शू, प्रेजीडेन्ट शू, एवं बालूजा शू भी प्राप्य हैं ।

हमारे यहां के जूते आराम देह, चलने में टिकाऊ होते हैं । विभिन्न प्रकार की कानपुरी, जोधपुरी, जैपुरी चप्पलों के लिए याद रक्खें ।

अलपना चप्पलस एवं शूज़

सोफिया मार्किट कोर्ट रोड,

सहारनपुर

अस्तित्व

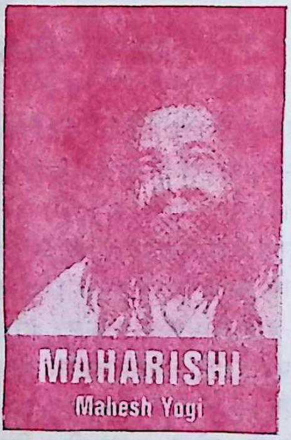

जे. पी. श्री वास्तव
ध्यान शिक्षक
जय गुरुदेव

पूज्य महर्षि जी ने मई में चालीस भारतीय ध्यान शिक्षक बंगलौर परिशिक्षित किये । फिर आप बाहर देशों में ध्यान शिक्षकों को परक्षिण देते चले गये । इस समय आप कोलोरेडो अमेरिका में तीन सौ सत्तरह व्यक्तियों को तैयार कर रहे है । आप के प्रयास को देख कर व सुन कर बाहर के देशों में भावातीत ध्यान के लिये कितनी रुचि बढ़ रही हैं । यह इसी से स्पष्ट है कि जीवन का दर्शन समझने के लिये ध्यान सीखे हुये लोग इन तीन स्थानों में आप के साथ एक-२ मांस रहे जून ७० में तीन सौ पचास व्यक्ति इटली में, जौलाई ७० में बारह सौ व्यक्ति पोलेन्ड स्प्रिग (पूर्वी अमेरिका) अगस्त ७० में चौदह सौ व्यक्ति । अप्काटा (पश्चिमी अमेरिका) सितम्बर ७० एक हजार तीन सौ व्यक्ति, आस्ट्रियन आल्पस । इसी प्रकार के अन्य स्थानों में भी शिवर लगेंगे, इतना ही नहीं आपने शंकराचार्य नगर ऋषिकेश में मई ७१ में भारतीय ध्यान शिक्षकों का विशाल अस्तर पर परीक्षकक्षण शिवर लगाने का कार्य-क्रम अभी से प्रारम्भ कर दिया है । आपने आध्यात्मिक जगत में जो अपना चमत्कार दिखाया वह किसी से छिपा हुआ नहीं हैं । (शेष पृष्ठ ३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश को आत्मनिर्भर करने में गन्ने का भारी महत्व

गन्ना उत्पादन बढ़ने से किसानों की आर्थिक स्थिति में आशातीत सुधार हुआ है। साथ ही देश को विदेशी-मुद्रा का लाभ हुआ है। गन्ना अनेकों रूपों में ढ़ल कर जन-जीवन में उपयोगी सिद्ध होता है। सर्वाधिक उपयोग गन्ने से बनी चीनी का है।

गणतन्त्र-दिवस के शुभ अवसर पर हार्दिक अभिनन्दन !

इस वर्ष अधिकाधिक उत्पादन का दृढ़ संकल्प !
अपने को आत्म-निर्भर बनाने का शुभ-निर्णय।

बढ़िया दानेदार सफेद चीनी के निर्माता:—

किसान को-आपरेटिव शूगर फैक्ट्री लि०

सरसावा (सहारनपुर)

फोन : ३५२०

आर० एन० सक्सेना
प्रधान प्रवन्धक

नित्य प्रति की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये।

मैटरनिटी सहकारी उपभोक्ता भण्डारा
मोहल्ला जाफर नवाज खां
सहारनपुर

अवश्य पधारें और सहकारिता को सफल बनावें।

यहां पर सभी प्रकार के साबुन, चाय, दालें, मसाले, घी, डालडा, तेल, ब्लेड, टायर, टचूब एवं अन्य आवश्यक वस्तुयें बाजार से सस्ते मूल्य पर उपलब्ध हैं।

राजदेव दुबे
अध्यक्ष
मैटरनिटी सब एरिया उपभोक्ता
सहकारी समिति लि०
खालापार, सहारनपुर

दूरभाष नं० : ३९१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तित्व के दो पक्ष हैं। एक बाहरी दूसरा भीतरी। बाहरी पक्ष चंचल, अनित्य, परिवर्तन शील और व्यवहारिक है भीतरी पक्ष नित्य अपरिवर्तनशील और शान्त है, ज्ञान, शक्ति और आनंद का स्त्रोत है।

अस्तित्व का यह व्यक्त सगुण साकार का क्षेत्र उसी निर्गुण निराकार अव्यक्त सत्ता की ही अभिव्यक्ति है जो सारे अस्तित्व का आधार है।

अस्तित्व के इन दोनों पक्षों में सामञ्जस्य न होने के कारण आनन्द में जिसकी सृष्टि हुई, आनन्द में जिसकी स्थिति है और आनन्द में ही जिसका लय होना है वह जीव आज दुखी है, अशान्त है, कमजोर है। इसी कारण वायुमण्डल अशान्त है, प्रकृति क्षुब्ध है। व्यक्तिगत जीवन, राष्ट्रीय जीवन में तनाव बढ़ रहे हैं।

जिस प्रकार वृक्ष को रस न मिलने से वह मुरझा जाता है, उसी प्रकार जीवन का अपने स्त्रोत से सम्बन्ध न होने से वह नीरस हो गया है—एकांगी हो गया है। जीवन तो चलता है पर वैसा ही जैसा समुद्र में बिना लंगर का जहाज-जहां हवा बही उसी ओर बह गया। उसमें स्थिरता नहीं होती, अनिश्चितता और अशान्ति होती है। यदि जहाज का लंगर के द्वारा समुद्र के नीचे के आधार भाग से सम्बंध कर दिया जाय तो वह चंचल लहरों के ऊपर रहते हुए भी स्थिर रहेगा उसकी अशान्ति मिट जायगी।

इसी प्रकार जीवन के बाह्य पक्ष का सम्बन्ध आन्तरिक पक्ष से न होने से जीवन अशक्त दुखी और अशान्त हो गया है। ऐसा क्यों हुआ कब से हुआ? पुरातन काल में तो आज के समान क्रोध अशान्ति, क्षोभ, अपराध, प्राकृतिक प्रकोप आदि नहीं होते थे।

कई शताब्दियों से भारतीय धार्मिक नेताओं ने यह प्रचार कर दिया है कि संसार मिथ्या है दुख पूर्ण है, क्षण भंगुर है, इसको त्यागे बिना परमात्मा की प्राप्ति नहीं होगी (यह विचार धारा यहां से चल कर बाहर देशों में भी प्रचारित हो गई है)। दूसरी ओर वे यह भी कहते हैं कि परमात्मा चींटी से लेकर सारे ब्रह्मान्ड में व्याप्त है। तब प्रश्न होता है कि जब वह सर्वव्यापी है तो हमारे भीतर भी तो है—तब उसे प्राप्त करने में कठिनाई क्यों होनी चाहिए?

विचार करने पर स्पष्ट हो कि हमारे धार्मिक नेताओं का जीवन त्याग वैराग्य का जीवन है। उसी मार्ग से उन्हें आत्म-दर्शन हुआ अतः वही मार्ग वे हमें बताते हैं। परन्तु कितने गृहस्थ त्याग वैराग्य के मार्ग पर चल कर आत्म दर्शन कर पाये हैं?

तब क्या यह मान लिया जाये कि सर्व व्यापी परमात्मा केवल त्यागी विरक्तों के लिये ही बोधगम्य है? रागी और संग्रही गृहस्थों के लिये प्राप्य नहीं है? जिस प्रकार एक साध्य को प्राप्त करने के लिये साधन-अनेक होते हैं ताकि हर क्षमता के लोगों को प्राप्त हो सके उसी प्रकार दो प्रकार के जीवन हैं-त्याग वैराग्य का सन्यासियों का, दूसरा राग और संग्रह का गृहस्थों का। इनके साधन पथ भी अलग २ हैं।

वस्तुतः हम आत्म दर्शन की युक्ति ही भूल गये हैं। बहुत दिनों से आत्म दर्शन नहीं हो पाया, द्रष्टि स्थूल हो गई है। और आज तो अनेक लोग कहते हैं। "परमात्मा का कोई अस्तित्व ही नहीं है "नास्ति"। यदि परमात्मा है तो दिखाओ। जो अणु से भी सूक्ष्म है उस परमात्म तत्व को जो स्थूल द्रष्टि से देखना चाहे उसे क्या कहें? उसका तो अनुभव ही किया जा सकता है।

सूक्ष्म को देखने के लिये स्वंय सूक्ष्म बनना पड़ेगा। सदा स्थूल स्तरों पर विचार करने, देखने सुनने और व्यवहार करने वाला मन यदि विचार के सूक्ष्म स्तरों को पार करके परा के क्षेत्र में पहुंच जाय जो विचारों का स्रोत है, तभी वह परम सूक्ष्म परमात्म तत्व का अनुभव कर सकता है।

मन को सरल स्वाभाविक रूप से अन्तमुर्खी बनाकर वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती के स्थूल, सूक्ष्म और सूक्ष्म तम स्तरों से पार करते हुए परा के क्षेत्र में-सत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित् आनन्द के क्षेत्र में भेजने की युक्ति महर्षि महेश योगी जी की कृपा से भावातीत ध्यान के रूप में उद्घाटित हुई है। इस अमूल्य उपलब्धि को महर्षि जी ने सारे संसार का बारह बार भ्रमण करके हर भाषा, धर्म और देश के लोगों में इतने निर्विवाद रुप से प्रतिष्ठित करा दिया है कि आश्चर्य तो होता ही है, गौरव भी होता है कि संसार आज फिर से भारत का जगदगुरुत्व स्वीकार कर रहा है।

हम अन्य बातों में वैज्ञानिक प्रतिभावान देशों से भले ही पीछे रहें पर आध्यात्मिक क्षेत्र में आज भी उनके मार्ग दर्शक हैं। हर देश के हर आयु के स्त्री, पुरुष, विद्यार्थी हजारों की संख्या में इस ध्यान शैली से लाभ उठा रहे हैं। उनके जीवन में अच्छे परिवर्तन हो रहे हैं।

भावातीत ध्यान की शिक्षा ध्यान विद्यापीठ, शंकराचार्य ऋषिकेश में प्रतिदिन दी जाती है। जिन स्थानों से कुछ लोग ध्यान सीखने की इच्छा सूचित करते हैं वहां कुछ दिनों के लिये ध्यान के शिक्षक भेज दिये जाते हैं।

अब आवश्यकता इस बात की है कि हम सब इस सरल ध्यान शैली से अधिकाधिक संख्या में लाभ उठायें और ध्यान के शिक्षक बनकर देश व समाज से दुख अशान्ति और मानसिक तनाव मिटाने में योग दें।

कृपया नगरपालिका को सहयोग प्रदान करें

नगरपालिका आपकी अपनी संस्था है और इसका प्रत्येक कार्य आपकी सुख सुविधा के लिए ही होता है और होता ही रहेगा। आप और हम सबको मिलकर इसकी रखवाली करनी है और इसके लिये यह आवश्यक है कि आप हमें निम्न सहयोग प्रदान करें। आप और हम में से प्रत्येक यदि कुछ साधारण बातों की ओर जरा सा ध्यान दे लें तो नगरवासियों को सुविधा मिलेगी।

घर तथा दुकानों आदि की सफाई के बाद कूड़ा करकट को इधर उधर और गलियों में न फेंक कर कूड़ा करकट डालने के निश्चित स्थान पर ही डालिये।

अपने मकान और परनालों पर कृपा करके डेगधुन का पाईप फिट करा दीजिये।

नगर, बाजार, सड़कें गलियों आदि सभी नागरिकों के सामूहिक उपयोग के लिए ही हैं तो फिर दुकानों के बाहर सामान फैलाने से सभी को असुविधा होगी। अत: कृपा करके सड़कों, बाजारों व गलियों आदि में सामान न फैलाइए।

गलियों या बाजारों के बिजली के बल्ब आपकी ही सम्पत्ति है उसकी रक्षा करना आपका कर्त्तव्य है किसी भी व्यक्ति को बल्ब चोरी न करने दें।

आपके बच्चों की पढ़ाई (शिक्षा) के लिये नगरपालिका की प्रा० पाठशालायें है वहां आपके बच्चों को नि: शुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है आप बच्चों को नगरपालिका के स्कूलों में भेजिए।

सड़ा गली गन्दी तथा मिलावट वाली चीज न बेचिए।

नगरपालिका के सभी टैक्स समय पर पालिका के कार्यालय में जमा कर दीजिये।

लाउड स्पीकर बगैर लाईसेन्स के न बजाइए।

भवन निर्माण हेतु नक्शे नगरपालिका में जमा करायें, तथा स्वीकृति के बगैर निर्माण न करें। यदि नक्शा जमा करने के। (१/२) माह बाद भी नक्शा न मिले तो अधोहस्ताक्षर कर्त्ता को सूचना दें। जो सज्जन बगैर पूर्व स्वीकृति के भवन निर्माण करायेगें उनके विरुद्ध वैधानिक कार्यवाही की जाएगी।

नगरनिवासियों को गणतन्त्र दिवस की शुभ कामनाओं सहित।

मंगल किरण जैन
अध्यक्ष
नगरपालिका, सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनकी आज जिले भर में भारी चर्चा है ।

आज समस्त जिले सहारनपुर में किसानों में दुकानों में मकानों में इधर और उधर ऊपर और नीचे सभी जगह चर्चा भी है और साथ २ गौरव भी जिले के तीन वरिष्ट अधिकारियों की ओर सभी नवयुवक वर्ग अपनी गम्भीर पैनी दृष्टि से आशा और विश्वास के साथ यह देखने में जुटा है कि ऐसे नव जवान अधिकारी आज तक इस जिले को प्राप्त नहीं हो सके थे जैसे कि उस महान शक्ति परमपिता परमात्मा ने इस जिले सहारनपुर को दिये जो अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं। जिनकी अवस्था भी बहुत थोड़ी ही प्रतीत होती है जिनके हाव भाव सोचने की शक्ति देखने की दृष्टि कहने की कला भी अपना अलग ही महत्व रखता है। जिनका तेज सत्यता और न्याय इस जिले की जनता जनार्दन पर छा गया है। जो दिन प्रतिदिन इस जिले को प्रगति के पथ पर पहुँचाने में अपनी ओर से तनिक भी विलम्ब नहीं करना चाहते हैं। यदि ऐसे नव जवान ईमानदार कर्मठ कुशल अधिकारियों के उचित मार्ग में स्वार्थी व्यक्तियों ने बाधकता का रोड़ा न डाला तो एक समय होगा कि वे अपने को त्याग एवं सत्यता के आधार पर और भी आगे ले जायेगें। वे हैं सम्माननीय जिलाधीश महोदय श्री पन्त जी २ वे है: एस० पी० महोदय श्री त्रिपाठी जी तथा वे हैं जिला गन्ना अधिकारी मिश्रा जी। मेरी उन तीनों अधिकारियों से भी निवेदन हैं कि वे अब और भी कुछ आगे बढ़कर कर सकने में सफल सिद्ध होंगे। ईश्वर उनके मार्ग में सहायक बने।

—सम्पादक

विशेष सूचना

जो सज्जन अस्तित्व में अपनी रचना, लेख, कहानियाँ भेजना उचित समझें वे शीघ्र भेजें उन्हें उनकी रचना आदि प्रकाशित होने के पश्चात् कोई धन आदि नहीं दिया जा सकेगा। रचना उनके हस्ताक्षरों द्वारा आनी चाहिए। कम से कम लिखने का कष्ट करें। पत्र में प्रकाशित न होने पर उन्हें उचित सूचना भी दी जा सकेगी। पत्र कई सौ विद्यालयों-ग्राम पंचायतों-पुस्तकालयों विकास क्षेत्रों सरकारी कार्यालयों तथा अनेकों ग्राहकों और देहातों को प्रतिमास भेजा जाता है। यदि किसी ग्राहक को मास के भितर पत्र की प्रति न प्राप्त हो तो वे मास की २९,३० दिनांक को हमें पोस्ट कार्ड लिखें जिससे कि दूसरी प्रति भेजी जा सके।

ग्राहकों से तथा विद्यालयों से

कृपया जिनका शुल्क छः रुपया अभी तक कार्यालय को नहीं पहुँचा उनसे विशेष निवेदन है कि वे एक सप्ताह के अन्दर २ भेजकर कृतार्थ करें। धन्यवाद !

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र के अतिरिक्त संरक्षक :

१. श्री सेठ पूरनचन्द साहनी मिल मालिक शूगर फैक्ट्री, देवबन्द, इकबालपुर (सहारनपुर)। २. श्री जगपालसिंह डायरेक्टर (केन) सुन्हैटी आलापुर (सहारनपुर)। ३. श्री प्रेमसिंह वर्मा, डी.एम.ई. (भारतीय सेना)। ४. श्री केहरसिंह प्रधान, भलसवागाज (सहारनपुर)। ५. श्री बलजीतसिंह ब्लाक प्रमुख रामपुर (सहारनपुर)। ६. श्री महेन्द्र प्रताप एडवोकेट, रुड़ी (सहारनपुर)। ७. श्री रामकिशन प्रधान, खानपुर (सहारनपुर)। ८. श्री विशालचन्द जैन भूतपूर्व आ० मजिस्ट्रेट, (सहारनपुर)।

विशेष सूचना

सभी ग्राहकों को यदि प्रति मास की प्रथम से आपकी अन्तिम दिनांक तक अस्तित्व डाक द्वारा नहीं पहुँचता तो कृपया एक पोस्ट कार्ड डालकर हमें शीघ्र सूचित करें अपने निकट के पोस्ट आफिस में पत्र को स्वयं खोजें।

—सम्पादक

शिक्षण सामग्री के विक्रेता

मानचित्र—संसार, भारत, उत्तर-प्रदेश आदि हर प्रकार की (टाट) पट्टी।

नवीन प्रकाशन
बड़तला यादगार,
सहारनपुर

गणतन्त्र दिवस पर
जय जवान जय किसान
इन्जीनियरिंग वर्क्स

पानी की दुनियां में तहलका !
सिंचाई में सर्वोत्तम, बनावट में सुदृढ़, कार्य में सर्वोपरि। किसान का सच्चा दोस्त और साथी

कौसर पम्पिंग सैट

उ० प्र० सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त। गन्ना फैडरेशन से अनुमोदित। हर मौसम में एक सा और बिना शिकायत चलता है इसके पंखे में ग्लैंड भरने का चक्कर नहीं। सभी को प्रभावित करने वाला उत्तम इन्जन।

विक्रेता:—
जय जवान जय किसान इन्जीनियरिंग वर्क्स
कोर्ट रोड, सहारनपुर (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० २०२१६/७०

एल०रजि० नं० १५५५

गणतन्त्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व पर,
राष्ट्र की समस्त जनता को बधाई ।

कागज के एक छोटे पुर्जे पर
महात्मा गाँधी ने आश्रम के
एक रोगी को रात में दो बजे
एक हिदायत लिखी थी ।
अब यह पुर्जा एक कीमती संस्मरण है !

विदेश के एक अज्ञात कवि
द्वारा लिखा एक पुर्जा मिला
उसके मरने के बरसों बाद,
वह उसी से अमर हो गया;
उस पर उसकी एक कविता लिखी थी ।

कागज के बिना न
शास्त्र मिलते न साहित्य ।
कागज हमारी सभ्यता की
एक पवित्र धरोहर है !

श्रेष्ठ स्वदेशी कागजों के निर्माता :

स्टार पेपर मिल्स लि०

सहारनपुर : उत्तर प्रदेश

मैनेजिंग एजेन्ट्स :
बाजोरिया एण्ड कम्पनी : २७, ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता-१

एस० आर० वर्मा के लिए अशोककुमार शर्मा द्वारा अशोक प्रिंटिंग प्रेस, सहारनपुर में मुद्रित, तथा प्रधान कार्यालय बोमनजी रोड, पुल दाल मण्डी, सहारनपुर से प्रकाशित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तित्व

सम्पादक : एस० आर० वर्मा — ★ — संयुक्त सम्पादक : के० पी० सिंह

"देश भक्त युवक समाज" का प्रबल समर्थक तथा युवावर्ग का पथप्रदर्शक

देश भक्ति ही सर्वोच्चच धर्म है !

वर्ष १ ★ अङ्कन् ४

हिन्दी-मासिक

मास दिसम्बर १९७०

मूल्य १ प्रति ४० पैसे

वार्षिक शुल्क ६ रु०

वर्ष में दो विशेषाङ्क सहित

संरक्षक :

बुद्धप्रकाश, डी. लिट्.

हिलमिल साथ चलो !

जीवन सुखद बनाना है तो तिल तिल आज जलो ।
भारत भव्य बनाना है तो हिलमिल साथ चलो ।।

युगों युगों से अंधियारों ने चिन्गारी ही बांटी हैं ।
मानवता ने दानवता की भीषण जेलें काटी हैं ।।
दीपक की बाती की लौ सम झिलमिल आज गलो ।
भारत भव्य बनाना है तो हिलमिल साथ चलो ।।

देवासुर संग्राम हमेशा से ही होता आया है ।
वर्ण-भेद काले-गोरे का कब किससे मिट पाया है ।।
सतयुग बनकर कलियुग की छाती पर मूंग दलो ।
भारत भव्य बनाना है तो हिलमिल साथ चलो ।।

कहने को तो सर्दी की होती हैं रातें बहुत बड़ी ।
पर कितनी मन-भावन है ऊषा की भी तो एक घड़ी ।।
उजियारों के आंचल में तुम सारी रात पलो ।
भारत भव्य बनाना है तो हिलमिल साथ चलो ।।

तारावलियों से नीलम की फुलवारी हंसती हैं ।
दीपावलियां एक रात भर अंधियारे डसती हैं ।
लम्बी उम्र चांद सी लेकर तम को आज खलो ।
भारत भव्य बनाना है तो हिलमिल साथ चलो ।।

❁ रामेश्वरदत्त शर्मा (सहारनपुर)

सह-सम्पादक : सत्यपाल मनोज
,, शिवचरणसिंह
,, चन्द्रपालसिंह

कृपया समस्त विद्यालय पत्र के ६) रु० भेजकर शीघ्र ग्राहक बनकर लाभ उठायें ।

प्रधान कार्यालय :
"अस्तित्व" बोमनजी रोड़,
पुल दालमण्डी, सहारनपुर
उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

युवक आगें बढ़ें !

युवक और युवतियाँ ही राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं । राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रीय एकता, देश का क्रान्तिकारी विकास, शिक्षा का आधुनिकीकरण, राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार, राष्ट्रीय शक्ति का उत्पादक उपयोग, इन सबका एक मात्र हल युवा पीढ़ी की शक्ति के उचित विकास, संरक्षण एवं उपयोग में निहित है ।

राष्ट्रीय जीवन में युवक तथा युवतियों का योगदान सदैव अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। स्वतन्त्रता संग्राम में युवकों तथा युवतियों ने ध्वज उठाकर 'इन्कलाब ज़िन्दाबाद' के गगन भेदी नारों से राष्ट्र को जागृत किया। गोलियों का प्रहार छाती पर सहकर भी वे आगे बढ़ते गये। जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, ऊंचनीच की भावनाओं से मुक्त युवक ने राष्ट्र का महान सैनिक बनकर राष्ट्र को एकता एवं अनुशासन की प्रेरणा दी। राष्ट्र के नेताओं को बल दिया, समर्थन दिया तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में महान योगदान दिया। देश भक्त युवकों तथा युवतियों की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की अनुपम कहानी हैं। उनके हृदय पवित्र थे, उनके लिये मन्दिर, मस्जिद में कोई अन्तर नहीं था। उनके लिये भगवान और खुदा एक ही था। वे आज़ाद हिंद सेना में एक साथ खाते थे, एक साथ रहते थे। उन्होंने एक साथ जोने और एक साथ मरने का पाठ सीखा था अपने प्रिय नेता से। उनका एक ही ध्येय था।

"देश के गौरव की रक्षा करना"

आज युवकों की शक्ति का दुरुपयोग किया जा रहा है। उनके सामने कोई आशा, उत्साह गति तथा लक्ष्य आज नहीं है। भविष्य की कल्पना बड़ी धूमिल है। दोष पूर्ण शिक्षा, फैशन, अनैतिक वातावरण, अन्धकारमय भविष्य एवं बेकारी का भूत उन्हें एक ऐसे जीवन की ओर प्रेरित कर देता है जो स्वतन्त्र देश के लिये एक भयानक अभिशाप है। एक ओर करोड़ों रुपयों की कागजी अनुत्पादक योजनाएँ, विदेशों का ऋण तथा ब्याज की वृद्धि, पशुओं को काट कर बेच कर विदेशी मुद्रा की वृद्धि, विशाल भवन, कारों. दावतों की भरमार, राजनीतिज्ञों के विशाल कृषि फार्म, ऊंचे-ऊंचे वेतन, भत्ते, बिदेशी शराब, ऐश्वर्य के प्रसाधन की वृद्धि है, तो दूसरी ओर करोड़ों नर-नारी २५ पैसे प्रतिदिन पर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। बेकारी से ग्रस्त युवक निराशा में डूबे हुए हैं। विवाह के योग्य युवतियाँ अपने अन्धकारमय भविष्य की ओर देख चुपचाप सब कुछ सहन करती हैं। बढ़ती मँहगाई और मकान के किराये नवयुवकों के विश्वास को तोड़ देते हैं।

विद्यार्थियों युवकों की विवशता का लाभ राजनैतिक दल तथा दूसरे स्वार्थी नेता एवं सङ्गठन उठाने का प्रयत्न करते हैं। आज तरह २ की सेनाएं खड़ी की जा रही हैं। युवकों को आन्दोलन तथा चन्दा एकत्र करने में लगा कर सङ्गठनों का विकास किया जाता है। विद्यार्थियों तथा युवक का बहुत-सा बहुमूल्य समय जो कि उनके प्रशिक्षण का समय है, नष्ट किया जाता है।

देश भक्त युवक समाज युवकों का समय तथा शक्ति किसी प्रकार भी दुरुपयोग करने का हामी नहीं है। केवल उनके विकास की योजनाओं में ही उनका सहयोग मांगता है। युवकों तथा विद्यार्थियों की बेरोजगारी, प्रशिक्षण की समस्या राष्ट्रीय रक्षा तथा भूमि की समस्या वन, तथा पशुओं का विकास इन सबको देश भक्त युवक समाज ने एक ही योजना द्वारा हल करने की बात रखी है।

युवकों तथा युवतियों को जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, भाषा क्षेत्र तथा राजनैतिक दलों की सङ्कीर्णता से ऊपर उठाकर उनमें राष्ट्रीयता की सृजनात्मक क्रान्तिकारी भावना का विकास करना एवं उनको देश के भावी निस्वार्थ नेतृत्व के लिए तैयार करना ही देश भक्त युवक समाज का महान लक्ष्य है।

युवकों को शक्तिशाली बनना है तभी वह अपनी व राष्ट्र की समस्याएँ हल कर पायेंगे। उन्हें कृत्रिम भोजन, तम्बाकू, माँस, चाय, मदिरा से बचकर स्वस्थ शरीर तथा उज्ज्वल चरित्र का निर्माण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम विद्यापीठ : एक परिचय तथा अपील !

स्थान:—देवबन्द-मंगलौर सड़क के मध्य में स्थित गोकुलपुर ग्राम से पूर्व खाले के किनारे ग्राम विद्यापीठ सरस्वती नगर सहारनपुर। * वह केवल जिले व प्रांत विशेष की सस्था नहीं है बल्कि सम्पूर्ण विश्व की संस्था है।

स्थापना का कारण:—वर्तमान शिक्षा पद्धति में अभारतीयता, सिद्धांत और व्यवहार का असामंजस्य, वैज्ञानिक युग की प्रतिकूलता आदि तत्व विद्यमान हैं, जिसमें जीवन और शिक्षा एक दूसरे से निरंतर दूर होती चली जा रही हैं। अपनी सांस्क्रातिक पृष्टभूमि—आध्यात्मिकता के अभाव में अनुशासनहीनता तथा अनैतिकता का साम्राज्य चारों ओर फैला हुआ है। इस नाशकारी युग में विश्व अपने कल्याण के लिये भारत की ओर टकटकी लगाये देख रहा है और भारत अपना आत्म-बोध स्वयं भूलता-सा जा रहा है। अपनी संस्कृति के सरल सुगंधित आलोकमय जीवन को भूल, पाश्चात्य चमक-दमक की ओर आँख गड़ाये उसी की ओर गतिमान है। इस पृष्ठभूमि में वह स्वयं गर्त में जायेगा और विश्व को मार्गदर्शन करने से वंचित रह जायेगा, जो गुरुतर कार्य सदियों से सम्हाला है।

आज शिक्षा का केंद्र वास्तविक जीवन, गाँव के वातावरण, से हटकर शहर बन गया है, जहाँ शिक्षा बहुत महँगी पड़ रही है। शुद्ध हवा, पानी, रोशनी, आवास, भोजन आदि तत्वों का पूर्णतया अभाव तथा प्रतिकूल स्वरूप में उपलब्ध होते हैं, विविध असामंजस्यपूर्ण कोलाहल, चिमनी के धुएँ, सवारियों के भोंपू आदि मधुमक्खी की तरह भनभनाहट में शिक्षक और छात्र का ध्यान अपने कार्य में कहाँ तक केन्द्रित होना सम्भव है। ध्यान का विकेन्द्रीकरण पूर्णतया असफलता का द्योतक है। इन्हीं कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए इस संस्था की स्थापना ग्रामीण वातावरण में की जा रही है, जिसका सामान्यतया उद्देश्य निम्नलिखित है :—

उद्देश्य :—

१—बच्चों को आधुनिक, राष्ट्रीय ढंग से आवश्यक विद्याओं की उच्चतम शिक्षा देना।

२—व्यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास करना।

३—शिक्षा का माध्यम यथासम्भव राष्ट्र-भाषा हिन्दी होगी।

४—बच्चों को एक आदर्श नागरिक रूप में लाने का सफल प्रयास करना. जिससे प्राचीन तथा आधुनिक सभ्यता की साहित्यिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक गतिविधियों के बारे में पूर्णतया जानकारी हो, जो राष्ट्र तथा विश्व की प्रगति तथा कल्याण में उच्चतम योगदान दे सके।

५—गाँवों को शिक्षा तथा आकर्षण का केंद्र बनाना।

६—समस्त प्राचीन भारतीय ज्ञान-प्रकाश को विश्व में फैलाना तथा उसके द्वारा विश्व को सुख-शांति प्रदान करना।

अनिवार्य शिक्षा :—

१—संस्कृति का सैद्धांतिक तथा वैज्ञानिक प्रशिक्षण।

२—व्यावसायिक प्रशिक्षण।

३—व्यावहारिक, नैतिक प्रशिक्षण।

४—स्वास्थ्य, आत्म-रक्षा, राष्ट्र-सेवा, विश्व-बंधुत्व सम्बन्धी प्रशिक्षण।

५—आध्यात्मिक-प्रशिक्षण।

सदस्यता :—इसके सदस्य वे सभी स्त्री-पुरुष हो सकते हैं जो इसके उद्देश्य से पूर्णतया सहमत हो और तन-मन-धन से क्रियातमक यथा साध्य योगदान कर सकें। सदस्य तीन प्रकार के हो सकते हैं :—

(१) सरक्षक दस हज़ार रुपया या अधिक एक बार देने वाला।

(२) १० (दस रुपये) मासिक देने वाले भी साधारण सदस्य माने जावेंगे।

(१) **आजीवन:**—जो १६ बीघा भूमि या १ हज़ार रुपये या अधिक रुपया एक साथ प्रारम्भ में देंगे।

(२) **सामादृत :**—जो विशेष सद्‌गुणों के कारण सदस्य बनाये जायेंगे वे निःशुल्क होंगे।

(३) **ग्राम-प्रतिनिधि :**— जो गाँव २०० बीघा भूमि या १० हजार रुपये का दान करेगा उसे चुनकर अपना एक प्रतिनिधि, सदस्य के रूप में भेजने का अधिकार होगा।

संस्थापक :—डा० शांति प्रकाश आत्रेय एम. ए., पी-एच डी., व्यायाम

* इस स्थान का जलवायु अति उत्तम तथा स्वास्थ्यवर्द्धक है। इसी कारण संस्था (विश्वविद्यालय) के लिये इस स्थान को चुना गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशरी, रुस्तमे-उत्तर-प्रदेश इसके संस्थापक हैं। कमेटी के द्वारा वे ही इस संस्था के संचालक नियुक्त किये गये हैं।

उपलब्धि :—अभी तक ४।। सौ बीघे जमीन की रजिस्ट्री हो चुकी है तथा आवश्यकतानुसार, हज़ारों बीघा ज़मीन जनता इस कार्य के लिये दान देने को तैयार है। स्थान के आस-पासवाले सभी गाँवों ने प्रति बीघे २ रु० चन्दा प्रारम्भिक अनुदान के रूप में बड़े उत्साह और लगन से देना प्रारम्भ कर दिया है। नौकरी देने वालों ने भी एक-एक माह का वेतन प्रारम्भिक अनुदान के रूप में देना स्वीकार कर लिया है। यहाँ तक कि मज़दूर वर्ग में भी बहुत उत्साह है तथा वे यथासाध्य श्रम-दान करने को प्रस्तुत हैं। मकान बनाने वाले कारीगर, बढ़ई, लोहार आदि भी श्रम-दान के रूप में सहयोग दे रहे हैं। सभी कर्मचारी-गण भी इस कार्य में पूरा-पूरा सहयोग दे रहे हैं। प्रत्येक ग्राम अपनी शक्ति के अनुसार भवन-निर्माण में पूरा-पूरा योगदान कर रहा है। सभी गांव एक-एक व्याख्यान भवन बनवा रहे हैं। इसमें कोई पीछे नहीं रहेगा।

निर्माण कार्य

१. कला महाविद्यालय। २. विज्ञान महाविद्यालय। ३. तन्त्र-योग महाविद्यालय। ४, महिला महाविद्यालय। ५. संस्कृत महाविद्यालय। ६. व्यायाम महाविद्यालय। ७ आयुर्वेदिक महाविद्यालय। ८. तकनीकी महाविद्यालय। ९. कृषि महाविद्यालय। १०. केन्द्रीय पुस्तकालय। ११. कार्यालय। १२. प्रेस। १३. छात्रावास(सात)। १४. निवास स्थान (१००)। १५. नल-कूप(५). एवं जलवितरण। १६. सत्संग एवं व्याख्यान-भवन। १७. खेलने के मैदान तथा उसके देखने का स्थान। १८. मन्दिर। १९. योगाभ्यास केन्द्र। २० वेद मन्दिर। २१. औद्योगिक केन्द्र।

अपील

जनता से प्रार्थना एवं अपील है कि इस महान एवं पवित्र यज्ञ में श्रद्धा-पूर्वक यथा-शक्ति अपना-अपना योगदान करें। किसानों से भी निवेदन है कि वे २) प्रति बीघा तथा मिल में १२ नये पैसे प्रति मन अथवा ३० नये पैसे प्रति क्विंटल की कटौती "ग्राम विद्यापीठ" सरस्वती नगर के नाम से कटवायें। जिनका गन्ना मिल में नहीं जाता वे एक भेली गुड़ व २।। किलों मीठा प्रति जुड़ावड़ा "ग्राम-विद्यापीठ" का भाग अलग निकालने का कष्ट करें। माताओं तथा बहनों से प्रार्थना है कि वे अपने घरों में घड़े रख लें जिसमें प्रतिदिन नियमित रूप से एक मुट्ठी अन्न "ग्राम-विद्यापीठ" के नाम से डालती रहें। नौकरी करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपना—अपना एक माह का वेतन "ग्राम—विद्यापीठ" के अनुदान के रूप में भेजता रहे। हर मजदूर किसी भी प्रकार अपनी आठ दिन की मज़दूरी दे। जनता में जो व्यक्ति जिस प्रकार की सहायता "ग्राम—विद्यापीठ" की कर सकें अवश्य करें तथा अपने अन्य मित्रों को करने के लिए बाध्य करें। जनता जनार्दन ही अगर चाहेगी तो यह संस्था विश्व में अपना उच्च स्थान प्राप्त कर लेगी।

दुकानदार, डॉक्टर, वकील तथा वैद्य लोग अपने—अपने यहाँ ताला बन्द डिब्बे "ग्राम—विद्यापीठ" के लिये रख लें। उसमें प्रत्येक व्यक्ति से तथा स्वयं यथा—शक्ति धन डालते रहें। माह के अंत में उस डिब्बे को "ग्राम—विद्यापीठ" भिजवा दें। मंडी में आढ़तों पर एक पैसा रुपया "ग्राम—विद्यापीठ" के नाम से काटना शुरू कर दें। भट्टे वाले, क्रेशर वाले तथा व्यापारी अपनी शक्ति के अनुसार दान अवश्य दें। बस और ट्रक वालों को भी पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिये। प्रति ट्रिप २) फी बस तथा ट्रक वालों से माँग है। जनता से माँग है कि विवाह, पुत्र-जन्म तथा अन्य खुशी के अवसरों पर "ग्राम-विद्या-पीठ" सरस्वती नगर के लिये यथा-शक्ति दान दें तथा दूसरों से दिलवायें। दान द्वारा बने हुए व्याख्यान भवन, निवास स्थान आदि पर दान देने वाले गाँवों व व्यक्तियों के नाम के पत्थर लगेंगे। जो व्यक्ति भूमिदान करेंगे उन के भी नाम के पत्थर लिखे जावेंगे। पहलवानों तथा व्यायाम कर्मियों से अनुरोध है कि व्यायाम महाविद्यालय को अपने अनुदान से खड़ा करें तथा उसे चलाएँ। विद्यार्थियों, नवयुवकों से पूर्ण आशा ही नहीं अपितु दृढ़ विश्वास है कि वे स्वय चन्दा माँग कर कम से कम एक विद्यालय भवन छात्रावास का निर्माण करवायेंगे। माताओं तथा बहनों से प्रार्थना है कि वे भी अपने अनुदान से "महिला महाविद्यालय" को स्थापना कर उसे चलाएँ। संगठित मज़दूर वर्ग से प्रार्थना है कि वह मिलकर संगठित रूप से एक महाविद्यालय तथा एक छात्रावास बनवाएँ। ठेकेदारों को भी इसमें हर प्रकार कार का सहयोग देना चाहिये। मुझे पूर्ण विश्वास है कि राजा, मिल मालिक तथा रईस लोग भी सहायता देने में कोई कसर न उठा रक्खेंगे तथा अपने-अपने नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की निशानी इस संस्था "ग्राम-विद्यापीठ" में सबकी याद के लिये छोड़ जायेंगे। किसी-न-किसी भवन पर अपना नाम व अपने बड़ों का नाम अवश्य लिखा जायेंगे। प्रत्येक किसान अन्न दान अवश्य करें।

मेरी यही अन्तिम प्रार्थना है कि दुनिया का हर व्यक्ति इसे अपनी संस्था समझेगा और इसके लिये पूरा-पूरा प्रयत्न करेगा। जो कुछ भी देना हो तो वह सीधे "ग्राम-विद्यापीठ" को ही दें व भेजें। जिनकी रसीद उन्हें प्राप्त होगी।

छात्रों एवं छात्राओं से ग्राम विद्यापीठ की अपील

भारतवर्ष को स्वतन्त्र बनाने में छात्राओं का बहुत बड़ा हाथ था। सन् १९४२ का आन्दोलन भारतवर्ष के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखता है, यह सर्व विदित है। विद्यार्थियों के योगदान को कोई भी राष्ट्र भूल नहीं सकता। आप तो शक्ति का भण्डार हैं। आपको तो केवल लगने की देरी है। काम हुआ रक्खा है। आप शक्ति भण्डार से ग्राम विद्यापीठ की भी प्रार्थनापूर्ण याचना है कि एक बार भीम गर्जन के साथ इस विश्व को ज्ञान प्रकाश देने वाले विश्वविद्यालय के निर्माण एवं विकास में जुट जाएँ। आपकी अपार शक्ति के सामने कुछ भी असम्भव नहीं है आप सँगठित रूप से सब कुछ करने में समर्थ हैं हम आपकी शक्ति से परिचित हैं। आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी सम्पूर्ण शक्ति इधर लगा दें, जिससे भारतवर्ष प्राचीन भारतवर्ष की तरह जगमगा उठे तथा विद्यार्थियों का योगदान शिक्षा के इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना ले। छात्रों एवं छात्राओं, आप अपनी शक्ति को पहचानो। आपके सामने ऐसे-ऐसे सौ विश्वविद्यालयों का निर्माण भी कुछ नहीं है। अब समय पुकार रहा है, आप जागो! बिना आपके जागे मानव समाज का कष्ट दूर नहीं होगा, शिक्षा में परिवर्तन नहीं होगा। शिक्षा में परिवर्तन किये बग़ैर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं होगा। व्यक्तित्व का एकाँगी विकास हमारे पतन एवँ कष्ट का कारण है। हमारी शिक्षा का ध्येय व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है। इस विश्व-विद्यालय का यह भी एक मुख्य उद्देश्य है कि यहां से निकले स्नातक पूर्ण विकसित व्यक्तित्व वाले हों। उन्हें कहीं भी, किसी भी क्षेत्र में कार्य करने व खड़े होने में अपने भीतर कमी प्रतीत न हो। आज की शिक्षा अधूरी है; वह हमें मनुष्य भी नहीं बनाती। अतः आप लोग आगे आओ और इसका भार अपने कन्धों पर सम्भालो। इसको सफल बनाने का बीड़ा उठा कर मानव समाज को सुख और शांत प्रदान करो।

१. ग्राम विद्यापीठ का प्रचार करें प्रत्येक व्यक्ति के कान तक इसकी आवाज पहुंचा दें तथा इसकी चाह सेवकों के दिलों मे पैदा कर दें। सब तरफ इसकी आवाज़ गुँजा कर लोगों में इसके लिए धुन पैदा कर दें।

२. अपने १ माह के सिनेमा आदि खच को बचा कर ग्राम विद्यापीठ को दें। ऐसे कार्यों के लिये त्याग करना ही पड़ता है।

३. सङ्गठित होकर आप लोग १ माह विद्यालय तथा छात्रावास को स्वयं चन्दा माँग-माँगकर बनवाएँ उस पर छात्रों के नाम का पत्थर लगेगा।

४. जिस गाँव-शहर में पढ़ते हों, जिस गाँव-शहर के रहने वाले हों, वहाँ के रहने वालों को इस सँस्था को सहायता देने के लिये बाध्य करें।

५. अपनी माताओं व बहनों से ग्राम विद्यापीठ को भिक्षा अन्न देने के लिये घरों में घड़े रखवाएँ।

६. माताओं और बहनों को हर त्यौहार, खुशी के अवसरों आदि पर ग्राम विद्यापीठ का हिस्सा, यथा-शक्ति निकालने को बाध्य करें।

७. घर में भगवान से इसके लिये नित्य प्रार्थना करें तथा करवाएं मनौतियाँ मनवाएँ।

८. गुरुजनों को ग्राम-विद्यापीठ के लिये सम्पूर्ण सहयोग तथा हर प्रकार की सहायता के लिये प्रार्थना द्वारा बाध्य करें।

९. दुकानदारों को धर्मार्थ विद्यापीठ के लिये नित्य कुछ-न-कुछ निकालने के लिये बाध्य करें।

१०. किसानों से मिलों में ग्राम-विद्यापीठ के लिये कटौती कटवाएँ। मीटिंग करके उनको ऐसा करने के लिये समझा कर बाध्य करें। जहाँ मिलों में गन्ना नहीं जाता हो वहाँ गुड़ निकलवाएँ।

११. सङ्गठित होकर ५ लड़कों का एक ग्रुप अपनी ड्यूटी मिलों, क्रेशरों, चक्कियों, कांटों व भट्ठों पर लगवाएँ जिससे उस ग्रुप की बारी १ महीने में आए, वह ग्रुप कम-से-कम ५ गन्ने व २० ईंटें प्रति गाड़ी माँगे और उन्हें वहाँ बेच कर उसकी कीमत ग्राम-विद्यापीठ सरस्वती नगर को भेज दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२. छुट्टियों में हर प्रकार से पूरी-पूरी सहायता करें। मज़दूर, कारीगर आदि को इसके लिये जगाएँ तथा जनता को इस संस्था का सदस्य बनने की प्रार्थना करें।

माताओं तथा बहनों से ग्राम-विद्यापीठ की अपील—

माताओं तथा बहनों ने जितनी कुर्बानियाँ की हैं तथा देश एवं समाज के लिये जो कुछ किया है वह किसी से छिपा नहीं है। इतिहास इसका साक्षी है। किसी भी राष्ट्र के उत्थान में सर्वोपरि हाथ हमारी माताओं और बहनों का रहा है। यह शक्ति-रूपा है। इनके आगे कुछ भी असम्भव नहीं है, इसी आशा पर हमने इस महान यज्ञ को लिया है। भारतीय सँस्कृति तथा भारतीय प्राचीन समस्त विद्याओं को जीवित रखने के लिये एक ऐसे विश्व-विद्यालय की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है। भारतवर्ष, जिसने सदैव विश्व को प्रकाश दिया आज भी उसे अपने उस स्थान से पतित नहीं होना चाहिये। भारतीय नारी का योगदान विश्वविख्यात है वे समाज हित और अपने राष्ट्र के लिये न्यौछावर होना जानती हैं। उन्हीं माताओं और बहनों की शरण हमने भी ली है। हमें पूर्ण आशा है कि हम भिखारियों को हताश न करके अपने यज्ञ को उज्ज्वल बनायेंगी।

१. वे रोज ही सेरों अन्न भिखारियों को देती हैं। अतः हम भिखारियों को, जिन्होंने उनके लालों को महान बनाने का बीड़ा उठाया है। प्रतिदिन बिना नागा कम-से-कम एक मुट्ठी अन्न देने के लिये एक अलग घड़े में डालती रहें; उसके भरने पर बोरियों में डाल दें। इस प्रकार प्रति माह अपने गाँव के रजिस्टर पर लिख कर ग्राम-विद्यापीठ भिजवाने का कष्ट करें।

२. प्रत्येक गाँव की महिलाएँ अपने पास से परस्पर धन इकठ्ठा कर किसी एक भवन को बनवाने की कृपा करें।

३. ग्राम विद्यापीठ की अधिकतम सहायता करने के लिए पुरुषों को प्रोत्साहित करती रहें।

४. बालकों में उचित शिक्षा के प्रति भावना उत्पन्न करती रहें।

५. हर त्यौहार आदि पर ग्राम विद्यापीठ का हिस्सा अवश्य निकलवायें।

६. ग्राम विद्यापीठ को अपना ऐसा तीर्थ स्थान समझें जिससे सारे विश्व को प्रकाश मिलकर सच्चे जीवन का आनन्द प्राप्त हो। सबको सुख शांति प्राप्त हो।

७ अपने बच्चों के लिये ग्राम विद्यापीठ के लिये भगवान से प्रार्थना करें। जिस देवता को मानती हों उसकी पूजा इसके लिये करें। कथा आदि कराने की मनौतियाँ वहीं करें।

८. अपने बच्चों को ग्राम विद्या-पीठ के लिये धन आदि माँग-माँग कर उसको बनाने तथा विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

व्यापारी वर्ग से ग्राम विद्यापीठ की अपील—

भारतीय वैश्य समुदाय का हाथ भारत को महान बनाने में सदा से रहा है। हमारे समाज में इनका कार्य निश्चित है। इनका धर्म ही धनोपार्जन है। इन्होंने धन को सदैव समाज की धरोहर समझा है। इसके सहयोग से ही भारतीय सँस्थाएँ तथा करीब-करीब सम्पूर्ण समाज के कार्य चल रहे हैं। भारतीय विद्याओं एवं सँस्कृति को कायम रखने वाली सँस्था ग्राम विद्यापीठ की भी प्रार्थना पूर्ण याचना है कि हमारा धनिक वर्ग इस विश्वविद्यालय के निर्माण एवं विकास में अपना पूर्ण सहयोगी है, तथा वह इसके लिये अपनी जान लगा दें।

ग्राम विद्यापीठ की जनता से प्राप्त धन

१. ग्राम समाज सुसाड़ा (खुर्द) ने २८० बीघा जमीन ग्राम विद्यापीठ को दान दी जिसके लिये ग्राम विद्यापीठ ही नहीं सम्पूर्ण भारत वर्ष उनका आभारी है।

२. ग्राम साधारणपुर ने २०० बीघे जमीन का दान देने का वचन दिया है। जिस में से कुछ व्यक्तियों ने अपने वचनानुसार भूमि की रजिस्ट्री करवा दी है। जो कि ७० बीघा है। आशा है कि बाकी लोग भी शीघ्र ही रजिस्ट्री करावेंगे।

३. रणसुरा ग्राम के व्यक्तियों ने भी भूमिदान का वचन दिया है तथा १८००० रुपये का दान देने का वचन दिया है। जिसमें से ५००० रुपये उन्होंने मकान के लिये अभी तक दिये। जिस के लिए संस्था उनकी वहुत आभारी है।

४. ग्राम बन्दरजुड़ा ने २ रुपये बीघा के हिसाब से दान देने का वचन दिया है तथा अभी तक लगभग ३००० रुपये दे चुके हैं। उनके लिये संस्था अपना आभार प्रकट करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

रेलवे स्टेशन चुड़ियाला और इकबालपुर के मध्य एक रेलवे हाल्ट का होना वहाँ की जनता के विचारानुकूल अनिवार्य समझा जा रहा है। जब कि उससे कम अन्तर पर कई एक हाल्ट बने हुए हैं। इस इलाके के छात्रों को तो विशेष कठिनाई है रेलवे विभाग तुरन्त इस ओर ध्यान दे तथा जनता की कठिनाई को पूरा करे। जबकि इलाके की जनता रेलवे को लाभ होने का विश्वास दिलाती है।

पत्र की विज्ञापन दरें

अन्तिम पृष्ठ	(बाह्य भाग)	१२५) रु०
,, ,,	(आधा भाग)	११२) रु०
अन्तिम पृष्ठ	(भीतरी भाग)	१००) रु०
,, ,,	(भीतरी आधा)	५०) रु०
अन्तिम से तृतीय पृष्ठ		१००) रु०
,, ,, ,,	आधा भाग	५०) रु०

इन्हीं दरों के अनुपात से कम से कम ⅓ भाग भी विज्ञापन के रूप में छप सकेगा। इच्छुकगण अपने विज्ञापन पत्र में देकर लाभ उठाएँ। —सम्पादक

— विशेष सूचना —

आज देश की जो आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थिति चल रही है, इन सबको ध्यान में रखते हुए पँजाब सरकार ने पत्रकारों को अपने प्रदेश में तीन विशेष सुविधायें उपलब्ध कराई हैं। १. सभी पत्रकारों के बच्चों की निःशुल्क शिक्षा। २. पत्रकारों को निःशुल्क आवास। ३, निःशुल्क यात्रा।

अब आवश्यक है कि उ. प्र. के समस्त पत्रकारों को भी उपरोक्त सुविधायें उ. प्र. सरकार सुलभ करे।

पत्र के अतिरिक्त संरक्षक :

१. श्री सेठ पूरनचन्द साँहनी मिल मालिक शुगर फैक्ट्री, देवबन्द, इकबालपुर (सहारनपुर)। २. श्री जगपाल सिंह डायरेक्टर (केन) सुन्हैटी आलापुर (सहारनपुर)। ३. श्री प्रेमसिंह वर्मा, डी. एम. ई. (भारतीय सेना)। ४. श्री केहरसिंह प्रधान, भलसवागाज (सहारनपुर)। ५. श्री बलजीतसिंह ब्लाक प्रमुख रामपुर (सहारनपुर)। ६. श्री महेन्द्र प्रताप एडवोकेट, रुड़की (सहारनपुर)। ७. श्री रामकिशन प्रधान, खानपुर (सहारनपुर)।

* शुभ - सूचना *

रायबहादुर नारायणसिंह शुगर मिल्स प्रा. लि.

लकसर (सहारनपुर)

समस्त किसान वर्ग, कर्मचारी वर्ग तथा अन्य सब को सूचित किया जाता है कि १९७०-७१ के सीजन के लिये लक्सर मिल ७ दिसम्बर १९७० से गन्ने की पिराई शुरू करेगी।

निरन्जन सिंह
वर्क्स मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ १४ का शेष)

को तभी तक चाहता है जब तक वह चैतन्य आत्मा है। उसके बिना कोई नही पूछता। जो इसको जानने लगे हैं वे आत्मा का ज्ञान जान रहे हैं, वे सत्य जान रहे हैं, वे न्याय समझ रहे हैं। जहां भौतिक ज्ञान अपने लिये सुख चाहता है वहां आत्मज्ञान पराया सुख चाहता है। पराये सुख में जो सुख अपने को मिलता है वह बड़ा विचित्र सुख है। देखा है पुत्र जब किलकारी मारता है, तो माता का हृदय आनन्द से भर जाता है। व्यक्ति जब पर सुख से सुखी होने लगता है तब सामाजिक न्याय के लिए अधिक विवाद नहीं करना पड़ता यह सब तभी होता है जब हम आत्मा का ज्ञान जानने लगते हैं और उस सत्य के प्रकाश में पहुंचते हैं जहां सब एक है, जहां सम रसता है। इसलिए हम सबको सत्य, प्रेम, न्याय की ओर अग्रसर होकर जीवन का आधार आध्यात्मिकता को बनाना चाहिए। इसी मार्ग से सर्व श्रेष्ठ आनन्द प्राप्त होगा और शान्ति मिलेगी।

पचास वर्षों के अनुभव से निर्मित :

सर्वे यंत्रों के लिये एक मात्र स्थान

नेशनल इम्पोरियम

१७, सिविल लाइन्स, रुड़की
दूरभाष : २४७

आशा और विश्वास के साथ उचित मूल्य पर
विज्ञान संबंधी समस्त उपकरण एवं कैमिकल्स
खरीदने के लिये पधारें !

मै० हर्बल ड्रग हाऊस साईंस सप्लाईज़ कार्पोरेशन

निकट जैन अस्पताल, सहारनपुर दूरभाष : ३८६५

गर्मी, सर्दी, अग्नि तथा वर्षा से सुरक्षा के लिये

'चार मीनार'

सिमेन्ट की नालीदार चादरें ही लगाएँ !

अधिकृत एजेन्ट : चमन लाल जैन एण्ड संस

सहारनपुर : फोन - ४८८०

एस० आर० वर्मा द्वारा विकास प्रिंटिंग वर्क्स, सहारनपुर में मुद्रित तथा प्रधान कार्यालय बोमन्जी रोड, पुल दालमण्डी, सहारनपुर से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राष्ट्रीयता, नैतिकता, देशभक्ति एवं विशुद्ध समाजवादी विचारधारा का दिशा बोधक !

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तित्व

सम्पादक : एस० आर० वर्मा — ★ — संयुक्त सम्पादक : के० पी० सिंह

"देश भक्त युवक समाज" का
सबल समर्थक तथा युवावर्ग का पथप्रदर्शक

●

देश भक्ति ही सर्वोच्च धर्म है !

●

वर्ष १ ★ अङ्क ४

●

हिन्दी-मासिक

मास दिसम्बर १९७०

●

मूल्य १ प्रति ४० पैसे
वार्षिक शुल्क ६ रु०

●

वर्ष में दो विशेषाङ्क सहित

●

संरक्षक :
बुद्धप्रकाश, डी. लिट्.

●

हिलमिल साथ चलो !

जीवन सुखद बनाना हं तो तिल तिल आज जलो ।
भारत भव्य बनाना है तो हिलमिल साथ चलो ॥

युगों युगों से अंधियारों ने चिन्गारी ही बांटी हैं ।
मानवता ने दानवता की भीषण जेलें काटी हैं ॥
दीपक की बाती की लौ सम झिलमिल आज गलो ।
भारत भव्य बनाना है तो हिलमिल साथ चलो ॥

देवासुर संग्राम हमेशा से ही होता आया है ।
वर्ण-भेद काले-गोरे का कब किससे मिट पाया है ॥
सतयुग बनकर कलियुग की छाती पर मूंग दलो ।
भारत भव्य बनाना है तो हिलमिल साथ चलो ॥

कहने को तो सर्दी की होती हैं रातें बहुत बड़ी ।
पर कितनी मन-भावन है ऊषा की भी तो एक घड़ी ॥
उजियारों के आंचल में तुम सारी रात पलो ।
भारत भव्य बनाना है तो हिलमिल साथ चलो ॥

तारावलियों से नीलम की फुलवारी हंसती हैं ।
दीपावलियां एक रात भर अंधियारे डसती हैं ।
लम्बी उम्र चांद सी लेकर तम को आज खलो ।
भारत भव्य बनाना है तो हिलमिल साथ चलो ॥

⊕ रामेश्वरदत्त शर्मा (सहारनपुर)

सह-सम्पादक : सत्यपाल मनोज
" शिवचरणसिह
" चन्द्रपालसिह

कृपया समस्त विद्यालय पत्र के ६) रु० भेजकर शीघ्र ग्राहक बनकर लाभ उठायें ।

प्रधान कार्यालय :
"अस्तित्व" बोमनजी रोड़,
पुल दालमण्डी, सहारनपुर
उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

युवक आगे बढ़ें !

युवक और युवतियाँ ही राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं । राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रीय एकता, देश का क्रान्तिकारी विकास, शिक्षा का आधुनिकीकरण, राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार, राष्ट्रीय शक्ति का उत्पादक उपयोग, इन सबका एक मात्र हल युवा पीढ़ी की शक्ति के उचित विकास, संरक्षण एवं उपयोग में निहित है ।

राष्ट्रीय जीवन में युवक तथा युवतियों का योगदान सदैव अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है । स्वतन्त्रता संग्राम में युवकों तथा युवतियों ने ध्वज उठाकर 'इन्कलाब ज़िन्दाबाद' के गगन भेदी नारों से राष्ट्र को जागृत किया । गोलियों का प्रहार छाती पर सहकर भी वे आगे बढ़ते गये । जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, ऊंचनीच की भावनाओं से मुक्त युवक ने राष्ट्र का महान सैनिक बनकर राष्ट्र को एकता एवं अनुशासन की प्रेरणा दी । राष्ट्र के नेताओं को बल दिया, समर्थन दिया तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में महान योगदान दिया । देश भक्त युवकों तथा युवतियों की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की अनुपम कहानी हैं । उनके हृदय पवित्र थे, उनके लिये मन्दिर, मस्जिद में कोई अन्तर नहीं था । उनके लिये भगवान और खुदा एक ही था । वे आजाद हिंद सेना में एक साथ खाते थे, एक साथ रहते थे । उन्होंने एक साथ जीने और एक साथ मरने का पाठ सीखा था अपने प्रिय नेता से । उनका एक ही ध्येय था ।

"देश के गौरव की रक्षा करना"

आज युवकों की शक्ति का दुरुपयोग किया जा रहा है । उनके सामने कोई आशा, उत्साह गति तथा लक्ष्य आज नहीं है । भविष्य की कल्पना बड़ी धूमिल है । दोष पूर्ण शिक्षा, फैशन, अनैतिक वातावरण, अन्धकारमय भविष्य एवं बेकारी का भूत उन्हें एक ऐसे जीवन की ओर प्रेरित कर देता है जो स्वतन्त्र देश के लिये एक भयानक अभिशाप है । एक ओर करोड़ों रुपयों की कागजी अनुत्पादक योजनाएँ, विदेशों का ऋण तथा ब्याज की वृद्धि, पशुओं को काट कर बेच कर विदेशी मुद्रा की वृद्धि, विशाल भवन, कारें. दावतों की भरमार, राजनीतिज्ञों के विशाल कृषि फार्म, ऊंचे-ऊंचे वेतन, भत्ते. बिदेशी शराब, ऐश्वर्य के प्रसाधन की वृद्धि है, तो दूसरी ओर करोड़ों नर-नारी २५ पैसे प्रतिदिन पर जीवन व्यतीत कर रहे हैं । बेकारी से ग्रस्त युवक निराशा में डूबे हुए हैं । विवाह के योग्य युवतियाँ अपने अन्धकारमय भविष्य की ओर देख चुपचाप सब कुछ सहन करती हैं । बढ़ती मँहगाई और मकान के किराये नवयुवकों के विश्वास को तोड़ देते हैं ।

विद्यार्थियों युवकों की विवशता का लाभ राजनैतिक दल तथा दूसरे स्वार्थी नेता एवं सङ्गठन उठाने का प्रयत्न करते हैं । आज तरह २ की सेनाएं खड़ी की जा रही हैं । युवकों को आन्दोलन तथा चन्दा एकत्र करने में लगा कर सङ्गठनों का विकास किया जाता है । विद्यार्थियों तथा युवक का बहुत - सा बहुमूल्य समय जो कि उनके प्रशिक्षण का समय है, नष्ट किया जाता है ।

देश भक्त युवक समाज युवकों का समय तथा शक्ति किसी प्रकार भी दुरुपयोग करने का हामी नहीं है । केवल उनके विकास की योजनाओं में ही उनका सहयोग मांगता है । युवकों तथा विद्यार्थियों की बेरोजगारी, प्रशिक्षण की समस्या राष्ट्रीय रक्षा तथा भूमि की समस्या बन, तथा पशुओं का विकास, इन सबको देश भक्त युवक समाज ने एक ही योजना द्वारा हल करने की बात रखी है ।

युवकों तथा युवतियों को जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, भाषा क्षेत्र तथा राजनैतिक दलों की सङ्कीर्णता से ऊपर उठाकर उनमें राष्ट्रीयता की सृजनात्मक क्रान्तिकारी भावना का विकास करना एवं उनको देश के भावी निस्वार्थ नेतृत्व के लिए तैयार करना ही देश भक्त युवक समाज का महान लक्ष्य है ।

युवकों को शक्तिशाली बनना है तभी वह अपनी व राष्ट्र की समस्याएँ हल कर पायेंगे । उन्हें कृत्रिम भोजन, तम्बाकू, माँस, चाय, मदिरा से बचकर स्वस्थ शरीर तथा उज्ज्वल चरित्र का निर्माण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना है। निर्बल युवक तथा युवतियाँ जीवन तथा राष्ट्र के उत्तरदायित्व को पूरा नहीं कर पाते। उन्हें तप, सादगी सात्विक भोजन, खेल-कूद, उपवास, प्राणायाम औद्योगिक एवं सैनिक शिक्षा द्वारा अपना सर्वांगीण विकास करना है। राष्ट्र का नेतृत्व प्राप्त करने के लिए अत्यन्त त्याग, परिश्रम सहनशीलता, निष्कलङ्क चरित्र तथा शक्ति की आवश्यकता है।

किसी देश की सम्पन्नता एवं समृद्धि वहाँ की युवा पीढ़ी पर निर्भर करती है। उसमें एक अदम्य शक्ति होती है। एक अदृश्य साहस होता है। एक विद्युत जैसी तीव्रगामी नवीन चेतना होती है। इस असाधारण शक्ति के सँचय पर ही देश का निर्माण एव उत्थान निर्भर करता है। युवकों तथा युवतियों के पवित्र हृदय की हिलोरें सागर की लहरों से भी अधिक शक्तिशाली होती हैं। युवकों, युवतियों का शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक विकास तथा एक उज्ज्वल चरित्र का निर्माण ही शिक्षा का ध्येय होना चाहिए।

आज देश के सामने अनेक समयस्याएँ अपना वीभत्स नाच दिखा रही हैं। हिंसा, शोषण, पाप, बेकारी, ऋण, फैशन, नैतिक पतन एवं विघटन की पुकार चारों ओर सुनाई पड़तो है बढ़ती हुई मँहगाई तथा गरीबी, बीमारियों से ग्रस्त भिखारी, बेकारी से दुखी युवकों युवतियों के निराशापूर्ण चेहरे, भटकते हुए यौवन एवं गिरती हुई नैतिकता एक अन्धकारमय भविष्य की चेतावनी दे रहे हैं। बाढ़ और अकाल, आपसी कलह और अराजकता, अनुत्पादक रोजगार और कागजी योजनाएँ हमारी अकर्मण्यता के द्योतक हैं। लक्ष्य सिद्धांत और उचित नेतृत्व के अभाव में युवक भटक रहा है।

राष्ट्रीय असन्तोष सुलग रहा है। कागजी काम, अनुत्पादक रोज़गार, शोषण, प्रशासन का बढ़ता भार और आधुनिक राजनीति उसमें ईंधन का कार्य कर रहे हैं। नैतिकता एवं त्याग के बिना समाज का कार्य उत्थान असंभव ही नहीं बिल्कुल असम्भव है। आज, पक्षपात, जाति-पाँति के भेद, सिफारिश रिश्वत कैसे बँद हों? उत्पादक योजनाओं द्वारा।

> ० विशाल सँसार मेरा घर है, और उपकार करना मेरा धर्म।
>
> ० यदि आप अधिकारी हैं, तो आपको इच्छा करने को आवश्यकता नहीं; आपके पास स्वतः लाये जायेंगे स्वतः चले आयेंगे। आप अपने को योग्य बना लेते हैं तो आपको सहायता मिलेगी।
>
> —स्वामी रामतीर्थ

किंतु योजना कौन बनाता है? वही ब्रिटिश प्रशासन की मान्यताओं से बँधे स्वार्थी मस्तिष्क, स्वार्थी राजनीतिज्ञ, जाति, सम्प्रदाय या शोषित धन के बल पर चुनाव लड़ने वाले स्वार्थी नेता। स्वार्थ, सत्ता और सम्पत्ति से चिपके ये आयुष्मान लोग मरते समय तक भी उससे चिपके रहना चाहते हैं।

योजनाएँ पूरी कौन करता है? वे मज़दूर कलर्क, कर्मचारी इजीनियर, अध्यापक, विद्यार्थी जो महँगाई, मकान तथा भोजन की समस्याओं से ही जूझते रहते हैं। काम करने की परिस्थितियों से विवश हो जाते हैं। वे मेहनती किसान मज़दूर जो साधनों की कमी के कारण आगे नहीं बढ़ पाते।

युवकों को हम इस योग्य बनाते ही नहीं कि वे देश के नेतृत्व करने के लिए आगे बढ़ सकें। किंतु इसमें कुछ दोष युवकों का भी है। नेतृत्व कोई देता नहीं लिया जाता है। अपना रुधिर जलाने से ही प्रकाश निकलता है। युवकों! त्याग और तप द्वारा इस योग्य बनो कि देश को ठीक मोड़ दे सको। देश के सामने ठीक योजनाएँ रख सको तथा उन्हें पूरा कर सको।

त्याग के बिना कुछ नहीं मिलता। बलिदान का इतिहास कभी भुलाया नहीं जा सकता। लिंकन और मार्टिन लूथर किंग के बलिदान ने मानवता को जन्म दिया। शहीद भगत सिंह और अशफाक के बलिदान ने राष्ट्रीयता को जन्म दिया। नेता जी बोस और गांधी जी के त्याग ने स्वतन्त्रता को जन्म दिया। अब युवकों का त्याग ही राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीय एकता एवं समृद्धि को जन्म देगा इसमें कोई सन्देह नहीं।

देश भक्त युवक समाज, युवकों को आह्वान करता है—

'आगे बढ़ो और राष्ट्र के निर्माण में एक साथ जुट जाओ।'

ग्राम विद्यापीठ नामक संस्था की स्थापना डा. शांति प्रकाश आत्रेय, एम. ए. पी-एच डी. जो रुस्तमे उत्तर प्रदेश ने देशभक्त युवक समाज के उद्देश्यों की पूर्ति एवं कार्यप्रणाली को उचित एवं

(कृपया देखिए पृष्ठ ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी शिक्षा प्रणाली

● लेखक डा० शान्ति प्रकाश आत्रेय, एम. ए.
पी-एच. डी. व्यायाम केसरी, रुस्तमे उत्तर प्रदेश

प्रस्तुत रचना श्री आत्रेय द्वारा रचित है जो कि सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं दर्शन के पंडित हैं। पहले आप जीवन दर्शन के साथ-साथ शरीर के शक्ति विकास की ओर उन्मुख हुये और आपको रुस्तमे उत्तर प्रदेश की उपाधि से विभूषित किया गया। आपमें जीवन दर्शन का एक व्यवहारिक रूप दृष्टिगत होता है और इसलिए हो वह जो सोचते हैं उसको क्रियामूर्त रूप कर देते हैं। अब आपकी महत्वपूर्ण योजना ऊंच स्तर पर ग्राम विद्यापीठ की है जहाँ नगर के कोलाहल से परे शिक्षा का पुरातन "नालन्दा विश्वविद्यालय" की तरह से अर्वाचीन नवरूप साकार होने जा रहा है। यहाँ पर डा० साहब द्वारा लिखित "हमारी शिक्षा प्रणाली" लेख जो कि उनके विचारों का एक अङ्ग है हम यहाँ दे रहे हैं।

—सम्पादक

किसी भी देश के व्यक्तियों की जीवन प्रणाली, आदर्श चरित्र, आध्यात्मिक विकास, नैतिक विकास, एवम् मानसिक अवस्था का अगर अध्ययन करना हो तो उस देश की शिक्षा प्रणाली का अध्ययन अनिवार्य सा हो जाता है। शिक्षा प्रणाली से देश के व्यक्तियों की विचार प्रणाली व्यक्त होती है। वे जीवन को क्या समझते हैं इसका ठीक २ ज्ञान प्राप्त होता है। शिक्षा प्रणाली ही यह बताती है कि व्यक्ति अपने देश के जीवन को किस ओर ले जाना चाहते हैं। आने वाली पीढ़ी को वे क्या बनाना चाहते हैं, किस ढांचे में ढालना चाहते हैं। विचार पूर्वक प्रदान की गयी शिक्षाप्रणाली देश की आवश्यकताओं तथा उनकी पूर्ति के साधनों को स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख प्रस्तुत करती है। उत्तम शिक्षा प्रणाली बालक को युग के अनुसार संसार में रहने योग्य बनाती है। जिसके फलस्वरूप व्यक्ति अपना ठीक २ समायोजन कर अपने जीवन को अधिकतम् सुखी बना सके। इसका कार्य बालक का सही २ शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक एवम् आध्यात्मिक विकास करना है। शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य बालकों के व्यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास करना तथा उन्हें जीवन के समस्त मूल्यों से अवगत कराना है। शिक्षा प्रणाली पर ही हमारी संस्कृति एवम् सभ्यता दोनों आधारित हैं।

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीय जीवन के लिए शिक्षा प्रणाली का सर्वोपरि महत्व है। हमें तो यहाँ तक कहने में भी संकोच नहीं होता कि विश्व की अशान्ति एवम् अव्यवस्था के मूल में भी शिक्षा, प्रणाली की कमी ही झलकती है। हमारे देश भारतवर्ष की शिक्षा प्रणाली के दूषित होने के कारण ही आज सम्पूर्ण देश उसका परिणाम् भोग रहा है। आज उसी कारण सर्वत्र अशान्ति एवम् अव्यवस्था फैली हुई है। पूरे देश में हा हाकार मचा हुआ है। रौरव नरक का दृश्य चारों तरफ दृष्टिगोचर हो रहा है इतना होने पर भी इस ओर

(सम्पादकीय–पृष्ठ ३ का शेष)

व्यवस्थित रूप से कार्यान्वित करने के लिए ही की है जो एक आदर्श शिक्षा प्रणाली को उचित एवं व्यवस्थित रूप से कार्यान्वित करने के लिए ही की है जो एक आदर्श शिक्षा प्रणाली प्रदान कर अपने राष्ट्र के नवयुवकों के व्यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास कर भारतीय सँस्कृति एवं मानवता का सच्चा स्वरूप समस्त विश्व के सम्मुख प्रस्तुत कर उन्हें प्रतीक के रूप में सच्चे मार्ग पर चलने का प्रकाश प्रदान कर उन्हें शान्ति एव सुख को ओर ले जाएगी।

अतः देश भक्त युवक समाज की ओर से हम उन्हें इस आदर्श एवं ठोस कार्य के लिए बधाई देते हुये अपनी शक्ति इस पवित्र यज्ञ को सम्पूर्ण करने में लगाने का विश्वास देते हैं। शिक्षा में इस प्रकार का आमूल परिवर्तन जो इस समय अनिवार्य है तथा प्रत्येक भारतीय का प्रथम कर्त्तव्य है। उसके लिए हमारे युवक और युवतियों का पूर्ण सहयोग चाहिए, उनका बलिदान चाहिए जिसके बिना आज तक विश्व की कोई भी योजना सफल नहीं हुई। वे दृढ़ सङ्कल्प के साथ मैदान में उतरें तथा अपनी अपनी सम्पूर्ण शक्ति इस महायज्ञ की पूर्ति में लगायें।

अतः जो व्यक्ति, युवक-सज्जन पुरुष, महिलायें, युवक, युवती अपनी क्षमता अनुसार इस महायज्ञ में भाग लेना चाहते हैं वे अपना नाम सँचालक ग्राम विद्यापीठ सरस्वती नगर, पो० गङ्गदासपुर, जिला सहारनपुर, उ० प्र० को शीघ्र सम्पूर्ण विवरण सहित भेजने के अधिकारी बन सहयोग प्रदान करेंगे। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी का ध्यान नहीं है। अपनी परतंत्रावस्था में तो शिक्षा प्रणाली के समस्त दोषों को हम विदेशीय सत्ता के ऊपर मढ़ कर छुट्टी पा जाते थे। किन्तु आज जबकि हमें स्वतन्त्र हुए २३ वर्ष हो चुके हैं और हम ही पाठशालाओं, विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के प्रबन्धक हैं तो शिक्षा में हमने क्या ठोस सुधारात्मक प्रयत्न किये? आज की हमारी शिक्षा प्रणाली के दोषों के लिए हम भारतीय ही बहुत हद तक जिम्मेदार हैं। विचारक ही मानव समाज के प्राण हैं। विचारकों के चिन्तन के द्वारा ही प्रगति की आशा की जा सकती है। प्राचीन भारतीय ऋषियों के द्वारा प्रदान की गयी शिक्षा प्रणाली तथा सामाजिक व्यवस्था की तुलना किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली तथा सामाजिक व्यवस्था से नहीं की जा सकती है। इस बात को अच्छी तरह समझ कर मैकाले ने हमारी शिक्षा में ही परिवर्तन किया था। इस मूल परिवर्तन के फलस्वरूप ही आज हम स्वतन्त्रता प्राप्त करके भी अभी तक सही रूप में परतन्त्र ही हैं। बल्कि यह कहना गलत न होगा कि दिन पर दिन भारतीय पहले की अपेक्षा अधिक परतन्त्र होते जा रहे हैं। सच तो यह है कि किसी को भी बस में करने के लिए हमें सबसे पहले उसे विचारों की गुलामी प्रदान करनी चाहिए। अगर हम ऐसा करने में सफल हो सकें तो निश्चय है कि वह हमारे हाथों की कठपुतली बनकर नाचेगा। यही कारण है कि आज हम दिन पर दिन परतन्त्रता में जकड़े चले जा रहे हैं। इस परतन्त्रता का पहला प्रमाण है हमारी स्वतन्त्र राष्ट्र भाषा का न होना। आज २३ वर्ष में भी हिन्दी भाषा को भारतवासी नहीं अपना पाये। यह बड़े खेद का विषय है। मैं यह नहीं जानपाता कि जब हमारे भारतीय दूसरे देशों में जाते हैं तो वहाँ की भाषा दो या चार महीनों में ही सीख लेते हैं। वे ही लोग २३ वर्ष में हिन्दी न सीख सके यही हमारी स्वतंत्रता का प्रमाण है। आज उच्चतम व्यक्तियों के विचारों में भी गुलामी पूर्ण रूप से व्याप्त है। यही हमारी परतन्त्रता एवम् दुख का कारण है। हम अभी तक भी वैसा ही सोचते और करते हैं जैसा कि दूसरे हमको सोचने व करने के लिए बाध्य करते हैं। बाह्य अर्थात विदेशीय इच्छा के हम सब गुलाम हो रहे हैं। उसी के कारण देश की ऐसी भयंकर स्थिति हो रही है। जिसको सोचते हुए आज प्रत्येक भारतीय अपनी जगह अशान्त और बेचैन है। यह वह अवसर है जिसमें क्रान्ती का होना अनिवार्य सा हो रहा है। क्रान्ती के बिना यह अशान्ति समाप्त नहीं हो सकेगी। राष्ट्र के ही नहीं, बल्कि विश्व के जीवन में सुख एवम् शान्ति प्राप्त नहीं हो सकेगी। मानव के इतिहास के पन्ने बताते हैं कि अधिकतम् बलिदान करने वाले राष्ट्रों ने ही विश्व में अपने अस्तित्व की पताका फहराई। अपने को मिटाकर नवयुवकों ने सदैव राष्ट्रों का निर्माण किया तथा उसमें उचित परिवर्तन लाकर राष्ट्र को ऊँचे उठाया। हर चीज की कीमत चुकानी पड़ती है। अपने राष्ट्र को विध्वंस होने से बचाने के लिए भारतीय नवयुवकों को भारतीय व्यवस्था में उचित परिवर्तन लाने के लिए जीवन का बलिदान करना ही पड़ेगा। राष्ट्र के अस्तित्व को कायम रखने के लिए अपने छोटे दायरों को तोड़ना पड़ेगा। अपने राष्ट्र पर अपने आपको न्यौछावर करना पड़ेगा। आज भारत माता अपने बच्चों से भिक्षा मांग रही है, कह रही है—जीवन का मोह छोड़कर राष्ट्र की नैया को इस विचित्र उथल पुथल में खेकर पार लगाओ। ऐसी दशा में सब भारतीयों का पुनीत कर्तव्य एवम् परम धर्म है कि वे सर्व प्रथम अपनी सम्पूर्ण शक्ति एक आदर्श शिक्षा प्रणाली देकर इस वर्तमान शिक्षा प्रणाली को पूर्ण रूप से बदल दे।

हमारे विश्वविद्यालयों से निकलने वाले उच्चतम् शिक्षा प्राप्त स्नातकों के द्वारा ही वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोष स्वतः प्रकट हो जाते हैं। मेरे एक मित्र इन विश्वविद्यालयों तथा शिक्षालयों को कान्जी हाऊस कहा करते थे। उनका कहना था कि बी० ए० पास होते २ युवकों की सारी रचनात्मक शक्ति समाप्त हो जाती है। शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाती है, इन्द्रियों की क्रियाओं में ह्रास दृष्टिगोचर होने लगता है। बिना चश्में के उनके नेत्र देखने का ठीक २ कार्य नहीं कर पाते। कान, कठिनाई से सुन पाते हैं। दाँत मुश्किल से चबा पाते हैं, पैरों से अधिक चलना नहीं हो पाता है, इसी भरी जवानी में बुढ़ापा आ जाता है और वे संसार के लिए तथा अपने लिए स्वरूप हो जाते हैं। वे संसार में रहने योग्य ही नहीं रह जाते। सिद्ध होता है उनसे समाज का महान अकल्याण होना है। वे समाज तथा सरकार दोनों से बदला लेने की भावना पनपा लेते हैं। हमें कहते हुए महान कष्ट होता है कि वर्तमान युगीय शिक्षा समाज आज मानव समाज को व्यवस्थित एवम् विकसित करने के स्थान पर उसे अव्यवस्थता, विघटन एवं नीचे की ओर ले जा रही है। आज के शिक्षा शास्त्रियों का मुख्य कर्तव्य इस ओर चिंतन करके शिक्षा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाजोपयोगी एवम् कल्याणकारी बनाना है। अगर शिक्षा का यह विनाशकारी रूप अधिक दिन तक चलता रहा तो निश्चित ही सम्पूर्ण समाज घोर नारकीय यातनाओं से वंचित न रह सकेगा। शास्त्रोकथित घोर रुख नरक का सारा दृश्य हमारे सामने आ जायेगा। शिक्षा के कारण आज भी हम कम दुखी नहीं हैं,

अब प्रश्न उदय होता है कि हमारी शिक्षा कैसी होनी चाहिए ? इस प्रश्न का कतिपय शब्दों में उत्तर यही हो सकता है कि जो शिक्षा सम्पूर्ण मानव का प्रशिक्षण तथा विकास करने में समर्थ हो वही वास्तविक शिक्षा है। आधुनिक शिक्षा मानव बालक को वास्तविक सांसारिक जीवन के उपर्युक्त इस लिये नहीं बना पाती क्योंकि इसके द्वारा सम्पूर्ण मानव का परिशिक्षण एवं विकास नहीं होता है। उसके द्वारा तो मानव के व्यक्तित्व के बहुत से महत्वपूर्ण तत्वों की अवहेलना करके मानव के कुछ तत्वों का ही विकास हो पाता है। इसके द्वारा मानव व्यक्तित्व के सब तत्वों का सामञ्जस्य पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। अतः वास्तविक शिक्षा को जानने के लिए हमारे लिए मानव को ठीक-ठीक पूर्ण रूप से जानना अनिवार्य हो जाता है। बिना मानव को समझे हम उसके लिए शिक्षा निर्धारित नहीं कर सकते हैं। मनुष्य के अपूर्ण स्वरूप के ऊपर शिक्षा का आधारित होना ही उसकी सबसे बड़ी कमज़ोरी है।

मानव को आधुनिक विज्ञान अपने सम्पूर्ण अन्वेषणों के द्वारा भी ठीक ठीक नहीं जान पाया है उसके द्वारा हमें व्यक्तित्व का पूरा पता नहीं चल पाता है। मनुष्य केवल भौतिक शरीर तक ही सीमित नहीं है। जैसाकि जड़वादी तथा वैज्ञानिक लोग मानते हैं। जीव शास्त्र मनुष्य के स्वरूप अधिक समझते हुए भी मानव को ठीक-ठीक बताने में असमर्थ हैं। मनुष्य केवल जीव ही नहीं है बल्कि उससे भी कहीं अधिक हैं।

[क्रमशः]

सम्पादकीय संक्षिप्त डायरी

१२-११-७०—नगर सहारनपुर में रह कर एक छोटी नौजवानों की मीटिंग की गई। जिसमें राष्ट्रीयता रूपी विचार दिए गए।

१३-११-७०—नगर सहारनपुर में देहात के पाँच व्यक्तियों से रेलवे स्टेशन पर भेंट। उन्होंने विश्वास दिलाया कि हम सब यह प्रयास करेंगे कि शादियों में कम से कम व्यय करें और आज से धूम्रपान भी कम ही प्रयोग करेंगे।

१५-११-७०—नगर सहारनपुर में स्वामी जी सच्चा आश्रम अरैल प्रयाग से भेंट तथा वार्तालाप। इससे पूर्व एस. पी. महोदय से लक्ष्मी टाकीज के निकट भेंट तथा कुछ नवयुवकों की विशेष बातों पर चर्चा उन्होंने विश्वास दिलाया कि मैं देहात की मीटिंग जो आपके द्वारा होगी में पहुंचने हेतु अवश्य ही समय निकाल सकूँगा। इनसे कुछ घण्टे पूर्व रेडियो सिंगर श्री अभयराम भजनोपदेशक से २० मिनट वातें हुई उन्होंने भी विश्वास दिलाया कि मैं देहात में चलकर आपके प्रोग्रामों में समय २ पर भाग लूँगा तथा उनके विकास में सहायक बनूँगा। जो आज के अशुद्ध वातावरण में शुद्ध क्रान्ति को नया मोड़ देंगे।

१६-११-७०—देशभक्त युवक समाज का साहित्य लेकर एक नवयुदक को देवबन्द रवाना किया गया। (प्रचार हेतु) कचहरी में एक महिला की सार्वजनिक रूप से और नैतिक रूप से सहायता को गई। जिसके पति को जो जैतपुर ग्राम का रहने वाला था। ६ व्यक्तियों ने मारा था। (वगैरा) तत्पश्चात् अधिक परेशानी उसकी पत्नी को हुई उस की सहायता की गई। एस. पी. के नाम एक दरख्वास्त राजेन्द्र बाबू से टाईप कराई गई तुरन्त जाँच हेतु तथा तीन विशेष व्यक्तियों से भेंट पत्र हेतु।

२२-११-७०—रुड़की में गन्ना सहकारी समिति के डायरेक्टर्स के चुनाव में मैंने भी भाग लिया केवल अनुभव प्राप्त करने हेतु। जहां हजारों की भीड़ थी। देहात के व्यक्तियों के अमुक दृश्य को देख कर प्रजातन्त्र प्रणाली में और गाढ़ा विश्वास होता दिखाई दे रहा था। पूर्व की अपेक्षा आज के दिन जनता ने प्रजातंत्र प्रणाली को कुछ समझा ऐसा मैंने अनुभव किया। ठीक ३ बजे के लगभग श्री शांति प्रकाश आत्रेय, एम. ए. पी-एच. डी. रुस्तमे उत्तर प्रदेश से विशेष परिचय तथा एक दूसरे के विचारों को विशेष रूप से समझा गया रात्रि में लगभग ४ घण्टे तक महात्मा जी की यौगिक क्रियाओं तथा दर्शन शास्त्र सम्बन्धी विचारों से प्रभावित होकर मैंने अपना 'अस्तित्व' पत्र एवं जीवन का कुछ भाग ग्राम विद्यापीठ (विश्वविद्यालय) की सेवा में लगाने का महात्मा जी को हृदय से वचन दिया। क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम विद्यापीठ : एक परिचय तथा अपील !

स्थान:—देवबन्द-मंगलौर सड़क के मध्य में स्थित गोकुलपुर ग्राम से पूर्व खाले के किनारे ग्राम विद्यापीठ सरस्वती नगर सहारनपुर। * वह केवल जिले व प्रांत विशेष की सस्था नहीं है बल्कि सम्पूर्ण विश्व की संस्था है।

स्थापना का कारण:—वर्तमान शिक्षा पद्धति में अभारतीयता, सिद्धांत और व्यवहार का असामंजस्य, वैज्ञानिक युग की प्रतिकूलता आदि तत्व विद्यमान हैं, जिसमें जीवन और शिक्षा एक दूसरे से निरंतर दूर होती चली जा रही हैं। अपनी सांस्कृतिक पृष्टभूमि—आध्यात्मिकता के अभाव में अनुशासनहीनता तथा अनैतिकता का साम्राज्य चारों ओर फैला हुआ है। इस नाशकारी युग में विश्व अपने कल्याण के लिये भारत की ओर टकटकी लगाये देख रहा है और भारत अपना आत्म-बोध स्वयं भूलता-सा जा रहा है। अपनी संस्कृति के सरल सुगंधित आलोकमय जीवन को भूल, पाश्चात्य चमक-दमक की ओर आँख गड़ाये उसी की ओर गतिमान है। इस पृष्ठभूमि में वह स्वयं गर्त में जायेगा और विश्व को मार्गदर्शन करने से वंचित रह जागेगा, जो गुरुतर कार्य सदियों से सम्हाला है।

आज शिक्षा का केंद्र वास्तविक जीवन, गाँव के वातावरण, से हटकर शहर बन गया है, जहाँ शिक्षा बहुत महँगी पड़ रही है। शुद्ध हवा, पानी, रोशनी, आवास, भोजन आदि तत्वों का पूर्णतया अभाव तथा प्रतिकूल स्वरूप में उपलब्ध होते हैं, विविध असामंजस्यपूर्ण कोलाहल, चिमनी के धुएँ, सवारियों के भोंपू आदि मधुमक्खी की तरह भनभनाहट में शिक्षक और छात्र का ध्यान अपने कार्य में कहाँ तक केन्द्रित होना सम्भव है। ध्यान का विकेन्द्रीकरण पूर्णतया असफलता का द्योतक है। इन्हीं कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए इस संस्था की स्थापना ग्रामीण वातावरण में की जा रही है, जिसका सामान्यतया उद्देश्य निम्नलिखित है :—

उद्देश्य :—

१—बच्चों को आधुनिक, राष्ट्रीय ढंग से आवश्यक विद्याओं की उच्चतम शिक्षा देना।

२—व्यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास करना।

३—शिक्षा का माध्यम यथासम्भव राष्ट्र-भाषा हिन्दी होगी।

४—बच्चों को एक आदर्श नागरिक रूप में लाने का सफल प्रयास करना, जिससे प्राचीन तथा आधुनिक सभ्यता की साहित्यिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक गतिविधियों के बारे में पूर्णतया जानकारी हो, जो राष्ट्र तथा विश्व की प्रगति तथा कल्याण में उच्चतम योगदान दे सके।

५—गाँवों को शिक्षा तथा आकर्षण का केंद्र बनाना।

६—समस्त प्राचीन भारतीय ज्ञान-प्रकाश को विश्व में फैलाना तथा उसके द्वारा विश्व को सुख-शांति प्रदान करना।

अनिवार्य शिक्षा :—

१—संस्कृति का सैद्धांतिक तथा वैज्ञानिक प्रशिक्षण।

२—व्यावसायिक प्रशिक्षण।

३—व्यावहारिक, नैतिक प्रशिक्षण।

४—स्वास्थ्य, आत्म-रक्षा, राष्ट्र-सेवा, विश्व-बंधुत्व सम्बन्धी प्रशिक्षण।

५—आध्यात्मिक-प्रशिक्षण।

सदस्यता :—इसके सदस्य वे सभी स्त्री-पुरुष हो सकते हैं जो इसके उद्देश्य से पूर्णतया सहमत हो और तन-मन-धन से क्रियात्मक यथा साध्य योगदान कर सकें। सदस्य तीन प्रकार के हो सकते हैं :—

(१) सरक्षक दस हजार रुपया या अधिक एक बार देने वाला।

(२) १०) (दस रुपये) मासिक देने वाले भी साधारण सदस्य माने जावेंगे।

(१) **आजीवन**:—जो १६ बीघा भूमि या १ हजार रुपये या अधिक रुपया एक साथ प्रारम्भ में देंगे।

(२) **सामादृत** :—जो विशेष सद्गुणों के कारण सदस्य बनाये जायेंगे वे निःशुल्क होंगे।

(३) **ग्राम-प्रतिनिधि** :— जो गाँव २०० बीघा भूमि या १० हजार रुपये का दान करेगा उसे चुनकर अपना एक प्रतिनिधि, सदस्य के रूप में भेजने का अधिकार होगा।

संस्थापक:—डा० शांति प्रकाश आत्रेय एम. ए., पी-एच डी., व्यायाम

* इस स्थान का जलवायु अति उत्तम तथा स्वास्थ्यवर्द्धक है। इसी कारण संस्था (विश्वविद्यालय) के लिये इस स्थान को चुना गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशरी, रुस्तमे-उत्तर-प्रदेश इसके संस्थापक हैं। कमेटी के द्वारा वे ही इस संस्था के संचालक नियुक्त किये गये हैं।

उपलब्धि :—अभी तक ४।। सौ बीघे जमीन की रजिस्ट्री हो चुकी है तथा आवश्यकतानुसार, हज़ारों बीघा ज़मीन जनता इस कार्य के लिये दान देने को तैयार है। स्थान के आस-पासवाले सभी गाँवों ने प्रति बीघे २ रु० चन्दा प्रारम्भिक अनुदान के रूप में बड़े उत्साह और लगन से देना प्रारम्भ कर दिया है। नौकरी देने वालों ने भी एक-एक माह का वेतन प्रारम्भिक अनुदान के रूप में देना स्वीकार कर लिया है। यहाँ तक कि मज़दूर वर्ग में भी बहुत उत्साह है तथा वे यथासाध्य श्रम-दान करने को प्रस्तुत हैं। मकान बनाने वाले कारीगर, बढ़ई, लोहार आदि भी श्रम-दान के रूप में सहयोग दे रहे हैं। सभी कर्मचारी-गण भी इस कार्य में पूरा-पूरा सहयोग दे रहे हैं। प्रत्येक ग्राम अपनी शक्ति के अनुसार भवन-निर्माण में पूरा-पूरा योगदान कर रहा है। सभी गांव एक-एक व्याख्यान भवन बनवा रहे हैं। इसमें कोई पीछे नहीं रहेगा।

निर्माण कार्य

१. कला महाविद्यालय। २. विज्ञान महाविद्यालय। ३. तन्त्र-योग महाविद्यालय। ४, महिला महाविद्यालय। ५. संस्कृत महाविद्यालय। ६. व्यायाम महाविद्यालय। ७ आयुर्वेदिक महाविद्यालय। ८. तकनीकी महाविद्यालय। ९. कृषि महाविद्यालय। १०. केन्द्रीय पुस्तकालय। ११. कार्यालय। १२. प्रेस। १३. छात्रावास(सात)। १४. निवास स्थान (१००)। १५. नल-कूप (५), एवं जलवितरण। १६. सत्संग एवं व्याख्यान-भवन। १७. खेलने के मैदान तथा उसके देखने का स्थान। १८. मन्दिर। १९. योगाभ्यास केन्द्र। २० वेद मन्दिर। २१. औद्योगिक केन्द्र।

अपील

जनता से प्रार्थना एवं अपील है कि इस महान एवं पवित्र यज्ञ में श्रद्धा-पूर्वक यथा-शक्ति अपना-अपना योगदान करें। किसानों से भी निवेदन है कि वे २) प्रति बीघा तथा मिल में १२ नये पैसे प्रति मन अथवा ३० नये पैसे प्रति क्विटल की कटौती "ग्राम विद्यापीठ" सरस्वती नगर के नाम से कटवायें। जिनका गन्ना मिल में नहीं जाता वे एक भेली गुड़ व २।। किलो मीठा प्रति जुड़ावड़ा "ग्राम-विद्यापीठ" का भाग अलग निकालने का कष्ट करें। माताओं तथा बहनों से प्रार्थना है कि वे अपने घरों में घड़े रख लें जिसमें प्रतिदिन नियमित रूप से एक मुट्ठी अन्न "ग्राम-विद्यापीठ" के नाम से डालती रहें। नौकरी करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपना—अपना एक माह का वेतन "ग्राम—विद्यापीठ" के अनुदान के रूप में भेजता रहे। हर मजदूर किसी भी प्रकार अपनी आठ दिन की मज़दूरी दे। जनता में जो व्यक्ति जिस प्रकार की सहायता "ग्राम—विद्यापीठ" की कर सकें अवश्य करें तथा अपने अन्य मित्रों को करने के लिए बाध्य करें। जनता जनार्दन ही अगर चाहेगी तो यह संस्था विश्व में अपना उच्च स्थान प्राप्त कर लेगी।

दुकानदार, डॉक्टर, वकील तथा वैद्य लोग अपने--अपने यहाँ ताला बन्द डिब्बे "ग्राम—विद्यापीठ" के लिये रख लें। उसमें प्रत्येक व्यक्ति से तथा स्वयं यथा--शक्ति धन डालते रहें। माह के अंत में उस डिब्बे को "ग्राम--विद्यापीठ" भिजवा दें। मंडी में आढ़तों पर एक पैसा रुपया "ग्राम--विद्यापीठ" के नाम से काटना शुरू कर दें। भट्टे वाले, क्रेशर वाले तथा व्यापारी अपनी शक्ति के अनुसार दान अवश्य दें। बस और ट्रक वालों को भी पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिये। प्रति ट्रिप २) फी बस तथा ट्रक वालों से माँग है। जनता से माँग है कि विवाह, पुत्र-जन्म तथा अन्य खुशी के अवसरों पर "ग्राम-विद्यापीठ" सरस्वती नगर के लिये यथा-शक्ति दान दें तथा दूसरों से दिलवायें। दान द्वारा बने हुए व्याख्यान भवन, निवास स्थान आदि पर दान देने वाले गाँवों व व्यक्तियों के नाम के पत्थर लगेंगे। जो व्यक्ति भूमिदान करेंगे उन के भी नाम के पत्थर लिखे जावेंगे। पहलवानों तथा व्यायाम कर्मियों से अनुरोध है कि व्यायाम महाविद्यालय को अपने अनुदान से खड़ा करें तथा उसे चलाएँ। विद्यार्थियों, नवयुवकों से पूर्ण आशा ही नहीं अपितु दृढ़ विश्वास है कि वे स्वय चन्दा माँग कर कम से कम एक विद्यालय भवन छात्रागास का निर्माण करवायेंगे। माताओं तथा बहनों से प्रार्थना है कि वे भी अपने अनुदान से "महिला महाविद्यालय" को स्थापना कर उसे चलाएँ। संगठित मज़दूर वर्ग से प्रार्थना है कि वह मिलकर संगठित रूप से एक महाविद्यालय तथा एक छात्रावास बनवाएँ। ठेकेदारों को भी इसमें हर प्रकार का सहयोग देना चाहिये। मुझे पूर्ण विश्वास है कि राजा, मिल मालिक तथा रईस लोग भी सहायता देने में कोई कसर न उठा रक्खेंगे तथा अपने-अपने नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की निशानी इस संस्था "ग्राम-विद्यापीठ" में सबकी याद के लिये छोड़ जायेंगे। किसी-न-किसी भवन पर अपना नाम व अपने बड़ों का नाम अवश्य लिखा जायेंगे। प्रत्येक किसान अन्न दान अवश्य करें।

मेरी यही अन्तिम प्रार्थना है कि दुनिया का हर व्यक्ति इसे अपनी संस्था समझेगा और इसके लिये पूरा-पूरा प्रयत्न करेगा। जो कुछ भी देना हो तो वह सीधे "ग्राम-विद्यापीठ" को ही दें व भेजें। जिनकी रसीद उन्हें प्राप्त होगी।

छात्रों एवं छात्राओं से ग्राम विद्यापीठ की अपील

भारतवर्ष को स्वतन्त्र बनाने में छात्राओं का बहुत बड़ा हाथ था। सन् १९४२ का आन्दोलन भारतवर्ष के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखता है, यह सर्व विदित है। विद्यार्थियों के योगदान को कोई भी राष्ट्र भूल नहीं सकता। आप तो शक्ति का भण्डार हैं। आपको तो केवल लगने की देरी है। काम हुआ रक्खा है। आप शक्ति भण्डार से ग्राम विद्यापीठ की भी प्रार्थनापूर्ण याचना है कि एक बार भीम गर्जन के साथ इस विश्व को ज्ञान प्रकाश देने वाले विश्वविद्यालय के निर्माण एवं विकास में जुट जाएँ। आपकी अपार शक्ति के सामने कुछ भी असम्भव नहीं है आप सँगठित रूप से सब कुछ करने में समर्थ हैं हम आपकी शक्ति से परिचित हैं। आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी सम्पूर्ण शक्ति इधर लगा दें, जिससे भारतवर्ष प्राचीन भारतवर्ष की तरह जगमगा उठे तथा विद्यार्थियों का योगदान शिक्षा के इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना ले। छात्रों एवं छात्राओं, आप अपनी शक्ति को पहचानो। आपके सामने ऐसे-ऐसे सौ विश्वविद्यालयों का निर्माण भी कुछ नहीं है। अब समय पुकार रहा है, आप जागो! बिना आपके जागे मानव समाज का कष्ट दूर नहां होगा, शिक्षा में परिवर्तन नहीं होगा। शिक्षा में परिवर्तन किये बग़ैर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं होगा। व्यक्तित्व का एकाँगी विकास हमारे पतन एवँ कष्ट का कारण है। हमारी शिक्षा का ध्येय व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है। इस विश्व-विद्यालय का यह भी एक मुख्य उद्देश्य है कि यहां से निकले स्नातक पूर्ण विकसित व्यक्तित्व वाले हों। उन्हें कहीं भी, किसी भी क्षेत्र में कार्य करने व खड़े होने में अपने भीतर कमी प्रतीत न हो। आज की शिक्षा अधूरी है; वह हमें मनुष्य भी नहीं बनाती। अतः आप लोग आगे आओ और इसका भार अपने कन्धों पर सम्भालो। इसको सफल बनाने का बीड़ा उठा कर मानव समाज को सुख और शांति प्रदान करो।

१. ग्राम विद्यापीठ का प्रचार करें प्रत्येक व्यक्ति के कान तक इसकी आवाज़ पहुंचा दें तथा इसकी चाह सेवकों के दिलों में पैदा कर दें। सब तरफ इसकी आवाज़ गुंजा कर लोगों में इसके लिए धुन पैदा कर दें।
२. अपने १ माह के सिनेमा आदि खर्च को बचा कर ग्राम विद्या-पीठ को दें। ऐसे कार्यों के लिये त्याग करना ही पड़ता है।
३. सङ्गठित होकर आप लोग १ माह विद्यालय तथा छात्रावास को स्वयं चन्दा माँग-माँगकर बनवाएँ उस पर छात्रों के नाम का पत्थर लगेगा।
४. जिस गाँव-शहर में पढ़ते हों, जिस गाँव-शहर के रहने वाले हों, वहाँ के रहने वालों को इस सँस्था को सहायता देने के लिये बाध्य करें।
५. अपनी माताओं व बहनों से ग्राम विद्यापीठ को भिक्षा अन्न देने के लिये घरों में घड़े रखवाएँ।
६. माताओं और बहनों को हर त्यौहार, खुशी के अवसरों आदि पर ग्राम विद्यापीठ का हिस्सा, यथा-शक्ति निकालने को बाध्य करें।
७. घर में भगवान से इसके लिये नित्य प्रार्थना करें तथा करवाएँ मनौतियाँ मनवाएँ।
८. गुरुजनों को ग्राम-विद्यापीठ के लिये सम्पूर्ण सहयोग तथा हर प्रकार की सहायता के लिये प्रार्थना द्वारा बाध्य करें।
९. दुकानदारों को धर्मार्थ विद्यापीठ के लिये नित्य कुछ-न-कुछ निकालने के लिये बाध्य करें।
१०. किसानों से मिलों में ग्राम-विद्यापीठ के लिये कटौती कटवाएँ। मीटिंग करके उनको ऐसा करने के लिये समझा कर बाध्य करें। जहाँ मिलों में गन्ना नहीं जाता हो वहाँ गुड़ निकलवाएँ।
११. सङ्गठित होकर ५ लड़कों का एक ग्रुप अपनी ड्यूटी मिलों, क्रेशरों, चक्कियों, कांटों व भट्ठों पर लगवाएँ जिससे उस ग्रुप की वारी १ महीने में आए, वह ग्रुप कम-से-कम ५ गन्ने व २० ईंटें प्रति गाड़ी माँगे और उन्हें वहाँ बेच कर उसकी कीमत ग्राम-विद्यापीठ सरस्वती नगर को भेज दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२. छुट्टियों में हर प्रकार से पूरी-पूरी सहायता करें। मजदूर, कारीगर आदि को इसके लिये जगाएँ तथा जनता को इस संस्था का सदस्य बनने की प्रार्थना करें।

माताओं तथा बहनों से ग्राम-विद्यापीठ की अपील—

माताओं तथा बहनों ने जितनी कुर्बानियाँ की हैं तथा देश एवं समाज के लिये जो कुछ किया है वह किसी से छिपा नहीं है। इतिहास इसका साक्षी है। किसी भी राष्ट्र के उत्थान में सर्वोपरि हाथ हमारी माताओं और बहनों का रहा है। यह शक्ति-रूपा है। इनके आगे कुछ भी असम्भव नहीं है, इसी आशा पर हमने इस महान यज्ञ को लिया है। भारतीय सँस्कृति तथा भारतीय प्राचीन समस्त विद्याओं को जीवित रखने के लिये एक ऐसे विश्व-विद्यालय की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है। भारतवर्ष, जिसने सदैव विश्व को प्रकाश दिया आज भी उसे अपने उस स्थान से पतित नहीं होना चाहिये। भारतीय नारी का योगदान विश्वविख्यात है वे समाज हित और अपने राष्ट्र के लिये न्यौछावर होना जानती हैं। उन्हीं माताओं और बहनों की शरण हमने भी ली है। हमें पूर्ण आशा है कि हम भिखारियों को हताश न करके अपने यज्ञ को उज्ज्वल बनायेंगी।

१. वे रोज ही सेरों अन्न भिखारियों को देती हैं। अतः हम भिखारियों को, जिन्होंने उनके लालों को महान बनाने का बीड़ा उठाया है। प्रतिदिन बिना नागा कम-से-कम एक मुट्ठी अन्न देने के लिये एक अलग घड़े में डालती रहें; उसके भरने पर बोरियों में डाल दें। इस प्रकार प्रति माह अपने गाँव के रजिस्टर पर लिख कर ग्राम-विद्यापीठ भिजवाने का कष्ट करें।

२. प्रत्येक गाँव की महिलाएँ अपने पास से परस्पर धन इकट्ठा कर किसी एक भवन को बनवाने की कृपा करें।

३. ग्राम विद्यापीठ की अधिकतम सहायता करने के लिए पुरुषों को प्रोत्साहित करती रहें।

४. बालकों में उचित शिक्षा के प्रति भावना उत्पन्न करती रहें।

५. हर त्यौहार आदि पर ग्राम विद्यापीठ का हिस्सा अवश्य निकलवायें।

६. ग्राम विद्यापीठ को अपना ऐसा तीर्थ स्थान समझें जिससे सारे विश्व को प्रकाश मिलकर सच्चे जीवन का आनन्द प्राप्त हो। सबको सुख शांति प्राप्त हो।

७ अपने बच्चों के लिये ग्राम विद्यापीठ के लिये भगवान से प्रार्थना करें। जिस देवता को मानतो हों उसकी पूजा इसके लिये करें। कथा आदि कराने की मनौतियाँ वहीं करें।

८. अपने बच्चों को ग्राम विद्यापीठ के लिये धन आदि माँग-माँग कर उसको बनाने तथा विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

व्यापारी वर्ग से ग्राम विद्यापीठ की अपील—

भारतीय वैश्य समुदाय का हाथ भारत को महान बनाने में सदा से रहा है। हमारे समाज में इनका मार्ग निश्चित है। इनका धर्म ही धनोपार्जन है। इन्होंने धन को सदैव समाज की धरोहर समझा है। इसके सहयोग से ही भारतीय सँस्थाएँ तथा करीब-करीब सम्पूर्ण समाज के कार्य चल रहे हैं। भारतीय विद्याओं एवं सँस्कृति को कायम रखने वाली सँस्था ग्राम विद्यापीठ की भी प्रार्थना पूर्ण याचना है कि हमारा धनिक वर्ग इस विश्वविद्यालय के निर्माण एवं विकास में अपना पूर्ण सहयोगो है, तथा वह इसके लिये अपनी जान लगा दें।

ग्राम विद्यापीठ को जनता से प्राप्त धन

१. ग्राम समाज सुसाड़ा (खुर्द) ने २८० बीघा जमीन ग्राम विद्यापीठ को दान दी जिसके लिये ग्राम विद्यापीठ ही नहीं सम्पूर्ण भारत वर्ष उनका आभारी है।

२. ग्राम साधारणपुर ने २०० बीघे जमीन का दान देने का वचन दिया है। जिस में से कुछ व्यक्तियों ने अपने वचनानुसार भूमि की रजिस्ट्री करवा दी है। जो कि ७० बीघा है। आशा है कि बाकी लोग भी शीघ्र ही रजिस्ट्री करावेंगे।

३. रणसुरा ग्राम के व्यक्यिों ने भी भूमिदान का वचन दिया है तथा १८००० रुपये का दान देने का वचन दिया है। जिसमें से ५००० रुपये उन्होंने मकान के लिये अभी तक दिये। जिस के लिए संस्था उनकी बहुत आभारी है।

४. ग्राम बन्दरजुड़ा ने २ रुपये बीघा के हिसाब से दान देने का वचन दिया है तथा अभी तक लगभग ३००० रुपये दे चुके हैं। उनके लिये संस्था अपना आभार प्रकट करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. कुछ दान कुमराड़ा गांव, साधारणपुर ग्राम तथा चौंदाहेड़ी ग्राम ने भी देना प्रारम्भ किया है।

६. ग्राम मुन्डेट ने भी २ रुपया बीघा के हिसाब से दान देना प्रारम्भ कर दिया तथा वहां के श्री सागरसिंह त्यागी जी ने १००० रुपये ग्राम विद्यापीठ को दे कर अपने को ग्राम विद्यापीठ का आजीवन सदस्य बनाया है।

७. थोडा २ दान अन्य १-२ ग्रामों से भी प्राप्त हुआ है।

८. २८० बीघा भूमि अनुदान में देने के कारण सुसाड़ी खुर्द के प्रधान ग्राम-विद्यापीठ के सदस्य बना लिये गये हैं।

९. रुड़की के कुछ भट्टों ने ईंटें भी दान दी हैं तथा वहां के प्रत्येक भट्टे से ईंटों का अनुदान प्राप्त होगा। वहां के प्यारे लाल तथा श्री अमरनाथ जी ठेकेदारों ने संस्था की बहुत मदद की है।

१०. कुछ व्यक्तियों ने मासिक चन्दा देना भी प्रारम्भ किया है तथा कुछ ने मासिक चन्दा देने का वचन दिया है।

११. यह अनुदान संस्था को ऐसी अवस्था में प्राप्त है जब कि संस्था ने व्यवस्थित रूप से मांगना प्रारम्भ नहीं किया है किन्तु लोगों ने स्वय बुलाकर के दान दिया है।

दान देने वालों के प्रति संस्था पुन: आभार प्रकट करती है भावी अंक में सभी दान वीरों के नाम तथा दान राशि विधिवत् प्रकाशित की जावेगी।

विशेष सूचना:—

ग्राम विद्यापीठ ने समस्त इलाके की जनता के लाभ के लिये पैंठ- (साप्ताहिक बाजार) लगाने की योजना तैयार की है जिसमें सामान्य आवश्यकता की वस्तुओं तथा पशु गाय, बैल, भैंस, बछड़े आदि की बिक्री का प्रबन्ध करने का भी निश्चय किया है जिसके प्रारम्भ की निश्चित तिथि ३१-१-७१ तथा १-२-७१ दिन रविवार व सोमवार आस पास के गांवों और पैंठों में इश्तहार वितरण तथा बुनयादी द्वारा सूचित की जायेगी।

वर्तमान संक्षिप्त निर्माण कार्य का विवरण

ग्राम विद्यापीठ सरस्वतीनगर सहारनपुर

१ कार्यालय भवन (सात कमरे तथा एक २२'×११' का बरामदा)।
२ दो कमरे प्रत्येक २२'×९'।
३ चार कमरे प्रत्येक २०'×३०'।
४ दो हैंड पाइप।
५ एक अखाड़ा ३०'×३०'।
६ एक फ्लैश शौचालय। (बिना छत व घेरे के)

आगामी निर्माण-कार्य-क्रम सन् १९७१-७२ के लिए

निर्माण	अनुमानित लागत
१ प्रेस (दो कमरे, मशीन, अन्य सामग्री)	१५०००
२ नलकूप ८ इंची	२००००
३ एक ट्रैक्टर तथा आवश्यक सामग्री	३००००
४ जीप एक	१५०००
५ दूरभाष लगभग	१२००
६ छात्रावास	२५०००
७ अध्यापक निवास	२००००
८ विद्यालय भवन	३००००
९ अस्पताल	२००००
१० निवास स्थान (अन्य व्यक्ति)	१५०००
११ वाचनालय एवं पुस्तकालय भवन	६०००
१२ उप-डाकघर, तारघर	५०००
१३ व्यायामशाला (अखाड़ा) छत सहित	१००००
१४ योगाभ्यास भवन एवं साधना-कक्ष	१८०००
१५ शौचालय एवं स्नान-ग्रह	६०००
१६ रसोई-घर	६०००
१७ भण्डार भवन	६०००
१८ गौशाला	१००००
१९ वृक्षारोपण	३०००
२० पथ निर्माण-कार्य	२०००
२१ अन्य सामग्रियां	५०००
	२६८२००

समस्त जनता से सानुरोध प्रार्थना है कि वह कुल योग २६८२०० रुपए की राशि को ३० अप्रैल १९७१ प्रदान कर संस्था को अनुग्रहीत करें।

विद्यापीठ के कार्य-कर्ताओं द्वारा कार्य जो अब तक पूर्ण हो चुके हैं।

१—देवबन्द से मंगलौर जाने वाली सड़क के पक्के बनने की स्वीकृति।

२—ग्राम विद्यापीठ से भवरेड़े तक ८३ नलकूपों की स्वीकृति अर्थात् विद्यापीठ पर विद्युत की स्वीकृति।

३—ग्राम विद्यापीठ सरस्वती नगर पर अस्थाई पुलिस चौकी की स्वीकृति का आश्वासन।

निवेदक—

डॉ. शान्तिप्रकाश आत्रेय (महात्मा) एम.ए., पी-एच.डी.

संचालक—ग्राम विद्यापीठ सरस्वती नगर, पो. गंगदासपुर जि. सहारनपुर (उत्तर-प्रदेश) (भारत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[लुभावना समाचार]

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से एक भेंट !

● चमनलाल दुग्गल

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जिनके जीवन और मृत्यु पर एक विवाद बना हुआ है, नेताजी जीवित हैं यह एक आम जनभावना है खोसला आयोग की नियुक्ति केवल इसलिए हुई कि शाह नवाज खां समिति की रिपोर्ट पर न तो सरकार को सन्तोष था और न जनता को ही। प्रस्तुत रचना हमारे पास एक ऐसे व्यक्ति से आई जिनका कहना है कि उनकी नेताजी से प्रत्यक्ष भेंट हुई है। हम उक्त रचना को इसलिए प्रकाशित कर रहे हैं। जिससे आयोग तथा जनता के सामने उनकी यह बात भी आ सके। —सम्पादक

स्थान दुर्ग मूला जो श्रीनगर से लगभग २००-२५० मील आगे है। सन् १९५६ में वहां पर एक ८६ फील्ड अमूलैन्स (होस्पीटल) में मैं नरसिंग हवलदार के तौर पर ड्यूटी करता था। उसके बाद मेरी ड्यूटी सोना मार्ग श्रीनगर से ४०-५० मील आगे बालटाल के रास्ते में है। मुझे वहां का पूरा इन्चार्ज बनाकर भेज दिया गया था। जहां पर मेरा काम था पेसेन्ट की पूरी २ देखभाल करना और 5/11 G. R. की पूरी सिक रिपोर्ट देखना। दिनांक १० अगस्त १९५६ को हमारे कुछ जवान अमरनाथ यात्रा के लिये कैप्टिन खत्री की कमान्ड में चल दिये क्योंकि उस दिन राखी की छुट्टी थी हम सभी लोग यूनिट की तरफ से वैलफियर के तौर पर यात्रा करने जा रहे थे। हमारे चलने का समय था सुबह ४ और ५ के दरम्यान का। हम सभी जवानों को जो व्रत न रक्खे हुये थे उनको सुबह का नाश्ता बाल टाल स्थान पर दिया गया। वहां से ६ बजे के लगभग हम सब कैप्टिन डी० एस० खत्री कम्पनी कमान्डर जी. आर. (गोरखा रेजिमेन्ट) की कमान्ड में अमरनाथ जो बालटाल से लगभग ८-१० मील पर बीच के रास्ते से पड़ता है। वहां दूसरी तरफ से एक लाख यात्रियों का जत्था भी जा रहा था अमरनाथ गुफा की ओर हम सब भी शङ्कर जी का जाप करते २ बर्फीली टीलों पर बड़ी खुशी से घूमते हुए जा रहे थे।

उस समय हमको चारों ओर सड़क पर यात्री ही यात्री नजर आ रहे थे। जय शङ्कर की आवाज कानों में गूंज रही थी ऐसे सुनाई पड़ता था कि शङ्कर जी खुद आकाश से धरती पर पधारे हैं। हरएक यात्री का मन खुशी से उछल रहा था कि हम आज उस शिवलिंग के दर्शन करेंगे जिसकी न मालूम हमारे दिल में कितने जन्मों से उपासना की भावना जागृत थी। ऐसा सोचते-सोचते और गुनगान करते २ हम सभी यात्री अमुक स्थान पर जा पहुंचे। सबने अपनी पवित्र भावना सहित स्नान करते समय जो पानी का ठण्डापन शरीर पर डालने से जो शरीर को भी बर्फ़ की डलो के माफिक ठण्डा कर देता था, स्नान किया। स्नान करने के बाद सब यात्री धूप अगरबाती लेकर गुफा की तरफ बढ़े अपनी २ (भावना-श्रद्धा) अनुसार दर्शन करने गुफा में घुसे सबसे पहले शिवलिंग जी के दर्शन किये। उसके बाद पारवती जी का स्थान था उसके पश्चात् उसी लाइन में तीसरी गुफा जो थी उसमें तीन तेजस्वी साधु विराजमान थे और एक था पुजारी चौथा। यात्रियों के हाथों से भेंट ले-लेकर उन तीन साधुओं के चरणों में चढ़ाता जा रहा था। जहां प्रशाद के ढेर लग गये थे उन्हीं में से वह पुजारी हम सबको जो दर्शन करने जाते थे उनको प्रशाद देता जाता था। मगर मैंने उस पुजारी के हाथ से प्रशाद लेने से इन्कार करते हुए निवेदन किया कि मैं तो नेता जी के हाथ से प्रशाद लूँगा। जैसे ही मेरी आवाज मुँह से निकली नेता शब्द सुनते ही तीनों साधु चकित से हो गये और बीच वाले साधु जिसके आस पास दो केवल एक २ लँगोट पहने हुये और शरीर पर राख लपेटे हुये थे, उनके रक्षक के तौर पर बैठे थे उन तीनों के आगे एक-एक त्रिशूल गड़ा हुआ था, बीच वाले महात्मा जी जिनको कि मैं दृढ़ निश्चय के साथ सुभाष चन्द्र बोस (नेता) कहने का दावा करता हूं जो इतने तेजस्वी दिखाई पड़ रहे थे जिनकी आंखों और चेहरे से तेज टपक रहा था जो मेरे से एक क्षण भी बर्दाश्त तक नहीं हो सका। कुछ देर में मैंने अपने आपको सम्भाला तो उनका प्रशाद वाला हाथ मेरे हाथों में था जिसको छोड़ने को मेरा दिल न चाहता था। मगर दूसरे जो रक्षक साधु थे उन्होंने बड़े जोर से आवेश में आकर बोला कि प्रशाद लो और हाथ छोड़ो दूसरे यात्रियों को दर्शन का मौका दो। मैंने एक बेचैनी के रूप में नेताजी के हाथों से प्रशाद लिया और हाथ को चूमते हुए आगे बढ़ गया।

उस समय मुझे जो प्रसन्नता हुई उसको मैं अपने इस ५५ वर्ष की उम्र में अब तक भी प्राप्त नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सका क्योंकि मेरी आत्मा ने मुझे दृढ़ निश्चय के साथ प्रेरणा दी थी कि आज तुमने उस महान योगी के दर्शन किये जिसने सैकड़ों सालों की गुलामी से अपने भारत को अपने जवानों के खून की बलि देकर आज़ाद कराया था, मुझे बार-बार हर्ष का अनुभव होरहा था।

कुछ समय के बाद जब हम लोग अपने भोजन के के लिए नीचे उतरने शुरू हुये तो रास्ते में थोड़ी दूरी पर हम सब जवान बैठ गये और हम सबको कैप्टिन डी० एस० खत्री कम्पनी कमान्डर और कैन्टीन मैनेजर ने चार २ बिस्कुट भोजन के रूप में दिये। जिनको खाकर और अमरनाथ जी का पवित्र जल पीकर हम लोग अपने कंम्प की तरफ वापिस चल दिए। फिर मैंने अपने कम्प में जाकर कैप्टिन डी. एस. खत्री जो शायद आजकल या तो रिटायर होगये होंगे या फिर किसी बड़े पद पर गोरखा रेजिमेन्ट सैन्टर में नियुक्त होंगे उनसे मैंने पूछा कि साहब क्या आपने भी नेताजी के दर्शन किये या नहीं मगर उन्होंने मुझे इतना ही जवाब दिया कि तीन तेजस्वी साधुओं के दर्शन तो ज़रूर किये मगर मुझे पता नहीं नेताजी कौन से थे। फिर मैंने उनसे कहा कि जो बीच में पधारे हुए थे वे ही सुभाषचन्द्र बोस थे।

फिर उसके दूसरे दिन हम ८-१० व्यक्ति श्रीनगर गये थेतो मैंने स्पेशली बख्शी गुलाम मुहम्मद जो उस समय चीफ मनिस्टर थे उनसे लगभग ९-१० बजे के बीच मिला था और उनके सामने नेताजी का हवाला देते हुये सब कुछ बताया था, उन्होंने मुझे कहा था कि हम आज ही पूरी २ जांच परताल करेंगे। मगर मैंने कुछ घंटों बाद किसी समाचार पत्र में पढ़ा था कि जो साधु अमरनाथ गुफा में नेता जी के रूप में देखे गये हैं उनको किसी ने कतल कर दिया है और जो रुपया वहां पर इकट्ठा हुआ था वह भी सब कातिल ले कर भाग गये। मुझे पत्र में पढ़ने से यह सब ठीक २ अनुभव हुआ कि नेता जी के रक्षकों ने या नेता जी ने खुद जापान की तरह लोगों को भ्रम में डालने के लिये खुद ही पत्र में यह न्यूज छपवाई है ताकि लोग पीछा करने की कोशिश न कर सकें। किन्तु इस बात की छान बीन बख्शी साहब ने दो चार दिन बाद करवाई और स्टेटमैंट दिया कि वह साधु मारे नहीं गये बल्कि गायब हो गये हैं। अब मेरा सुझाव सरकार से है या नेता जी जाँच आयोग से कि इस पूरे विवरण की तुरन्त ठीक २ जांच परताल की जायें और उस समय का कोई पत्र मिल सके श्री नगर का तो उसको भी खोजा जाये मैंने अपना एक २ शब्द सत्य से परिपूर्ण करके अपनी आत्मा की आवाज पर आप सब तक यह स्टेटमैंट पत्रकार अस्तित्व को जो नगर सहारनपुर से प्रकाशित होता है उनको अपने हस्ताक्षर सहित दिया है। जिससे कि जहां भी मेरी आवश्यकता पड़े तो मैं हाज़िर होने के लिए तैयार हूं। खोसला जांच कमिशन को या सरकार को।

उसके बाद अचानक ३-२० मिन्ट पर मैंने प्रथम जनवरी १९५९ को प्रथम श्रेणी के ट्रेन के डब्बे में नेताजी को मिलट्री आफिसर की यूनिफार्म में टहलते हुये दिल्ली स्टेशन पर देखा था लखनऊ एक्सप्रेस में वह डब्बा किसी लेफ्टीनेंट कर्नल के नाम पर रिजर्व था मगर उसमें नेता जी थे मैंने चलती ट्रेन में उसी डब्बे में चढ़ने की कोशिश की किन्तु टहलते २ उन्होंने मुझे ऊँची आवाज़ से कहा कि दूसरे डब्बे में चढ़ जाओ यह रिजर्व है। उसके बाद मैं तो ट्रेन नहीं कैंच कर सका। दूसरी ट्रेन से लखनऊ पहुंचा मगर मुझे फिर उस महापुरुष के बहुत खोजने के बावजूद भी दर्शन नहीं हो सके। मगर यह गारन्टी के साथ कह सकता हूं कि नेता जी १९४५ में हवाई जहाज के हादसे में नहीं थे और कोई व्यक्ति हो सकता है, जो नेता जी के खुद के बनाये हुये षडयंत्र से भी हो सकता है और दूसरे कारणों से भी। क्यों कि नेता जी वहां से भी गायब हुये उन्होंने वहां से अपना चिन्ह नाम शरीर छिपाने का पूरा २ प्रयत्न किया. ताकि वह फिर किसी बन्धन में न पड़ जायें क्यों कि उनको आध्यात्मिकता से रुचि हो गई वह शायद जनता के समक्ष प्रकट होने पर आध्यात्मिकता के आधार पर विवशता का ही अनुभव करते हों मैं तो यह समझता हूं कि नेता जी ऊँचा आत्मिक बल प्राप्त कर चुके हैं जो मनुष्य जन्म जन्मान्तर तपस्या करने पर भी नहीं हासिल कर सकता है। इसीलिए वह प्रकट होना नहीं चाहते हैं। जब भी वे प्रकट होंगे तो एक अवतार के रूप में प्रकट होंगे।

आवश्यक सूचना

देश भक्त युवक समाज के समस्त कार्यकर्ताओं एवं शाखाओं को सूचित किया जाता है कि वे दिनांक २० दिसम्बर १९७० को ठीक २ बजे गांधी पार्क (निकट प्रतिमा सहारनपुर) अथवा जनमंच में एकत्र होकर संस्था के भावी कार्यक्रम को नवीनता देकर तथा केन्द्रीय चुनाव आदि करके संस्था को सक्रिय रूप देंगे। कार्यकर्ताओं को अलग से कोई सूचना नहीं दी जा सकेगी। तथा बाद में किसी भी कार्यकर्ता पदाधिकारी को कोई भी ऐतराज करने का अधिकार नहीं होगा।

द्वारा—संस्थापक देश भक्त युवक समाज।
प्रधान कार्यालय-बोसंजी रोड, पुल दालमन्डी सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य और अध्यात्म

लेखक—एस० आर० वर्मा
(सम्पादक)

वास्तव में सत्यता के साथ जीवन व्यतीत करना ही अध्यात्म ज्ञान है। जो सत्य को अपनाता है वह अहिंसा अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, सदाचार आदि को स्वतः ही अपनाने लगता है। जो सत्य को अपनायेगा वह अहिंसा को न जाने हुये भी अपनायेगा। सूर्य के सामने जाने वाले को सूर्य का प्रकाश मिलेगा परन्तु साथ ही गर्मी भी सूर्य का ही तो गुण है। अतः सत्यवादी को अहिंसक बनना ही पड़ेगा। सत्यभाषी का अर्थ बोलना ही नहीं है सत्याचरण भी है। कोई सत्य बोले पर आचरण में सत्यता न लावे तो वह सत्यवादी नहीं कहा जा सकता। सत्यवादी किसी को कष्ट नहीं देगा वह मधुर भाषी भी होगा, सदाचारी भी होगा। बहुत से लोग ऐसा कहते हैं कि भाई मैं तो सत्य बात कह देता हूं इसलिए लोग मुझ से रुष्ट रहते हैं, मुझ से किसी की खुशामद नहीं होती। यह सत्यभाषी का लक्षण नहीं है। यह एक दर्प है दिखावा है। भला सत्यवादी से कभी कोई रुष्ट हो सकता है? उसका किसी से द्वेष नहीं होता। यह हो सकता है कि किसी से मन के विपरीत बात सत्यवादी से हो जाय और वह आदमी उससे द्वेष करने लगे उसकी हानि भी कर दे, परन्तु अन्तराल उस को अवश्य धन्यवाद देगा उस का अहसान मानेगा। हां स्वार्थवश वह उसको कष्ट पहुंचा सकता है।

सत्याचरण करने वाले मनुष्य का अस्तेय धर्म भी पालन होता है। वह चोरी करेगा ही नहीं। भला सत्यवादी चोरी कैसे कर सकता है जबकि वह सत्य का पालन करता है। सत्य एक महान् प्रकाश है और चोरी अंधेरे की बात है। फिर भला प्रकाश में अंधेरा? वह भूखा रह सकता है पर चोरी कैसे करे? वह जानता है कि अधर्म भी एक चोरी है। इसलिए धर्म का पालन भी पूरी तरह से होता है। हरिश्चन्द्र के विचारों की ओर देखो। पुत्र के अन्तिम संस्कार के समय शैय्या पर कुछ नहीं था परन्तु हरिश्चन्द्र ने दया न की। उन्हें यह भी ज्ञात हो गया कि यह मेरा ही पुत्र है परन्तु श्मशान का कर ले ही लिया। इसीलिए तो आज हरिश्चन्द्र का नाम सत्य के साथ आता है।

हमें सत्य के काम बड़े कठिन और भयानक प्रतीत होते हैं. परन्तु उनके लिए यह सब स्वाभाविक ही थे, क्योंकि सत्य के प्रकाश में मोह का अन्धकार ठहर नहीं पाता। सत्य का प्रकाश ठीक ऐसा ही है जैसे सूर्य का प्रकाश। परन्तु सूर्य का प्रकाश बाहर है सत्य का अन्दर। इस प्रकाश में इन्द्रियां काम करती हैं, उसमें मन। जहां मन को सत्य का उजाला नहीं मिलता वहीं वह अनुचित कर्म कर जाता है। अन्धेरे में कभी कभी बड़ी भूल हो जाती है और उसके लिए जन्म भर पछताना हो सकता है। इस वास्ते अबतो सत्य का प्रकाश जाग्रत करो कभी भूल नहीं होगी। जो कार्य एक महा पुरुष (संत) कर सकता है, तुम भी ठीक वैसा ही कर सकते हो, परन्तु बात यही है कि अंधेरा (अज्ञान) न हो।

सत्य पर चलने वाला मनुष्य ही ब्रह्मचारी हो सकता है। क्यों कि वह जानता है कि वह अन्धेरे में है। व्याभिचार ठीक अपने को हनन करना है परन्तु वह क्यों करेगा? तुम जानते हो पाप क्या है? जिन कामों के करने से अपना या दूसरों का अहित हो वही पाप है।

सदाचार से रहना पुण्य है, धर्म है। दान देना, विद्या पढ़ना धर्म है. परन्तु सदाचारी उससे भी अधिक धर्मात्मा है। सदाचारी से सब देवता प्रसन्न रहते हैं और परमात्मा की कृपा भी सदैव होती रहती है। यह सब अध्यात्म ज्ञान ही है, उससे अलग नहीं।

अध्यात्मवादी पुरुष ही न्याय जानता है। वह सोचता है कि जैसे मुझे हर वस्तु की आवश्यकता है, दूसरों को भी वैसी ही है। इस वास्ते वह अपने भाग्य की वस्तु लेता है और शेष त्याग देता है, बहुत सी वस्तुओं का संग्रह नहीं करता, जिससे सब लोग उस वस्तु का उपयोग कर सकें। संग्रह करना भी पाप है।

क्यों कि अनेक लोग वंचित हो जाते हैं। उसका कारण यह है, कि आत्मा एक है और वह अपने को चाहती है। इसलिये कहते हैं आत्मा आत्मा को चाहती है। पुत्र मां से तभी तक प्रेम करता है जब तक की उसमें चैतन्य आत्मा है। पिता पुत्र

(कृपया देखिए पृष्ठ १६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

रेलवे स्टेशन चुड़ियाला और इकबालपुर के मध्य एक रेलवे हाल्ट का होना वहाँ की जनता के विचारानुकूल अनिवार्य समझा जा रहा है। जब कि उससे कम अन्तर पर कई एक हाल्ट बने हुए हैं। इस इलाके के छात्रों को तो विशेष कठिनाई है रेलवे विभाग तुरन्त इस ओर ध्यान दे तथा जनता की कठिनाई को पूरा करे। जबकि इलाके की जनता रेलवे को लाभ होने का विश्वास दिलाती है।

पत्र की विज्ञापन दरें

अन्तिम पृष्ठ	(बाह्य भाग)	१२५) रु०
,, ,,	(आधा भाग)	११२) रु०
अन्तिम पृष्ठ	(भीतरी भाग)	१००) रु०
,, ,,	(भीतरी आधा)	५०) रु०
अन्तिम से तृतीय पृष्ठ		१००) रु०
,, ,, ,,	आधा भाग	५०) रु०

इन्हीं दरों के अनुपात से कम से कम $\frac{1}{8}$ भाग भी विज्ञापन के रूप में छप सकेगा। इच्छुकगण अपने विज्ञापन पत्र में देकर लाभ उठाएँ। —सम्पादक

— विशेष सूचना —

आज देश की जो आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थिति चल रही है, इन सबको ध्यान में रखते हुए पँजाब सरकार ने पत्रकारों को अपने प्रदेश में तीन विशेष सुविधायें उपलब्ध कराई हैं। १. सभी पत्रकारों के बच्चों की निःशुल्क शिक्षा। २. पत्रकारों को निःशुल्क आवास। ३, निःशुल्क यात्रा।

अब आवश्यक है कि उ. प्र. के समस्त पत्रकारों को भी उपरोक्त सुविधायें उ. प्र. सरकार सुलभ करे।

पत्र के अतिरिक्त संरक्षक :

१. श्री सेठ पूरनचन्द साहनी मिल मालिक शुगर फैक्ट्री, देवबन्द, इकबालपुर (सहारनपुर)। २. श्री जगपाल सिंह डायरेक्टर (केन) सुन्हैटी आलापुर (सहारनपुर)। ३. श्री प्रेमसिंह वर्मा, डी. एम. ई. (भारतीय सेना)। ४. श्री केहरसिंह प्रधान, भलसवागाज (सहारनपुर)। ५. श्री बलजीतसिंह ब्लाक प्रमुख रामपुर (सहारनपुर)। ६. श्री महेन्द्र प्रताप एडवोकेट, रुड़की (सहारनपुर)। ७. श्री रामकिशन प्रधान, खानपुर (सहारनपुर)।

✻ शुभ - सूचना ✻

रायबहादुर नारायणसिंह शुगर मिल्स प्रा. लि.

लक्सर (सहारनपुर)

समस्त किसान वर्ग, कर्मचारी वर्ग तथा अन्य सब को सूचित किया जाता है कि १९७०-७१ के सीजन के लिये लक्सर मिल ७ दिसम्बर १९७० से गन्ने की पिराई शुरू करेगी।

निरन्जन सिंह
वर्क्स मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ १४ का शेष)
को तभी तक चाहता है जब तक वह चैतन्य आत्मा है। उसके बिना कोई नही पूछता। जो इसको जानने लगे हैं वे आत्मा का ज्ञान जान रहे हैं, वे सत्य जान रहे हैं, वे न्याय समझ रहे हैं। जहां भौतिक ज्ञान अपने लिये सुख चाहता है वहां आत्मज्ञान पराया सुख चाहता है। पराये सुख में जो सुख अपने को मिलता है वह बड़ा विचित्र सुख है। देखा है पुत्र जब किलकारी मारता है, तो माता का हृदय आनन्द से भर जाता है। व्यक्ति जब पर सुख से सुखी होने लगता है तब सामाजिक न्याय के लिए अधिक विवाद नहीं करना पड़ता यह सब तभी होता है जब हम आत्मा का ज्ञान जानने लगते हैं और उस सत्य के प्रकाश में पहुंचते हैं जहां सब एक है, जहां सम रसता है। इसलिए हम सबको सत्य, प्रेम, न्याय की ओर अग्रसर होकर जीवन का आधार आध्यात्मिकता को बनाना चाहिए। इसी मार्ग से सर्व श्रेष्ठ आनन्द प्राप्त होगा और शान्ति मिलेगी।

पचास वर्षों के अनुभव से निर्मित :
सर्वे यंत्रों के लिये एक मात्र स्थान
नेशनल इम्पोरियम
१७, सिविल लाइन्स, रुड़की
दूरभाष : २४७

आशा और विश्वास के साथ उचित मूल्य पर
विज्ञान संबंधी समस्त उपकरण एवं कैमिकल्स
खरीदने के लिये पधारें !
मै० हर्बल ड्रग हाऊस साइंस सप्लाईज़ कार्पोरेशन
निकट जैन अस्पताल, सहारनपुर दूरभाष : ३८६५

गर्मी, सर्दी, अग्नि तथा वर्षा से सुरक्षा के लिये
'चार मीनार'
सिमेन्ट की नालीदार चादरें ही लगाएँ !
अधिकृत एजेन्ट : चमन लाल जैन एण्ड संस
सहारनपुर : फोन - ४८८०

एस० आर० वर्मा द्वारा विकास प्रिंटिंग वर्क्स, सहारनपुर मे मुद्रित तथा प्रधान कार्यालय बोमन्जी रोड, पुल दालमण्डी, सहारनपुर से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राष्ट्रीयता, नैतिकता, देशभक्ति, आध्यात्मवाद एवं विशुद्ध समाजवादी विचारधारा का दिशा बोधक !

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तित्व

सम्पादक : एस० आर० वर्मा — ★ — संयुक्त सम्पादक : के० पी० सिंह

"देश भक्त युक्त समाज" का प्रबल समर्थक तथा युवावर्ग का पथ प्रदर्शक ।

•

देश भक्ति ही सर्वोच्च धर्म है !

•

वर्ष २ ★ अङ्कन् ६

•

हिन्दी-मासिक

मास फरवरी १९७१

•

मूल्य १ प्रति ४० पैसे
वार्षिक शुल्क ६ रु०

•

वर्ष में दो विशेषाङ्क सहित

•

संरक्षक :
बुद्धप्रकाश, डी. लिट्.

•

महामंत्री :
परामर्श समिति
नरेन्द्रसिंह यादव

साथियों बाँध लो सर पे कफन ।

संग्रहकर्ता:–रुपेन्द्रपालसिंह
सहारनपुर

साथियों बांध लो आज सर पे कफन ।
लुट न जाए वतन-लुट न जाए वतन ।।
साथियों बांध लो, आज सर पे कफन ।

वीरों की भूमि है दीप जलाते चलो ।।
तेज आंधी हो तुम, संसनाते चलो ।
लक्ष्मीबाई के गीत गाते चलो ।।
सर झुकाओ नहीं, सर कटाते चलो ।
तुमको आवाज देती है गंगो जमन ।।
लुट न जाए वतन लुट न जाए ।।

काफिले दुश्मनों की तरफ मोड़ दो ।
छोड़ दो खाना जंगी अभी छेड़ दो ।।
सर उठाए जो कोई तो सर फोड़ दो ।
तोड़ दो जड़ के दीवारे तुम तोड़ दो ।।
दूर शोलों से रखना है अपना चमन ।
लुट न जए वतन ....

आज भी सोते रहोगे पछताओगे ।
उमर भर अपनी गफलत पर पछताओगे ।।
फिर गुलामी के फंदे में फंस जाओगे ।
अपनी तहजीब पर बंदीशें पाओगे ।।
भूल जाओगे अपनी कला, अपना फन ।
लुट न जाए वतन.........
साथियों बांध लो आज सर पे कफन ।

सह-सम्पादक : शिवचरणसिंह

कृपया समस्त विद्यालय पत्र के ६) रु० भेजकर शीघ्र ग्राहक बनकर लाभ उठायें ।

प्रधान कार्यालय :
"अस्तित्व" बोमनजी रोड,
पुल दालमण्डो, सहारनपुर
उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

विमान अपहरण-कॉड

बात बहुत गम्भीर एवं सोचनीय है ! जो भारत की मिट्टी में पैदा हुआ है जिसने बड़ा होकर समस्त संसार को देखा और समझा जिसने अपनी मातृ भूमि की सौगन्ध को आधार मानते हुए देश भक्ति की ज्वाला में पग बढ़ाये हों तब कोई भी भारतीय कैसे और किस प्रकार विमान काँड घटना को सुनकर चुप रह सकता है यह घटना घटना न रह कर मेरे भारत के करोड़ों भाई बहिनों और भारत माता के अपमान का सूचक बन गई।

जो किसी भी भारतीय देश भक्त के लिए लज्जा का गहरा प्रश्न हो सकता है।

पाकिस्तान में हमारा विमान पिस्तोल की नोक के संकेत पर ले जाया जाये विमान में बैठे यात्रियों के हृदयों से पूछो कि उस समय उनके लिए क्या कुछ हो रहा होगा। वे भारतीय उस समय अशान्त होंगे वे विवश होंगे उनके चेहरों पर घबराहट की परछाई अपना विस्तृत रुप लिए होगी जब वे अपनी मातृ भूमि की सीमा के निकट से दूसरी दिशा में घूमें होगें तो उनकी आँखों से आँसू फूट निकले होगें वे बार २ सोच रहे होंगे कि हे भारत माँ हम तेरे लाल आज तुझे अन्तिम नमस्कार करते हैं हे माँ तू हमें क्षमा करना यदि हमसे कोई तेरे लिए अब तक भूल हुई हो, आज हमें अपने करोड़ों भाइयों-बहिनों को छोड़ते छोड़ते महान् दुःख हो रहा है किन्तु हम विवश हैं।

विमान पाकिस्तान की सीमा से आगे बढ़ा और एक निश्चित स्थान पर उतार लिया गया कहने सुनने पर यात्री वापिस किये गये, किन्तु दोनों डाकू विमान से बाहर नहीं आ सके क्या इस बात को समझने में भी भूल होगी कि ऐसा करने में पाकिस्तान का हाथ नहीं, जब भारतीय विमान में आग लगा दी गई तो उस समय पाकिस्तान की जनता प्रसन्नता से फूल रही थी। हाय २ हमारे लिए यह कितना लज्जा का प्रश्न है, **हमारे लिए यह कितना असहनीय दृश्य है। काश के मेरा .... चलता तो मैं कादापि भी .... करने पर तैयार न होता।**

यह समस्त भारत का ही नहीं अपितु उन अन्य राष्ट्रों का भी महान् अपमान है जो न्याय और सैद्धान्तिक रुप में भारत के प्रबल समर्थक हैं अब केवल प्रश्न यही शेष रहता है कि भारत सरकार को क्या कदम उठाना उचित है, तो समझना पड़ेगा कि हमें मिलकर **राष्ट्रीयता रुपी वृक्ष की छाया में देश के पच्चपन करोड़ आत्माओं के चेहरों को एकत्र कर एक आवाज एक शक्ति के साथ उस अपमान का शीघ्र से शीघ्र बदला एवं मुआवजा लेना ही होगा, जिस दब्बू और कायर पाकिस्तान से कभी आशा तक नहीं की जा सकती थी। यदि केन्द्रीय सरकार ने शक्ति से काम न लिया तो हो सकता है कि शीघ्र एक और दूसरा जहाज पाकिस्तान न चला जावे।** अब अधिक सहन करना हमारे लिये कायरता का सबूत है, क्या ऐसे अवसर पर भी भारत की जनता का भारतीय सेना का भारतीय नव युवकों का खून हरकत नहीं करेगा, अवश्य ही रक्त हमारी ध्वनियों में हरकत करेगा। **यदि हमने कुछ न किया तो हम सब कायर सिद्ध होंगे हम संसार के अन्य देशों की दृष्टि में दब्बू माने जायेगें।** इसी को आधार मानते हुये हमें अपनी वीरता का परिचय रण में देना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही होगा और हमें प्रतिज्ञा के साथ एक के बजाये एक सौ विमान अपनी भारतीय भूमि में लाकर खड़े करने होगें। सरकार और जनता बड़ी सावधानी से स्तरकता से तैयारी में जुटे ऐसे अवसर पर माताथें भी पीछे नहीं रहेगीं वे अपने प्यारे लालों के हृदय में देश भक्ति की भावना कूट २ कर अवश्य ही भरेंगी।

देखते हैं इसके लिए कितने वीर तैयार होकर सरकार को बाध्य करते हैं।

देश भक्त युवक समाज के कार्यकर्ता सर्व प्रथम सरकार को सब कुछ का बहुत कुछ समर्पित करने पर तत्पर हैं।

संसदयी-चुनाव

जो चुनाव मार्च के प्रथम सप्ताह में होने जा रहें यह केवल इसलिए कि देश के महान् नेताओं के परस्पर सैद्धान्तिक मत भेदों का निर्णय जनता जनार्दन की अदालत में ही हो सके। जनतत्र में जनता बड़ी है सरकार छोटी। अब प्रश्न उठता है कि मेरा व्यक्तिगत विचार चुनाव के विषय में क्या हो सकता है तो स्पष्ट होगा कि एक ऐसा तरीका जो बहुमत में विश्वास न रखकर सर्व सम्मति में विश्वास रखने में सफल सिद्ध हो जिससे जनता में पूर्ण निष्ठा उत्पन्न हो सके विशेष कर देहातों से यह प्रणाली बढ़ कर कस्बों और नगरों की ओर बढ़े तो ज्यादा अच्छा हो सकेगा। नीचे की श्रेणी से संसदीय श्रेणी तक पहुँचा जा सकता है। अभिप्रायः स्पष्ट है कि कोई प्रचार कोई कार-कोई तार-कोई यार-होशियार तक प्रतीत न हो तब जनता सर्व सम्मति को आधार मानकर जो कुछ करेंगी वही आदर्श नेता होगा ऐसा करते करते अन्तिम सीमा संसद तक जो नेता पहुँचेगें वे वही होंगे वास्तव में जो अधिकारी हैं। उनके द्वारा ही जनता की पूर्ण कठिनाईयां हल होंगी। अब प्रश्न पैदा होता है कि इस चुनाव में क्या और कैसे हो तो कहूँगा कि जनता व्यक्ति से पहले दल के सिद्धान्तों को भली भाँति समझे तत्पश्चात् अपना वोट उन सिद्धान्तों के दल को दे जो ९० प्रतिशत जनता की आर्थिक-सामाजिक कठिनाई को दूर भगाने में तत्परता दिखायें। जनता अपने प्रिय नेता का चयन करने से पूर्व उसके चरित्र पर व त्याग पर गहरी दृष्टि अवश्य डाल ले। जहाँ तक निर्दलय सदस्यों की बात है. उनको मैं निराधार मानता हूँ ऐसे व्यक्तियों से जनता और सरकार को विशेष हानि उठाने का खतरा सदैव बना रहता है। ऐसे व्यक्तियों पर विश्वास करना ही भारी भूल होती है। प्रायः अवसर देखकर ऐसे व्यक्ति चुनाव के मैदान में आया करते हैं। जो अपने स्वार्थ के अलावा और कुछ देख भी नहीं सकते हैं। इसलिए जनता अपना बहू मूल्य वोट किसी भी अच्छे दलीय उम्मीदवार को आत्मा की आवाज पर ही देकर अस्थिर प्रजातंत्र की नीव मजबूत करें। आशा है जनता इस परीक्षा में सफल होगी और एक आर्दश सरकार जो अधिक समय तक चल सके को तैयार करने में अपने कर्त्तव्य का परिचय दे सकेगी। किसी भी दल अथवा व्यक्ति के लिए आचार संहिता का होना अनिवार्य है तथा जो दल देश भक्तों को देश भक्ति हेतु उत्साहित नहीं करते या ऐसे व्यक्तियों को सुविधा देने में पीछे रहते हैं जिनके जीवन का प्रतिक्षण निःस्वार्थ भाव से सत्ता-संकीर्णता सिद्धान्त हीनता से रहित समस्त राष्ट्र के करोड़ों व्यक्तियों के लिए समर्पित हो चुका है। तो वह राजनैतिक दल वास्तव में वास्तविक देश भक्ति से पीछे हैं और स्वार्थ-सत्ता संकीर्णता के निकट है। इसलिए राजनैतिक क्रान्ति में राजनैतिक पार्टियों में उनके घोषणा पत्र में ऐसे देशभक्तों के लिए विशेष ध्यान देना परम् आवश्यक होगा। तभी भावी पीढ़ी में देश भक्ति का श्रोत फूटेगा व अपनी मातृ-भूमि के लिए जियेगें और मरेगें।●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश भक्त युवक समाज का परिवर्तनीय स्थाई संविधान

देश भक्त युवक समाज के उद्देश्य ।

नाम—देश भक्त युवक समाज ही होगा ।

स्थापना—दिनांक २८-७-६८ नगर सहारनपुर ।

क्षेत्र--समस्त भारतवर्ष ।

उद्देश्य--१-युवकों को हिंसा, जाति वाद, क्षेत्रिय वाद, साम्प्रदायिकता तथा भाषाई संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर राष्ट्रीयता की ओर अग्रसर करना ।

२—राष्ट्रीयता स्थापित करने वाली सभी मान्यताओं एवं आदर्शों की रक्षा करना ।

३—युवकों में नैतिकता तथा एकता के आधार पर सहयोग की वृद्धि करना ।

४—राष्ट्र एवं समाज के आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक विभेदों को दूर करने का प्रचार करना ।

५—संस्था के बीस सूत्री प्रतिज्ञा पत्र को युवकों के, जीवन में अंगिकार करना तथा संस्था के प्रति साधारण सदस्य से पचास पैसे प्राप्त करना जो केवल एक वर्ष हेतु ही शुल्क होगा एवं सदस्यता का अभियान चलाना प्रतिज्ञा पत्र देकर ऐसे व्यक्ति से बीस पैसे प्रचार हेतु प्राप्त करना जो सदस्यता रहित हो ।

६—चाय-धूम्रपान शराब मांस तथा अपव्यय के विरुद्ध अभियान चलाना युवकों को ब्रह्मचर्य पालन की ओर अग्रसर करने के उपायों से अवगत कराना ।

७—युवकों में सादगी, संयम, निःस्वार्थ त्याग मितव्ययता तथा कठोर परिश्रम की भावना को उत्पन्न करना ।

शोषण, अन्याय राष्ट्रीय अपव्यय के विरुद्ध समाचार पत्रों में लिखना, तथा प्रचार करना ।

८—युवकों में वैचारिक क्रान्ति का सूत्र पात कर उनके हृदय को परिवर्तित करना उनकी उचित सहायता करना उनका मार्ग निर्देशन सीधा देश भक्ति की ओर करना । तथा उनको समाज और राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों की ओर अग्रसर करना ।

९—भारतीय संस्कृति में पूर्ण निष्ठा एवं श्रद्धा रखने के प्रति युवकों को जागरुक करना ।

१०—राजनिति तथा दलबन्दी से ऊपर उठकर जन सेवा, सत्य निष्ठा में आस्था ।

११—ग्रामीण असत्य झगडों को वही आपसी निर्णय से समाप्त कराना एवं असत्य चलाये जाने वाले अदालती मुकदमों का अमुक स्थान पर ग्रामीण व्यक्तियों के विशेष समूह के सम्मुख सत्य की खोज कर अदालत को वास्तविकता से अवगत कराते हुये सत्य निर्णय हेतु ही निवेदन करना तथा अदालती दिये गये असत्य निर्णय को समाचार पत्रों में प्रकाशित करना है ।

१२—नैतिक मूल्यों और मान्यताओं के प्रति निष्ठा जागृत करना । नागरिकों के जीवन में रचनात्मक एवं उत्पादक दृष्टि कोण उत्पन्न करना ।

१३—अपने राष्ट्र को विदेशी राष्ट्र द्वारा किसी भी प्रकार की क्षति-आक्रमण एवं अपमान आदि के समय पर भारतीय सरकार, जनता एवं युवकों को भिन्न २ प्रकार से सुझाव कर्त्तव्यों आदि से अवगत करना । वीर सैनिकों के कर्त्तव्यों से प्रभावित होकर राष्ट्र की अधिकांश शिक्षण संस्थाओं सरकारी कार्यालयों में उनके चित्र लगवाने हेतु प्रयास करना ।

कार्य-क्रम

देश भक्त युवक समाज अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए वैधानिक मार्ग का ही अनुसरण करेगा । हिंसा तथा विघटन कारी प्रवृत्तियों को किसी भी दशा में प्रश्रेय नहीं दिया जायेगा । केन्द्रीय शाखाओं का गठन भिन्न २ स्थानों, विद्यालयों, ग्रामों तथा नगरों आदि में किया जा सकेगा ।

२—धूम्रपान, चाय तथा अन्य नशीली वस्तुओं के विरुद्ध प्रचार तथा प्रशिक्षण कार्य कर्म आयोजित किये जायेंगे । समयानुकूल कैम्प भी लगाये जा सकेंगे और हस्ताक्षरों द्वारा बीस सूत्री प्रतिज्ञा पत्र अपना कर समाचार पत्रों में विशेष रूप से प्रचार किया जा जा सकेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—देश के क्रान्तिकारी व्यक्तियों की जयन्ती सार्वजनिक रूप में मनायी जायेंगी।

४—युवकों के समक्ष छोटी २ गोष्ठी के रूप में समाज के आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक पहलुओं पर कुछ कर्मठ कार्य-कर्त्ता समय-समय पर अपने विचार व्याख्यान के रूप में दे सकेंगे।

युवकों में देश भक्ति, एकता तथा नैतिकता निर्माण के लिये निम्नलिखित कार्य-क्रम अपनायें जायेंगे—

१—भाषण प्रतियोगिता।

२—देश भक्तों के जीवन से सम्बन्धित प्रदर्शनी की योजना, पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना।

३—अश्लील साहित्य तथा गंदे चलचित्रों के विरुद्ध अभियान द्वारा प्रचार करना, समाचार पत्रों में प्रकाशित करना एवं युवकों को गोष्ठी में व्याख्यान द्वारा समझाना।

४—युवकों में देश भक्ति के चित्रों को चित्रण करना तथा आदर्श साहित्य का भी फैलाव करना।

५—देहातों में युवकों की छोटी बड़ी बैठकें करना और उनको देश भक्त युवक समाज के सम्पूर्ण कार्य-क्रम से अवगत कराना विशेष कर बीस सूत्री प्रतिज्ञा पत्र को व्यवहार में लाना देहात के अन्दर संस्था के वरिष्ठ कार्य कर्त्ता भिन्न २ स्थानों से सत्य की खोज कर अमुख ग्रामीण व्यक्तियों के बीच आपसी झगड़ों को समाप्त करा सकेंगे जिससे धन की समय की बचत हो और अदालत की ओर न जाना पड़े।

६—कुछ वरिष्ठ विद्यार्थियों के वस्त्र भोजन, पुस्तक, निवास, स्कूल शुल्क व्यय आदि का संस्था अपने एकत्र हुए कोष से प्रबन्ध भी समय २ पर कर सकेगी ये वही विद्यार्थी अथवा युवक होगे जो संस्था के विकास में अपने जीवन का विशेष समय लगाने पर तत्परता दिखायेंगे।

७—कुछ विशेष साहित्य का सार्वजनिक स्थानों पर जैसे स्कूल मेला पैठ आदि में संस्था अपने उद्देश्यों को विकसित करने हेतु कटिबद्ध रहेगी तथा केन्द्रीय एकत्र कोष का ३/४ भाग तक ऐसे समाचार पत्र में जो संस्था का प्रबल समर्थक रहेगा जैसे "अस्तित्व" मासिक के प्रकाशनार्थ में धनको केन्द्रीय विशेष समिति के १/२ के बहुमत पारित प्रस्ताव द्वारा ही व्यय किया जा सकेगा।

संगठन—

१—विद्यालयों में जिन छात्रों की अवस्था १४ वर्ष से अधिक होगी। और जो २० सूत्री प्रतिज्ञा पत्र को स्वयं रूचि के साथ अपनायेंगे उनको अमुक केन्द्रीय शाखा का साधारण सदस्य माना जा सकेगा।

२—अमुक केन्द्रीय शाखा का संगठन केवल तीन पदाधिकारियों द्वारा ही पूर्ण हो सकेगा।

(अ) अध्यक्ष (ब) मन्त्री (स) कोषाध्यक्ष।

३—संस्था की सदस्यता बीस सूत्री प्रतिज्ञा पत्र द्वारा ही पूर्ण हो सकेगी जबकि अमुक सदस्य वर्ष में ५० पैसे वार्षिक शुल्क देकर प्रतिज्ञा पत्र के नीचे की संलग्न रसीद पर हस्ताक्षर कर सकेगा।

केन्द्रीय एवं शाखाओं का संगठन—

१—केन्द्रीय समिति का संगठन केवल शाखा के संगठन पर ही निर्भर करेगा।

२—जो युवक बीस सूत्री प्रतिज्ञा पत्र में से अपने व्यवहारिक जीवन में कम से कम तीन प्रतिज्ञाओं को अपना सकेगा और जो संस्था के सहयोग समाचार पत्र अस्तित्व के लिये कम से कम पांच वार्षिक ग्राहक बनाकर अपन शाखा के अध्यक्ष अथवा मंत्री से लिखित संक्षिप्त प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकेगा वही केन्द्रीय समिति की सक्रिय सदस्यता प्राप्त कर सकने का अधिकारी होगा।

३—केन्द्रीय शाखाओं के अध्यक्ष मंत्री तथा कोषाध्यक्ष के लिये भी यह अनिवार्य होगा कि, वह प्रत्येक तीन ग्राहक कम से कम संस्था के समाचार पत्र के वार्षिक बना कर एक वर्ष के लिए निशुल्क समाचार पत्र अपनी शाखा हेतु मंगाने के अधिकारी होंगे जो पत्र केवल प्रबल समर्थक होगा।

केन्द्रीय विशेष समिति—

(अ) केवल पांच व्यक्ति ही केन्द्रीय विशेष समिति या कार्यकारिणी के सदस्य होंगे।

१—अध्यक्ष २—मंत्री ३—कोषाध्यक्ष ४—सैद्धान्तिक विशेषज्ञ ५—एक अन्य सदस्य मंत्री की राय से।

(स) कुछ कार्य केन्द्रीय समिति १/२ के बहुमत से ही प्रस्ताव द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारित कर सकेगी। शेष पदाधिकारियों के अधिकार से।

(द) किसी भी केन्द्रीय समिति के सदस्य या पदाधिकारी की अवस्था ५० वर्ष से अधिक नहीं हो सकेगी। (स्कूल प्रमाण पत्र के आधार पर) कम से कम १४ वर्ष अवस्था मान्य होगी।

(य) संस्था के विशेष और अन्तिम अधिकार केन्द्रीय समिति को ही प्राप्त होंगे केन्द्रीय समिति के पांच पदाधिकारियों के लिये यह आवश्यक होगा कि वह बीस सूत्री प्रतिज्ञा पत्र से कम से कम अपने व्यवहारिक जीवन में पांच प्रतिज्ञायें अवश्य अपनायेगें।

केन्द्रीय शाखायें

१—केन्द्रीय शाखाओं के आस-पास किसी विशेष चौराहे स्थान पर बीस सूत्री प्रतिज्ञा पत्र सुन्दर पट अक्षरों में लकड़ी, लोहे, टीन, गत्ता, कागज आदि की पट्टियों सहित खड़ा किया जाना अनिवार्य होगा।

केन्द्रीय शाखाओं का कार्य-क्रम

जो भी शाखा समिति अपना कुछ कार्य क्रियान्वित करेगी उसकी सूचना तुरन्त केन्द्रीय कार्यालय को पत्र द्वारा लिखित भेजना अनिवार्य होगा केन्द्र पर वर्ष में एक बार सभी शाखाओं के अध्यक्ष मन्त्री को बुलावा भेजने पर पहुँचना आवश्यक होगा। यदि आवश्यकता पड़ने पर वर्ष के बीच में भी सूचना केन्द्र द्वारा दी जाये तो भी केन्द्रीय बैठक में सम्मिलित होना आवश्यक समझा जायेगा।

प्रदेशीय स्तर

प्रत्येक जिला समिति २५ सक्रिय सदस्यों द्वारा एक प्रतिनिधि बहुमत के आधार पर चयन किया जा सकेगा जिसका मत प्रदेशीय समिति के लिए होगा इसी प्रकार से अखिल भारतीय स्तर हेतु भी प्रदेश से बढ़कर संगठन अपना रूप विकसित कर सकेगा।

चुनाव काल

प्रथम जनवरी से ३१ दिसम्बर तक का समय समस्त पदाधिकारियों का मान्य होगा वर्ष के भीतर शाखायें केन्द्र सभी प्रकार के पदाधिकारियों के चुनाव पूर्ण होना आवश्यक होगा। यदि केन्द्रीय समिति चाहे तो चुनाव स्थगित करके समय १ वर्ष से बढ़ाकर पाँच वर्ष तक पुरानी समिति ही अपना कार्य निरन्तर करती रहेगी प्रस्ताव चुनाव से ७२ घंटें पूर्व पारित कर सकेगी ऊपर और नीचे के स्तरों पर भी यह नियम लागु हो सकेगा।

संरक्षक

भिन्न २ स्थानों से संस्था के संरक्षक बनाये जायेगें। अतिरिक्त अथवा मुख्य संरक्षक भी हो सकेंगें। मुख्य संरक्षक शुल्क पाँच सौ रु० होगा।

"सदस्यता शुल्क तथा अवस्था सीमा"

१—संस्था के साधारण सदस्य का शुल्क वार्षिक ५० पैसा होगा और सक्रिय सदस्य का शुल्क वार्षिक २ रुपया होगा, तथा सरंक्षक वार्षिक शुल्क कम से कम ५ रुपया और अधिक से अधिक की कोई सीमा नहीं होगी। बाल समिति की सदस्यता २५ पैसे होगी। जो पाँच प्रतिज्ञाओं पर ही होगी।

२—कम से कम १४ वर्ष और अधिक से अधिक ५० वर्ष संस्था के सदस्यों की अवस्था सीमा निर्धारित हो सकेगी।

३—किन्तु संस्था की बाल समिति जो कि ६ वर्ष से १४ वर्ष तक मान्य होगी की अवस्था निर्धारित रहेगी।

"बाल समिति का गठन"

१—संस्था की बाल समिति का गठन केवल छोटे विद्यालयों से ही आरम्भ हो सकेगा। अथवा देहात या नगर के भिन्न २ स्थानों में ही हो सकेगा।

२—बाल समिति के गठन में अध्यापकों का सहयोग विशेष प्रकार से लिया जा सकता है। बाल समिति की बैठकें उसी स्थान पर निर्धारित हो सकेगी जहाँ कि बच्चों की संख्या अधिक हो सकेगी। अथवा कम से कम पच्चीस हो सकेगी।

कोष

१—जो धन पचास पैसे साधारण सदस्यता का केन्द्र पर एकत्र होगा उसमें से १० पैसे प्रति सदस्य की दर से कम नहीं हो सकेगा, केवल उन्हीं स्थानों शाखाओं पर ऐसा अनिवार्य समझा जा सकेगा जो शाखाऐं प्रति सदस्य १० पैसे की दर से अल्प कोष का अपनी शाखा हेतु ही अपनी इच्छा से व्यय करने के अधिकारी रहेगें।

२—जो धन केन्द्र पर अन्य प्रकार से एकत्र होगा वह नियमानुसार अर्थात् ३/४ भाग तक ऐसे स्थान पर व्यय हो सकेगा जिससे कि प्रचार द्वारा संगठन सुदृढ़ बने जैसे समाचार पत्र तथा अन्य प्रकार।

३—जो रसीदें संस्था की होंगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन पर यह अनिवार्य होगा कि केन्द्रीय मुख्य समिति के मंत्री अथवा अन्य एक पदाधिकारी के हस्ताक्षर स्टाम्प सहित नीचे की ओर अंकित हों। बिना इसके रसीद मान्य नहीं होगी।

व्यय

(अ) प्रत्येक व्यय का विवरण वाउचरों द्वारा ही मान्य होगा।

(ब) वर्ष के अन्त में आय व्यय का ब्यौरा तैयार किया जाना अनिवार्य होगा।

(स) अध्यक्ष तथा मन्त्री को अपनी इच्छानुकूल सात सौ रुपये तक (वर्ष में) व्यय करने का अधिकार प्राप्त होगा। किन्तु व्यय के वाउचरों को अपनी फाइल में रखना आवश्यक होगा। यदि उपरोक्त सीमा से अधिक व्यय करना पड़े तो केन्द्रीय मुख्य समिति के बहुमत से पहले प्रस्ताव द्वारा पारित करना आवश्यक समझा जायेगा। यही अधिकार प्रदेशीय तथा अखिल भारतीय स्तर पर भी मान्य होंगे केवल अध्यक्ष तथा मंत्री को क्रमशः एक हजार तथा डेढ़ हजार रुपये (उच्चस्तरीय) श्रेणी में व्यय करने का अधिकार हो सकेगा।

अध्यक्ष मन्त्री के अधिकार

१--दोनों पदाधिकारियों के अधिकार समान समझें जायेंगे किन्तु विशेष समय पर अन्तिम निर्णय हेतु अध्यक्ष ही अपनी राय से निर्णय देने का अधिकारी समझा जायेगा। यदि कोई समस्या मुख्य समिति के बहुमत द्वारा पूर्ण नहीं हो पाती।

२--अन्य समस्त कार्य की पूर्ण जिम्मेदारी मंत्री महोदय की ही होगी।

सदस्यता से निलम्बित

१--संविधान के अन्तर्गत न चलने पर।

२--आचार संहिता के विरुद्ध कार्य करने पर।

केन्द्र अथवा शाखा दो सप्ताह पूर्व सूचित कर किसी भी सदस्य को उसकी सुनवाई के पश्चात् संस्थान से निलम्बित कर सकती है।

कोषाध्यक्ष

(अ) संगठन के समस्त कोष का विवरण अपने पास रखना।

(ब) समस्त रसीदों का हिसाब रखना।

(स) वार्षिक आय व्यय का विवरण तैयार करना।

(द) मंत्री के साथ मिलकर किसी बैंक आदि में खाता खोलना। तथा अपने पास अधिक से अधिक तीन सौ रुपयों का कोष रखना आवश्यक होगा।

शाखाओं का कोष

सभी शाखा रसीदें केन्द्र से प्राप्त कर सकेंगी। किन्तु केन्द्रीय मंत्री की स्वीकृति के आधार हर ही वे अपनी शाखा हेतु कोष एकत्र कर सकेगीं।

लेखा जोखा अधिकारी

केन्द्रीय समिति किसी भी व्यक्ति को अपने बहुमत से समस्त वाउचरों आदि की जाँच हेतु अमुक व्यक्ति को निर्धारित कर सकती है।

संविधान में संशोधन

किसी भी प्रकार का संशोधन संविधान में वार्षिक सम्मेलन में ही सक्रिय सदस्यों की उपस्थिति के $\frac{2}{3}$ बहुमत से ही सम्भव हो सकेगा यदि सम्मेलन वर्ष के अन्दर नहीं हो सकता तो फिर पांचवे वर्ष होना आवश्यक होगा।

संस्थापक

केन्द्रीय समिति के समस्त अधिकार संस्थापक के अधिकारों में निहीत रहेंगे।

संगठन जब तक सुदृढ़ न बन सके तब तक संस्थापक संगठन की समस्त रूप रेखा को अपने अधिकार से गति की दिशा देता रहेगा।

केन्द्रीय समिति में किसी भी प्रकार का वैचारिक संघर्ष उत्पन्न होने पर संस्थापक अपने विशेष अधिकार द्वारा अमुक पदाधिकारियों को संगठन से पृथक करने का अधिकारी होगा तथा उस स्थान की पूर्ति नये व्यक्तियों द्वारा करने का भी अधिकारी बना रहेगा। संस्था में सर्वोच्च स्थान जो केन्द्रीय समिति से भिन्न रहेगा संस्थापक सदैव के लिये बना रहेगा। संस्था में जो सज्जन अपने जीवन दान देकर सक्रिय रूप में भाग लेंगे संस्था ऐसे व्यक्तियों को उच्चतम स्थान एवं सम्मान सदैव देती रहेगी और समय २ पर उन के जीवन निर्वाह हेतु कुछ सहायतार्थ धन भी देने का प्रयास किया जा सकता है।

विशेष नोट—

२. संस्थापक—यह पद अनिश्चित समय तक निरन्तर चलता रहेगा क्योंकि अमुक व्यक्ति (संस्थापक, साधूराम वर्मा जो "अस्तित्व" पत्र के सम्पादक भी हैं) के जीवन का प्रतिक्षण भाग निःस्वार्थ सत्यता, विशुद्धता एवं राजनैतिक प्रथकतावादी गतिविधियों से दूर रहकर संस्था के विकास में लगभग साढ़े तीन वर्षों से लग रहा है! जिन्होंने कश्मीर, जम्मू ऊद्धमपुर, श्रीनगर, पठानकोट, पंजाब, हरियाणा, देहली, देहरादून, हरिद्वार, सहारनपुर आदि स्थानों पर विशेष रूप से संस्था का रात-दिन पैदल घूम कर विशेष रुचि के साथ प्रचार किया तथा कुछ शाखाओं का गठन भी किया गया है। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश क्रांति के चौराहे पर

मतदाता जागरूक बनें

(गुलजारीलाल नन्दा)

स्वतन्त्रता के बाद भारत में अनेक चुनाव हुये, लेकिन भारत के इतिहास में इस मध्यावधि चुनाव का महत्त्व असाधारण है। स्वतन्त्रता के पूर्व महत्मा गांधी के स्वराज आंदोलन का जो क्रान्तिकारी महत्व था, स्वतन्त्रता के पश्चात वही महत्व इस चुनाव का है।

स्वतन्त्रता के पश्चात जिन समस्याओं ने पूरे अर्थों में हमें स्वतन्त्र नहीं होने दिया और जिन अनेक उलझी हुई समस्याओं ने हमारी प्रगति को धीमा किया है, उनसे मुक्त होने के लिए देश क्रान्ति के चौराहे पर आ खड़ा हुआ है। आज जनता को यह निर्णय करना है कि क्या वह गरीबी, बेरोजगारी और बढ़ती हुई अराजकता को सदा के लिए समाप्त करना चाहती है, जो मध्यावधि चुनाव में विजयी होने के कारण हमारा लक्ष्य है अथवा नहीं। आज जनता का भविष्य स्वयं उसके ही हाथ में है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि देश में बेरोजगारी, गरीबी, असमानता और असन्तोष है। स्वतन्त्रता के समय हमने जिस रामराज्य और समस्त वर्गों को समता और न्याय के लिये समाजवाद की कल्पना की थी और जनता से जो वायदे किए थे, उन्हें पूरी तरह हम निभा नहीं सके हैं। उसका यह भी बड़ा कारण है कि प्रजातन्त्र में क्रांतिकारी निर्णय लेना उतना सहज नहीं जितना कि तानाशाही में है।

हमारे लिए यह सम्भव नहीं था कि हम मनमाने ढंग से समस्याओं को सुलझाने के लिए मनमाने कदम उठाते। महत्त्वपूर्ण कदम उठाने में हमारी अपनी सीमाएं भी हैं, क्योंकि हमें हर कार्य संविधान और संसद की इच्छा के अनुरूप ही करना पड़ता है।

समाजवाद की ओर तेजी से बढ़ने के मार्ग में कांग्रेस का एक बड़ा वर्ग भी, जो हमसे अलग होकर विरोधी कांग्रेस के नाम से जाना जाता है, बहुत बड़ी बाधा थी। विरोधी कांग्रेस के नेताओं में कामराज को छोड़कर अन्य किसी भी नेता की समाजवादी क्रांति में आस्था नहीं थी और न ही वे समाजवादी लक्ष्यों से प्रतिबद्ध होना चाहते थे। श्री कामराज भी अपने इन मित्रों के कारण समाजवादी तत्वों के पक्षधर और संरक्षक नहीं हो सके। यह अच्छा ही हुआ कि कांग्रेस में से प्रतिक्रियावादी एवं समाजवाद-विरोधी तत्व स्वयं ही अलग हो गए। आज हम अपने सारे संकोच त्यागकर पूरी दृढ़ता से समाजवाद की क्रांति की ओर बढ़ने के लिए आतुर हैं और इसी कारण यह मध्यावधि चुनाव करवा रहे हैं।

आज हर दिशा में जो अनेक आन्दोलन और असंतोष दिखाई पड़ते हैं उसका मुख्य कारण यह भी है कि हर क्षेत्र का व्यक्ति चाहे वह मजदूर हो, किसान हो, आदिवासी या अन्य किसी अनुसूचित वर्ग का नागरिक हो अपने अधिकारों के प्रति अतिशय सचेत हो गया है। निम्न और मध्यम वर्ग का हर व्यक्ति अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए संघर्षशील है। स्वतन्त्रता के समय जो व्यक्ति अपने अधिकारों के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता था और हर यथार्थ स्थिति से पलायन कर अपने में संतुष्ट रहता था, आज वही अपनी विकसित होती हुई स्थिति का आत्मनिरीक्षण करने और विकसित वर्गों से तुलना करने की क्षमता रखता है। वह समाज में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाने के लिए प्रयत्नशील है और इसी कारण समाज में टकराव और असमझौते की स्थिति दिखाई पड़ रही है। हमें प्रसन्नता भी है कि हमारी जनता न केवल अपने अधिकारों के प्रति, वरन देश की सामाजिक और राजनैतिक स्थिति और गतिविधियों के प्रति भी पूरी जाकरुक है। हमारी जनता यह अच्छी तरह से समझती है कि कौन-सा दल उसका सच्चा हितैषी है। जनता की जागरूकता मध्यावधि चुनाव में स्पष्ट प्रकट हो जावेगी।

मैं ऐसा मानता हूँ कि इस चुनाव में विरोधी कांग्रेस, संसोपा स्वतन्त्र जैसे सिद्धान्तहीन दलों का अस्तित्व सदा के लिए समाप्त हो जावेगा। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

भावी अंक में हम अपने सह-संपादक के लिए आवश्यक जानकारी प्रस्तुत करेंगे ! जो कि उनके अपने जीवन सम्बन्धी होगी ।

'आवश्यकता है'

"देश भक्त युवक समाज" के विकास हेतु एवं 'अस्तित्व' पत्र के विकास हेतु हमें कुछ नव युवक चाहिये । जो कम से कम इण्टर उत्तीर्ण हो, और जिनकी रुचि समाज, राष्ट्र के उत्थान हेतु क्रांति की भावना अपने में विद्यमान् हो ! जिनको केवल कम से कम सहायता के रूप में कुछ वेतन अथवा भत्ता भी दिया जा सकेगा, जो प्रत्येक युवक की योग्यता पर निर्भर करेगा । प्रार्थना-पत्र १०-३-७१ तक प्रधान कार्यालय में पहुँचने आवश्यक है । एवं साथ में एक छोटा फोटो भी भेजना अनिवार्य है । स्वीकृत प्रार्थना-पत्र की सूचना एक सप्ताह बाद घोषित की जायेगी केवल उन्हीं उम्मीदवारों की जो कि आशाजनक समझे जायेंगे ।

संस्थापक :
'देश भक्त युवक समाज'
द्वारा संपादक,
"अस्तित्व" प्रधान कार्यालय
बोमनजी रोड, पुल दालमण्डी,
सहारनपुर (यू० पी०)

"ग्राहकों से विशेष निवेदन"

कृपया जिन महानुभाव का शुल्क षट मासिक अथवा वार्षिक समाप्त हो गया है वे शीघ्र मनिआर्डर द्वारा कार्यालय को भेज कर पुनः सदस्यता को ग्रहण करें । इससे पूर्व कोई अंक उनको नहीं भेजा जा सकेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चा प्रत्याशी हारे या जीते, उसकी दोनों ओर जीत है।

हमने कई बार कहा है कि चुनाव लड़ना नहीं, उसे तो खेलना चाहिए, जैसे कि कुश्ती खेलते हैं। जैसे दो मनुष्यों के बिना कुश्ती नहीं होती, वैसे ही विरोधी पार्टी के बिना लोकशाही का कारोबार अच्छा नहीं चलता। अगर हम विरोधी पार्टी चाहते हैं, तो चुनाव खेलें, पर उसे लड़ना नहीं चाहिये। इससे चुनाव में जो बुराइयां होती हैं, वे तो कम से कम नहीं होंगी। जिसने चुनाव जीत लिया, उसे राज्य कारोबार चलाने का इनाम मिल गया और जो चुनाव हार गया, उसको सार्वजनिक सेवा का नारियल मिला जैसे कि कुश्ती में हारने वाले को भी नारियल मिलता है। दोनों को दोनों तरफ से लाभ है। जो जीतेगा, वह राज्य कारोबार चलायेगा, जो हारेगा, वह सीधी लोक सेवा करेगा। जो सच्चा सेवक है, उसकी दोनों बाजू जीत होती है। अतः चुनाव में हमें समान वृत्ति रखनी चाहिये।

प्राचीनकाल में हिन्दुस्तान में पिता हिन्दू होता था, तो उसका एक बेटा बौद्ध तो दूसरा जैन, पर वे सभी एक परिवार में पिता हिन्दू होता था, तो उसका एक बेटा बौद्ध तो दूसरा जैन, पर वे सभी एक परिवार में प्रेम से रहते और अपने धर्म पर विश्वास अलग-अलग रूप से रखते थे। आज भी कहीं कहीं एक ही घर में कोई कांग्रेसी है, तो कोई अन्य दल का पक्ष धर। तो जैसे धर्म—विश्वास अलग होने से प्रेम तोड़ने की जरूरत नहीं पड़ती, वैसे ही पक्ष अलग होने पर प्रेम तोड़ने की जरूरत नहीं। इसलिये चुनाव में लड़ने की वृत्ति "टु फाइट इलेक्शन"—यह शब्द बहुत बुरा है। यह शब्द अंग्रेजी भाषा से आया है। अपने देश में तो चुनाव खेल ही होना चाहिये।

चुनाव को कितना भी महत्व क्यों न दिया जाय, आखिर वह ऐसी चीज नहीं कि उससे समाज के उत्थान में हम कुछ मदद पहुँचा सकें। वह लोकतन्त्र में खड़ा किया हुआ एक यन्त्र है। एक "फार्मल डेमोक्रेसी" (औपचारिक लोकसत्ता) आयी है। वह मांग करती है कि राज्य-कार्य में हर मनुष्य का हिस्सा हो। इसलिये हर एक की राय पूछकर मतों की गिनती करनी चाहिए। यह तो हर कोई जानता है कि ऐसी कोई समानता परमेश्वर ने पैदा नहीं की, जिसके आधार पर एक मनुष्य के एक वोट की जितनी महत्ता है, उतनी ही वह दूसरे मनुष्य के लिये भी हो। इसमें अक्ल है, हम नहीं जानते और न ऐसा कोई शख्स ही दीखता है, जो यह मुझे समझा दे। परन्तु जब मैं इसका अपने मन में समर्थन करता हूँ, तब मुझे बड़ा ही आनन्द होता है।

मैं समर्थन करता हूँ कि इससे वेदान्त का प्रचार होता है। इसमें आत्मा की समानता मानी गई है। बुद्धि अलग-अलग है, कम-वेशी है, शरीर शक्ति कमवेशी है, और भी शक्तियां हर एक की अलग-अलग होती हैं। फिर भी हम हर एक वोट देते हैं। इसका इसी विचार से समर्थन होगा कि इसे मानने वाले लोग वेदान्त को मानते हैं। यह बहुत अच्छी बात है। इसी आधार पर हम भी उनका समर्थन करते हैं। हमें बहुत अच्छा लगता है कि एक पत्थर हमें मिल गया, जिस पर हम साम्ययोगी समाज की स्थापना कर सकते हैं।

—विनोबा भावे

पाक सैनिकों की हलचल बढ़ी

विश्वस्त सूत्र द्वारा मालूम हुआ है कि भारतीय सेना से लड़ने वाले पाकिस्तानी क्षेत्रों से पाकिस्तान सेना के जवान पाक रेंजस वर्दियों में सीमा चौकियों पर तैनात किये जा रहे हैं, हमारे भारतीय ग्रामों की जनता का ऐसा अनुमान है कि उस पर से भारी फौजी गाड़ियों की हलचल का शोर गुल सुनाई पड़ता रहता है। यह सम्भव है कि पाकिस्तान शीघ्र भारत पर फिर हमला करने की सोचे। —सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी, नेहरू, आजाद, जिन्ना ने नेताजी को ब्रिटिश के हवाले करने का समझौता किया

बम्बई २२ जनवरी। श्री उसमान पटेल जो अपने को नेताजी का अंग रक्षक बताते हैं ने कहा कि मैंने नेताजी के हुकम के अनुसार जहाज को आग लगाई थी और जहाज के जल जाने के बाद नेताजी किसी अज्ञात स्थान के लिये चले गये। उन्होने आगे कहा मुख्य बात यह है कि उस विमान में केवल चार व्यक्ति थे यानी नेताजी रहमान मैं और एक जापानी विमान चालक था और जापानी अफसर हम लोगों को ताईविंग में मिला था जिसने हमसे कहा कि यह जापानी क्षेत्र है। जब लोग रेस्ट हाऊस में थे उस समय नेताजी ने मुझ से कहा कि विमान को जला दो नेताजी के कहने पर मैंने दो टीन पैट्रोल जहाज पर छिड़क कर उस में आग लगा दी और विमान चालक उसे ६० फुट ऊँचाई पर ले गया तथा खुद एक हवाई छतरी से नीचे उतर आया उसके बाद जहाज नीचे गिरा और वह जल गया।

पटेल ने यह भी कहा कि उस वक्त नेता जी के कहने पर एक जापानी अधिकारी ने मेरी आंखों पर पट्टी बांधी और नेताजी वह उनकी पार्टी किसी स्थान के लिये चले गए यह तमाम किस्सा १८-८-४५ को हुआ।

यह बात श्रीमती रासविहारी बोस व उनके दो पुत्र और दो जापानी अधिकारी भी जानते हैं कि नेताजी उनके साथ अड्डे से कहीं चले गये थे। जापानी अधिकारियों के नाम थे कप्तान निकामे और श्र. सोमाने।

श्री उसमान पटेल ने श्री खोसला को बताया कि जब मैने नेताजी के सम्बन्ध में श्री नेहरू से बात की तो श्री नेहरू ने मुझे बताया कि महात्मा गांधी, मैंने (जवाहर लाल नेहरू), मौलाना अब्दुल कलाम आजाद और मुहम्मद अली जिन्ना ने मिलकर जब आजाद हिन्द सेना के व्यक्तियों पर लालकिले में मुकदमा चल रहा था तो मुकदमा चलाने वाली अदालत के अंग्रेज जज से हमने यह समझौता किया था कि यदि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भारत लौट आये तो हम तत्काल ब्रिटिश सरकार के हवाले कर देंगे।

शाहनवाज समिति ने नेताजी को मृत घोषित किया था। इसके बाद शाहनबाज जाँच समिति के प्रतिवेदन के सम्बन्ध में पं० नेहरू का रेडियों परभाषण सुनने के बाद जब मैं दिल्ली में उनसे मिला तब उन्होंने मुझे यह सूचना दी थी।

अपना बयान देते हुए श्री उसमान की आंखों में कई बार आंसू भर आये उन्होने कहा समझौते की खबर मुझे नेहरूजी ने दी थी और उसकी पुष्टि मौलाना आजाद ने तब की जब मैं मौलाना आजाद से मिला तथा मैंने उनको धमकी दी कि मुझे इस विषय में सत्य बात बताई गई तो मैं आपके सामने ही आत्महत्या कर लूंगा। मौलाना आजाद ने यह भी कहा था कि वह मामले की सारी सच्चाई एक किताब में जाहिर करेंगे।

उन्होंने आगे कहा कि मैंने श्री नेहरू को बता दिया था कि जहाज को इसलिए जलाया गया था ताकि दुश्मनों को नेताजी का पता न चल सके और विमान दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु नहीं हुई है।

इसके पूर्व मैंने पं० नेहरू से मिल कर उनके शाहनवाज समिति के समक्ष पेश होकर गवाही देने की अनुमति मांगी थी किन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया तथा मुझे ऐसा करने से रोक दिया।

श्री पटेल ने कहा कि श्री नेहरू ने अपने सचिव श्री नथाई से मुझे धन देने को कहा। मैंने धन लेने से इन्कार करते हुये कहा कि मुझे तो नेताजी चाहिये धन नहीं। बाद में श्री नेहरू ने मुझसे सरकार को एक आवेदन पत्र देने को कहा। उसमें उन्होंने मुझसे लिखवाया कि गिरफ्तारी के समय सिंगापुर में मेरे पास से अधिकारियों ने २१ हजार ६०० सिंगापुरी डालर छीन लिये थे। मैं वास्तव में यह धन आजाद हिन्द के कोष में जमा करा देना चाहता था।

श्री नेहरू से वार्ता के समय नासिक के श्री गोविन्दराम देश पाण्डे भी उपस्थित थे।

एक प्रश्न के उत्तर में श्री पटेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने कहा उस समय देश आजाद नहीं था इसलिये मैंने किसी को भी यह नहीं बताया कि नेताजी ताईहोक हवाई अड्डे से गायब हुए ।

उन्होंने आरोप लगाया कि श्री शाहनवाज खां को भी मैंने विमान जलाने की घटना बताई थी फिर भी उन्होंने अपनी जांच समिति में मेरा बयान लेने से इन्कार कर दिया था अब मैं न्याय मिलने की आशा से खोसला आयोग केसामने आया हूँ ।

एक प्रश्न का उत्तर देते हुये श्री पटेल ने कहा नेताजी ने मुझे आजाद हिन्द फौज का राशन आदि खरीदने के लिये २१ हजार ६०० सिंगापुरी डालर दिये थे जो मेरी गिरफ्तारी के समय मुझसे छीन लिये गये थे ।

नेताजी के बड़े भाई श्री सुरेश चन्द्र बोस के वकील श्री निहारेन्दु दत्त मजुमदार द्वारा जिरह किये जाने हर श्री पटेल ने कहा कि बिमान गिर जाने के बाद नेताजी ने अपनी सेनिक पोशाक उतार जापानी कपड़े पहन लिये इसके बाद नेताजी ने मुझ से एक तरफ खड़े होने को कहा नेताजी ने जापानी सैनिकों से भी कुछ कहा जापानी सैनिकों ने मुझे विश्रामालय के एक खम्बे से बांध दिया मेरी कमीज उतार दी गयी ।

उसके बाद मैंने नेताजी को नहीं देखा ।

श्री पटेल ने कहा कि अगले दिन मैं सिंगापुर रवाना हो गया पहले मैंने ट्रक में और फिर चार घन्टे नाव में यात्रा की मैं कोयतुबारु पहुँचा तथा वहां से मोटरकार द्वारा पेनांग में मुझे विपक्षी सेना ने गिरफ्तार कर लिया और मुझे युद्धबंदी के रूप में सिंगापुर पहुँचने में मुझे दो दिन लगे ।

इससे पूर्व श्री एम० ए० अय्यर ने कल दूसरे दिन भी अपना बयान जारी रखते हुए कहा कि मैंने नेताजी की अस्थियों की बात को किसी से नहीं छिपाया कि वो जाली हैं मेरे अलावा अस्थियों के बारे में कितने ही व्यक्तियों को और भी पता था कि वह जाली हैं ।

नागपुर के ३६ वर्षीय अध्यापक डा० सुरेश पांडे ने खोसला आयोग के सामने कहा कि मैंने १९६५ से कई बार नेताजी को हिमालय में देखा है । आयोग द्वारा स्पष्ट रूप से विशिष्ट स्थान बताने का आग्रह करने पर श्री पाण्डे ने कहा कि मैं नेताजी की आज्ञा बिना यह नहीं बता सकता और उन्होंने यह भी बताने से इन्कार किया कि १९६३ के बाद उन्हें नेताजी कहाँ मिले थे । चिढ़ कर आयोग ने उन्हें बैठ जाने को कहा ।

इनके बाद कप्तान आर० वी० विरमानी तथा डा० एम० ए० जमाल और श्री मनिलाल दोषी ने भी बयान दिये । ●

–साभार एक समाचार-पत्र

देश भक्त युवक समाज की विशेष बैठक

सहारनपुर दिनांक १७-२-७१ को एक विशेष बैठक गिलकालोनी में सम्पन्न हुई जिसमें सरकार से अनुरोध किया गया कि वे विमान अपहर्ताओं की वापसी व क्षति पूर्ति की माँग शीघ्र से शीघ्र पाकिस्तान से करें अन्यथा पाकिस्तान को जो चैलेन्ज किया जाये उसमें सभी पार्टियों के नेताओं की राय लेकर ही किया जाना अधिक अच्छा होगा इस अपमान को और अधिक दिन सहन नहीं किया जा सकता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहारनपुर प्रॉपर्टी डीलर्स

अम्बाला रोड, सहारनपुर

सहारनपुर में बिल्कुल ठीक कीमत पर २ रुपये गज से २०० रुपये गज तक की जमीन या २ हजार से २ लाख तक का मकान या दुकान खरीदने या बेचने के लिये तुरन्त हमसे मिलिये या हमें लिखिये।

हमारा पताः—

सहारनपुर प्रॉपर्टी डीलर्स

(गधी मार की धर्मशाला के सामने निकट, दौलत रेस्टुरेन्ट)
अम्बाला रोड, सहारनपुर।

मिलने का समयः—प्रातः १० बजे से रात्रि ८ बजे तक

पत्र के अतिरिक्त संरक्षक:

१. श्री सेठ पूरनचन्द साहनी मिल मालिक शूगर फैक्ट्री, देवबन्द, इकबालपुर (सहारनपुर)। २. श्री जगपालसिंह डायरेक्टर (केन) सुन्हैटी आलापुर (सहारनपुर)। ३. श्री प्रेमसिंह वर्मा, डी. एम. ई. (भारतीय सेना)। ४. श्री केहरसिंह प्रधान, भलसवागाज (सहारनपुर)। ५. श्री बलजीतसिंह ब्लाक प्रमुख रामपुर (सहारनपुर)। ६. श्री महेन्द्रप्रताप एडवोकेट, रुड़की (सहारनपुर)। ७. श्री रामकिशन प्रधान, खानपुर (सहारनपुर)। ८. श्री विशालचन्द जैन भूतपूर्व आ० मजिस्ट्रेट, (सहारनपुर)। ९. श्रीमती राजदुलारी गर्ग (सहारनपुर)।

विशेष सूचना

सभी ग्राहकों को यदि प्रति मास की प्रथम से आपकी अन्तिम दिनांक तक अस्तित्व डाक द्वारा नहीं पहुँचता तो कृपया एक पोस्ट कार्ड डालकर हमें शीघ्र सूचित करें अपने निकट के पोस्ट आफिस में पत्र को स्वयं खोजें।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० २०२१६/७०　　　　एल०रजि०नं० १५५५

देश को आत्म निर्भर करने में

गन्ने का भारी महत्व

जहाँ हमें जीवन में मोटर-गाड़ी-कपड़े तथा अन्य सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु तल्लीन रहना पड़ता है। ठीक दूसरी ओर हमें उस वस्तु की विशेष आवश्यकता होती है जिसके बिना हमारा तनिक भी कार्य नहीं चल सकता है और वह है बढ़िया दानेदार चीनी जो अच्छे गन्ने से तैयार की जाती है। वही गन्ना अनेकों रूपों में ढल कर जन-जीवन में उपयोगी सिद्ध होता है।

श्रेष्ट चीनी के निर्माता :

दी महालक्ष्मी शूगर मिल्स

लि० इकबालपुर

(जि० सहारनपुर) उ० प्र०

मैनेजर :
सरदार गुरुबख्शसिंह

मैनेजिंग डायरेक्टर :
सेठ पूरनचंद सहानी

एस० आर० वर्मा के लिए अशोककुमार शर्मा द्वारा अशोक प्रिंटिंग प्रेस, सहारनपुर में मुद्रित, तथा प्रधान कार्यालय बोमनजी रोड, पुल दाल मण्डी, सहारनपुर से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० २०२१६/७०

एल० रजि० नं०

राष्ट्रीयता, नैतिकता, देशभक्ति, आत्मसम्मान एवं विशुद्ध समाजवादी विचारधारा का दिशा बोधक !

अस्तित्व

सम्पादक : एस० आर० वर्मा — ★ — संयुक्त सम्पादक : के० पी० सिंह

"देश भक्त युक्त समाज" का प्रबल समर्थक तथा युवावर्ग का पथ प्रदर्शक ।

देश भक्ति ही सर्वोच्च धर्म है !

वर्ष २ ★ अङ्क ७

हिन्दी-मासिक

मास मार्च १९७१

मूल्य १ प्रति ४० पैसे

वार्षिक शुल्क ६ रुपये

वर्ष में दो विशेषाङ्क सहित

संरक्षक : बुद्धप्रकाश, डी. लिट्.

महामन्त्री : परामर्श समिति नरेन्द्रसिंह यादव एम. ए.

तीन की त्रिवेणी

संग्रहकर्ता:—सुरेन्द्रकुमार शर्मा सह-सम्पादक

तीन वस्तुयें कोई दूसरा नहीं चुरा सकता — बुद्धि, विद्या, योग्यता ।

तीन वस्तुयें बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता—भोजन, वायु, निद्रा ।

तीन वस्तुयें मनुष्य को असली उद्देश्य से रोकती हैं—क्रोध, लालच, बुरा आचरण ।

तीन वस्तुयें मनुष्य को नीचा गिरा देती हैं—चोरी, चुगली, झूठ ।

तीन वस्तुयें मनुष्य को कभी नहीं भूलनी चाहिये—सच्चाई, मृत्यु, वचन ।

तीन वस्तुयें भाई को भाई का शत्रु बना देती हैं—धन, भूमि, स्त्री ।

तीन वस्तुयें मनुष्य को जीवन में एक बार ही मिलती हैं—युवा-अवस्था, माता-पिता, सुन्दरता ।

सह-सम्पादक : शिवचरणसिंह
सुरेन्द्रकुमार शर्मा

कृपया समस्त विद्यालय पत्र के ६) रु० भेजकर शीघ्र ग्राहक बनकर लाभ उठावें ।

प्रधान कार्यालय :
"अस्तित्व" बोमनजी रोड,
पुल दालमण्डी, सहारनपुर
उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

क्रान्तिकारी नवयुवक भाग लें !

हमारा पहला कर्त्तव्य यह है कि हम समाज का विश्लेषण करके उसकी वास्तविकता का अनुभव करें। हम समाज के भीतर रहते हुये भी छोटी से छोटी वस्तु का मूल्यांकन करें और शेष वस्तुओं की कल्पना कर सकने की चेतना जाग्रत करें, समाज को किसी निश्चित विकास की ओर अग्रसर करने हेतु निश्चित रूप में उसकी विशेष पृवत्तियों का पता लगाने की हमारे हृदय में जिज्ञासा का श्रोत अवश्य ही फूटेगा ऐसा होने पर हम उन लोगों के साथ विचारों का सामान्जस्य कर सकेंगे, जो आशा, उत्साह और गति के रूप में धीरे २ समाज के बीच में अगवा बन कर चल रहे हैं।

ऐसे मनुष्य दूसरों के क्रष्टों को अपने ऊपर लेने पर तत्पर रहेंगे। उनकी क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य ही होगी जो समाज के लिए सदैव हेतु अमिट छाप बन कर रह जायेगी जो आने वाले तरुण वर्ग के लिए एक नया प्रमाण स्तम्भ के रूप में होगी।

इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति राष्ट्र चेतना है और इसी का लोक प्रिय नाम है भारतीय संस्कृति जो वास्तव में मनुष्य मात्र के लिये उसके अपने जीवन का गहरा श्रोत है। इसी आधार पर हम सबको अपने और अपने राष्ट्र के लिये सत्य के आधार पर एक ऐसे समाज की नींव को सुदृढ़ करना है जो पुरातन विचारों को केवल उन्हीं विचारोंको जो हमें पंगू बनाते हैं जो हमें दब्बू बनाते हैं जो हमें पतन की ओर ले जाते हैं और जो हमें सत्य-प्रेम से अलग करते हैं उन नये विचारों से पीछे हटाना है जिसका जन्म सभ्य-सुशील शिक्षा और दीक्षा प्राप्त परिवारों में हुआ है चाहे वह परिवार अध्यापक का परिवार है, वकील अथवा डाक्टर का। जब वैचारिक क्रान्ति का ध्वज लेकर ये नवयुवक स्वाभिमान के साथ नंगे भूखे, कड़ाके की तेज धूप में आँधी और तूफान में सर्दी और बरसात में सिंहनाद रुपी बिगुल बजाने में तनिक भी परवाह न करते हुये महानता का परिचय उस भारत माँ के सम्मुख देगें, तो तभी हमें पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी हम सब मिलकर ऐसे वीरों का जनता जनार्दन के सम्मुख हर समय स्वागत करने पर उनकी हर पीड़ा को अपने ऊपर लेने के लिए हम सदैव तयार रहेंगें।

यदि भारत की मिट्टी में कोई नवयुवक उत्पन्न हुआ है तो उसकी ध्वनियों में देश भक्ति का रक्त सदैव दिखाई पड़ना ही चाहिए उसके हाथ फौलाद के होने आवश्यक हैं उसका गठीला शरीर बज्र के समान दिखाई पड़ना चाहिए। शक्तिशाली बनो, मानसिक आवेग तथा बौद्धिक शक्ति के उच्छ्वास से अपने को परिप्लम्वित कर दो तभी तुम अपनी बुद्धि अपना प्रेम और अपनी क्रिया शक्ति का दूसरों में प्रचार कर सकोगे सब नैतिक शिक्षाओं का सार यही है।

भारतीय नवयुवक के सामने आज कोई ठोस लक्ष्य नहीं वह समाज के ऐसे व्यक्तियों से भी उपेक्षा रखता है जो कि समाज में नया परिवर्तन चाहते हैं। समाज के नैतिक मूल्यों और मान्यताओं के प्रति भी उसका अपना दृष्टि कोण तुच्छ है पच्छिमी सभ्यता के प्रभाव में वह अपने को तीव्र वेग से बहा ले जाने में सफल हो रहा है। जबकि युवक वर्ग को सच्चे नीति निष्ठ पुरुष की भाँति समाज में प्रशंसा का पात्र बनना चाहिए था। आज भी पूर्वीय और पच्छिमी हवा के झौकों के साथ मंडराते हुए उस महापुरुष के शब्दों को किसी भी नवयुवक को नहीं भूलने चाहिए जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहे थे, उन्होंने कहा था कि यदि मनुष्य के पास तीन बातें व्यवहारिक रुप में हैं तो अकेला मनुष्य ब्रह्माण्ड का सामना कर सकने में सफल हो सकता है और वे हैं सत्यता, विशुद्धता, निः स्वार्थता तथा मार्क्स ने भी कहा है कि मनुष्य यदि संकल्प करके कार्य में जुट जाये तो अवश्य ही सामाजिक मूल्यों को एवं पुराने आदर्शों को परिष्कृत और परिमार्जित करके समाज को नया मोड़ दे सकता है।

आज आवश्यकता है ऐसे वीरों की जो इस प्रकार की क्रान्ति को सफल बनाने में आगे आये जो भाग्य की अपेक्षा कम शक्ति में विश्वास रखते हों। जो कहने की अपेक्षा करने में तत्पर रहें। मुझे खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि आज भारतीय नवयुवक किसी २ परिस्थिति के अनुसार अपने को अर्थात् अपने नैतिक स्तर को चन्द टुकड़ों में ऐसे व्यक्तियों के हाथों बेचने में या सोपने में संकोच नहीं करता जिसका समाज में न सम्मान है न विश्वास है। तथा उसके अपने जीवन का न कोई सिद्धान्त ही है। ऐसा होने में एक भारी दोष अभिभावक का भी है, क्योंकि वह अपने कर्त्तव्य का सुचारु रुप से पालन तक नहीं कर पाता, वह अपने अन्य स्वार्थों में उलझा हुआ है।

वह भूल से समझ बैठा है कि मेरा पुत्र तो उचित दिशा की ओर गतिमान् है। जब कि पुत्र दिशा के अविरुद्ध गतिमान् है। दूसरा दोष हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली का मानता हूँ। तथा अन्य दोष समाज के वरिष्ट व्यक्तियों के ही हो सकते हैं।

आज जिस वातावरण के साथ भारतीय नवयुवक खिलवाड़ कर रहा है वह वातावरण उसको दरिद्रता की ओर ले जा रहा है, जिसका परिणाम स्पष्ट है कि आत्मा की निधि को पहचानने से विवश है। भौतिकवाद की दौड़ धूप और कोलाहल में हमारे नवयुवक अपने अस्तित्व को ही समाप्त कर गये। कब और कैसे नया समाज तैयार होगा फिर कहाँ और क्यों पर विचार होगा यह समझना भारतीय नवयुवकों के लिए ठीक ऐसा ही है जैसा कि पृथ्वी और आकाश को मिला देना।

जब स्वामी विवेकानन्द यूरोप के अनेक शहरों का भ्रमण कर रहे थे विशेषकर गरीबों की शिक्षा और आराम का तो वहाँ की स्थिति ने स्वामी जी को भारत के गरीबों की याद दिलादी, **स्वामी जी के आँखों से सच्ची देश भक्ति का श्रोत बहने लगा उनका हृदय उच्छलने लगा वे रो पड़े अपने भारत के निर्धनों की ओर दृष्टि करते हुये, कुछ देर पश्चात् वे गम्भीरता से अपने ऊपर काबू पा गये, और सोचने लगे कि इस अन्तर का कारण क्या है ? उत्तर मिला, 'शिक्षा'। शिक्षा के द्वारा उनमें आत्म विश्वास उत्पन्न हुआ और आत्म विश्वास के द्वारा मूल स्वाभाविक ब्रह्मभाव जागृत हुआ।** ठीक भारतीय नवयुवक भी यदि अपने देश के प्रति प्रेम, देश भक्ति तथा पूर्वजों के लिए सम्मान रखते हुए क्रान्ति के बिगुल को बजाने का संकल्प लेगें तो फिर से इस विवेकानन्द, गाँधी और टैगोर, दयानन्द की विशुद्ध जन्म भूमि में असंख्यक देश भक्त उत्पन्न होंगे। **देश भक्त युवक समाज ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इस महान् क्रान्ति को जन्म दिया है जो भारतीय नवयुवकों को सच्ची देशभक्ति की ओर बढ़ाते हुये उन्हें करोड़ों माताओं-बहिनों और भाइयों के दुःख दर्द के लिए जीना और उन्हीं के लिए मरना सिखायेगा। जिसका सदस्यता अभियान आरम्भ कर दिया गया है। तथा स्थाई कार्य-क्रम भी अपना वास्तविक रूप ले चुका है, इसलिए क्रान्तिकारी नवयुवक इसमें भाग ले।** ●

आध्यात्मिक मार्ग की ओर

परमात्मा से मनुष्य दूर है मनुष्य से परमात्मा दूर नहीं है। मैले कपड़े पर कभी रंग चढ़ता नहीं अर्थात् श्रद्धा रहित मनुष्य में ज्ञान नहीं होता, जब मनुष्य का अन्तःकरण शुद्ध होता है तो बुद्धि भी शुद्ध होती है जैसे सौ दवाई से बढ़कर एक परहेज है। जहां कामनायें आती हैं वहां भगवान कभी आते नहीं, **सच्चे संत पुरुष के जीवन में शान्ति क्यों आती है ? क्योंकि वे आदि में ही सद्मार्ग की ओर अग्रसर हुए, पारिवारिक**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातावरण मित्रमन्डली का प्रभाव एवं अन्य सत्संग आदि के द्वारा आदर्श मार्ग को प्राप्त करने में सफलता पायी होती है । पातांजलि दर्शन में बताया गया है कि हमारी पांच अवस्थायें होती हैं अधिकतर हमारा मन पहली पौडी पर चढ़ा हुआ है या अधिक से अधिक दूसरी पौडी पर चढ़ा रहता है किन्तु ज्ञानी पुरुष का मन तो पांचवी पौडी पर चढ़ा रहता है, क्योंकि उनका मन अविक्षित नहीं है जब सिंगल माइन्ड पुरुष हो जाता है तब स्वत: शान्ति आ जाती है जैसे साबुन कपड़े की उज्जवलता को नहीं करता किन्तु उसकी उज्जवलता रोकने वाली वस्तु को उससे दूर करता है, पुरुष को ज्ञानी बनने की आवश्यकता नहीं अपितु अज्ञान का पर्दा जो ऊपर पड़ा है उसको ज्ञान रुपी यन्त्र के द्वारा उठाकर अलग रखना है । बस पुरुष ज्ञान का भंडार है । इसी प्रकार मन भी हमें अवान्तरों से दूर हटाना है तब शान्ति की झलक स्वयं आ जानी स्वाभाविक है । शान्ति का इच्छुक सबका मन है । जब तक इच्छा मनुष्य की बनी रहती है तब तक शान्ति नहीं मिलती शान्ति और सुख दोनों का चोली दामन का साथ होता है पहले शान्ति को प्राप्त करो । व्यवहार की शान्ति उसी घर में होती है जिस घर में महिला सुशील होती है जिस घर में सीता, सावित्री जैसी और श्रवण, राम जैसे पुत्र हैं । उस घर में शान्ति अवश्य ही रहती है ।

वेदान्त में दो शब्द आते हैं हर्ष और आनन्द दोनों का अर्थ अलग २ होता है शान्ति पहले हर्ष को उत्पन्न करेगीं तो आनन्द किसी और जगह होगा सुख की भी दो किस्म होती हैं ।

(१) साक्ष्य सुख:—जिस फूल को प्राप्त करके उससे बढ़िया फूल की इच्छा बनी रहती है उसे साक्ष्य कहते हैं ।

(२) दिव्य सुख—हर्ष जो उत्पन्न करने वाली चीज होती है उस में विष मिला होता है और आनन्द को जो उत्पन्न करने वाली वस्तु होती है उसमें अमृत भरा होता है संसार की अपरिवर्तन वस्तु तो केवल एक आत्मा ही हैं व्यावहारिक सुख तो अपने कर्मो से प्राप्त होता है जो लौकिक है, दिव्य सुख तो ब्रह्मा के पास है, दृष्टा के अन्दर तो परिवर्तन नहीं होता उत्पत्ति वाला पदार्थ तो हर्ष ही दिया करता है, आनन्द नहीं दिया करता मनमाना पदार्थ जब प्राप्त हो जायगा तब क्षण भर के लिए शान्ति मिल जायेगी किन्तु अस्थाई सुख का आधार ब्रह्मानन्द ही है सांसारिक सुख तो मजा नहीं सजा है, इन विषयों का त्यागन करने में ही परम शान्ति है जहां विषयों की अधिकता होती है वहां रोग उत्पन्न होते हैं सच्चे संत पुरुष का मुख देखने पर और कामी पुरुष का मुख देखने पर विवेकी पुरुष विशेष अन्तर निकाल देते हैं जहां निष्ठा की कमी होगी वहां सदाचार की कमी होगी तत्वेता जो पुरुष होते हैं वे जैसा बोलते हैं वैसा अपने जीवन में ढालते हैं निष्ठा जिसकी ठीक बन जाती है उसकी दृष्टि तो सदैव उचित दिशा की ओर बढ़ेगी और तभी शान्ति प्राप्त होगी ।

दो राजा थे एक काशी का रहने वाला दूसरा किसी दूसरे स्थान का था दोनों घूमने के लिए अपने अपने रथ पर बाहर जंगल की ओर बढ़े एक स्थान जो तंग था दोनों उसी जगह पर पहुँच गये जो एक दूसरे के विरुद्ध अर्थात् आमने सामने खड़े हो गये और दोनों के सारथी सोचने लगे कि हम अपने सामने वाले को नीचा किस तरह दिखाये कोई भी अपना रथ पीछे हटाने में तैयार न हो ज्यों के त्यों आमने सामने खड़े रहे और कहने लगे कि मेरे रथ के महाराजा आपके रथ के महाराजा से अधिक महान् हैं । दूसरा भी ऐसे ही कहने लगा कि मेरे महाराज के पास तो बहुत धन है कोई भी कमी हमारे महाराजा के पास नहीं है तुम्हारे राजा से हमारे महाराज किसी भी तरह कम नहीं हैं । बहुत देर तक फैसला नहीं हो सका तब एक चतुर सारथी ने कहा कि तुम्हारे महाराजा ने सब कुछ प्राप्त कर लिया है । संसार के सभी आनन्द ले लिये हैं । तब दूसरे ने कहा कि हां सब कुछ प्राप्त कर लिया है सब कुछ जीत लिया है तब पहले सारथी ने पूछा क्या तुम्हारा राजा ज्ञानवान है और साथ–२ कहने लगे कि तुम्हारे महाराजा तो सज्जन को देखकर सज्जनता का व्यवहार करते हैं शत्रु को देखकर शत्रु सा व्यवहार करता है । किन्तु हमारा राजा तो सब के साथ एक सा व्यवहार करता है । शत्रु और मित्र के साथ बराबर का व्यवहार करते है सच्चे ज्ञानी पुरुषों के लक्षण हमारे वेदों के अन्दर ऐसे ही बताये हैं । हे ! परमात्मा तू सब जगह बैठा हुआ है । बच्चे और बूढ़े में भी ऐसा ज्ञानी पुरुष मानते हैं । हमारे मन में शान्ति इसलिए नहीं कि हम द्वेष ईर्ष्या भेद भाव को जीवन के साथ मिलाये हुये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहते हैं । जब तक ये शत्रु हमारे साथ मिलकर रहेंगे तब तक जीवन अमृत के समान नहीं बनेगा ।

जिस का मन बिल्कुल शान्त हो गया जिसका व्यवहार शुद्ध है सब को अपनी आत्मा में देखता है । वहीं ज्ञानी है । गीता को हृदय से शुद्ध मानकर उसको अपने जीवन में ढालना है। जब तक मन को शुद्ध नहीं किया जाता और व्यवहार शुद्ध नहीं है । तब तक वह ज्ञानी नहीं है । महान ज्ञानी उसको कहते हैं जो विचार-आचार को ऊंचा बना लेते हैं और जो ब्रह्म निष्ट में लीन हो जाते हैं ।

लगाम को खींच कर रक्खों ढीली मत रक्खो । नहीं तो यह हमें अज्ञान की ओर खींच ले जायेगा श्रेष्ठ पुरुष उसी को समझो जो ज्ञान की ओर बढ़ता है । जो सत्संग की ओर भेजता है एक होता है भगवान और दूसरा इन्सान तीसरा हैवान चौथा शैतान । इनको ठीक २ समझना ही ज्ञान है ।

मनुष्य 'राम' बन गया है या 'रावण' दोनों की राशि एक ही है । रावण को साल में एक बार याद करते हैं । मगर 'राम' को क्षण २ में रटते है । इसका कारण समझों, कंस और कृष्ण को समझों दोनों की राशि एक है किन्तु याद किसकी ज्यादा है इसको भी समझ लो सोचों 'राम' सदाचारी थे । कृष्ण भी सदाचारी थे । इसलिये जनता उन्हें बाद में भी याद करती है । क्योंकि सदाचारी थे । क्या रावण के पास सम्पत्ति की कमी थी नहीं किन्तु आचार की हमारे शास्त्रों में इतनी महिमा गायी गई है कि आचार को सर्वोश्रेष्ठ माना गया है । यही शिक्षा की पहिचान है । आज की शिक्षक सस्थाओं से जो एम. ए पास निकलते हैं क्या उन संस्थाओं की यह देन है कि वे चरित्र का अन्तिम रूप लेकर उनको निकालते हैं । किन्तु ऐसा होता नहीं । इसका इससे कोई सम्बन्ध नहीं कि आज करोड़ों एम. ए. दिखाई पड़ते हैं । किन्तु उनका व्यवहार तो देखियेगा । आज पढ़ाने वाले भी ऐसे है और पढ़ने वाले भी ऐसे ही । ही जैसा गुरु वैसा शिष्य, जैसा राजा होगा प्रजा भी वैसी ही होगी जैसा बाप होगा उसके कुछ गुण भी बेटे में अवश्य होगे सारथी कृष्ण और उसमें बैठने वाले अर्जुन । इसलिये तो कहा गया है कि भगवान सारथी को अच्छा अपनाओं यह पंच भौतिक शरीर रथ है । इसको चलाने वाला सारथी बुद्धि है । और आत्मा रथी है आगे कृष्णहै । (बुद्धि) पीछे गड्डे में अर्जुन है (आत्मा) घोड़े है (इन्द्रियाँ) यह संसार है कुरुक्षेत्र हम इसको चला रहे हैं सात्विक भाव से इसको चलाओ, शुद्ध भाव से रस लो, शुद्ध भाव से पाँच विषयों को भोगों अन्यथा अशुद्ध भाव से घोड़े हमें गड्डे में ले जायेंगे अगर बाहरी आंखें बन्द भी हो जाये तो अन्दर वाली आंखें बन्द नहीं होनी चाहिये आत्मा और बुद्धि आज के नवयुवकों में न कर्म है न धर्म है न शर्म है । स्मरण करो उस विश्व विद्यालय को जो प्राचीन था सुखदेव और सणत कुमार जिसमें पास हुये थे, पूरे विश्वविद्यालय में से ही दोनों इसका नाम है ज्ञान और आज कितने ऐसे विद्यालय हैं । हमें जो अज्ञानता की ओर ले जाए वह है अविद्या आज के विद्यालय इसी के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं यदि आज के वातावरण को शुद्ध बनाना है तो विद्यालयों में छात्रों के फैशन को सबसे पहले कम करना होगा उनके लिए आचार संहिता का होना अनिवार्य किया जाये ऐसे छात्रों को सबके समस्त पारितोषिक दिये जाये जो छात्र अपनी वेशभूषा को अधिक से अधिक साधारण रक्खें । तभी हमारा वातावरण शुद्ध हो सकेगा । इस कार्य को करने के लिये सबसे पहले विद्यालयों के प्रधानाचार्य आगे आयें ।●

अपनें को पहचानने के लिये मनुष्य को अपने से बाहर निकलकर, तटस्थ बनकर अपने को देखना है ।

—गाँधी जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में जन्म की सार्थकता

लेखक:– मुकेशचन्द्र गोविल

सत्य के लिये आपको शरीर भी त्यागना पड़े तो सानन्द त्याग दीजिए। यही अन्तिम ममता है जो भंग होती है।

—स्वामी रामतीर्थ

भारत में मैं अपनी जन्म सार्थकता क्यों मानता हूँ ये ही बता रहा हूँ— देखिये वो ही देश अच्छा होता है जहाँ समाज के माध्यम से मानव धर्म-कर्म-मोक्ष और काम की प्राप्ति बिना किसी रुकावट के हो जाती हो। इस अर्थ से तो भारत कसौटी पर खरा उतरता है। क्योंकि यहाँ धार्मिक मामलों में हर धर्मावलम्बी, मजहबी, और रिलीजन के लोगों को कोई कठिनाई नहीं होती। कर्म के मामलों में तो धर्म से भी अधिक छूट हमें हमारी सरकार से प्राप्त होती है। मोक्ष के लिये हम लोग जानते ही हैं कि योग की अति आवश्यकता होती है। योगी तो हमारा समाज वाध्य करके किसी को बना ही नहीं सकता। क्योंकि आज हमारा भारतीय समाज किसी भी प्राणी को न तो योगी बनने के लिये बाध्य कर सकता है और न ही वैसा वातावरण उपस्थित कर पाता है कि कोई योग की ओर उन्मुख हो। तब भी हमारी मातृ-भूमि भारत में मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य आसान तथा प्राप्य है। मोक्ष के लिये भी तो प्राणी इच्छा पर निर्भर है। काम के बारे में हर जाति के प्राणियों और हर विकासशील प्राणी को अपनी तरफ से सरकार ने हर प्रकार की सुविधाऐं प्रदान की हैं। अतः भारत भूमि की पृष्ठ भूमि समाज में धर्म-कर्म-मोक्ष और काम प्रत्येक की प्राप्ति का एक सुविधा जनक स्थली है। ये थी इसकी अति संक्षिप्त सामाजिक विवेचना।

हमको भारत के एक क्षेत्र में विवेचना करके यह सिद्ध करना चाहिये कि भारत में जन्म लेना सार्थक क्यों है? इसके लिए हमारे सामने कई शीर्षक आते है। इस बात का सबको पता है भारत को स्वतन्त्रता प्राप्ति के केवल तेईस वर्ष हुए हैं। अतः इसके लिये के अपने उत्थान की कई परिस्थितियाँ थी जो अब भी बहुत कुछ हैं।

जो निम्नलिखित हैं:—

१–धार्मिक क्षेत्र।
२–आर्थिक क्षेत्र।
३–राजनीतिक क्षेत्र।
४–शान्ति प्रियता का क्षेत्र।
५–वीरता का क्षेत्र।
६–सभ्यता का क्षेत्र।

प्रत्येक शीर्षक जिसको सिद्ध करना पड़ता है। उन प्रत्येक को कुछ सिद्ध करने के लिये सहायक होते हैं। इसी प्रकार इस लेख के भी उपलिखित सहायक हैं—

१. धार्मिक क्षेत्र–प्रत्येक जीवित मानव किसी न किसी धर्म के उपादानों (जैसा वातावरण होता है) में पलकर हृष्ठ-पुष्ट होता है। उसके अपने इर्द-गिर्द एक सुन्दर तथा अपने धर्म का आदर्श रहता है। क्योंकि जब कोई भी बालक छोटा रहता है तो उसे चाहे जो किसी भी सम्प्रदाय में पैदा हुआ हो उसे जैसे धार्मिक वातावरण में रखा जाता है वैसा ही प्रभाव पड़ता है।

प्रत्येक धर्म या सम्प्रदाय के लोगों के लिए भारत में प्रत्येक प्रकार की छूट तथा सुविधा प्रदान है। कोई व्यक्ति भी कोई भी धर्म स्वीकार कर सकता है। किसी को भी किसी और धर्म का प्रचार करने की छूट है। यहाँ अल्प संख्यकों और बहु संख्यकों को समानता प्रत्येक क्षेत्र में प्राप्त जिसका वे अपनी सुविधा के अनुसार उनका प्रयोग करते हैं।

आज केवल हिन्दुस्तान या भारत ही एक ऐसा देश जहाँ हर मानव को हर विषय के अनुकूल या प्रतिकूल बोलने की सुविधा है। क्या भारत के अलावा कहीं और ऐसी सुविधाएं है? आप खुद इस प्रश्न का उत्तर दें। क्या

[शेष पृष्ठ ८ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश भक्त युवक समाज नगर सहारनपुर शाखा द्वारा दिनांक १५-३-७१ को कुछ कार्यकर्ताओं ने क्रान्ति को नया मोड़ दिया।

गांधी पार्क में जो बैठक अमुक कार्यकर्ताओं की सम्पन्न हुई जिसमें सर्व सम्मति से मिलकर २० सूत्री प्रतिज्ञा पत्र में से एक प्रतिज्ञा नम्बर आठ को अपने जीवन में क्रियान्वित करने का सभी ने संकल्प लिया।

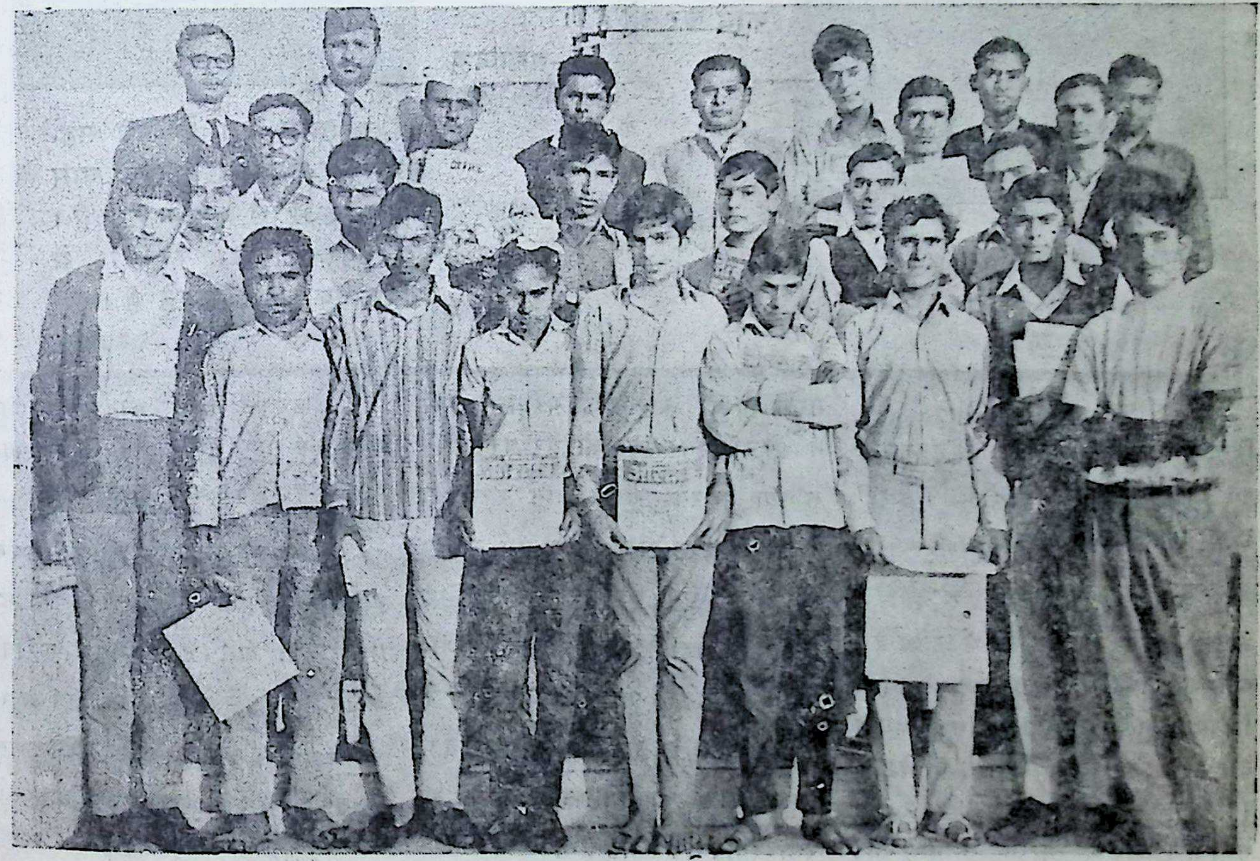

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिज्ञा नं० ८

मैं प्रतिदिन एक आधा घंटा हल्का श्वास नियन्त्रित व्यायाम, खेल, प्राणयाम में लगाने का प्रयास करूंगा, मैं सदैव सैनिक की भांति चलने गहरी श्वास लेने तथा भोजन धीरे २ चबा कर खाने की आदत का विकास करूंगा और राष्ट्र के १५ वर्ष के बच्चे से ३५ वर्ष तक की आयु के नागरिक के लिए सैनिक प्रशिक्षण अनिवार्य किये जाना का विशेष प्रचार करूंगा।

आप हैं श्री सुरेन्द्रकुमार, शर्मा आपके मुख्य गुण हैं सहन शीलता निर्भिकता अहिंसा, नम्रता आदि, आप पूर्ण जिम्मेदारी के साथ पत्र को प्रगति की ओर लेजा रहे हैं। आप अवैतनिक रुप में कार्य कर रहे हैं।

—सम्पादक

अस्तित्व पत्र के नये सह-सम्पादक श्री महेन्द्रसिंह जी मास मार्च १९७१ से मनोनित हुये है। जो बड़ी निष्ठा सत्यता से अवैतनिक कार्य कर रहे हैं।

—सम्पादक

[पृष्ठ ६ का शेष]

हिन्दू मुसलमान या मुसलमान—मुसलमान को या हिन्दू—हिन्दू को सुविधायें समान दृष्टि से प्राप्त नहीं होती।

२. आर्थिक क्षेत्र—फिर क्यों न भारत धार्मिक दृष्टि से श्रेष्टतम है। आर्थिक क्षेत्र में भारत केवल अर्थ में पिछड़ा हुआ है। इसका असली कारण देश में कुछ ही लोगों के पास ही देश में (गिने चुने) की सम्पत्ति का ६५% भाग है। फिर भी भारत में चाहे कोई गरीब हो या चाहे कोई गरीब ही क्यों न हो। इन सब को हर प्रकार की सुविधा भारत सरकार प्राप्त करा रही है। शिक्षा औषध, क्रीड़ा-धर्म-भ्रमण कर्म आदि ऐसे ही क्षेत्र हैं जो आर्थिक क्षेत्र में ही आते हैं। फिर भी कुछ पूंजी-पति या उनके आश्रित केवल अर्थ के क्षेत्र की अधिकता के कारण उचित, अधिक और शीघ्र प्राप्तिकर चीजों का रसा-स्वादन कर लेते हैं।

फिर भी भारत को आर्थिक क्षेत्र में अधिक समृद्ध होने के लिये अधिका-अधिक वक्त की आवश्यकता है।

फिर भी भारत में आर्थिक असमानताओं के होते हुये भी सब को सब प्रकार की आर्थिक सुविधा करीब-करीब है। इस प्रकार इस क्षेत्र में भी भारत श्रेष्ठ स्थान रखने की क्षमता रखता है। क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता जी की बातचीत

सत्यमेव जयते !

(श्री माँ, श्री अरविंद आश्रम पाण्डेचेरी-२)

प्रश्न—"मां, ऐसा कहा जाता है, कि अच्छाई और सत्य की सदा विजय होती है, किन्तु प्राय: जीवन में इसका उल्टा ही दिखलायी पड़ता है। दुष्ट लोगों की ही विजय होती है, लगता है जैसे वे किसी प्रकार से कष्टों से संरक्षण प्राप्त करते हैं।"

उत्तर—(माता जी हंसती हैं)

लोग सदा दो विचारों के बीच गड़बड़ी कर देते हैं। लोग अच्छाइ समझते हैं, उसकी नहीं, वरन् सच्चाई की, सत्य की अंतिम विजय होगी ही। यही बात लोग कहा करते हैं, जिसे आध्यात्मिक जीवन जीने वाले सभी व्यक्तियों ने कहा हैं—यह परिशुद्ध सत्य है। लोग इसे अनूदित करते हुए कहते हैं "मैं अच्छा आदमी हूँ, मैं तो जो कुछ सत्य समझता हूं उसी के अनुसार जीवन यापन करता हूँ। इसलिए मेरे लिए सारा अस्तित्व भला होना चाहिए। (माता जी हंसती हैं) सबसे पहले अपने गुणों का स्वयं निरूपण करना सदा संदेह का विषय होता है। और तब दुनिया आज जैसी है, इसमें सब कुछ मिश्रित है-सत्य का विधान अर्थान्ध मानव चेतना के सम्मुख खुले रूप में अपने को अभिव्यक्त नहीं करता—यह उसे नहीं पहिचानेगा। अधिक सही-सही मेरे कहने का अर्थ यह है कि परम दृष्टि ही सतत अपने को चरितार्थ कर रही है, किन्तु मिश्रित भौतिक जगत के इसकी चरितार्थता आज मानव दृष्टि की अच्छाई की, जिसे मनुष्य अच्छाई और सत्य समझते हैं, उसकी विजय प्रतीत नहीं होती। किन्तु विनोद के भाव से कहा जाय तो यह भगवान का दोष नही यह तो दोष है मनुष्यों का; कहने का तात्पर्य कि भगवान जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं और मनुष्य उसे समझते नहीं।

प्रश्न-सत्य के जगत में सब कुछ शायद वैसा ही होगा जैसा कि आज है, केवल उसके देखने का ढंग कुछ और होगा।

उत्तर-दोनों ही का एक अन्तर होगा। जगत का वर्तमान अज्ञान और अन्धकार भागवत क्रिया को एक विकृत रूप दे देता है और स्वभावत: इसे लुप्त होने लग जाना चाहिये, किन्तु यह भी सत्य है कि वस्तुओं को देखने का एक ओर भी तरीका है, जो—कहा जा सकता है कि, उनके रूप को एक दूसरा अर्थ प्रदान करता है—दोनों ही यों विद्यमान हैं (एक दूसरे में मिश्रित होने की इंगिति)।

(मौन)

हम बराबर इसी बात पर पहुंचते हैं कि मनुष्यों की विवेचना गलत होती है-गलत इसलिए होती है, क्योंकि वस्तुओं के प्रति उनका दृष्टिकोण गलत होता है, अपूर्ण होता है अतएव: निश्चय ही इस विवेचना का परिणाम भी गलत होगा। जगत निरन्तर बदल रहा हैं, निरन्तर एक क्षण भी यह अपने पूर्व रूप में नहीं रहता, और सार्व-भौम सामंजस्य अधिकाधिक अपने को अभिव्यक्त कर रहा है। परि-णाम स्वरूप, कोई भी वस्तु वही की वहीं नहीं रह सकती, और बाहर से सब प्रकार विपरीत लगने पर भी "समष्टि" सदा सतत विकस रही है, समस्वरता उत्तरोत्तर अधिकाधिक समस्वर होती जा रही है अभिव्यक्त विश्व में सत्य उत्तरोत्तर अधिकाधिक सत्य हुआ जा रहा है। किन्तु इसे देखने के लिये समस्त को देखना होगा, पर मनुष्य देखता है केवल............मानव क्षेत्र मात्र भी नहीं, वरन् बिल्कुल छोटा सा एक दम छोटा--सा, तिल भर का अपना व्यक्तिगत क्षेत्र ही—वह समझ नहीं सकता।

यह एक दोहरी वस्तु है जो अपने को पूर्ण बनाती चली जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और यह एक पारस्परिक क्रिया द्वारा ज्यों ज्यों अभिव्यक्त विश्व अधिकाधिक चेतन होता जाता है, उसकी अभिव्यक्ति पूर्ण होती जाती है, अधिकाधिक सत्य भी। दोनों ही क्रियायें साथ २ चलती हैं।

(मौन)

वह उन वस्तुओं में से एक है. जो सभी हाल में, जब ज्ञान को यह चेतना विद्यमान थी, बड़ा स्पष्ट दिखलाई पडी थी। जब अभिव्यक्ति विश्व निश्चेतन की उपस्थिति के कारण संघर्ष की यह सारी आवश्यकता उत्तरोत्तर निरर्थक होती चली जायगी, तब बिल्कुल स्वभावतः हो यह लुप्त हो जायगी और विकास प्रयास और संघर्ष के भीतर होने के स्थान पर समस्वरता के भीतर होना प्रारम्भ हो जायगा। इसी को मानव चेतना ने पृथ्वी पर भावी दिव्य सृष्टि के रूप में देखा है--यह भी मात्र एक पग ही होगा। किन्तु जहां तक वर्तमान पग का प्रश्न है, यह एक पराल के सामजस्यपूर्ण उत्कर्ष की है, जो इस वैश्व विकास को (जो सतत चल रहा है) संघर्ष और कष्ट के द्वारा, विकास होने के स्थान पर, आनन्द और समाजरूप के द्वारा विकास में बदल डालेगा --किन्तु जो बात देखी गयी थी वह यह कि अपर्याप्तता की यह भावना किसी ऐसी वस्तु की भावना जो पूरी नहीं है, पूर्णता को प्राप्त नहीं हुई है, यह हमें पहले से अनुमानित कर लेना होगा कि काफी लंबे काल तक रहेगी--यदि समय की भावना आज जैसी ही बनी रहे इसका मुझे पता नहीं। किन्तु सभी परिवर्तन समय की अपेक्षा करते हैं,न; समय की हमारी धारणा आज जैसी हो वैसी न भी हो, पर इसमें एक के बाद एक आने के क्रम की भावना तो रहती है।

यह सारी तथाकथित समस्यायें--हर घड़ी हमारे समक्ष इस प्रकार प्रश्न पर प्रश्न और मन की समस्यायें आती रहती हैं (अज्ञान जनित समस्यायें ही)--ये सभी पृथ्वी पर के कीड़े की समस्यायें हैं। ज्यों ही तुम ऊपर निकल आते हो, इस प्रकार की समस्यायें नहीं रह जाती। और न कोई द्वन्द्व भाव ही रह जाता है। द्वन्द्व भाव सदा दृष्टि को अपर्याप्तता तथा किसी वस्तु को एक ही समय में सभी दृष्टि कोणों से देखने की अशक्यता के कारण आता है। जो हो, जहां तक सीधा प्रश्न का सम्बन्ध है, मेरा ख्याल है कि किसी मनीषी ने किसी समय ऐसा नहीं कहा--भले बन जाओ और बाह्य रूप से सब कुछ तुम्हारे लिए भला ही होगा--क्योंकि यह मूर्खता है। अव्यवस्था है जगत में और मिथ्या के जगत में ऐसी आशा करना बुद्धि संगत नहीं है। किन्तु यदि अपनी सत्ता, के तरीके काफी सच्चे और समग हों, तो तुम्हें आन्तरिक किसी भी परिस्थिति में पूर्ण संतोष प्राप्त हो सकता है, और फिर किसी भी व्यक्ति या किसी भी वस्तु में ऐसी शक्ति नहीं कि उसका स्पर्श कर सके। ●

आवश्यक सूचना

अस्तित्व पत्र के भूतपूर्व सह-सम्पादक चन्द्रपाल सिंह को पत्र व देश भक्त युवक समाज से अविलम्ब हटा दिया गया है। क्योंकि लम्बे अरसे से जो अभद्र व्यवहार, अनैतिक, असत्य, विश्वासघात, कर संस्था, संस्थापक को विशेष हानि पहुँचाई गई है। संस्था दोनों अदालतों में समस्त बातों को लेते हुये अपने किये गये व्यय का मुकदमा चलाने के लिए तत्पर हैं तथा ३८ पृष्टों की एक पुस्तक भी एक मास बाद सभी विशेष संस्थाओं व व्यक्तियों को निःशुल्क प्रेषित करेगी। जिसमें उसके जीवन सम्बन्धी विशेष जानकारी होगी। —सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र के अतिरिक्त संरक्षकः

१. श्री सेठ पूरनचन्द साहनी मिल मालिक शूगर फैक्ट्री देवबन्द, इकबालपुर, (सहारनपुर)। २. श्री जगपालसिंह डायरेक्टर (केन) सुन्हैटी आलापुर (सहारनपुर) । ३. श्री प्रेमसिंह वर्मा, डी. एम. ई. (भारतीय सेना) । ४. श्री केहरसिंह प्रधान, भलस्वागाज (सहारनपुर) । ५. श्री बलजीतसिंह ब्लाक प्रमुख रामपुर (सहारनपुर) । ६. श्री महेन्द्रप्रताप एडवोकेट, रुड़की (सहारनपुर) ७. श्री रामकिशन प्रधान, खानपुर (सहारनपुर) । ८. श्री विशालचन्द जैन भू० पू० आ० मजिस्ट्रेट, (सहारनपुर) । ९. श्रीमती राजदुलारी गर्ग (सहारनपुर) । १०. महन्त श्री इन्द्रेश चरणदास, झन्डा दरबार देहरादून ।

हिन्दी मासिक अस्तित्व पत्र के सम्बंध में वार्षिक विवरण

१ प्रकाशन स्थान—सहारनपुर

२ प्रकाशन अवधि—मासिक

३ मुद्रक का नाम—अशोककुमार शर्मा

४ क्या भारत का नागरिक है--हाँ

५ यदि विदेशी है तो मूल देश—कुछ नहीं
पता—अशोक प्रिंटिंग प्रेस कोर्ट रोड, सहारनपुर

६ प्रकाशन का नाम—साधूराम वर्मा
क्या भारत का नागरिक है--हाँ
यदि विदेशी है तो मूल देश--कुछ नहीं
पता--बोमनजी रोड

७ सम्पादक का नाम-साधूराम वर्मा (एस. आर. वर्मा)
क्या भारत का नागरिक है--हाँ
यदि विदेशी है तो मूल देश—कुछ नहीं

८ उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी है तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक साझे-दार या हिस्सेदार हों । — साधूराम वर्मा (मालिक) बोमनजी रोड पुल दालमण्डी, सहारनपुर उ० प्र०

मैं साधूराम वर्मा (एस. आर. वर्मा) एत द्वारा घोषित करता हूं कि अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं । साधूराम वर्मा (एस. आर वर्मा)

विशेष सूचना

सिंचाई विभाग नलकूप राजकीय सहारनपुर से ग्राम सुन्हैटी आलापुर के अमुक नव-निर्माण नलकूप के सम्बन्ध में अमुक इलाके की बैचेनी बढ़ी जबकि कई वर्षों से एक गड्ढा खुदा पड़ा है उधर यह भी बताया जाता है कि अमुक ग्राम का नव-निर्माण नलकूप स्वीकृत है । किन्तु उसको अभी अधिकारी गण अपनी ढीली नीति के कारण नहीं लगा सके । इलाके में अधिकारीगण के सम्बन्ध में विशेष चर्चा आरम्भ हो गइ । वास्तविकता की खोज की जा रही है । कृपा अधिकारी नलकूप को शीघ्र लगायें ।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य सन्देश

मैने स्वास्थ्य सदन लन्ढौरा में पहुँच कर सब कुछ जानकारी की चिकित्सक श्री दिलेराम जी से विशेष बातें भी की उनकी रुचि योग्यता को समझकर मुझे आभास हुआ कि वे प्राकृतिक चिकित्सालय द्वारा जनता की सेवा करने में सफलता प्रदान करेंगे। जिन सम्पूर्ण रोगों का विस्तार निम्न दिया जा रहा है।

—सम्पादक

'स्वास्थ्य सदन' (प्राकृतिक चिकित्सालय)

रियास्ती धर्मशाला, लन्ढौरा रानी

(उत्तरी रेलवे) जिला सहारनपुर (उ० प्र०)

महानुभाव,

यदि आप अपनी चिकित्सा कराते २ थक गये हैं और जीवन से निराश हैं तो आप हमारे यहाँ पधारें। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आप हमारे यहाँ से प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा पूर्ण स्वस्थ होकर जीवन का आनन्द उठायेंगे। जिन लोगों को डाक्टरों ने आपरेशन की सलाह दी है वे बिना आपरेशन ही रोग से छुटकारा पायें। यदि आप आने में असमर्थ हैं तो पत्र व्यवहार द्वारा लाभ उठायें।

दमा, ससकी, चम्बल, पागलपन, हकलाना, भूख की कमी कब्ज, संग्रहणी, पेचिस, बवासीर, पायरिया, सिर दर्द, वायु गर्मी, दिल की बीमारियां, गठिया हर प्रकार के दर्द, हर प्रकार के कीड़े, मधुमेह, पेट में गैस बनना, पीलिया, नींद की कमीं, खून की कमी, पित्त उछलना, आँखों के सब रोग तथा अन्य सभी प्रकार के स्त्री एवं बाल रोग, हैज़ा, चेचक, मियादी बुखार, खाज-खुजली, कानों के सब रोग। साँप, बिच्छू आदि जहरीले जानवरों के काटे आदि सब प्रकार की दुर्घटनाओं की अचूक चिकित्सा की जाती है। सभी प्रकार के नये और पुराने रोगों की चिकित्सा की जाती है।

नोट:—रोगी अपने साथ बिस्तर, खाने के बर्तन, पहनने के कपड़े साथ लायें।

विनीतः—

दिलाराम आर्य

एम. ए., एम. काम. एल. टी., एन., डी.

प्राकृतिक चिकित्सक, लण्ढौरा रानी

जि० सहारनपुर

एस० आर० वर्मा के लिए अशोककुमार शर्मा द्वारा अशोक प्रिंटिंग प्रेस, सहारनपुर में मुद्रित, तथा प्रधान कार्यालय बोमनजी रोड, पुल दाल मण्डी, सहारनपुर से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रा० सं० 19 ... नाम व पता श्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल काँगड़ी 28-5- हरिद्वार

रजि० नं० २०२१६/७१ एल० रजि० नं० १२...

राष्ट्रीयता, नैतिकता, देशभक्ति, आध्यात्मवाद एवं विशुद्ध समाजवादी विचारधारा का दिशा बोधक !

अरविन्द

सम्पादक : एस० आर० वर्मा — ० — संयुक्त सम्पादक : के० पी० सिंह

"देश भक्त युक्त समाज"
का
प्रबल समर्थक तथा युवावर्ग का
पथ प्रदर्शक।
देश भक्ति ही सर्वोच्च धर्म है !

वर्ष २ अङ्क ८

हिन्दी-मासिक

मास अप्रैल १९७१

★

मूल्य १ प्रति ४० पैसे
वार्षिक शुल्क ६ रुपये
वर्ष में दो विशेषाङ्क सहित

★

सरक्षक :
बुद्धप्रकाश, डी. लिट्
रामचन्द्र विकल, संसद सदस्य
अध्यक्ष परामर्श समिति :
स्वामी रामानन्द शास्त्री
संसद सदस्य
महामन्त्री परामर्श समिति :
नरेन्द्रसिंह यादव एम. ए.
सह-सम्पादक :
...वचरणसिंह, सुरेन्द्रकुमार शर्मा,
महेन्द्रसिंह

"आत्मा मर नहीं सकती"

उजाले के नाम पर दीप बुझाना ठीक नहीं
मानवता के नाम पर लहू बहाना ठीक नहीं
धर्म के नाम पर निरीह बच्चों और अबलाओं को
तोपों और गोलियों का निशाना बनाना ठीक नहीं

क्योंकि—

बुझता हुआ दीप भी नर पिशाचों को जला देता है
लहू का एक कतरा भी दानवता को मिटा देता है
अबला का एक शाप भी साम्राज्य को डुबा देता है
एक 'रोशन आरा' का साहस टैंक को खाक बना देता है

और—

इन्सान मिटाये जा सकते हैं, मानवता नहीं
एक 'मुजीब' की आवाज करोड़ों याहियाँ,
अगणित भुट्टो नहीं दबा सकते
जब पूरा बंगाल ही 'मुजीब' बना है
प्रत्येक नारी वीरांगना रोशन आरा बनी है
तब तो प्रलय तक भी
आजादी की आवाज को रोका नहीं जा सकता
तोपों, टैंकों, मशीनगनों से कभी आजादी के सेनानी
डरे नहीं, झुके नहीं, मिटे नहीं
परतन्त्रता की दुर्गन्ध में जिसका दम घुट रहा हो
खुली आँखों जिसका अस्तित्व लुट रहा हो
धर्म की दुहाई उसे शान्त नहीं कर सकती
शरीर मिटने पर भी आत्मा मर नहीं सकती
कहा भी है—"न हन्यते हन्यमाने शरीरे"

लेखक !
रामेश्वर काम्बोज
'हिमांशु'
ग्राम हरिपुर

अपना समस्त विद्यालय पत्र के ६) रु० भेजकर
शीघ्र ग्राहक बनकर लाभ उठायें।

प्रधान कार्यालय : बोमनजी रोड, पुल दालमन्डी, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

"आत्मसाक्षात्कार"

भारतीय दर्शनों के अनुसार परमात्मा तथा जीवात्मा में कुछ अन्तर नहीं, दोनों ही एक है, दोनों सत्य है, चेतन है तथा आनन्द स्वरुप है। बंधन माया जन्म है। माया अज्ञान है, भेद उत्पन्न करने वाली वस्तु है। जीवात्मा माया जन्म अज्ञान को दूर कर अपना सच्चा स्वरुप पहचानता है और आनन्द मय परमात्मा में लीन हो जाता है। आनन्द में विलीन हो जाना ही मानव जीवन का परम उद्देश्य है। जब हम इस दार्शनिक सिद्धान्त का ध्यान रखते हुए उपयुक्त सामान्यवाद पर विचार करते हैं। तब सारा रहस्य हमारी समक्ष में आ जाता है, इसमें और कुछ कहने सुनने की आवश्यकता नहीं रह जाती है।

—हमारी कल्पना अध्यात्म-पक्ष में तो निस्सीम तक पहुँच गई परन्तु ऐहिक जीवन का चित्र उपस्थित करने में वह कुछ कुंठित सी हो गई है। भारत की शस्य श्यामला भूमि में जो निसर्ग सिद्ध सुषमा है, वही किसी अन्य देश की प्रकृति में देखने में प्रचुर नहीं होती यों तो प्रकृति की साधारण वस्तुएं भी मनुष्य मात्र के लिए आकर्षक होती है, परन्तु उसकी सुन्दरतम विभूतियों में मानव वृत्तियों विशेष प्रकार से रमती है। जिन्होंने भारत की हिमाच्छादित शैल माला पर सन्धया की सुनहली किरणों की सुषमा देखी है-अथवा जिन्हें घनी अमराईयों की छाया में कल-कल ध्वनि से बहती निर्झरणी तथा समीपवर्तिनी लताओं की बसन्त श्री देखने का अवसर मिला है। वे मानव भला कहाँ खुश रह सकता है।

अन्य देशों में जहाँ संस्कृति का कोई महत्त्व ही नहीं है। चारों ओर अन्धकार की लालिमा प्रतीत होती है और इस अन्धकार के अन्तर्गत जो कुकर्म होते हैं उनको देखकर किसी भी उच्च देश की संस्कृति कराह उठती है। जहाँ दिन दहाड़े इज्जत को राक्षसों की बलि चढ़ाया जाता है। जहाँ का धर्म मुरा है जहाँ की संस्कृति शून्य है।

जगत के जितने भी सुख हैं, सब दुख मूल है अतएव उनसे कभी नित्य सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।

मैं हूँ और मेरे से परे यह ईश्वर हैं। जहाँ पर यह भावना होती है। वहाँ आत्मा का लोप हो जाता है आत्म साक्षात्कार वहाँ पर नहीं हो सकता।

हमें यह मालूम हैं कि हमें एक दिन उस आत्मा में उस अज्ञात शक्ति (ईश्वर) में लीन हो जाना है जिसके हम तत्त्व है। फिर भी हम इस जीवन में अच्छे और बुरे कार्य करते हैं ऐसा क्यों होता है ? यह इसलिए है क्योंकि हमारे हृदय के ऊपर एक माया का पर्दा पड़ा हुआ है हमारा मन रुपी शीशा धूल से दूषित है। तभी हम अपने स्वप्रतिबिम्ब को स्पष्ट नहीं देख सकते हमें आत्मा के दर्शन नहीं होते हैं। हम अज्ञानी है।

आजकल समस्त देश भौतिकवाद की ओर अग्रसर हो रहा है। हर व्यक्ति एक छोटा बच्चा भी अपने ऐश्वर्य को खोजता है। आत्म समर्पण की भावना एकदम समाप्त हो गई। बाप बेटे का खून करता है बेटा बाप का केवल धन के पीछे ऐश्वर्य के पीछे। हर व्यक्ति का अस्तित्व समाप्त हो गया है। हम आध्यत्मवाद को भूल गये हैं ऐश्वर्य ही हमारा कर्त्तव्य हो रहा है।

अन्धेरे में वस्तु मिलती नहीं, ठोकरें खानी पड़ती हैं, जिसने अपने मन को ठीक दिशा की ओर घुमा दिया वही ऊपर उठ गया, अगर हमारी बुद्धि कैच नहीं करती है तो हम ज्ञानी नहीं है। बुद्धि कैच क्यों नहीं करती है इसलिए कि मन एकाग्रह नहीं है, मनुष्य जब तक जन्म मरण में घुमा रहता है तब तक ही ठोकरे खाता रहता है जब परमात्मा का ज्ञान हो जाता है तब अभि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान समाप्त हो जाता है। शान्ति की ओर मनुष्य बढ़ता जाता है। समाधि की अवस्था कब आती है जब मनुष्य शान्ति की ओर तेजी से बढ़ता है। प्राण की जब गति रहती है तब तक संकल्प विकल्प रहता है, मनुष्य जितना स्वार्थी होता है उतना ही वह अनैतिक होता है अत: प्रत्येक युग और प्रत्येक देश के महान् आध्यात्मिक स्त्री-पुरुषों को पहचानों और देखो कि उनमें एक दूसरे से बहुत भिन्नता नहीं है, जहाँ कहीं सच्चा धर्म है, यह दिव्य स्पर्श हो चुका है, आत्मा से परमात्मा का मिलन हुआ है, तभी प्रकाश मिला है। इसीलिए तो ज्ञानी का जीवन दिव्य होता है।

हम जो कार्य करे सोच समझकर करें यही एक प्रथम निष्ठा जिसमें विचार रखना ईश्वर के प्रति निष्ठा रखना है। हम रात दिन जो कार्य करते उसे समस्त शक्ति ईमानदारी से करें यही ईश्वरीय दर्शन है। दूसरे के अन्तर्गत हम अपनी आत्मा का स्वरुप पहचाने यही मितव्यता है।

किसी भी परिचित व्यक्ति को देखकर हमारे मन में उस के दुख को देखकर दुख होता है सुख को देखकर हम सुखी होते हैं लेकिन अगर कोई व्यक्ति हमारे से अपरिचित है उसके दुख को देखकर अगर हम दुखी होते हैं तो यह हमारे ज्ञान की भावना का प्रतीक है इसी भावना में हमें आत्म साक्षात्कार (ईश्वर) के दर्शन प्रतीत होते हैं। क्योंकि सुख और दुख इसी दुनिया में निहित है। जब हम इस भौतिकवाद शरीर जो कि नाशवान है उसे त्याग देते हैं तो हमें सुख-दुख का आभास नहीं रहता।

दया और श्रद्धा का भाव हमारे अन्दर होना चाहिए। क्योंकि जहाँ करुणा है वहीं ईश्वर है। लेकिन करुणा की भी सीमा होती है।

एक व्यक्ति जो दूर कहीं पर पिट रहा है दो चार सिपाही उसको पीट रहे हैं उसे देख कर हमारे मन में करुणा का भाव उत्पन्न होता है कब तक? जब तक हम उससे अपरिचित हैं। लेकिन जब हम उस स्थिति से परिचित होते हैं और हमें पता चलता है कि इसने कोई अपराध किया है तो हमारी करूणा की भावना एक दम विपरीत भावनाओं में बदल जाती हैं हमारे मन में भी उसके प्रति शत्रुता की स्थिति उपस्थित हो जाती है।

यह भावना हमारे मन में उस व्यक्ति से नहीं आई बल्कि उसके कर्म से ही आई उसके अपराध ने हमारे मन में उसके प्रति द्वेष का भाव उत्पन्न कर दिया।

अन्त में मैं सभी अपने देशवासियों से यही कहूँगा कि यह भौतिकवाद निरस है आनन्द से विमुख है असली आनन्द है अपने देश के प्रति कर्त्तव्य निभाने में दूसरों को सही रास्ता दिखाने के दूसरों के अन्दर अपना स्वरुप देखने में अगर कोई अज्ञानी है तो यह उसका दोष नहीं है यह है दोष उसको शिक्षा के अभाव का दीक्षा के अभाव का। मेरे देश के भावी नागरिकों अब भी जाग जाओ अपने अस्तित्व का कायम करो देश के लिये जिओ देश के लिये मरो यही हमारा नारा है यही आत्मा की आवाज है प्राणी मात्र कीसेवा ही ईश्वर की सेवा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवेगों का मानव जीवन पर प्रभाव

लेखक:-उर्मिल प्रभाकर, सहारनपुर

जैसे ही बालक इस संसार में पदार्पण करता है तो सारा संसार उसके लिए नया होता है। वह कुछ के साथ तो समायोजन स्थापित कर लेता है और कुछ के प्रति उसके मस्तिष्क में तनाव उत्पन्न हो जाता है। जैसे ही उसमें यह तनाव जागृत होता है उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है इस प्रकार उसमें संवेग जागृत हो जाते हैं।

संवेग क्या है—संवेग जीव के शरीर की उत्तेजना अथवा तीव्र अवस्था को संवेग कहते है। संवेग एक चेतन अनुभव है। संवेग प्रत्येक चेतन प्राणी में पाये जाते हैं। यह ठीक है कि कुछ संवेग की अवस्था में शान्त रहते हैं और कुछ अत्यन्त उत्तेजित हो जाते हैं। परन्तु दृष्टिगोचर सब में होते हैं। संवेग की अवस्था में व्यक्ति के अन्दर एक प्रकार की नई स्फूर्ति और शक्ति जागृत होती है जो उसे कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। कभी २ व्यक्ति उत्तेजना में ऐसे २ कार्य कर बैठता है जो वह सामान्य परिस्थिति में नहीं कर सकता तथा जिसके करने से व्यक्ति का सारा जीवन ही असंतुलित हो जाता है और व्यक्ति पश्चाताप ही करता रह जाता है।

संवेग भी कई प्रकार के होते हैं जैसे क्रोध, भय, युयुत्सा आदि। क्रोध की अवस्था में व्यक्ति की मुटिठयां बन्द हो जाती है। चेहरा लाल पड़ जाता है। शरीर कंपित हो जाता है। क्रोध जीव के किसी वस्तु अथवा मूल प्रवृति जन्य कार्य में बाधा पड़ने या विफलता होने से उत्पन्न होता है। परन्तु कभी २ क्रोध अपने ऊपर भी आ जाता है। क्रोध को यदि व्यक्ति दबा लेता है तो उसका प्रभाव बुरा नहीं पड़ता है। अत्यधिक क्रोध व्यक्ति के लिए हानिकारक है।

इसी प्रकार भय की अवस्था में व्यक्ति अपना संतुलन खो बैठता है। भय भयानक परिस्थिति से अक्समात् उत्पन्न होता है। मनुष्य की यह प्रवृत्ति होती है कि वह आकस्मिक और अपरिचित से पहले भय खाता है। भय की अवस्था में व्यक्ति आवेश में आकर ऐसी ऊंची २ दीवारों को कूद जाता है जिसकी कल्पना सामान्य अवस्था में नहीं की जा सकतो। और भी अनेक प्रकार के संवेग है जो प्रतिदिन हमारे अन्दर जागृत होते रहते हैं।

संवेगों का मनुष्य के जीवन में बड़ा महत्व है। संवेग ऐसी अनुभूति है जिसका संचरण व्यक्ति के अन्दर प्रतिक्षण होता रहता है भावना के रूप में भाव व्यक्ति के अन्दर सुप्तावस्था में विद्यमान रहते हैं। किन्तु जब ये ही तीव्र तम रूप धारण कर लेते हैं तब ये संवेग कहलाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। सवेगों का प्रभाव व्यक्ति के मस्तिष्क पर अत्यधिक पड़ता है। यदि वह उसके परिस्थिति के साथ समायोजन स्थापित कर लेता है तो यह उसका सफल समायोजन होता है। बालकों में क्रोध को शान्त करने के लिए उनको खेल में लगाये रखना चाहिए। मनुष्य को संवेगों का दमन नहीं करना चाहिए। दमन करने से उसमें हीनता की ग्रन्थि उत्पन्न हो जाए गी वह अपने को इस ससार में व्यर्थ समझेगा इच्छाओं की पूर्ति न होने पर भी मनुष्य अपना संतुलन खो बैठता है कभी २ व्यक्ति संवेगों के दमन के कारण पागल, अपराधी चोर बन जाते हैं। कई मानसिक रोगों का कारण संवेगों का दमन होता है। साथ ही साथ यह भी ध्यान रखने योग्य है कि व्यक्ति को थोड़ा बहुत दमन भी करना चाहिए अति तो हर चीज की बुरी होती है। अत: संवेगों का दमन भी और प्रदशन भी आवश्यक है। संवेगों का न होना भी बहुत बुरा है। जिस व्यक्ति के अन्दर संवेग बिल्कुल भी जागृत नहीं होते वह व्यक्ति ही नहीं कहलाता। उसे हम असामान्य व्यक्ति कहेंगे। संवेगों का जागृत होना भी बहुत जरूरी है।

इस प्रकार संवेग मनुष्य केजीवन को बहुत प्रभावित करते हैं। हर रोज हम क्रोध घृणा या प्रेम इत्यादि संवेगों का अनुभव करते हैं। यदि हम यह सोचे कि हमें क्रोध क्यों आया जैसे ही हम सोचेगें क्रोध समाप्त होता चला जाएगा। संवेगों से हमारा समस्त व्यक्तित्व प्रभावित होता है। इनका सदुपयोग करने से हमारा जीवन मानसिक बीमारियों का शिकार होने से बच जाएगा।

विशेष सूचना

चुड़ियाला ग्राम में चालू नलकूप न० ४६ के कुछ निकट अधिक संख्या में ऐसी जमीन पड़ी है कि जहाँ अमुक नलकूप का पानी दूसरे काश्तकार नहीं पहुँचने देते हैं बड़ी कठिनाई हो रही है। उस हजारों बीघा भूमि के मध्य एक अलग नलकूप की आवश्यकता है। विभाग इस ओर शीघ्र ध्यान दें एवं नव निर्माण कूप की स्वीकृति देकर शीघ्र नलकूप लगाये।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में जन्म की सार्थकता

लेखक—मुकेशचन्द्र गोविल

(क्रमशः)

३. राजनैतिक क्षेत्र - प्रत्येक क्षेत्र अपने साथ अपनी कुछ अलग विशेषताएँ रखते हैं। इसी कारण राजनीतिक क्षेत्र में सघनता; चपलता; मन्दता गति और विभ्रयम होता है। राजनीतिक-क्षेत्र एक ऐसा द्विधा स्थिति का क्षेत्र है। जहाँ प्रत्येक पल उसके प्रत्येक कार्य-कर्त्ता बदले हैं। उनके विचारों में भी उतार चढ़ाव आता है। कभी राजनीति के मुख्य मोहरें अपने स्वार्थ के लिए कभी बाजारों, कभी शहरों, कभी प्रदेश, कभी मिलों, कभी किसी इकाई सेवा, कभी रेल सेवा, कभी जल सेवा और औषध सेवा को बन्द कराते हैं अर्थात हड़ताल करवाते फिरते हैं कभी किसी का घेराव कराते हैं। कभी विदेशी सरुपता को प्राप्त कर अपने देश की समप्रदा को नया करते हैं। ये हैं राजनीतिक-क्षेत्र के उतार-चढ़ाव। वास्तविकता तो ये है कि भारत ने प्रत्येक दलों को सुविधा तथा उनके आदर्शों और विचारों की भी रक्षा की है। उनके प्रसार और प्रचार दोनों के लिए प्रत्येक प्रकार की छूटें दे रखी हैं। आज आधुनिक भारत में मार्क्सवाद; समाज-वाद; पूँजी-वाद; धार्मिक-वाद क्या सब ही प्रकार के वादों को स्वतंत्रता दे रखी है। कोई भी राजनीतिक दल सतारुढ़ दल के शासन काल में उस का प्रशासनिक गलतियों और दमन के विरुद्ध आवाज़ लगा सकता है। जबकि अग्रसर अमेरिका में नहीं है। ये ही वरन अल्प संख्याकों और बहु संख्याकों को समान प्रकार की सुविधायें हैं।

क्या ये उसके राजनीतिक-क्षेत्र को उच्च बताने के लिए काफी नहीं। क्या अन्य देशों में इतनी राजनीतिक सुविधा है?

४. शान्त-प्रियता का क्षेत्र—अभी तक आप लोग तीन क्षेत्रों के बारे में ज्ञान वर्द्धन कर चुके हैं। लेकिन उन्हीं की तरह तथा उन्हीं के दृष्टिकोणों से यह क्षेत्र भी भारत की श्रेष्ठता को बनाये रखने में श्रेष्ठ स्थान रखता है।

आज विश्व इतिहास में नेहरु जी शान्ति दूत के नाम से विख्यात हैं। इस का असली कारण भारत माँ की प्रकृति के उपादानों से सम्पर्क तथा वहीं अपने जीवन अमूल्य श्रेष्ठ क्षणों को व्यतीत करना। अब किसी भी मानव के निर्माण पर विनाश का काल होता है। क्योंकि न तो वातावरण न सफलता की आशा।

सन् ६५ ई० में भारत-पाक युद्ध हुआ जिसमें विजय भारत की हुई लेकिन अपनी शान्ति प्रियता तथा युद्ध को व्यर्थ में न बढ़ाने की भावना के होने के कारण नुकसान उठा कर शांति से युद्ध को सुलझाया और विश्व के सम्मुख शान्ति का एक उच्च आदर्श उपस्थित किया।

ये तो उदाहरण बहुत निम्न है। ऐसी बहुत सी घटनाएँ तो भारत के द्वारा विश्व इतिहास को शान्ति क्षेत्र में प्राप्त हुई हैं। जैसे:—चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बनाने के लिए अपने इसराईल और अरब राष्ट्रों में शान्ति के लिए हाथ बटाना, अमेरिका-वियटनाम का खुले आम विरोध और तटस्थता की नीति तो शायद भारत की देन को ही।

तो आप खुद ही विचार कीजिए क्या भारत आज अणु शक्ति का उपयोग विनाशकारी कार्यों में न करके क्या विश्व को उन संकटों से नहीं बचा रहा जो मानव द्वारा मानव विनाश के लिए उत्पादित किये जा रहे हैं। इन्हीं उच्च और श्रेष्ठ विचारों को सम्पादित करने के कारण ही विश्व में सम्मानित एवं विकास शील राष्ट्रों में स्थान प्राप्त किया। (क्रमशः)

> नैतिक दृष्टि से उसी व्यक्ति पर विश्वास करना निरापद है जो आत्म विश्वासी है। जो आदमी स्वयं अपनी ईमानदारी पर विश्वास नहीं करता उस पर दूसरे क्या करेगें? वस्तुतः नैतिक पतन घर से ही शुरु होता है।
>
> अज्ञात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र के अतिरिक्त संरक्षक:

१–श्री सेठ पूरनचन्द साहनी मिल मालिक शुगर फैक्ट्री देवबन्द, इकबालपुर, (सहारनपुर)। २–श्री जगपालसिंह डायरेक्टर (केन) सुन्हैटी आलापुरे (सहारनपुर)। ३–श्री प्रेमसिंह वर्मा, डी. एम. ई. (भारतीय सेना)। ४–श्री महन्त शान्तिनाथ मैनेजर नेशनल इन्टर कालेज, भलसवागाज (सहारनपुर)। ५–श्री केहरसिंह प्रधान, भलसवागाज (सहारनपुर)। ६–श्री महेन्द्रप्रताप एडवोकेट, रुड़की (सहारनपुर)। ७–रामकिशन प्रधान, खानपुर (सहारनपुर)। ८–विशालचदन्द जैन भू० पू० आ० मजिस्ट्रेट, सहारनपुर। ९–श्रीमती राजदुलारी गर्ग (सहारनपुर)। १०–महन्त श्री इन्द्रेश चरणदास, झन्डा दरबार देहरादून। ११–बाबू ज्योतिप्रसाद चुड़ियाला (सहारनपुर)। १२–राजमाता सरस्वती देवी लंढौरा स्टेट (सहारनपुर)।

देश भक्त युवक समाज की प्रगति का विवरण क्रमशः

मैं सहर्ष प्रमाणित करता हूँ कि श्री साधूराम वर्मा संस्थापक देश भक्त युवक समाज सहारनपुर ने आज मेरे विद्यालय में देश भक्ति एवं छात्रों में नैतिकता उत्पन्न करने के नियमों आदि विषय पर बहुत प्रभावशाली भाषण दिया। धुम्रपान निषेद पर बालकों से प्रतिज्ञा कराकर इस ओर छात्र हितकारी कार्य किया। मैं उनके भविष्य एव संस्था के शुभ कार्य के लिए शुभ कामना करता हूँ।

प्रधानाचार्यः—जनता उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
रेलवे स्टेशन सरसावा (सहारनपुर)
१९–११–६९

यू० पी० बैंक इम्पलाइज यूनियन के वार्षिक चुनाव में युवा पीढ़ी का आगमन

दिनांक ३०–३–७१ को नगर सहारनपुर की यू० पी० बैंक एम्पलाइज यूनियन का वार्षिक चुनाव अग्रवाल धर्मशाला, सहारनपुर में विधिवत् सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रधान के पद पर श्री अजयवीर सिंह डिस्ट्रिक्ट को-आपरेटिव बैंक ने अपने प्रति द्वन्दी श्री हुकमसिंह सैन्ट्रल बैंक को सात वोटों से पराजित किया। उसके पश्चात् निम्नलिखित व्यक्तियों का और चुनाव हुआ।

श्री शीतल प्रसाद व श्री मोहनलाल क्रमशः हिन्दुस्तान कोमर्शियल बैंक व पंजाब नेशनल बैंक उप-प्रधान के पद पर चुने गये। श्री अनिल कुमार कालरा यूनियन बैंक, मन्त्री पद के लिए चुने गए। श्री त्रिलोकचन्द गर्ग (सैन्ट्रल बैंक) व श्री बलदेवराज खुराना (पंजाब बैंक) उप-मन्त्री तथा श्री कुलवीरसिंह चावला पंजाब बैंक कार्यालय मन्त्री श्री फुटेला बैंक ऑफ बड़ौदा, संगठन मन्त्री, श्री राधेश्याम वर्मा, पंजाब बैंक कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। आशा है अनिलकुमार कालरा मन्त्री जी व प्रधान श्री अजयवीरसिंह जी दोनों ही नवयुवक हैं अपने समय में यूनियन को महानता की ओर लेजाकर समाज के लिये पथ प्रदर्शक बनेंगे।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता रेडीमेड स्टोर

आजाद मार्किट अन्सारी रोड, सहारनपुर

आज विज्ञान के युग में जहाँ हमें हवाई जहाज, कार, मोटर गाड़ियों की आवश्यकता है, ठीक दूसरी ओर हमें अपनी आवश्यकता की पूर्ति सुन्दर वस्त्रों से भी करनी आवश्यक है।

हमारे यहाँ बहुत सुन्दर सिलाई में अलग-अलग डिजाईन से भरपूर हर प्रकार के नमूने के आकर्षक कमीज, बुशर्ट, बाबा सूट, बेबी फिराक, पैन्ट तौलियाँ सलेग रेम्पर, शनील सैट उचित दामों पर उपलब्ध हैं। हम सहर्ष आपके स्वागत के लिये तैयार हैं। पधार कर लाभ उठायें।

भवदीय:—

प्रोप्राइटर

आज की सभ्यता में

कागज के बिना हमारा काम नहीं चल सकता, क्योंकि यह हमारे जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। जो व्यक्ति समाज के लिए अनिवार्य बन जाते हैं वे अमर हो जाते हैं, जीते जी तो वे समाज का मार्ग दर्शन करते ही हैं दिवगंत हो जाने पर उनके महान् आदर्श हमे प्रकाश देते हैं।

★ स्टार ब्रान्ड कागज ★

लिखाई छपाई तथा पैकिंग आदि के सभी कामों के लिए सबसे उत्तम मजबूत और चिर स्थाई माना गया है। १९३८ में सहारनपुर में स्थापित यह देश प्रसिद्ध संस्थान निरन्तर प्रगति करता हुआ इस समय कई हजार टन कागज का उत्पादन प्रति मास करता है।

कागज के देश प्रसिद्ध निर्माता:—

स्टार पेपर मिल्स लिमिटेड, सहारनपुर (उत्तर-प्रदेश)

मुख्य कार्यालय : २७ ब्रोबोर्न रोड, कलकत्ता–१

एम० आर० वर्मा के लिए अशोककुमार शर्मा द्वारा अशोक प्रिंटिंग प्रेस, सहारनपुर में मुद्रित, तथा प्रधान कार्यालय बोमनजी रोड, पुल दाल मण्डी, सहारनपुर से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम व पता
...० सं०
...जि० नं० २०२१६/७०
एल०/...० नं० १५५५

राष्ट्रीयता, नैतिकता, देशभक्ति, आध्यात्मवाद एवं विशुद्ध समाजवादी विचारधारा का दिशा बोधक ।

आरलेव

पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी

सम्पादक : एस० आर० वर्मा (भारतीय) —⊖— संयुक्त सम्पादक : के० पी० सिंह

"देश भक्त युवक समाज"
का
...ल समर्थक तथा युवावर्ग का
पथ प्रदर्शक ।
...भक्ति ही सर्वोच्च धर्म है !

वर्ष २ अङ्क ११

हिन्दी-मासिक

मास जौलाई १९७१
मूल्य १ प्रति ४० पैसे
वार्षिक शुल्क ६ रुपये
वर्ष में दो विशेषाङ्क सहित

संरक्षक :
श्री बुद्धप्रकाश, डी. लिट् व
...ी रामचन्द्र विकल, संसद सदस्य

अध्यक्ष, परामर्श समिति :
श्री स्वामी रामानन्द शास्त्री
संसद सदस्य

महामन्त्री परामर्श समिति :
श्री नरेन्द्रसिंह यादव एम. ए.

सह-सम्पादक :
...शिवचरणसिंह, सुरेन्द्रकुमार शर्मा,
महेन्द्रसिंह, राकेश भारतीय

क्रान्ति के मंच से

चेहरे से तेज टपकता हो ।
आंखों से आग बरसती हो ॥
वाणी में पुरुषार्थ भरा हो ।
जैसे कि तड़ित कड़कती हो ॥
बाहों में उसकी शक्ति हो ।
हृदय में राष्ट्र की भक्ति हो ॥
हमको चाहिये बालक ऐसा ।
जिसमें क्रान्ति की मस्ती हो ॥
जब चले वह सीना ताने ।
जैसे हाथी हो मतवाला ॥
आगे चल कर बने वीर वह ।
भारत मां का रखवाला ॥
चाहे आंधी या तूफान हो ।
चाहे पड़ता हो पाला ॥
या धरती आकाश फटें, फिर ।
चाहे भड़कती हो ज्वाला ॥
पर जरा भी कंपित न होगा वो ।
है जो भारत का रखवाला ॥

शत्रु जिससे कांपे थर थर ।
दुश्मन की सेना घबराये ॥
पड़ जाये जिधर भी एक दृष्टि ।
उस तरफ साफ मैदान मिले ॥
जिस तरफ बढ़ाये निज शस्त्र ।
दुश्मन का काम तमाम मिले ॥
मिट्टी में मिलते टैंक मिलें ।
और जलते हुऐ विमान मिले ॥
चाहे सीमा का जवान मिले ।
या खेतों का किसान मिले ॥
या मशीनों से जुझता ।
मिलों का श्रमिक महान् मिले ॥
पर हमको, चाहिये बालक ऐसा ।
जिसमें कि एक तूफान मिले ॥
अस्तित्व की वह शान मिले ।
और भारत का अभिमान मिले ॥
हमको चाहिये बालक ऐसा ।
जिसमें कि एक तूफान मिले ॥

लेखक:—मोहनसिंह

प्रधान कार्यालय : [illegible] सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

भूमिहीन किसान एवं बेकारी

आज की दुनियां प्रगति की दौड़ में आगे बड़ रही है । एक तरफ चन्द्रयात्री जहां चन्द्रमा की सतह को छू कर अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में तहलका मचा देते हैं तो दूसरी तरफ कृत्रिम हृदय रोपण वैज्ञानिक चिकित्सा विज्ञान में चमत्कार दिखाते हैं। प्रसारण का तो कहना ही क्या आप दिल्ली में बैठे वाशिंगटन में होने वाली घटनाओं को सुन सकते हैं, उन्हें देख सकते हैं। मशीनीकरण और परिवहन के क्षेत्र में आवाज से भी तेज चलने वाले जेट एवं राकेट आपको उपलब्ध हैं।

लेकिन जब मैं कहता हूँ कि आपको उपलब्ध है तो क्या सचमुच आपको उपलब्ध हैं ? यदि आप भारत के साधारण नागरिक हैं तो आप शायद सहज ही उत्तर देंगे कि टेलिविजन हवाई जहाज और हेलीकोप्टर तो केवल चन्द करोडपतियों के नसीब की वस्तुऐं हैं । हम तो केवल उनके बारे में सुन सकते हैं। अखबारों में उनका विज्ञापन पर लेते हैं । या कहीं किसी के घर नजर पड़ गया हो दूर से ही नमस्कार कर लेते हैं और सन्तुष्ट हो जाते हैं ।

लेकिन हालात् इससे भी आगे हैं। हमारे देश को स्वतन्त्र हुए २३ साल हो चुके हैं । इस समय यहां ७०% ग्राम्य जनता कृषि कार्य में संलग्न है । जनसंख्या का कुछ भाग उद्योग पर निर्भर करता है। और कुछ व्यापार व दुकानदारी पर ।

किन्तु वास्तव में मैं आप लोगों का ध्यान उन इनसानों की ओर दिलाना चाहता हूँ जिनके हाथ काम करने के लिये तैयार है किन्तु काम कुछ नहीं । जो सबल होकर भी पिछड़े हुए कहलाते हैं । जिनके पास जीने के सामान्य साधन नहीं हैं । जो अपनी तरक्की के लिये उन हर निर्भर हैं जो भूमि के बड़े २ भागों पर अधिकार जमाये बैठे हैं। ये भूमि के बड़े २ भागों पर अधिकार जमाये रखने वाले स्वयं कोई काम नहीं करते । यदि करते भी हैं तो केवल दिखावे के लिये थोड़ा बहुत हाथ पैर कभी २ हिला लिया करते हैं जिससे दुनिया की नजरों में आदर्शवादी होने की धूल झोंकी जा सके ।

परन्तु दूसरी तरफ वह समाज है जिसके कन्धों पर उस भूमि में कार्य करने का भार है जिसकी कमाई में बड़े २ फार्मों के मालिक अपनी ऊंची ऊंची अट्टालिकाओं में आराम की ठंडी नींद सोते हैं । ऊंची अट्टालिकाओं में बैठे ये लोग निर्धन भूमिहीनों की झोंपड़ी में रहने वाली समस्याओं को नहीं समझते न ही वे उन्हें समझने की जरुरत महसूस करते हैं। वे चाहते हैं कि हमेशा भूमिहीन निर्धन किसानों का शोषण होता रहे । उन्हें हमेशा अपने प्यालों में भूमि हीनों का वह लाल २ रक्त चाहिये जिसे वे व्हिस्की या शराब कह कर पी जाते हैं।

जमींदारी खात्मे के समय एक विद्वान ने कहा था कि 'जो मनुष्य भूमि का निर्माण नहीं कर सकता उसका असीमित भूमि पर कोई अधिकार नहीं है।" जो वस्तु मनुष्य के द्वारा निर्मित नहीं की जा सकती वह प्राकृतिक है और उस पर सामान्य रूप से सबका अधिकार है ।

अतः जमींदारों से असीमित भूमि लेकर मेहनतकश किसानों में बांट दी गई । किन्तु यह वितरण ठीक प्रकार से अभी सम्पन्न हुआ है इसमें मुझे सन्देह है क्योंकि भूमि समस्या का अन्त केवल यहीं पर नहीं हो जाता है जिनके पास हजारों एकड़ जमीन है । और वे जमीनें उन्होंने सरकार को चकमा देने के लिये अपने रिश्तेदारों के नाम कर रखी है । जबकि उन रिश्तेदारों के पास स्वयं अपनी भी भूमि है कुछ बातें तो बहुत दिलचस्प सुनी गई है कि कुछ भू-स्वामियों ने तो अपने घोड़ों और कुत्तों तक के नाम जमीन की हुई हैं । पता नहीं वर्तमान प्रशासन ने ऐसे गलत कामों का सख्ती से विरोध क्यों नहीं किया; या कहीं लक्ष्मी की चकाचौंध अधिकारियों की आँखों पर चमक का पर्दा डाल देती है ।

आज स्वतंत्र भारत के लाखों भूमिहीन किसान परतत्रता की बेड़ियों में जकड़े हुये हैं। वे सामांन्यतः अपनी आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा करने में भी असमर्थ है हैं उनके पास रहने के लिये अच्छे भोजन नहीं तन ढापने के लिये समुचित वस्त्र नहीं। भूख, कर्ज, एवं बीमारी के बोझ से वे दबे जा रहे हैं। किन्तु ये भू स्वामी एक दर्शक बनकर उनकी मजबूरियों का फायदा उठा रहे हैं ।

शायद आप यह कहकर मुझे सन्तुष्ट करना चाहें कि उन लोगों को शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये जिससे कि उनका जीवन स्तर ऊंचा उठ सके परन्तु मैं आपसे पहले ही अर्ज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर चुका हूँ कि इन बिन सहारों के पास आर्थिक आधार का कोई समुचित प्रबन्ध नहीं है। इसलिये ये लोग अपने 'बच्चों' को उचित तकनीकी व साहित्यिक शिक्षा दिलवाने में असमर्थ हैं। यदि किसी मुश्किल से अपनी आवश्यकताओं को कम कर या किसी महाजन का कर्ज सिर पर रख अपने बच्चे को शिक्षा दिलवा भी दी तो आजकल की बेकारी के युग में जहां लाखों की संख्या में इन्जिनियर बेकार हैं अन्य की तो गणना ही नहीं। ऐसे समय में मुसीबत का एक पहाड़ आकर उनके सामने खडा हो जाता है। भू-स्वामी के पुत्र के सामने तो कोई समस्या ही नहीं। क्योंकि प्रथम तो उसे नौकरी की आवश्यकता ही नहीं, चलो यदि अपना पूरा शौक पूरा करने के बाद साहबजादे नौकरी करना भी चाहें तो योग्यता भले ही कुछ हो या न हो किन्तु लक्ष्मी की छत्र छाया में क्या सम्भव नहीं। यदि किसी पद के लिये बी० ए० की आवश्यकता है तो निर्धन किसान के लड़के के कितने ही अच्छे अंक क्यों न हो किन्तु लक्ष्मी की कृपा बिना सब व्यर्थ। साहबजादे यदि हाई स्कूल फेल ही क्यों न हो लक्ष्मी की छत्र छाया में सफलतापूर्वक पद पर आसीन हो जायेंगे।

इस प्रकार भूमि हीन बेचारा परेशान. व्यक्ति, पथ-विहीन-बेपतवार नाविक की तरह समाज के सागर में बेकारी के तूफान के दर्दनाक थपेड़े खाता घूमता रहता हैं। जब उसकी सहन-शक्ति जवाब दे देती है तो कुछ को तो मौत की आरामदेह शैया आत्महत्या के मार्ग द्वारा अपने पास बुला लेती है। कुछ बेचारे मजदूरी कर-करके अपने जीवन की नैय्या को ढकेलते है। कुछ आवेश में आकर समाज के शत्रुओं पर टूट पड़ते हैं लेकिन ये संख्या में न्यूनतम हैं।

संस्कृत के एक कवि ने कहा है :—

बुभूक्षिता नराः किं न करोति पापम्।
क्षीण नराः निष्करुणां भवन्ति॥

रामधारी सिंह दिनकर ने भी गरज कर कहा—

"भूखे पेटों को देशभक्ति सिखाने वालों भूख इन्सान को हैवान बना देती है।

इस प्रकार बंगाल से एक तूफान उठा, जिसकी लपेट में आकर पश्चिम बंगाल की कानून व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी। बड़े २ सेठों को वहाँ फैक्ट्रीयाँ चलानी मुश्किल हो गयी।

कहीं भारत भूमि के अन्य प्रान्त भी पश्चिम बंगाल न हो जाये, सरकार को इस समस्या का गम्भीरता से अध्ययन करना चाहिये। सही हल भूमि के समान वितरण के द्वारा निकालना चाहिये। बड़े-बड़े भूस्वामियों से कानून न भूमि लेकर निर्धन भूमिहीन किसानों में बाँटनी चाहिये।

मैं नवनिर्मित अपनी लोकप्रिय इन्दिरा सरकार से यह आशा करता हूँ कि वह इस समस्या का सही समाधान करके अपने गरीबी हटाओ के नारे को क्रियात्मक रूप देगी।

जो मानव जाति की सहायता करना चाहते हैं भले ही वह सरकार हो, समाज हो या संगठन हो उन्हें चाहिये कि वह सबसे पहले अपने सुख, स्वार्थ, नाम, यश, तथा सर्व विध स्वार्थी भावनाओं की एक गठरी बनाकर उसे समुद्र में फेंक दें। अत्याचार व अनाचार अधिक दिन नहीं टिक सकते। अन्त में हमें यथार्थ सत्य का सहारा लेना पड़ेगा और उसी का दूसरा नाम यथार्थ शक्ति सिद्ध होगा क्योंकि सत्य स्वयं ही शक्ति है अतः क्रान्तिकारी नवयुवक अपने दोनों भुजाओं में सत्य पवित्रता की जलती मशाल लेकर समाज में क्रान्ति का बिगुल बजा दें। जिससे हम सब में राष्ट्रीयता की भावना का स्त्रोत फूट पड़े। देश भक्त युवक समाज के कार्यकर्त्ताओं ने सरकार एवं जनता तक उपरोक्त विचारों को भेजने का संकल्प किया है।

जय समाजवाद।

बड़े पुरुषों और महापुरुषों में अन्तर है, बड़े पुरुष उस बड़े वृक्ष के समान होते हैं जिनके लिए छोटे-छोटे पौधे बढ़ने नहीं पाते, किन्तु महापुरुष उस गाय के समान होते हैं जो स्वयं कड़वी घास खाकर बच्चे को मीठा दूध देती है।

—विनोबा भावे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे गुणों या संस्कारों के जोड़ का नाम ही संस्कृति है

● हरिभाऊ उपाध्याय

हम मूलतः मानव हैं और अपने जन्म स्थान या मजहब के अनुसार हम हिन्दू, अंग्रेज, मुसलमान, बौद्ध ईसाई आदि नामों से अभिहित होते हैं। ये भेद मानव-संस्कृति के मूल भेद नहीं है।......मेरे धोती, पाजामा, पतलून पहन लेने या दाढ़ी, तिलक, टोप, चोंगा आदि चिन्हों से मेरा असली मानव बदल नहीं जाता। ये हमारी संस्कृति के निर्देशक नहीं, आंशिक संकेत हैं।

आज भारत में ही नहीं, सारे विश्व में बड़ी उथल-पुथल हो रही है। भारत के सभी क्षेत्रों में क्या सामाजिक, क्या आर्थिक और क्या सांस्कृतिक या धार्मिक—इसका प्रभाव नजर आ रहा है। उथल-पुथल जीवन की स्वाभाविक और साधारण प्रक्रिया नहीं। जीवन के असन्तुलन का ही परिणाम उथल-पुथल होता है। पहले असंतुलन फिर उथल-पुथल। प्रकृति, मानव-स्वभाव और जीवन, सब में एक सन्तुलन है। इसी से वे एक प्रवाह की भांति निरन्तर चलते और बढ़ते रहे हैं। जन-जीवनदायी तत्वों में कुछ गड़बड़ होती है तभी मानव-स्वास्थ्य बिगड़ता है। एक असन्तुलन जन्म लेता है। उस असंतुलन या उसके तत्व और रूप को समझ लेना आवश्यक है, उन सब के लिये जो समाज या राष्ट्र के नेता हैं या समाज या मानव जीवन में क्रांति करना चाहते हैं। ऊपर से जो उथल-पुथल या क्रांति-रूप नजर आता है वास्तव में भीतर से उसकी स्थिति बिगड़ी हुई होती है। भीतर निगाह डाले बिना बाहर के क्षोभ, शान्ति और विप्लव की चर्चा करते रहने या उन्हें कोसते रहने से कोई लाभ नहीं।

आजकल हम आधुनिकीकरण पर बड़ा जोर देते हैं और प्राचीन सब को ध्वस्त रखने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। युवा-वर्ग में एक ऐसी मनोवृत्ति पैदा हो रही है कि पुराना सब तोड़ दो, फेंक दो। जब उनसे कहते हैं कि अच्छा भाई कोई बात नहीं, पुराना सब जला दो, अब आगे क्या नया कुछ जोड़ना बनाना या करना भी तो होगा? इसकी क्या दिशा, क्या रूपरेखा हो। यदि पुराना सब नष्ट-भ्रष्ट होने लायक है तो वह हो ही जायगा और कुछ हो भी रहा है। इसके लिए तो आपके इतने आक्रोश की आवश्यकता नहीं। हमारी बुद्धि, शक्ति और प्रभाव तो इसमें लगना चाहिए कि हम नया क्या बनावें? पुराने में से कुछ लेने योग्य हो तो क्या लें? जो आधुनिक जगत कहा जाता है उससे क्या और कितना लें और नया हम अपनी बुद्धि से कितना बनावें और तैयार करें। यदि यह प्रक्रिया हम नहीं करते हैं और केवल किसी को नष्ट-भ्रष्ट करने पर ही जोर लगाते हैं तो यह एकांगी और दुर्बल प्रयत्न टांय-टांय फिश होकर रह जायगा। जब विज्ञान ने हमको नई-नई शक्तियां और उन पर काबू दिया है तो इसमें डरने और घबराने की क्या बात है, उनकी छानबीन और आवश्यकता-नुसार स्वीकृति होनी ही चाहिए।

यह आधुनिकता का प्रश्न हमारी संस्कृति के सम्बन्ध में भी चर्चा का विषय हो रहा है। मेरे ख्याल में संस्कृति के टुकड़े करना सही नहीं है। भारतीय या पूर्वी तथा पश्चिमी या यूरोपीय इस प्रकार संस्कृति में भेद करना भूल है। हम मूलतः मानव हैं और अपने जन्म-स्थान या मजहब के अनुसार हम हिन्दू, अंग्रेज, मुसलमान, बौद्ध आदि नामों से अभिहित होते हैं। ये भेद—मानव संस्कृति के मूल भेद नहीं हैं। ऊपर की व्यवस्था, प्रणाली विधान, रचना के आश्रित हैं। मेरे धोती, पजामा, पतलून पहन लेने से या तिलक, दाढ़ी, टोप, चोंगा आदि चिन्हों से मेरा असली मानव बदल नहीं जाता। ये बाह्याचार प्रधानतः बाह्य कारणों से उत्पन्न होते हैं, इनका अपने-अपने समय में एक महत्व है। परन्तु ये हमारी सारी संस्कृति के निर्देशक नहीं, आंशिक संकेत हैं। अतः इन बाह्याचारों से संस्कृति की नाप-तोल करना या उसे खण्डों में विभाजित करना आवश्यक नहीं है।

संस्कृति हमारे गुणों या सस्कारों के जोड़ का नाम है। आदिकाल से मनुष्य की जीवन-यात्रा चल रही है। इस यात्रा में उसने समय-समय पर जो खट्टे-मीठे, खारे अनुभव प्राप्त किये—गुण, संस्कार या पद्धतियां, व्यवथायें प्राप्त कीं, जीवन की सुख-समृद्धि और उत्कर्ष के जो नियम गढ़े, वही उनका समुच्चय 'संस्कृति" कहलाया।

मानव अनेक देशकाल में रहा और आज भी रहता है—उसके अनुसार उसकी वेश-भूषा, रहन-सहन, खान-पान, लोक व्यवहार या शिष्टाचार में थोड़ा बहुत फर्क आया है और आता रहेगा। परन्तु इस भेद को उसका सस्कृतिगत भेद मानना उचित न होगा। भेद मानना ही हो तो सभ्यता के भेद कह सकते हैं। हृदय के उच्च सद्गुणों तथा मन के सत्संस्कारों को ही संस्कृति का नाम दिया जा सकता है। एक वृक्ष के मूल, जीवन-रस या बीज को हम संस्कृति कहें। उसकी शाखा-प्रशाखा, पत्ते, फूल को नहीं, अलबत्ता ये उसके बाह्य संकेत कहे जा सकते हैं।

(साभार नवजीवन-पत्र) [क्रमशः]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश भक्त युवक समाज का क्रियान्वित कार्य, एवं विवरण ।

क्र०स०	नाम	दिनांक	विषयों का त्यागन	पता
१	श्री भंवरसिंह	१६–६–७१	चाय	चुन्हैटी शेख पो० सु० खरखड़ो जि० सहारनपुर
२	,, विजयकुमार	६–६–७१	,,	मो० किशनपुरा सहारनपुर
३	,, कलमसिंह	१५–६–७१	धूम्रपान, शराब	त्रलवा पो० खास जि० मुजफ्फरनगर
४	,, सुभाषचन्द्र	१६–६–७१	सिनेमा, धूम्रपान	मो० मीरकोट निकट-प्रदीप आईस क्रीम, सहारनपुर
५	,, राजकिशोर	,,	भक्तिगान	निकट रेलवे क्लब, सहारनपुर
६	,, पृथ्वीराज	,,	चाय	निकट पुल जोगियान, सहारनपुर
७	,, दीपचन्द	,,	धूम्रपान	,, ,, ,, ,,
८	,, मेहताबअली	,,	उत्पादन कार्य में सलग्न	मिस्त्री अफजाल मैकेनिक अम्बाला रोड, सहारनपुर
९	,, धीरजसिंह	२०–६–७१	धूम्रपान शराब माँस	पुरानी आदत हेतु दृढ़ संकल्प रेलवे स्टेशन मास्टर लंढौरा सहारनपुर
१०	,, शिवचरणसिंह	,,	धूम्रपान	सम्बलहेड़ी, सहारनपुर
११	,, रामनारायण मित्तल	१–७–७१	,, चाय	सहारनपुर आजीवन संकल्प
१२	,, दाताराम जी	२–७–७१	कोई भी नशा नहीं करूंगा	सुन्हैटी आलापुर सहारनपुर
१३	,, सत्यपालसिंह	४–७–७१	एक घंटा समाज सेवा २४ घटों में	ग्रा. सुन्हैटी आलापुर पत्रालय भलसवागाज, सहारनपुर ।
१४	,, पन्नालाल	२५–६–७१	चाय व धूम्रपान	महाबीर गली नं. १ किशनपुरा सहारनपुर आजीवन संकल्प
१५	,, महेन्द्रपाल ग्रोवर	४–७–७१	२० सूत्री प्रतिज्ञा पत्र में से (ईश्वर-भक्ति)	किशनपुरा, सहारनपुर आजीवन दृढ़ संकल्प
१६	,, अनिलकुमार	,,	१६ प्रतिज्ञा २० सूत्री प्रतिज्ञा से ली	महाबीर गली नं० १ किशनपुरा सहारनपुर (आजीवन दृढ़ संकल्प)
१७	,, मांगेराम चौहान	,,	नं० १९ प्रतिज्ञा ली	किशनपुरा, सहारनपुर 'अस्तित्व' साधूराम वर्मा (आजीवन दृढ़ संकल्प)
१८	,, रुपिन्द्रपाल सिंह	,,	धूम्रपान व शराब	महाबीर गली नं० १ किशनपुरा, सहारनपुर (आजीवन दृढ़ संकल्प)
१९	,, साधूराम वर्मा सम्पादक अस्तित्व व संस्थापक/मंत्री देशभक्त युवक समाज ।	२७–७–७० २०–७–७० ५–७–७१ ३–३–७० १०–६–७१ २८–३–६९	चाय धूम्रपान असत्य गन्दे चलचित्र सत्ता, स्वार्थ संकीर्णता फैशन परिवारिक आशक्ति	ग्राम सुन्हैटी आलापुर भलसवागाज (सहारनपुर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनांक २२-६-७१ को प्रधान-मंत्री श्रीमति इन्दिरा गाँधी से सम्पादक अस्तित्व की भेंट

दिनांक २२-६-७१ को ठीक ६-१३ पर श्रीमति इन्दिरा गांधी जी से मेरी तीन मिनट की विशेष बातें हुई। श्रीमति गाँधी ने संस्था के विकास में अपना हर प्रकार का योगदान देने का विचार के साथ गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया। उन्होंने संस्था के कार्य को सराहनीय बताते हुए कहा कि जांच के पश्चात् मैं कुछ कर सकूंगी। तथा अन्य गोपनीय बातें भी हुई। जो संतोष-जनक रही अन्त में वे धीरे से अन्य व्यक्ति की ओर बढ़ी मैंने कहा आप कुछ अपने जीवन को भी सत्य की ओर ढालें।

—सहसम्पादक

सन्त-वाणी

—रामस्वरूप सिसोदा

१ सबसे प्रेम बढ़ाइये 'मेरे द्वारा दूसरों का हित कैसे हो" निरन्तर यही सोचते रहना चाहिये और यथाशक्ति सबकी सेवा, सहायता कीजिये।

२ जो दूसरों के दुःख में दुःखी है, वह ही सच्चा देशभक्त है ऐसे देश भक्त को ईश्वर एक पल भी अपने से अलग नहीं करते।

३ अभिमानी और लोभी को कभी शान्ति नहीं मिलती। सच्चा, दीन और विनम्र हृदय पूर्ण शान्ति में रहता है।

४ यदि तुममें कोई अच्छाई हो तो यह समझो कि दूसरों में तुमसे कहीं अधिक अच्छाई है।

५ हम कुल्हाड़ी से समस्त वासनाओं की जड़ काट डालें, जिससे वासनाओं से मुक्ति पाकर हम पहले अपनी अन्तरात्मा में अधिक शान्ति पा सकें।

६ रात के पहले पहर सभी व्यक्ति जागते हैं, दूसरे पहर भोगी जागते हैं, तीसरे पहर चोर जागते हैं, और चौथे पहर योगी जागते है।

७ जिस प्रकार रात्रि तारागणों को प्रकाश देता है उसी प्रकार संकट भी मनुष्य को प्रकाश देता है।

संस्कृति का एक प्रकाश पुंज

(पृष्ठ ६ का शेष)

जीवन चरित्र

स्वामी विवेकानन्द का जन्म सन् १८६३ में कलकत्ते के एक मध्यम वर्ग के परिवार में हुआ था। उनका बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ था। वे बचपन से ही मेधावी, निर्भीक तथा बुद्धिमान थे। उन की स्मरण-शक्ति इतनी अच्छी थी कि एक बार जो पढ़ लेते या सुन लेते वह उन्हें याद हो जाता था; किन्तु वे बचपन से ही बड़े जिद्दी स्वभाव के थे। जिस काम को करने की मन में ठान लेते थे, उसे करके ही छोड़ते थे। किसी के कुछ भी कहने का उन पर असर न होता था। बचपन में उनकी उद्दण्डता तथा असीम साहस की अनेक घटनायें हैं। वे बालकपन से ही महान् तेजस्वी थे और धीरे-धीरे उनके व्यक्तित्व में आध्यात्मिक शक्ति, दया, मैत्री, स्वाधीनता, आत्म-विश्वास, शारीरिक तथा मानसिक बल एवं नेतृत्व के भाव विकसित हुए थे। रामकृष्ण परमहंस ने दक्षिणेश्वर में एक दिन कहा था—"नरेन्द्र ध्यान सिद्ध पुरुष है; जिस दिन वह जान सकेगा कि वह कौन है, उस दिन इस असार संसार में नहीं रहेगा-दृढ़ संकल्प के द्वारा योग मार्ग से उसी क्षण शरीर छोड़कर चला जायेगा।"

(साभार मध्य प्रदेश सन्देश)
सितम्बर १९७०

आपके प्रश्न हमारे उत्तर !

प्रश्न १—भारत जैसे विशाल देश में स्त्री जाति की दशा पिछड़ी होने का मुख्य कारण क्या है।

उत्तर १--मेरी राय यदि पूछना चाहते हैं तो केवल यही है कि नारी जाति को उचित शिक्षा नहीं दी जा सकी और उसके यर्थात् स्वरुप गुण को अज्ञान के कारण मनुष्य ने समझा तक नहीं।

२--सम्पादक जी संस्था के विषय में आप २० जून को देहली पहुँचे थे आपने संस्था के विषय में जो वायदा किया था उसका आज तक आपने उत्तर तक नहीं दिया। कृपया किस २ व्यक्ति से मिले, क्यों मिले, क्या परिणाम निकला लिखने का कष्ट करें।

२—हां २० जुन को देहली अवश्य पहुँचा था देश भक्त युवक समाज के सम्बन्ध में किन्तु मैने देश के महान् व्यक्ति से तो संस्था के विषय में कोई बात नहीं की केवल देश की महान् नारी श्रीमति इन्दिरा गांधी जी प्रधान मंत्री से ही तीन मिनट उनके निवास स्थान पर २२.६.७१ को ६-१३ पर कुछ गोपनीय बातें की, मुझे देश भक्त युवक समाज के विषय में ही मिलना पड़ा। जिसका परिणाम सन्तोषजनक रहा।

गणतंत्र विशेषांक
में विज्ञापन दें !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञापन

२९-६-७१

३८१/अ

सेवा में

श्रीमान जिलाधीश महोदय, सहारनपुर

महोदय,

नम्र निवेदन के साथ यह ज्ञात करना है कि मास मई-जून के अस्तित्व में राष्ट्रीय गान के उपलक्ष में जो हमने परामर्श माँगी। आपने उस विषय पर कहाँ तक विचार किया।

हम देश भक्त युवक समाज के सदस्य इस बारे में आपके विशुद्ध विचारों से उचित उत्तर प्राप्त करने हेतु यहाँ पधारे हैं।

कृपया आप संशोधित की गयी राय पेश करें ताकि अगले पेपर में इसे निकालने में समर्थ हो सकें।

प्रेषित—
श्रीमान जिलाधीश महोदय,
सहारनपुर

भवदीय—
संस्थापक (मन्त्री)
एवं
सदस्यगण, देश भक्त युवक समाज
सहारनपुर

ज्ञापन

जिलाधीश महोदय सहारनपुर

श्री पंत जी को जो देश भक्त युवक समाज की ओर से दिया गया।

दिनांक २९-६-७१ को देश भक्त युवक समाज के कार्य कर्ताओं एवम् संस्थापक महोदय ने जिलाधीश महोदय श्री जगदीशचंद्र पंत जी से अनुरोध करते हुये एक ज्ञापन प्रात: ९ बजे दिया जिसमें श्री पंत जी से अनुरोध किया गया कि अविलम्ब नगर सहारनपुर एवम् अन्य समस्त सिनेमा घरों में राष्ट्रीयगान जो ५२ सेकिन्ड का होता है का भारी अपमान होने से बचाये। ३० मिनट तक निरन्तर विशेष बातचीत करने पर श्री पंत जी ने अपनी सहमति प्रकट करते हुये कहा कि मैं लगभग दो सप्ताह में राष्ट्रीय गान के समय पर सिनेमा हाऊस के दरवाजे पर पुलिस का प्रबन्ध करवा सकूंगा और राष्ट्रीय गान के आरम्भ होने से पूर्व Anouncement करवा सकूंगा और परदे के ऊपर भी लिखित आदेश जनता के समक्ष प्रदर्शित कराऊँगा। मैं आप सभी को पूर्ण विश्वास दिलाता हूँ कि शीघ्र इस कमी को दूर कराऊँगा और यदि यह कमी दूर न हुई तो आप मुझे फिर बतायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में शिक्षा का संकट

डा० के० एन० राज
भूतपूर्व उप-कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय

सरकार, शिक्षक, विद्यार्थी और उनके अभिभावक-सभी यह स्वीकार करते हैं कि भारत में उच्च शिक्षा संकट की स्थिति में है। लेकिन इस संकट के स्वरूप के बारे में लोगों की अलग-अलग राय है। कुछ को ऐसा लगता है कि यह विश्वविद्यालयों में छात्र अशान्ति का संकट है, कुछ इसे स्नातकों की बेरोजगारी के रूप में देखते हैं। सरकार के शिक्षा-मंत्रियों की निगाह में यह मुख्यतः आर्थिक संकट है।

अवश्य ये सब समस्यायें किसी न किसी रूप में उच्च शिक्षा से संबधित हैं तथा उसे प्रभावित करती हैं, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि भारत में उच्च शिक्षा की वर्तमान दुर्गति के ये ही कारण अनिवार्य तौर पर उत्तरदायी हैं। वास्तव में ये समस्यायें किसी मूल समस्या का परिणाम अथवा लक्षण मात्र हैं। वह मूल समस्या है भारत में उच्च शिक्षा के स्वरूप की समस्या। मूलतः भारतीय विश्व-विद्यालयों में दी जाने वाली उच्च शिक्षा के अधिकांश को सच्चे अर्थों में उच्च शिक्षा नहीं कहा जा सकता। यह उच्च शिक्षा जिस प्रयोजन की पूर्ति कर रही है उसे अच्छे किस्म की स्कूली शिक्षा से पूरा किया जा सकता है। भारतीय उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले स्नातकों और स्नातकोत्तर किंवा शोध ग्रन्थ लिखकर डाक्टरेट की उपाधि लेने वाले छात्र-छात्राओं की उपाधियों को विदेशों में कोई मान्यता नहीं मिलती। मैं जब भारत से स्नातक की उपाधि लेकर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पहुँचा तो मुझे अपनी शिक्षा के अभाव की पूर्ति के लिए बारह से चौदह घन्टे प्रतिदिन अतिरिक्त काम करना पड़ा था। इससे जाहिर है कि हमारे देश में उच्च शिक्षा का स्तर कितना निम्न है। आज भी देश को दो चार शिक्षा संस्थानों तथा मद्रास की वनस्पति शास्त्र की या दिल्ली स्कूल आफ इकनामिक्स की अर्थशास्त्र आदि की डिग्रियों को छोड़कर प्रायः अन्य विश्वविद्यालयों की उपाधियों की विदेशों में पूछ नहीं है। अतः भारत में उच्च शिक्षा उच्च नहीं रही है।

> **समस्या यह है कि हमारे यहाँ माध्यमिक कक्षाओं के आठ में से एक विद्यार्थी को धन्धे की शिक्षा मिलती है और शेष सात उच्च शिक्षा के लिये आगे चले जाते हैं। इसके विपरीत जापान में तीन में से दो विद्यार्थी धन्धों की शिक्षा ग्रहण करके माध्यमिक शिक्षा के बाद रोजगार में लग जाते हैं।**

फिर भी भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि तेजी से हुई है। १९५० से ५५ के बीच देश भर में स्नातकीय छात्र-छात्राओं की संख्या ढाई लाख के आसपास थी। १९७० तक यह सख्या बढ़कर आठ गुनी अर्थात् बीस लाख हो गई है। १९५०-५५ तक विद्यार्थियों की संख्या प्रति वर्ष औसत वृद्धि दस प्रतिशत थी लेकिन इसके बाद के वर्षों में वृद्धि का यह औसत तेरह हो गया है। चाहें हम कितनी भी कोशिश करें अपने देश में कम से कम आज तो इतनी अधिक संख्या में लोगों को उनके लिये उपयुक्त रोजगार नहीं दे सकते।

सोचा गया था कि देश की राष्ट्रीय आय में साढ़े छः प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से वृद्धि होगी तथा कारखानों की कार्य क्षमता में बारह प्रतिशत। अतः यह भी अनुमान लगा लिया गया कि लगभग इसी अनुपात से रोजगारों में भी वृद्धि होगी। परन्तु एक ओर तो राष्ट्रीय आय में केवल ४ प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा रोजगारों में भी अपेक्षित वृद्धि नहीं हुई, दूसरी ओर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की सख्या में अप्रत्यशील वृद्धि हुई है। १९६५-६६ में देश के भीतर उच्च शिक्षा के ११ लाख विद्यार्थी थे, सोचा यह गया था कि अगले एक दशक में यह संख्या दो गुनी हो जायेगी लेकिन वह तो १९७०-७१ में ही उतनी हो गई है और यदि उसे रोका नहीं गया तो वह १९७५-७६ तक देश की आवश्यकता की अपेक्षा दुगुने स्नातक पैदा कर देगी। ऐसी स्थिति में स्नातकों की बेरोजगारी और उच्च शिक्षा के लिये धन का अभाव इन दोनों समस्याओं का उग्र रूप धारण कर लेना बहुत स्वाभाविक है।

स्नातक वर्गों में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने का मुख्य कारण माध्यमिक शिक्षा की विचित्र प्रगति तो ठीक है, लेकिन समस्या यह है कि हमारे यहां माध्यमिक कक्षाओं के आठ में से एक विद्यार्थी को धन्धे की शिक्षा मिलती है और शेष सात उच्च शिक्षा

(शेष पृष्ठ ११ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ १० का शेष)

भारत में शिक्षा का संकट—

के लिये आगे चले जाते हैं। इसके विपरीत जापान में तीन में से दो विद्यार्थी धन्धों की शिक्षा ग्रहण करके माध्यमिक शिक्षा के बाद रोजगार में लग जाते हैं।

इसके परिणामस्वरूप माध्यमिक शिक्षा के पश्चात रोजगार प्राप्त करना कठिन हो गया है समय का दुरुपयोग करने की दृष्टि से भी विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये विश्वविद्यालय में भरती हो जाता है। सरकारी सहायता के कारण शिक्षा सस्ती है अतः उसे इस निर्णय के कारण किसी विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। इस दिशाहीन माध्यमिक शिक्षा का विस्तार और उसके लिये भारी मात्रा में सरकारी सहायता बहुत अविवेकपूर्ण कदम है। यदि हमारे यहां अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा का लक्ष्य सिद्ध हो गया होता तो योग्य छात्र-छात्राओं के आगे अध्ययन की दृष्टि से इस प्रकार की व्यवस्था का औचित्य कुछ सीमा तक समझ में आ सकता था। किन्तु वह लक्ष्य संविधान के इस स्पष्ट आदेश के बावजूद पूरा नहीं हुआ कि १९६० तक देश के प्रत्येक बालक को निःशुल्क और अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा मिलने की व्यवस्था होनी चाहिये थी। आज दस वर्ष बाद भी उस स्तर पर स्कूलों में बच्चों की भरती की संख्या संतोषजनक नहीं है। इतना ही नहीं, भरती होने वाले बच्चों में से केवल पचास प्रतिशत बच्चे पहले पांच वर्षों का अध्ययन पूरा कर पाते हैं। अगले तीन वर्ष की पढ़ाई पूरी करने वाले विद्यार्थियों की संख्या पढ़ाई शुरु करने वालों की केवल २० प्रतिशत हैं।

(साभार नवजीवन-पत्र) [क्रमशः]

पचास वर्षों के अनुभव से निर्मित:

सर्वे यन्त्रों के लिये एक मात्र स्थान

नेशनल इम्पोरियम

१७, सिविल लाइन्स, रुड़की
दूरभाष : २४७

विशेष संवाददाता के द्वारा

ज्ञात हुआ है कि ६-७-७१ को विजय टाकीज में दिन के ११ बजे के शो में राष्ट्रीयगान नहीं हुआ। अधिकारी गण ध्यान दें।

(नगरपालिका अध्यक्ष का चुनाव) ८.७.७१ को नगरपालिका अध्यक्ष का चुनाव श्री मंगलकिरण जैन, राओ मुखत्यार अहमद सईद अहमद के बीच सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री मंगलकिरण जैन अध्यक्ष निर्वाचित हुये। हमें आशा है आप नगर की उन्नति की ओर अवश्य ध्यान देंगे।

१९७१ से नई समिति

देश भक्त युवक समाज की केन्द्रीय समिति का गठन

१. संस्थापक, श्री साधूराम वर्मा, भारतीय
२. सरंक्षक, श्री डा. बुद्धप्रकाश डी. लिट्
३. अध्यक्ष, श्री नरेन्द्रसिंह यादव एम. ए. एल. एल. बी.
४. मंत्री श्री साधूराम वर्मा, भारतीय
५. कोषाध्यक्ष—श्री विजय कुमार वर्मा
६: परामर्शदाता, श्री सुबोध कुमार शर्मा, एडवोकेट सहारनपुर
७. साधारण सदस्य, श्री सुरेन्द्रकुमार शर्मा (सहसम्पादक अस्तित्व)
८. सैद्धान्तिक-श्री के. पी. सिंह विशेषज्ञ. (प्र० साईंस) संयुक्त सम्पादक

विशेष सहयोगी

९. लतीफुर्रहमान खां (अधिशासी अधिकारी) नगरपालिका सहारनपुर)
१०. श्री आज्ञाराम शर्मा सदस्य नगरपालिका सहारनपुर
११. विशेष सहयोगी, श्री ओमप्रकाश दीक्षित हिन्दी जैन कालिज, सहारनपुर
१२. विशेष सहयोगी, श्री बोधराम जी कृषि अध्यापक, सहारनपुर
१३. विशेष सहयोगी, श्री अमरसिंह एडवोकेट, कलेक्टरेट, सहारनपुर
१५. विशेष सहयोगी, श्री अशोककुमार शर्मा मंत्री भारतीय युवक संघ, सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र के अतिरिक्त संरक्षक:

१—श्री सेठ पूरनचन्द साहनी मिल मालिक शूगर फैक्ट्री देवबन्द, इकबालपुर (सहारनपुर)। २—श्री जगपालसिंह डायरेक्टर (केन) सुन्हैटी आलापुर (सहारनपुर)। ३—श्री प्रेमसिंह वर्मा, डी. एम. ई. (भारतीय सेना)। ४—श्री महन्त शान्तिनाथ मैनेजर नेशनल इन्टर कालेज, भलसवागाज (सहारनपुर)। ५—श्री केहरसिंह प्रधान, भलसवागाज (सहारनपुर)। ६—श्री महेन्द्रप्रताप एडवोकेट, रुड़की (सहारनपुर)। ७—श्री रामकिशन प्रधान, खानपुर (सहारनपुर)। ८--श्री विशालचन्द जैन भू० पू० आ० मजिस्ट्रेट, सहारनपुर ९--श्रीमती राजदुलारी गर्ग (सहारनपुर)। १०—बाबू ज्योतिप्रसाद चुड़ियाला (सहारनपुर)। १२—राजमाता सरस्वती देवी लंढौरा स्टेट (सहारनपुर)। १२—नवीन प्रकाशन, बड़तला यादगार, सहारनपुर। १३--श्री बाबू रफलसिंह एडवोकेट, कचहरी रुड़की (सहारनपुर) यू. पी.। १४—श्री बलधीरसिंह ग्राम तेजलहेड़ा जिला मुजफ्फरनगर यू. पी.। १५--श्री विक्रमसिंह अध्यापक चुन्हैटी शेख, सहारनपुर। १६--श्री पवनसिंह, नेता लुन्ढ़ा, सहारनपुर।

रेलवे विभाग माँग पूरी करें

ग्राम-कुंजा-सुन्हैटी तथा इलाके की जनता में भारी असन्तोष बढ़ता जा रहा है। वर्षों से चल रहे प्रयत्न के विषय में रेलवे विभाग ने जो उत्तर भेजा है, वह निम्न प्रकार है।

उत्तर रेलवे

प्रधान कार्यालय
बड़ौदा-हाउस
नई दिल्ली
दिनाङ्क २९-६-७१

संख्या : ५१—आर डी. १७९५
श्री एस. आर. वर्मा
सम्पादक—अस्तित्व
बोमनजी रोड, पुल दालमंडी
सहारनपुर (उ० प्र०)

विषय :—चुड़ियाला तथा इकबालपुर रेलवे स्टेशनों के बीच एक नया हाल्ट खोलना।

सन्दर्भ—जनता का तिथि-रहित प्रतिवेदन।

प्रिय महोदय,

इस सम्बन्ध में कृपया मण्डल अधीक्षक, उत्तर रेलवे मुरादाबाद को लिखें जो इस मामले का निपटारा करने के लिये सक्षम अधिकारी है।

भवदीय
दुर्गा प्रसाद माथुर
कृते महाप्रबन्धक (वाणिज्य)

अब अधिक्षक महोदय मुरादाबाद कृपया ध्यान दें कि जो छात्र बड़ी संख्या में रुड़की-सहारनपुर की ओर सवार होते हैं उनकी माँगे पूरी करें। अन्यथा उनको अपना मार्ग बदलना पड़ेगा ऐसी सूचना छात्रों के नेता ने सम्पादक को दी है। एक हाल्ट ४ गाड़ियों के रुकने का शीघ्र बनाया जाये। जबकि अन्य स्थानों पर बहुत कम अन्तर से हाल्ट बने हुये हैं। यदि एक मास तक अधिकारीगणों ने कोई कदम इस ओर न उठाया तो छात्र दल जंजीर खींचकर गाड़ी को रोकेंगे। विभाग को बार २ लिखा जा रहा है कि वे बड़ी तीव्र गति से इस बढ़ती ज्वाला की चिंगारी को विचार के साथ पहले ही ठीक रक्खें, और मास मई, जून के भेजे गये मूल प्रार्थना पत्र की ओर ध्यान दें।

विशेष सूचना

अस्तित्व के सभी ग्राहकों से निवेदन है कि जिन सज्जनों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है वे कृपया शीघ्र मनीआर्डर द्वारा अस्तित्व कार्यालय को भेजें, तभी पत्र उनको भेजा जा सकेगा। साथ २ सभी पाठकों से निवेदन है कि वे गणतन्त्र दिवस का विशेषाङ्क जिसमें उच्च कोटी के लेखक कवियों की रचना प्रकाशित हो रही है, अपना कार्ड भेजकर बुक करा लें मूल्य १ रु० ४० प्रति होगी। तथा विज्ञापन देकर सभी सज्जन लाभ उठायें।

छपाई का सर्वोत्तम स्थान
अशोक प्रिंटिंग प्रेस कोर्ट रोड, सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्रश्नः—पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भारतीय सभ्यता पर शीघ्र ही क्यों पड़ गया ?

उत्तरः—लार्ड मैकाले की दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति थोपे जाने के कारण भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर दबाव पड़ना स्वाभाविक हो गया।

प्रश्नः—आधुनिक नवयुवक एवं नव युवती को विवाह बन्धन कब बांधना चाहिये ?

उत्तरः—श्री सिसोदा जी आप भारतीय वेदों का अध्ययन कीजिये और अपने विचारों को उस ओर भेजिये।

श्री रामस्वरूप सिसौंदा
सहारनपुर,

प्रश्नः—क्या आज देश का उत्थान है। अथवा पतन और क्यों, कैसे ?

श्री वर्मा जी कुछ क्षेत्रों में उत्थान हुआ है जैसे रक्षा, शिक्षा, चिकित्सा, कृषि के कुछ क्षेत्रों में पतन हुआ है जैसे चरित्र, बेकारी, बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार, स्वार्थ सिद्धान्त हीनता, अराजकता, शिक्षा प्रणाली में दोष।

उत्तरः—देश में उत्थान का कारण मेहनत कश इन्सानों का कार्य। परतन्त्रता से मुक्ति। पतन का कारणः—दूषित राजनीति दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति। आलस्य, अनैतिकता वेकारी आदि है।

प्रश्नः—आज गरीब का सत्य असत्य है। अमीर का असत्य सत्य है। ऐसा क्यों ?

उत्तरः—श्री वर्मा जी जहां तक आपके प्रश्न के उत्तर के विषय में विचारा है। तो गरीब का सत्य असत्य आज नहीं है न था नहीं होगा। यही स्थिति अमीर के असत्य को भी है। सत्य स्वय ही शक्ति है।

श्री विक्रमसिंह वर्मा

प्रश्नः—देश की दशा शीघ्र सुधरने का कोई उपाय बतायें ?

उत्तरः—प्रदेशीय और केन्द्रीय स्तर की राजनीति में कम से कम हाई स्कूल स्तर तक की सीमा निर्धारित की जाये। (२) चल अदालतें स्थापित की जायें और देश का प्रत्येक व्यक्ति कम से कम ६ घण्टे कार्य करे।

किसानों को विशेष सुविधायें दी जायें सैनिक प्रशिक्षण अनिवार्य हो १५ से ३५ वर्ष तक के हर व्यक्ति को प्रशिक्षण दिया जाये। सरकारी कर्मचारी शासकीय अधिकारी एवम् शिक्षक वर्ग में आचार संहिता को प्रयोगात्मक रूप में विशेष महत्व दिया जाये। वेतन दर में एक और दस का अनुपात हो। गन्दे चल चित्रों पर प्रतिबन्ध। प्रति व्यक्ति की सम्पत्ति सीमा निर्धारित की जाये जो ५ लाख से अधिक न हो आदि।

प्रश्नः—समाजवाद क्या है ? और इसके क्या क्या उद्देश्य है ?

उत्तरः—समाजवाद वह सामाजिक यन्त्र है जो समाज में खड़े ऊंचे ऊंचे टीलों को सैद्धान्तिक रूप में तोड़ कर सामाजिक समता एवं सद्भाव उत्पन्न करता है एव समाजवाद लोक तन्त्र की प्रगति की जो चाबी है।

प्रश्नः—विश्व में सबसे महान् और बुद्धिमान व्यक्ति कौन है ?

उत्तर—जो स्वंय को पहिचानते हुए समाज राष्ट्र के बीच से गुजरता हुआ विश्व के सभी प्राणी मात्र के लिए बलिदानी देता है।

रविन्द्रसिंह, सहारनपुर

प्रश्नः—इन्सान, इन्सान क्यों नहीं बनता ?

उत्तर—क्योंकि वह इन्सान है।

प्रश्नः—जिन्दगी क्या है ?

उत्तरः—केवल एक स्वप्न है, जो हमें सोचने समझने, एवं कुछ करन के लिए बाध्य करती है।

पन्ना लाल छाबड़ा (भारतीय)
सहारनपुर (यू० पी०)

प्रश्नः—साम्प्रदायिक दंगे क्यों होते हैं ?

उत्तरः—केवल स्वार्थ को लेकर ही।

प्रश्नः—बेरोजगारी कैसे दूर की जा सकती है ?

उत्तरः—अ-जब रोजगार मिले एवं लघु उद्योग धन्धों का निर्माण हो। अराजकता न रहे। योजनाएं परिपूर्ण हों।

२–देश का प्रत्येक व्यक्ति कम से कम ६ घटे हर दशा में कोई उत्पादन कार्य करे।

अनिलकुमार 'भारतीय'

ठीक काम के लिए की गई मेहनत से करने वाले को ऐसी खुशी मिलती है जो जीवन की किसी भी घटना से नहीं मिलती !

कैरी-चैपमेन काट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललित कला मन्दिर की रंगीन भेंट—

मर्यादा

पात्र: ★ माला सिन्हा ★ राजकुमार ★ राजेश खन्ना ★ प्राण
★ अभिभट्टाचार्य ★ असितसैन आदि ।

शुक्रवार ६ जौलाई १६७१ से दूसरा शान्दार सप्ताह

लक्ष्मी टाकीज सहारनपुर मे रोजाना चार शो

निर्माता बी० नागीरेड्डी की नई मनोरंजक एवं उद्देश्यपूर्ण पारिवारिक रंगीन भेंट—

घर घर की कहानी

कलाकार : ● बलराज साहनी ● महेशकुमार ● मारुती ● निरुपाराय ● भारती ● बेबी सोनिया
● ओमप्रकाश ● राकेश रोशन ● जगदीप ● शशिकला ● परवील पाउल ● शबनम
और महमूद जूनियर

शुक्रवार ६ जौलाई १६७१ से

वावल्टी टाकीज सहारनपुर में रोजाना चार शो

शो टाईम— ११॥ बजे प्रातः! ३ बजे मध्यान्ह! ६॥ बजे सायं! १० बजे रात्रि!

शुभ सूचना ! फोन: 4768 शुभ सूचना

मॉडर्न एग्रो इन्डस्ट्रीज गुरु नानक कालेज मार्केट, अम्बाला रोड, सहारनपुर

रूसी ट्रेक्टर DT—14B के अधिकृत विक्रेता जि० सहारनपुर तथा जि० देहरादून के वास्ते हमारे यहाँ रूसी उरीजनल पुर्जों का अपूर्व भण्डार उपलब्ध है दिल्ली भाव पर हर समय मिल सकता है।

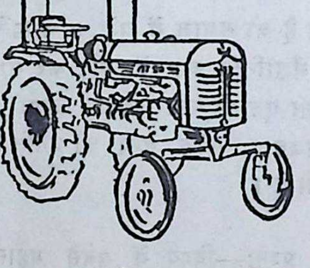

विशेष सुविधा:— कास्तकार भाईयों के लिये सकुशल मैकेनिक जो रूसी ट्रेक्टर की मरम्मत में ट्रेन्ड हैं सेवायें उपलब्ध है । कास्तकार भाई उनको अपने फार्म पर भी उचित मजदूरी पर बुला सकते हैं।

रूसी ट्रेक्टर किराये पर हर समय मय पूरे सामान हेरो, डिस्कपलाव इत्यादि के साथ उचित किराये पर भी मिलते हैं।

एस० आर० वर्मा के लिए अशोककुमार शर्मा द्वारा अशोक प्रिंटिंग प्रेस, सहारनपुर में मुद्रित, तथा प्रधान कार्यालय बोमनजी रोड, पुल दाल मण्डी, सहारनपुर से प्रकाशित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं० 199 नाम व पता
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय हरिद्वार

...० नं० २०२१६/७० एल० रजि० नं० १५५५

राष्ट्रीयता, नैतिकता, देशभक्ति, आध्यात्मवाद एवं विशुद्ध समाजवादी विचारधारा का दिशा बोधक !

अरिदल

...सम्पादक : एस० आर० वर्मा (भारतीय) संयुक्त सम्पादक : के० पी० सिंह

...देश भक्त युवक समाज"
का
...ल समर्थक तथा युवावर्ग
का पथ प्रदर्शक ।
...भक्ति ही सर्वोच्च धर्म है !
...र्ष २ अङ्कन १२

हिन्दी-मासिक

मास अगस्त १९७१
मूल्य १ रु० २५ पैसे
वार्षिक शुल्क ६ रुपये
...में दो विशेषाङ्क सहित

संरक्षक :
...श्री बुद्धप्रकाश, डी. लिट् व
...रामचन्द्र विकल, संसद सदस्य

अध्यक्ष, परामर्श समिति :
...श्री स्वामी रामानन्द शास्त्री
संसद सदस्य

महामन्त्री परामर्श समिति :
...श्री नरेन्द्रसिंह यादव एम. ए.

सह-सम्पादक :
...चरणसिंह, सुरेन्द्रकुमार शर्मा,
...महेन्द्रसिंह, राकेश भारतीय

लहू भरा इतिहास है यह

गणतन्त्र विशेषांक

पन्द्रह अगस्त

अशोककुमार गांधी, सहारनपुर

१५ अगस्त दिवस न समझो,
जन गण का मधु मास है ये ।
उत्सर्गों की झांकी है, और
लहू भरा इतिहास है ये ॥
आजादी की चाहे इस मे,
मर मिटने की राहे इस मे ।
सुहागिन के सिन्दूर हैं इसमें,
माताओं के नूर हैं इसमें ॥
इसे कलंकित मत करना,
भारत का विश्वास है ये ।
उत्सर्गों की झांकी है और,
लहू भरा इतिहास है ये ॥
इस दिवस को पाने के लिए
कितनों ने बलिदान किये ।
इसे बनाये रखोगे तुम,
भारत का विश्वास है ये ॥
उत्सर्गों की झांकी है,
लहू भरा इतिहास है ये ।

प्रधान कार्यालय : ... रोड, ... सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

मानव की विशेषतायें

शिक्षित व्यक्ति में छः विशेष लक्षण होते हैं।

१-अपनी मात्र भाषा में विशेष दक्षता प्राप्त किए होता है।

२-विनम्र होता है। जैसे आम का पेड़ फल देता है किन्तु झुक कर ही रहता है।

३-सोचने की शक्ति होती है। जैसे दार्शनिक होते हैं।

४-जिज्ञासु होता है।

५-सदाचारी का होना उसके लिए आवश्यक होता है।

६-आलसी नहीं होता उसमें तत्परता होती है।

सफलता के लिए आप चाहे जितना जी तोड़ परिश्रम करें, पर यदि आपके विचार असफलता के भय से ग्रस्त है तो आपका सभी परिश्रम बेकार हो जायेगा। आपको निराशा के सिवा कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। बहुत से मनुष्य केवल इस विचार के भय से कि वह कहीं असफल न हो जाये अपनी शक्ति नष्ट कर देते हैं और उन्हें सफलता नही मिल पाती।

आपको चाहिए कि आप प्रत्येक पदार्थ को आशा जनक उज्जवल और निश्चियात्मक पहलू से देखे और अपने मन में यह विश्वास जमा ले कि जो भी होगा अच्छा ही होगा और सत्य की असत्य पर अवश्य विजय होगी। इस सम्बन्ध में आपको यह जान लेना आवश्यक है कि एकता और स्वास्थ्य ही सत्य है और विरोध एवं अस्वास्थ्य असत्य। इस प्रकार के विचार रखने वाले व्यक्ति आशा वादियों की श्रेणी में आते हैं और ऐसे ही विचारों से संसार में अद्भुत सुधार होता है।

आशावाद मानव के लिए अमृत सदृश में है जिस प्रकार वनस्पति को सूर्य से जीवन प्राप्त होता है उसी प्रकार आशावाद में अपने आप में जीवन संचरित होता है। आपके मन रूपी सूर्य के प्रकाश से आपके जीवन का विकास होता है और इसी से आपकी मानसिक शक्तियाँ फलती फूलती है। इसके विपरीत निराशावाद की भी आपकी उन्नति नहीं होने देता। सदा आपके नाश का कारण होता है। इसलिए जो व्यक्ति हर वस्तु के अन्धकार मय पहलू पर दृष्टि रखते हैं। सदा बुराई अथवा असफलता के विचार मन में बनाये रखते है वह सदा दुख और दरिद्रय से घिरे रहते हैं। किसी भी वस्तु में यह शक्ति नहीं कि वह अपने विपरीत गुण-धर्म वाले पदार्थों को अपनी ओर आकर्षित करे। यदि आप सुखी और समृद्ध शाली होना चाहे तो आपको सुख-समृद्धि के ही विचार पैदा करने चाहिए। अपनी सोई हुई आत्मा को पुनः उदार बनाना चाहिए। गरीबी उसकी और आती है जो उससे भय खाता है।

मेरी दृष्टि में तो अब तक ऐसा एक भी व्यक्ति नही गुजरा जिसको अपनी आत्मा पर भरोसा हो जिसके मन में दृढ़ विश्वास हो और जो अपने उद्देश्य को पूरा करने में मन कर्म और वचन से लगा हुआ हो और फिर भी उसे सफलता न मिली हो। आप याद रखिये कि प्रत्येक उच्च अभिलाषा का उदय पहले आपके मन में आत्म प्रेरणा के रूप में होता है और तभी उसकी सिद्धि होती है बशर्ते कि उसकी प्राप्ति हेतु उचित प्रयत्न किया गया हो अतः आपको चाहिए कि आप ऐसा प्रयत्न करते रहें कि आपके विचार और महान् हों और जो कुछ काम करना चाहें उसके लिए आपको मन में शंका अथवा सन्देह नामक वस्तु नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि ये उत्पादन शक्ति को क्षीण करते हैं और तभी आपकी अभिलाषा पंगु हो जाती है। आप संसार में विजय सुख और शान्ति के लिए पैदा हुए हैं न कि निराशा और अशान्ति हेतु जो व्यक्ति समय को नहीं पहचानते वे हमेशा अपनी भूल और भारी भूल पर पश्चाताप करते-करते पतन की

[शेष पेज ७ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"समय का प्रभाव"

● हरशरन गोयल

आज मानव दुखी है अपनी अतृप्त इच्छाओं से उत्पन्न क्रोध के कारण। मनुष्य दुखी इसलिए भी है कि वह बाह्य इन्द्रियों के स्पर्श, रूप, रसादि नश्वर विषय भोगों में लीन रहने में ही परम सुख की इतिश्री समझ बैठा है। इससे अज्ञान, प्रमाद, अशान्ति, अन्याय को प्रश्रय मिलता है। काम, क्रोध, दंभ द्वेष की प्रवृत्ति पनपती है। पापाचार का वातावरण लोभ, असंयम, विवेक-हीनता, कर्त्तव्यविमुखता आदि का जन्म होता है। गृह, समाज, देश राष्ट्रों में कलह उत्पन्न होने लगते हैं जिससे पारस्परिक प्रेम, भ्रातृत्व भावना, कर्त्तव्य परायणता, निष्ठा को ठेस पहुँचती है।

वर्तमान परिवर्तित आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों ने मानव के नैतिक-मूल्यों में आमूल-चूल परिवर्तन उपस्थित किया है। मानव के प्रति मानव में शंकाकुल प्रवृत्ति एव संशयात्मक वृत्ति तीव्रता से पनप रही है जो किसी भी व्यक्ति अथवा समाज के लिए श्रेयस्कर नहीं है। नित्य की दलगत राजनीति ने स्वार्थपरता, दिशा हीनता, सम्यक बोध न्यूनता और मानवीय मूल्यों में ह्रास उत्पन्न किया है। अतः देश प्रेम का अभाव है और पद-लोलुपता, भ्रष्टाचार, व्यभिचार आदि दुर्गुणों का विस्तार हो रहा है। सरलता से अनुमान लगाया जा सकता है कि हम स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् कहाँ से कहाँ आ गये हैं। झूठ फरेब के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प शायद सूझ नहीं पड़ रहा है। अथवा यों कहें कि हमारे मन में इस विश्वास ने जड़ जमा ली है कि सत्यता से इतर अन्य बातें ही सदैव चलेंगी। परन्तु सत्य शाश्वत होता है।

कहा गया है कि कोई भी कार्य कठिन अथवा बुरा नहीं होता, यह तो केवल व्यक्ति विशेष के सोचने समझने पर निर्भर करता है। यह भी ठीक ही है कि जैसा आदमी सोचता है, वैसा ही वह बनता जाता है। साथ ही चहुं ओर का वातावरण, आय के साधन, कार्य करने की परिस्थितियां आदि भी अपने प्रभाव डालते रहते हैं। कुछ आदर्श होते हैं जिनसे किसी देश की सभ्यता, संस्कृति तथा सम्मान का पता चलता है।

कितनी भी उत्कृष्ट सामाजिक, राजनैतिक अथवा आध्यात्मिक अवस्था क्यों न हो सभी को समान बनाने का दावा नहीं कर सकती तथा विभिन्न वर्गों में समान आर्थिक स्तर को बनाने सक्षम नहीं हो सकती। विचारोंगोष्ठी स्वस्थ विचार-विनिमय ठोस कार्य-क्रम, अनेकता में एकता को सुलभ करते हैं जबकि सीमित दृष्टिकोण, जाति विशेष का अनुराग स्वार्थांधता, विवेकशून्य निर्णय कठिनाइयों को उभारते हैं। परस्पर प्रीति के विकमार्थ, परस्पर हितों के उद्धरार्थ तथा परस्पर आदान-प्रदान के स्थापनार्थ सौहार्द एवं त्याग की महान आवश्य- कता होती है। एक की उदारता दूसरे की सहायता हुआ करती है। किसी की विवशता पर अपनी उदारता को हावी नहीं होने देना चाहिए। मानव स्वयं में सर्वगुण-सम्पन्न सर्वसाधनयुक्त और सभी जीवों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, परन्तु उसकी आर्थिक विपन्नता, बौद्धिक ह्रास लोभ प्रवृत्ति तथा सामाजिक विवषताएं उसे परमुखापेक्षी बनने पर बाध्य कर देती हैं। ये परिस्थितियाँ कभी न कभी किसी न किसी रूप में प्रत्येक के सामने आ सकती हैं अतः हमें उदारता का पाठ प्रकृति से सीखना चाहिए। पेड़ फल से लदने पर नीचे को झुक जाते हैं? उसी प्रकार सम्पन्न व्यक्ति में नम्रता का समावेश होना लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। आंकिचन की नम्रता का कोई महत्व नहीं होता। यह भावना त्याग से आती है। त्याग से आत्म तुष्टि और परोपकार की पुष्टि-एक पंथ दो काज-संभव हो जाती है।

कुछ बातें होती हैं जो हम स्वयं उत्पन्न करते हैं और फिर उन्हीं के कारण कष्टों को आमंत्रित करते हैं। ऐसा ही एक सामाजिक अभिशाप है दहेज जिसे स्वयं हमने उत्पन्न किया है, पालन-पोषण करके उसे इतना शक्तिशाली बना दिया कि वह भस्मासुर की भाँति अपने इष्ट का ही अनिष्ट करने के लिए उतावला हो रहा है। अभी अवसर है कि हम इससे छुटकारा पालें परन्तु हमारी स्वार्थता एवं संकीर्णता इस पुनीत कार्य की ओर अग्रसर नहीं होने देती। झूठी मान्यताओं के आडम्बर में फंसे और परविवशता का लाभ उठाने की हमारी क्षुद्र भावनाएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें इस कष्टपूर्ण वातावरण से उबरने नहीं दे रही हैं।

आवश्यकता है केवल प्रयासमात्र की। हमें आज ही संकल्प कर लेना चाहिए कि न दहेज देंगे और न लेंगे। सामूहिक प्रयास हो तो इससे कोई अच्छा विकल्प और हो ही नहीं सकता नवयुवकों को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। उनकी बहनों को इसके कारण कितना मानसिक क्लेश हो रहा है। पैसा हाथ का मैल है। दूसरे के देने से कभी पूरे नहीं पड़ते। फिर दहेज का धन माँ-बाप के पास रहता है। दहेज के भूखे नवयुवक की जीवन-संगिनी की भी उसके प्रति अच्छी भावना नहीं रहेगी जिससे घुटन का वातावरण बना रहेगा अन्यथा जीवन-पर्यन्त कृतज्ञ रहेगी।

साथ ही यह भी सोचना चाहिए कि जिस प्रकार उसकी शिक्षा में भारी व्यय उसके माँ-बाप को उठाना पड़ा था उसी प्रकार लड़की के माँ-बाप को भी करना पड़ा होगा, फिर वे कहाँ से दहेज को जुटा पायेंगे? नवयुवकों को इस कुरीति को दूर करने में सहयोग देना चाहिए अन्यथा इससे कितनी ही बुराइयों को जन्म मिलना प्रारम्भ हो गया है और उन भयंकर परिणामों से समाज का ढांचा रेत की दीवार की भांति किसी भी दिन ढह जायेगा। यदि शिक्षित और उच्च पदासीन नारी ने पुरुष वर्ग से बदला लेना प्रारम्भ कर दिया तो क्या स्थिति हो जायेगी, उस भयावह रूप को नहीं भूलना चाहिए।

स्वतन्त्रता दिवस के पावन पर्व पर जनता को बधाई!

स्कार्ट ट्रैक्टरस राजदूत मोटरसाईकिल राजदूत स्कूटर

राष्ट्र की उन्नति एवं सामाजिक विकास को प्रोत्साहन देने हेतु समय की बचत उत्तम पैदावार के लिए इन्ही श्रेष्ट यन्त्रों का प्रयोग कीजिए।

मेहता ट्रैक्टरस एण्ड आटो-कारपोरेशन
अम्बाला रोड, सहारनपुर।

रुड़की आटो मोबाइल्स
रुड़की।

देवबन्द ट्रैक्टरस
देवबन्द।

स्वतन्त्रता दिवस के पावन पर्व पर जनता को बधाई!

HERBERT NURSING HOME

डा० एस० हरबर्ट एल०सी०पी०एस० (Bom.) जी०एस०एम० (PENN) एफ. आई. सी. एस एम. आई. सी. ए. (N.Y.)

जगाधरी यमुना नगर रोड (जगाधरी)

कुछ समय पूर्व डा० साहब किसी दूसरे स्थान पर रहकर रोगियों की चिकित्सा करते थे। किन्तु अब कुछ समय से उपरोक्त स्थान को अपना व्यक्तिगत बनाकर और बाहर से आने वाले रोगियों की हर सुविधा का ध्यान रखते हुए अपना हस्पताल जगाधरी-यमुना नगर के बीच सड़क के निकट कुछ समय से चालू कर रखा है। रोगी निश्चित स्थान पर पधार कर लाभ उठायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में शिक्षा का संकट

● डा० के० एन० राज
भूतपूर्व उप-कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय

(गतांक से आगे)

आश्चर्य है कि स्वतन्त्रा के बाद पिछले २३ वर्षों में देश के केवल एक तिहाई लोगों को ही अक्षर ज्ञान दिया जा सका है। अक्षर-बोध प्राप्त करने वालों की संख्या प्रतिवर्ष केवल एक प्रतिशत की वृद्धि होती है। यह स्थिति निर्वाचन मूलक लोकतन्त्र की दृष्टि से भी चिंताजनक है। यदि देश का प्रत्येक नागरिक प्रारम्भिक शिक्षा के आठ वर्ष का पाठचक्रम पूरा कर लेता तो देश की राजनीति की वर्तमान अस्थिरता और राजनीतिक दलों की सिद्धान्तहीनता सत्ता लोलुपता पर प्रभावशाली नियत्रण स्थापित हो जाता। लोकतन्त्र की सफलता के लिये शिक्षित नागरिक एक बुनियादी शर्त है।

बुनियादी शिक्षा है और यदि शिक्षा पर होने वाले राष्ट्रीय व्यय का अधिकांश उस पर व्यय नहीं होता तो शिक्षा का ढांचा विकृत हो जायेगा और उच्च शिक्षा सही मायने में उच्च नहीं रहेगी। आज तो स्थिति यह है कि एक ग्रेजुएट की पढ़ाई पर सरकार जितना खर्च करती है, उतने व्यय में ३० को प्राथमिक शिक्षा दी जा सकती है। इस स्थिति को परिवर्तित किये बिना काम नहीं चलेगा।

पुनः यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि भारत में उच्च शिक्षा मुख्यतः शहरों के लिये है। उच्च शिक्षा लेने वाले छात्रों में

> नेता लोग आम जनता के नाम पर जन-साधारण के लिए मातृ-भाषा में शिक्षा की व्यवस्था कर रहे हैं. लेकिन उनके उनके तथा समाज के सम्पन्न वर्गों के बच्चे अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों-कालिजों में पढ़ रहे हैं। इसका फल यह हुआ कि प्रतियोगिताओं में अंग्रेजी माध्यम वाले छात्र तो विजयी हो जाते हैं तथा मातृ-भाषा माध्यम वाले पिछड़ जाते हैं।

शिक्षा का ढांचा पिरामिडवत् नीचे से चौड़ा और विस्तृत तथा ऊपर की ओर क्रमशः संकरा होना चाहिए। किन्तु हमारे यहां स्थिति इसके एकदम विपरीत है। हमारी राष्ट्रीय आय का कुल तीन प्रतिशत शिक्षा पर खर्च होता है। यह राशि प्रारम्भिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा पर लगभग समान अनुपात में बंटी हुई है। यह एक चिंताजनक बात है कि प्रारम्भिक शिक्षा

देहाती विद्यार्थियों की संख्या केवल बारह प्रतिशत है। ये देहाती छात्र जिन संस्थाओं में पढ़ते हैं उन पर उच्च शिक्षा के लिए व्यय होते वाली कुल राशि का आठ प्रतिशत व्यय होता है। शहरों में भी अधिकांश विद्यार्थी ऊंचे वर्गों के होते हैं। इसका साफ अर्थ यह है कि उच्च शिक्षा पर किया जाने वाला व्यय समाज के अपेक्षाकृत सम्पन्न वर्गों को परोक्ष रीति से दी जाने वाली आर्थिक सहायता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

उच्च शिक्षा की एक महत्त्वपूर्ण समस्या शिक्षा के माध्यम की है। यह सही है कि मातृभाषा में विषय की पकड़ व्यापक और सुगम होती है और मैं इसका समर्थक भी हूं तथापि यह भी सही है कि अभी तक देशी भाषाओं में वह सब और उतना साहित्य उपलब्ध नहीं है जितना कि अंग्रेजी में। इसका परिणाम यह हुआ है कि अग्रेजी माध्यम न लेने वाले विद्यार्थियों के लिए ज्ञान का क्षेत्र सीमित हो रहा है। यही नहीं, इस मामले में आज दोहरी नीति चल रही है। नेता लोग आम जनता के नाम पर जन-साधारण के लिये मातृ-भाषा में शिक्षा की व्यवस्था कर रहे हैं और उनके अपने तथा समाज के सम्पन्न वर्गों के बच्चे अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों और कालेजों में पढ़ रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रतियोगिताओं में अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थी विजयी हो जाते हैं तथा मातृ-भाषा माध्यम वाले पिछड़ जाते हैं।

ये ही कारण है जिन्होंने भारत में उच्च शिक्षा को हास्यास्पद बना दिया है। आज रोजगार प्राप्त करने में डिग्रियो का महत्त्व घटता जा रहा है, फिर भी प्रतियोगिता की दृष्टि से ऊंची डिग्री प्राप्त करने की कोशिश बढ़ती जा रही है। कोई विकल्प भी तो नहीं है; इसलिये हर छात्र लाटरी के टिकट की तरह यूनिवर्सिटी की डिग्री प्राप्त कर अपना सुखद भविष्य पाने की आशा में यूनिवर्सिटी जाना आवश्यक मानता है। कहना तो यों चाहिए कि अब हमारी यूनिवर्सिटियां एक विचित्र उद्योग बन गई हैं। उनका मौलिक उद्देश्य समाप्त होता जा रहा है। शिक्षा का ढांचा पूरी तरह असन्तुलित हो गया है। आम जनता की आवश्यकताओं के साथ

[शेष पेज ८ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्रता के पावन पर्व पर जनता को बधाई !

देश को आत्म निर्भर करने में गन्ने का भारी महत्व

गन्ना उत्पादन बढ़ने से किसानों की आर्थिक स्थिति में आशातीत सुधार हुआ है । गन्ना अनेकों रूपों में ढलकर जन-जीवन में उपयोगी सिद्ध होता है ।

सर्वाधिक उपयोग गन्ने से बनी चीनी का है !

श्रेष्ठ चीनी के निर्माता :

दि गंगा शुगर कारपोरेशन लि०

देवबन्द (जिला सहारनपुर)

ला० कन्हैयालाल शाह साहनी
चैयरमैन

के० एन० राव
जनरल मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पेज २ का शेष]

ओर पहुंच जाते हैं।

आजादी की पावन बेला में

मेरे देशवासियों जो समय चल रहा है वह भयानक प्रतीत होता है। क्योंकि विदेशी शत्रु हमारे निकट है जो अपनी कूट नितियों से हम ५५ करोड़ आत्माओं को विनाश करने में अपनी पैनी दृष्टि में जमाने की तैयारी में है।

ऐसे समय पर हम सबको एकता प्रम परस्पर सहयोगी बनकर चलना आवश्यक हो जाता है। १५ अगस्त के इस शुभ पावन पर्व पर हम को अपने संकीर्ण विचारों की गठरी को समुद्र में फेंक कर शत्रु का सामना करने के लिए सदैव तैयार रहना है।

किन्तु स्मरण रहे कि ये तभी सम्भव है जब हम स्वतन्त्रता दिवस पर सभी व्यक्ति, महिलायें, नवयुवक जगह जगह समूह के रूप में दृढ़ व्रत लें कि हम राष्ट्रीय एकता के लिए विचार गोष्टी कर एकता और प्रेम का नारा बुलन्द करें, तभी हम शत्रु को परास्त कर सकते हैं।

किन्तु इसके लिए कुछ नवयुवक अपनी योग्यता, साहस और वीरता का परिचय दें। ये झांकी वे ही नवयुवक प्रस्तुत करेंगे जो भारत के कौने २ से जातिवाद, सामप्रदायिकता, क्षेत्रियवाद को सदैव के लिए विदाई दे देंगे। आशा है कि क्रान्तिकारी नवयुवक अपने को प्रमाण का नमूना मानकर ही राष्ट्रीयता के बिगुल को बजाने में सतंक रहेंगे। जयभारत! जयभारत!!

"भारत की अमर कहानी"

राजेन्द्रप्रसाद 'वितराग', हरिद्वार

सुनो! सुनो! ऐ दुयियां वालो!
भारत की अमर कहानी।
ज्ञान का दीप यहीं से जला,
यही बनी सभ्यता की कहानी ॥१
लेखनी चली ऋषिमुनियों की,
हुई विरचित महाभारत की कहानी।
सुनो! सुनो! ऐ दुनियाँ वालो!
भारत की अमर कहानी ॥२
वेद–वेदाङ्ग यहीं लिखे गये,
लिखी रामायण की कहानी।
जिनको पढ़कर दुनियाँ के,
खुले चक्षु और बने ज्ञानी ॥३
जहाँ लिखी हैं गाँधी जी ने,
दया अहिंसा की कहानी।
गीता में 'ज्ञान-सन्देश' देकर,
निकली है कृष्ण की बाणी ॥४
गाँधी, नेहरू, शास्त्री, सुभाष,
जिन्होंने की हैं कुंवानी।
दुश्मनों के दाँत खट्टे हो गये,
भाग गये इग्लेंण्ड आंग्ल सैनानी ॥५
जो बढ़े आगे क्रूरता लेकर,
और साथ में शैतानी।
कर दिया उनका चकना-चूर,
बना दिया पानी पानी ॥६
आज उन्हीं वेद शास्त्रों को पढ़कर,
सभ्यता और संस्कृति है लानी।
उन्हीं आदर्शों को ग्रहण करके,
लिखनी है जीवन कहानी ॥७
प्रेम, सत्य और अहिंसा लेकर,
प्रस्फुठित हुई है मधुर बाणी।
सुनो! सुनो! ऐ दुनियाँ वालो!
भारत की अमर कहानी ॥८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पेज ५ का शेष]

उसका कोई नाता नहीं रहा तथा उसमें प्रारम्भिक शिक्षा की बुनियाद पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता ।

हमारे यहां समस्या के मूल पर प्रहार नहीं किया जाता, ऊपर-ऊपर की बातें देखी जाती हैं । कहा जाता है कि जापान में राष्ट्रीय आय का सात प्रतिशत शिक्षा पर खर्च होता है और हमारे यहां केवल तीन प्रतिशत । यानी हमें भी सात प्रतिशत खर्च करना चाहिए, उससे समस्या हल होगी लेकिन यह कोई नहीं देखता कि १६३० तक जापान में यह अनुपात ३ प्रतिशत ही था । अनेक दर्शकों तक शिक्षा के कुल खर्च का दो तिहाई से अधिक प्रारम्भिक शिक्षा पर तथा उच्च शिक्षा पर छठे हिस्से से भी कम होता था । रूस ने यद्यपि प्रारम्भिक शिक्षा का अपना कार्यक्रम थोड़े से ही समय में पूर्ण कर लिया था फिर भी वह उच्च शिक्षा की तुलना में प्राथमिक शिक्षा को अधिक महत्त्व दे रहा है एवं उच्च शिक्षा में छात्रों का अत्यन्त कड़ाई से चयन करता है । पुनः इन देशों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में यह व्यय इस तथ्य के कारण है कि तीव्र तकनीकी प्रगति के कारण इन देशों में अधिक कुशल व उच्च विशेषज्ञ कर्मचारियों की आवश्यकता बढ़ गई है । पर भारत में जहां साधनों की कमी, भारी निरक्षरता व बढ़ती हुई बेकारी का बोलबाला है, एक भिन्न स्थिति है । यहां अन्य देशों की नीतियों का अनुकरण हमारे लिये अवांछनीय है ।

हमारे यहां तो ऐसी नीतियां व कार्यक्रम चाहिए जिसमें समस्त साधनों के दबाव के अन्तर्गत ही शिक्षक प्रगति ला सकें । इसका निर्देशन इस प्रकार हो कि प्राथमिक शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता प्राप्त हो क्योंकि यही हमारी शिक्षा की आधार-भूत नींव होगी । उसमें समता और उत्पादकता वृद्धि के द्वारा ठोस योगदान के पहलुओं पर समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए । जिस देश में कुल श्रम-शक्ति का तीन चौथाई भाग कृषि व लघु उद्योगों में हो वहां न्यूनतम साक्षरता के बिना कोई भी आर्थिक प्रगति असम्भव है ।

जहां तक उच्च शिक्षा में सुधार का सम्बन्ध है इस ओर भी ध्यान देना होगा । प्रथम उच्चतर शिक्षा पर दबाव कम करने के लिये माध्यमिक शिक्षा का पर्याप्त सुदृढ़ व्यावसायिक आधार प्रदान करें । इंग्लैण्ड का अनुकरण करके सभी औद्योगिक संस्थानों पर कानूनी दायित्व लागू किया जा सकता है कि वे ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम संगठित करें तथा एक विशिष्ट सीमा तक उनका व्यय भी वहन करें । भारत में माध्यमिक स्तर के आठ छात्रों में एक ही व्यावसायिक स्कूल में दाखिल होता है, जबकि जर्मनी व जापान में हर ३ में से २ छात्र व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं । अमेरिका में उच्चतर शिक्षा में ४५ प्रतिशत छात्र ही होते हैं । वहां यह व्यवस्था भी है कि कुछ वर्ष बाद उच्चतर शिक्षा के लिये विशेष रुझान प्रदर्शित करने वाले नौकरी कर रहे छात्रों को इसकी अनुमति दे दी जाती है तथा अपना पाठ्यक्रम पूर्ण कर वे फिर अपने पदों व नौकरियों पर लौट सकते हैं । यह प्रक्रिया उद्योग व विशेष ज्ञान दोनों में सहायक होती है । भारत को भी हमें माध्यमिक शिक्षा के इसी स्तर पर ढालना चाहिये । इसके साथ ही उन्हें काम मिलने की सुविधाएं बढ़ानी चाहिएं ।

उच्च शिक्षा में एक सुधार संगठनात्मक करना चाहिये । भारत में मोटे तौर पर सम्बद्ध, एकात्मक व संघीय तीन प्रकार के विश्वविद्यालय हैं । सम्बद्ध में प्रत्यक्ष शिक्षण नहीं होता केवल पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है व परीक्षाएं ली जाती हैं । शिक्षा उसके कालेजों में दी जाती है । एकात्मक में दोनों काम होते हैं । संघीय में कॉलेज व यूनिवर्सिटी दोनों अपने-अपने क्षेत्र में यह कार्य करती हैं । यह पाया गया है कि एकात्मक व संघीय स्थितियां भारत के लिये ठीक हैं । हमें कॉलेजों को अधिकाधिक छूट देनी चाहिये और उन्हें स्वायत्त स्वरूप ग्रहण करने देना चाहिये । यह आवश्यकता इसलिये भी है कि अब विश्वविद्यालय के आकार बढ़ते जा रहे हैं, यथा कलकत्ता विश्वविद्यालय में दो लाख छात्र हैं । स्वयं दिल्ली में ७५ हजार छात्र हैं । ऐसी बड़ी संख्या में छात्रों के होने पर वे अपना काम सुचारु रूप से करने में असमर्थ रहती हैं । इसके कारण शिक्षा के स्तर पर बुरा प्रभाव पड़ता है; इसलिये अण्डर ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट की शिक्षा बिलकुल पृथक हो । अण्डर ग्रेजुएट स्तर की शिक्षा को स्वायत्त कॉलेजों को सौंप दिया जाये । पोस्ट ग्रेजुएट स्तर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी एडवान्स स्टेडीज के केन्द्रों की योजना स्वीकार की है । इनको विकसित कर दो या तीन विभागों से युक्त स्वायत्त शिक्षण केन्द्र बनाये जा सकते हैं ।

पुनः उच्च शिक्षा वाले स्वायत्त कालेजों को अपनी फीसें बढ़ाने का अधिकार होना चाहिये जिससे उसमें कम से कम छात्र रहें । पर साथ ही योग्य छात्रों को सरकारी छात्र वृत्तियां व निशुल्क पढ़ने की सुविधा दी जाती रहे ।

[शेष पेज ६ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

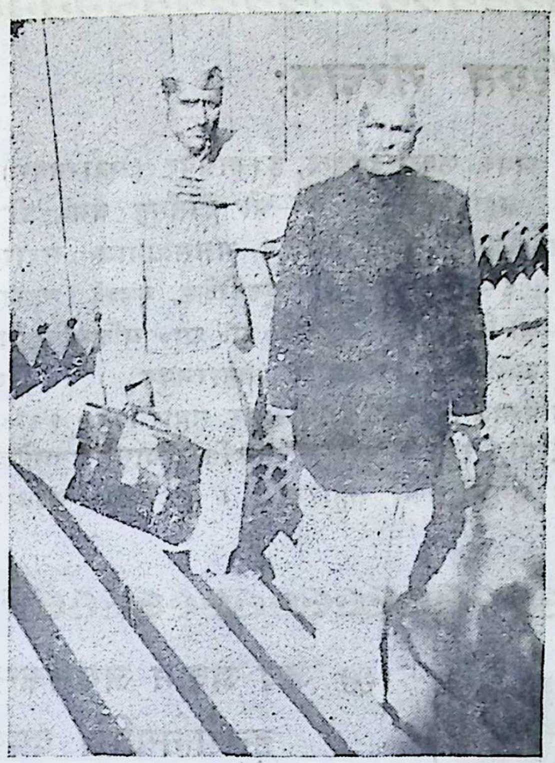

एक ही दृष्टि में

गंगा यमुना की इस पवित्र पुण्य भूमि में कुछ व्यक्ति जन्म लेकर अपने जीवन के विशेष भाग को जनता जनता जनार्धन की सेवा जो एक सिद्धान्त पर टिकी होती है, लगाने में किसी से पीछे नहीं रहते और अपने जीवन की प्रवाह तक नहीं करते उन्हीं में से आप भी है । जो जिला सहारनपुर के निवासी है । आपने अपने जीवन के लगभग २० वर्षों से जनता की जो सेवा की वह किसी से भी छिपी नहीं है, आपने किसान और मजदूर की वफादारी हेतु ही एक लम्बा संघर्ष किया आपने एस० एस० पी० पार्टी में रहकर ही सब कुछ किया जब पार्टी में आपकी दृष्टि से कुछ कमियां दिखाई दी तो तब आपने नई कांग्रेस को अपना लिया आप हैं "श्री मुलखीराज जी" जो संसद के सदस्य जो सादी वेश–भूषा में सम्पादक महोदय से आगे बढ़ते दिखायी दे रहे हैं ।

बंगला देश की सहायता कीजिये ।
भारतीय युवक संघ, सहारनपुर

[पेज ८ का शेष]

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एक खुले विश्वविद्यालय की भी व्यवस्था करे जहां रेडियो से आवश्यक होने पर संक्षिप्त अवधि की कक्षाओं से शिक्षा दी जाये । जो लोग नौकरियां कर रहे हैं, उन्हें प्राइवेट उम्मीदवार के रूप में विश्वविद्यालय परीक्षाओं में बैठने को अनुमति दी जाय । इससे काम करते हुए ही उच्च शिक्षा प्राप्त की जा सकेगी । इस तरह उच्च शिक्षा के पुनर्गठन द्वारा व प्राथमिक शिक्षा पर मुख्य ध्यान देकर ही हम शिक्षा की समस्याओं को हल कर सकेंगे ।

साभार 'नवजीवन-पथ'

हर किस्म की ताजा और बढ़िया किस्म की मिठाइयाँ सस्ते दामों में खरीदने के लिये तशरीफ लावें ।

सुबह के नाश्ते के लिए हमने हाल ही में

चने भटूरे की

सर्विस शुरु की है जो बे-हद अच्छे साबित हुए हैं ।

लालचन्द हलवाई प्रोप्राइटर

माडर्न स्वीट शाप

(सामने कुमार टाकीज)

अन्सारी रोड, सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र के अतिरिक्त संरक्षक:

१—श्री सेठ पूरनचन्द साहनी मिल मालिक शूगर फैक्ट्री देवबन्द, इकबालपुर (सहारनपुर)। २—श्री जगपालसिंह डायरेक्टर (केन) सुन्हैटी आलापुर (सहारनपुर)। ३—श्री प्रेमसिंह वर्मा, डी एम. ई. (भारतीय सेना)। ४—श्री महन्त शान्तिनाथ मैनेजर नेशनल इन्टर कालेज, भलसवागाज (सहारनपुर)। ५—श्री केहरसिंह प्रधान, भलसवागाज (सहारनपुर)। ६—श्री महेन्द्रप्रताप एडवोकेट, रुड़की (सहारनपुर)। ७—श्री रामकिशन प्रधान, खानपुर (सहारनपुर)। ८—श्री विशालचन्द जैन भू० पू० आ० मजिस्ट्रेट, सहारनपुर ९—श्रीमती राजदुलारी गर्ग (सहारनपुर)। १०—बाबू ज्योतिप्रसाद चुड़ियाला (सहारनपुर)। १२—राजमाता सरस्वती देवी लंढौरा स्टेट (सहारनपुर)। १२—नवीन प्रकाशन, बड़तला यादगार, सहारनपुर। १३—श्री बाबू रफलसिंह एडवोकेट, कचहरी रुड़की (सहारनपुर) यू. पी.। १४—श्री बलधीरसिंह ग्राम तेजलहेड़ा जिला मुजफ्फरनगर यू. पी.। १५—श्री विक्रमसिंह अध्यापक चुन्हैटी शेख, सहारनपुर। १६—श्री पवनसिंह, नेता लुन्ढ़ा, सहारनपुर।

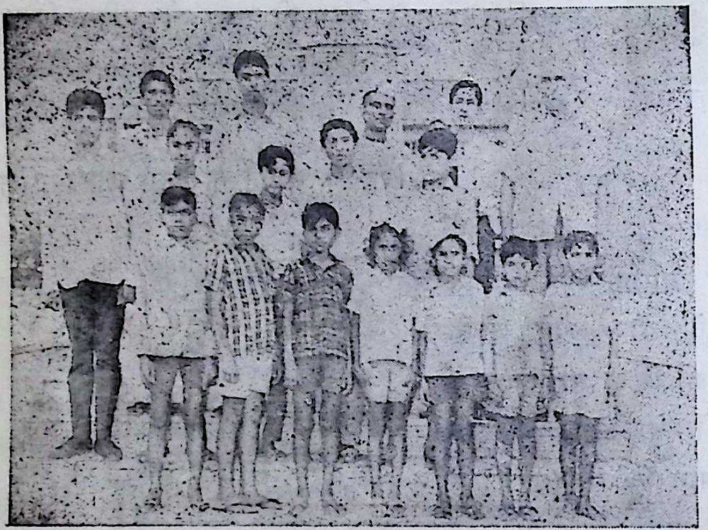

गाँधी पार्क सहारनपुर में बापू जी की प्रतिमा के नीचे देश भक्त युवक समाज के कार्य-कर्ताओं ने मिलकर २० सूत्री प्रतिज्ञा-पत्र में से एक प्रतिज्ञा लेकर अपने जीवन को आदर्शता की ओर अग्रसर किया। संस्थापक महोदय भी सभी युवकों के बीच में खड़े हुए दिखाई दे रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चों का साहस देखकर कौन प्रभावित नहीं होगा। जो भारत के कर्णधार हैं।

—सह-सम्पादक

❀ जय जवान जय किसान ❀

इन्जीनियरिंग वर्क्स

पानी की दुनियां में तहलका

सिंचाई में सर्वोत्तम।
बनावट में सुदृढ़॥
कार्य में सर्वोपरि॥।

किसान का सच्चा दोस्त और साथी!

कौसर पम्पिंग सैट

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त। गन्ना फैडरेशन से अनमोदित। हर मौसम में एकसा और बिना शिकायत चलता है। इसके पंखे में ग्लैंड भरने का चक्कर नहीं। किसान को प्रभावित करने वाला उत्तम इन्जन।

विक्रेता:—

जय जवान जय किसान

इन्जीनियरिंग वर्क्स

कोर्ट रोड़, सहारनपुर (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिंसा

● ललितकुमार शर्मा कोटा

हमारे देश का इतिहास बड़ा पुराना है। अहिंसा की कहानी भी बड़ी पुरानी है। हमारे देश में ऐसे बहुत से महान पुरुष हुए जिन्होंने अहिंसा का प्रचार संसार के एक कोने से दूसरे कोने तक किया भारत अहिंसा के लिए सबसे आगे रहा इसके वीर सपूतों ने इसकी रक्षा के लिए अहिंसा का हथियार उठाकर सब को जीता और उनके हृदय में एक जगह बना ली लेकिन विज्ञान ने आज की दुनिया को बहुत छोटा बना दिया अब जरुरी हो गया की सारे राष्ट्र मिल कर रहे, तभी उनका अस्तित्व कायम रह सकता है। आज सबसे बड़ा खतरा हिंसा से है। आपसी सद्भाव और मेल जोल के लिए अहिंसा से बढ़कर पक्की बुनियाद और कोई नहीं हो सकती भारत और संसार का भविष्य नई पीढ़ी पर निर्भर करता है। अगर नई पीढ़ी की आस्था अहिंसा की ओर आकृषित हो जाए और उस पर जम जाय तो उसका बहुत ही शुभ परिणाम होगा।

आज तमाम विश्व की दृष्टि भारत की ओर है क्योंकि पुराने समय से लेकर अब तक इस भूमि पर सदा शान्ति और अहिंसा के स्वरों की गूंज सुनाई दी है।

बड़ा दिल और बहादुरी ये आदमी को जिस शक्ति से मिलते हैं। उसे अहिसा कहते हैं। के माने हैं प्रेम, अहिंसा के माने हैं त्याग। अहिंसा मरने की कला सिखाती है, मारने की नहीं। यही कारण है कि दुनिया की कोई भी ताकत अहिंसा का मुकाबला नहीं कर सकती।

हमारे देश में पुराने समय से लेकर अब तक बहुत से धर्म चले आते हैं। उनकी अपनी-अपनी महिमा है, उसके अपने-अपने मानने वाले है, लेकिन अहिंसा उन सब में ऊंचा धर्म है। उसे परम धर्म माना गया है।

"अहिंसा परमो धर्मः।"

क्योंकि अहिंसा एक महान अस्त्र है। वह किसी एक सम्प्रदाय का धर्म नहीं है। वह सबका है। प्रत्येक धर्म के चारों ओर सीमा-रेखाएं खिंच जाती हैं और दूसरे धर्मों के लिए वह पराया बन जाता है। परन्तु अहिंसा अपने को इस तरह सीमित नहीं करती। वह मानव मात्र का धर्म है। वह सबको प्रेम सिखाती है वह सबको गले लगाती है। उसके लिये न कोई अमीर है न कोई गरीब, न छोटा है, न कोई बड़ा। इसके लिये तो सब भाई-भाई हैं, सबके बीच एक ही नाता है - प्रेम का ऐसे धर्म की बराबरी भला कौन कर सकता है।

अहिंसा का महान संदेश लेकर समय समय पर विश्व में महान व्यक्ति आये।

कोई ढाई हजार वर्ष पहले भगवान बुद्ध का जन्म हुआ उन्होंने जगह-जगह घूमकर लोगों को उसकी महिमा बताई। हिंसा का विरोध किया। उन्होंने कहा, 'अश्वमेध, नरमेध आदि यज्ञ खर्चीले हैं, पर उनसे कोई बड़ा फल नहीं मिलता जिस यज्ञ में भेड़, बकरी, गाय, बैल आदि प्राणी मारे जाते हों, उनमें सन्त-महर्षि नहीं जाते"। फिर उन्हीं के साथ तीर्थंकार महावीर आये और अहिंसा को चारों ओर फैलाने में बड़ा काम किया। बुद्ध ने अहिंसा को महत्व दिया लेकिन महावीर स्वामी ने अहिंसा को धर्म का अंग बनाया। इस दिशा में ईसा मसीह ने हिंसा को निषेध बताया और कहा, "मांस के लिये भगवान की कीर्ति को न नष्ट करो" तथा हम जितना अपने को प्रेम करते हैं, उतना ही हमें अपने पड़ोसी को भी करना चाहिये।

गांधी जी ने तो अहिंसा को महान कहा है तथा "अहिंसा आत्मा का स्वभाव है, इस कारण हर व्यक्ति जीवन जीवन की सभी बातों में उस पर अमल कर सकता है।

आज के युगमें विज्ञान ने बड़ी उन्नति की है और मनुष्य के लिये सुख-सुविधा की वस्तुएं जुटा दी है। साथ ही ऐसे घातक हथियारों का भी निर्माण किया

(शेष पेज १४ पर)

> प्रकृति अपने कुशल हाथों से मनुष्य को पैदा करती है, और धन व पद जैसी मामूली चीजों पर व्यंग्य से हँसती है। वह बड़ी सावधानी से एक आत्मा को, जो आधी मानवीय है और आधी दैवी, गढती है; और फिर अपार खुशी से चिल्ला पड़ती है; इस तरह का व्यक्ति मेरे सिवा और कौन निर्मित कर सकता है।
>
> —एलिजा कुक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर भक्ति के प्रति निष्ठा

● अनिलकुमार 'भारतीय'
● पन्नालाल छाबड़ा 'भारतीय'

भारत सदा से ही आध्यात्मिक देश रहा है । यहां पर समय-समय पर अनेक महान पुरुष जन्म लेते रहे हैं। जितने भी महान पुरुष हुए वास्तव में सभी का आध्यात्मिक दृष्टिकोण समान रहा है। राम, कृष्ण इत्यादि न जाने कितने ही महान पुरुषों ने अवतार लेकर इस भूमि को अपना कार्य-क्षेत्र बनाया आज भारत की संस्कृति ही धर्म प्रधान रही है। साधारण मनुष्य तो क्या महान पुरुष भी सदा ईश्वर के पक्के भक्त रहे हैं। इनकी ईश्वर भक्ति के प्रति किसी को भी कोई सन्देह नहीं हो सकता। भारत का प्रत्येक व्यक्ति कोई भी कार्य करने से पहले ईश्वर का ध्यान और भक्ति करता रहा है। वास्तविकता तो यह है कि भारतीय लोगों का प्रारम्भ से ही यह ख्याल रहा है कि उनका कोई भी कार्य तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि ईश्वर की कृपा न हो, फिर भला मनुष्य ईश्वर को कैसे भूल सकता है। यहां के लोगों का ईश्वर में कितना पक्का विश्वास रहा है यह इस कथा से ही सिद्ध हो जाता है—जब महाभारत के युद्ध का निर्णय हुआ और श्री कृष्ण की मध्यस्था दुर्योधन को पसंद नहीं आयी तो दोनों पक्षों से देश-देशांतर के राजाओं की सहायता के लिये दौड़ भाग शुरु हुई। अर्जुन-दुर्योधन दोनों श्रीकृष्ण के पास द्वारका पहुँचे। अर्जुन ने देखा कि दुर्योधन श्रीकृष्ण के सिरहाने जाकर बैठ रहा है तो वह चुपचाप श्रीकृष्ण के पैरों के पास बैठ गया। श्रीकृष्ण जागे तो पहले उनकी नजर अर्जुन पर पड़ी, फिर दुर्योधन पर भी उनकी दृष्टि गयी। श्री कृष्ण जी ने पहले अर्जुन से उसकी मांग के बारे में पूछा और कहा मेरी सहायता के दो भाग हैं। एक तो मैं और दूसरी ओर मेरी अजेय नारायणी सेना। मैं युद्ध नहीं करूंगा और न हथियार ही उठाऊंगा। अर्जुन ने शस्त्र के बजाय भगवान श्री कृष्ण को ही चुना। दुर्योधन नारायणी सेना पाकर अर्जुन की मूर्खता पर मन ही मन हंसता रहा किन्तु वह क्या जानता था कि जिसे भगवान की समीपता प्राप्त हो वह कभी हार ही नहीं सकता। और वास्तव में अन्तिम विजय श्री अर्जुन पक्ष को ही मिली। वास्तव में भगवान का स्वरूप ही ऐसा है बल्कि मैं तो यहां तक कहने को तैयार हूँ जिसने अनजाने में भी ईश्वर को सच्चे दिल से याद किया तो उसकी मनोकामना भी पूर्ण होती है। आप सभी उस वधिक की कहानी तो जानते ही होंगे जिसने जीवन भर पाप करके कुछ पुण्य कमाने हेतु अपने पुत्र का नाम नारायण रख दिया जिससे कि वह प्रतिदिन ईश्वर को स्मरण कर सके। जटायु ने भी भगवान राम के हाथो परलोक जाने में ही अपने को सराहा। कुंभ कर्ण ने भी मृग का रूप धारण कर भगवान के तीर द्वारा मरना पसंद किया। इस प्रकार न जाने कितने ही दृष्टान्त इस सम्बन्ध में दिये जा सकते हैं।

वास्तविकता तो यह है कि भारत का अतीत तो अध्यातमवाद है जिसमें मनुष्य धर्म को ही अधिक प्रधानता देता रहा है। धर्म से मनुष्य का तात्पर्य सदा से ही ईश्वर-भक्ति रहा है। मनुष्य अपने जीवन के अन्तिम २५ वर्ष विशेष रूप से वानप्रस्थ आश्रम हेतु जंगलों में रहते थे जिससे कि वें दुनिया के मोह माया से दूर होकर ईश्वर की निकटता प्राप्त कर सकें। वास्तव में सच्ची ईश्वर-भक्ति का तो आनन्द ही ऐसा है कि जिससे तो मनुष्य को अपनी सुध-बुध तक ही नहीं रहती, उसका तो उद्देश्य ही मानव मात्र का कल्याण करने का हो जाता है।

आज भी हम देख सकते हैं कि जब भी यकायक कोई बात होती है तो हमारे मुख से सदा 'हे राम' इत्यादि शब्द स्वतः ही निकल पड़ते हैं। इसी युग की कई घटनाएं मैं ऐसी पढ़ चुका हूं कि जब मनुष्य ने घोर विपत्ति में भी ईश्वर का सच्चे दिल से स्मरण किया तो उसका संकट किसी आश्चर्य-जनक ढंग से समाप्त हो गया और वह

(शेष पेज १४ पर)

> किसी सुसंस्कृत व्यक्ति को यह पहचाने के लक्षण स्पष्ट हैं वह यथा शक्ति दूसरों की मदद करता है। और हर तरह के संग-साथ में अपने शिष्टाचार से पहचान लिया जाता है। (उम्र की इसमें कोई कैद नहीं होती) —हार्पर्स यंग पीपुल' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश भक्त युवक समाज की विशेष बैठक

दिनांक १५-८-७१ को ठीक ४ बजे देश भक्त युवक समाज की एक विशेष बैठक कार्य कारिणी एवं सहयोगी वर्ग की गांधी पार्क सहारनपुर मे बापू जी की प्रतिमा के चबूतरे अथवा उसके सामने जनमन्च में सम्पन्न होने जा रही है जिसमें कई एक विषयों पर बहुत गम्भीर विचार होते हुए प्रस्ताव पारित होंगे। इसके अलावा फोटूग्राफी का होना भी आवश्यक समझा गया है। जो भावी मास के अस्तित्व पत्र में प्रकाशित होकर जनता में संस्था का संगठन सुदृढ़ बनाया जायेगा।

१-पिछली कार्यवाही की पुष्टि पर विचार
२-जिला स्तरिय वार्षिक सम्मेलन करने पर विचार।
३-संस्था का सदस्यता अभियोग चालू करने पर विचार।
४-नगर के भिन्न २ स्थानों पर राष्ट्रीयगान का अपमान होते हुये उसकी अहिंसात्मक विधी द्वारा ठीक कराने पर विचार।
५-नगर में जिलाधीश महोदय एवं कप्तान साहब की सहायता लेकर संस्था के द्वारा ब्लेकआऊट को कराने पर गम्भीर विचार।
६-जिले के ग्रामों विद्यालयों में संस्था के कार्य कर्ता भाषण द्वारा संस्था के उद्देश्यों का प्रचार करने पर विचार।
७-एक विशेष पुस्तक जिसमें सीमा पर प्राण न्यौछावर करने वालों की फोटु व जीवनी अंकित हो जो केन्द्रीय सरकार रक्षा मंत्रालय द्वारा प्रकाणित कराई जाये। संस्था की ओर से इस पर विचार।
८-कार्य कारिणी के जो सज्जन निरन्तर ३ बैठकों में उपस्थित न हों।

उनके स्थान पर दुसरे व्यक्तियों की पूर्ति की जाये पर गम्भीर विचार।

देश भक्त युवक समाज की केन्द्रीय समिति एवं सहयोगी वर्ग।

१-संरक्षक श्री डा० बुद्ध प्रकाश डी लिट०
२-अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह यादव एम० ए० एल० एल० बी०।
३-मन्त्री श्री साधूराम वर्मा भारतीय।
४-कौषाध्यक्ष श्री विजय कुमार वर्मा।
५-परामर्शदाता श्री सुबोध कुमार शर्मा। एडवोकेट कलकट्रेट।
६-साधारण सदस्य श्री सुरेन्द्रकुमार शर्मा सहसम्पादक।
७-सैद्धान्तिक विशेषज्ञ श्री के० पी० सिंह संयुक्त सम्पादक।
८-श्री अधिशासी अधिकारी नगर पालिका सहारनपुर।
९-श्री आज्ञाराम शर्मा सदस्य नगर पालिका सहारनपुर।
१०-श्री डा० ओमप्रकाश दीक्षित अध्यक्ष (हिन्दी विभाग) जैन कालेज सहारनपुर।
११-श्री बोधराम जी कृषि अध्यापक सहारनपुर शिक्षा ऑफिस।
१२-श्री अमरसिंह एडवोकेट कलक्ट्रेट सहारनपुर।
१३-श्री अशोककुमार शर्मा मन्त्री भारतीय युवक संघ सहारनपुर।
१४-श्री राणा तेजवीरसिंह रवड़ इन्डस्ट्रीज सहारनपुर।
१५-श्री चौ० प्यारेलाल जी भूतपूर्व शिक्षा चैयरमेन नगरपालिका सहारनपुर।
१६-श्री बाबू ज्ञानचन्द जी चुन्ने वाले पुल जोगीयान सहारनपुर।
१७-सुभाषचन्द भारती बी० एस० सी० महाराज सिंह कालेज सहारनपुर।
१८-श्री ललित कुमार शर्मा बी० एस० सी० कोटा सहारनपुर।
१९-श्री महावीर सिंह राणा एडवोकेट कलकट्रेट सहारनपुर।
२०-श्री कृपालसिंह एडवोकेट कलकट्रेट सहारनपुर।
२१-श्री महावीरसिंह केन युनियन सहारनपुर
२२-श्री भंवरसिंह चुनहैटी शेख।
२३-अध्यक्ष छात्र युनियन महाराजसिंह कालेज सहारनपुर।
२४-अध्यक्ष छात्र युनियन जैन कालेज सहारनपुर।
२५-श्री अनील कुमार मायर।
२६-श्री गंगाराम बालमीकि जगाधरी वर्कशाप।
२७-श्री सरदार सतवन्तसिंह युनियन प्रेजीडेन्ट। ट्रा० अम्बाला रोड सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज १२ का शेष)

ईश्वर भक्ति के प्रति निष्ठा

ईश्वर के प्रति नतमस्तक हो गया। यह बात नहीं है कि भारत में ईश्वर के प्रति भक्ति भावना की जो लहर पाई जाती है वह किसी दबाव अथवा भ्रम के कारण ही बल्कि भारत में जन्म लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति यही समझता रहा है कि जिस ईश्वर ने हमें इतना सुन्दर मानव जीवन दिया उसके प्रति धन्यवाद प्रकट करना तो मानव के वश में ही नहीं है। इसलिये वह स्वतः ही ईश्वर की भक्ति में लीन रहा है। सदा से ही अन्य कार्यों की तरह वह ईश्वर भक्ति के लिये भी वह निश्चित समय निकालता रहा है। फिर यहां तो ईश्वर भक्ति की सीमा यहां तक रही है कि मनुष्य पत्थरों में भी ईश्वर के रूप को देखकर उसकी पूजा करता आया है, कितनी पवित्र भावना होगी उस मनुष्य के दिल में। और वास्तव में यह हमारा कर्त्तव्य भी है कि हम उस ईश्वर का हर समय ध्यान रखें जिसने हमें वर्तमान स्वरूप प्रदान किया है। उस ईश्वर के प्रति निष्ठा होनी स्वाभाविक ही है जिसने हमारे उपयोग के लिये सूर्य, चन्द्र, सितारे, नदियां, पर्वत, वायु, अग्नि तथा अन्य संसाधन प्रदान किये।

लेकिन हम अपने अन्तर में जरा झांक कर देखें कि वर्तमान समय में हम कितना समय ईश्वर भक्ति में लगाते हैं। वास्तव में आज का मानव विज्ञान युग में होने के कारण अपनी सुख-सुविधा की ओर अधिक ध्यान देने लगा है और अपने आध्यात्मिक स्वरूप को भूलता जा रहा है लेकिन यदि हम चाहते हैं कि हमारा देश फिर एक बार विश्व-गुरू का रूप धारण कर ले तो हमें फिर अपनी प्राचीन संस्कृति की ओर झांकना होगा तथा उसके आदर्शों को अपने जीवन में ढालना होगा।

धन्यवाद।

(पेज ११ का शेष)

अहिंसा

है, जिनसे विश्व के लाखो नर-नारी कुछ क्षणों में काल के गले में जा सकते हैं। नागा साकी और हिरोशिमा में ऐसा हो भी चुका है। मानव के विनाश के भय से आज दुनिया हैरान हो रही है और चहाती है कि ऐसा उपाय निकले, जिससे सब लोग निडर बन सकें और हिंसा की बरबादी से बच सकें।

ऐसा रास्ता एक ही है और वह है गांधी जी का अहिंसा का मार्ग जो मानव-जाति के सुख और शान्ति के लिये यह एक महान् देन होगी।

देश भक्त युवक समाज का प्रचार का कार्य-क्रम

मुझे प्रमाणित करते हुये हर्ष हो रहा कि आज मेरे विद्यालय के लगभग ५०० छात्रों के समक्ष श्री साधुराम वर्मा सम्पादक 'अस्तित्व' ने जो देश भक्त युवक समाज के संस्थापक भी है ने लगभग ४० मिनट राष्ट्रीयता, अनुशासन एवं अन्य सम्बन्धित विचारों को बहुत ही प्रभावशाली रूप में व्याख्यान दिया। जिसका परिणाम यह निकला कि उनकी संस्था की बढ़ती प्रगति को देखकर हम सभी को और विशेष कर उनकी रूची एवं लगन आदि देखकर विशेष कर प्रभावित होना पड़ा। ईश्वर उनके ओर उनकी संस्था के लिए सहायक सिद्ध हो।

भवदीय :
प्रधानाचार्य
आर० एन० भार्गव इन्टर कालिज,
मंसूरी

समस्त विद्यालय

विशेष सूचना

श्रद्धेय प्रधानाचार्य महोदय,

जयभारत !

आपकी सेवा में देश भक्ति एवं नैतिक विचारों से ओत प्रोत अपने प्रकार का प्रथम मासिक 'अस्तित्व' प्रेषित कर रहा हूँ। इस पत्र के विचारों से प्रभावित होकर जिले के ९० प्रतिशत सभी प्रकार के विद्यालयों ने इसे सहयोग देना स्वीकार किया है और वार्षिक शुल्क ६ रुपये भी प्रधान कार्यालय को मनिआर्डर द्वारा भेज दिया है। कृपया आप भी शीघ्र सहयोग प्रदान करके हमें कृतार्थ करें, जिससे प्रतिमास इसकी एक प्रति आपको भेजी जा सके। आपका भेजा हुआ ६ रु० धन देश में नैतिकता और राष्ट्रीय भावनाओं को बल प्रदान करेगा।

धन्यवाद !
भवदीय,
साधूराम वर्मा
सम्पादक अस्तित्व,
बोमन्जी रोड़, पुल दालमन्डी,
सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

TELEGRAMS : STEEL MILL'

OFFICE 3356
RESI. 3677
EACTORY 4930

Saharanpur Iron & Steel Rolling Mills

DEHRADUN ROAD, SAHARANPUR.

हमारे यहाँ सरिया दो सूत से २ इंच तक का व पत्ति, इंग्लैन, माइलड़ मिडियम, थोक और खुर्दा बहुत मुनासिब रेट पर फरोखत किया जाता है।

एक बार आकर हमें मौका दें और लाभ उठायें।

नोटः-हम रामैट्रियल भी बाजार रेट से खरीदते हैं।

मैनेजरः-

रोलिङ्ग मिल्स

देहरादून रोड,

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा में क्रान्ति और कोठारी आयोग

कोठारी कमीशन (१९६४-६६) शिक्षा के सम्पूर्ण पहलुओं पर सुझाव देने वाला अपने ढंग का पहला शिक्षा-आयोग था। और उसने तो दावा किया है कि अगर उसके सुझावों का कार्यान्दवयन किया जाय तो भारत की शिक्षा में क्रान्ति हो जायगी। कमीशन की रिपोर्ट का पहला वाक्य है--'भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है।" और इसी विश्वास के साथ उसने सुझाव दिया है कि देश की कक्षाओं को ठीक कर दिया जाय तो देश का भाग्य पलट जायगा। उसने जो संस्तुतियाँ की हैं, उसे उसने 'शैक्षिक क्रान्ति' ही कहा है (कोठारी कमीशन: १-१६) और अस्था व्यक्त की है कि अगर शिक्षा की राष्ट्रीय-प्रणाली में गुणात्मक और परिमाणात्मक दोनों ही दृष्टियों से किया जाय तो शिक्षा के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक क्रान्ति हो जायगी। कमीशन लिखता है—'हमारी इस रिपोर्ट का उद्देश्य उन कार्यक्रमों को सामने लाना है जो शैक्षिक क्रान्ति कर सकते हैं।" (शिक्षा आयोग: १-१७)। इस क्रान्ति को अमली रूप देने के लिए कमीशन ने निम्नांकित सिफारिशें की हैं:

(१) शिक्षा को लोगों के जीवन की आवश्यकताओं ओर आकांक्षाओं से सम्बन्धित करना चाहिए जिससे वह लोकतांत्रिक एवं समाजवादी समाज के प्रयोजन की पूर्ति कर सके (१-१८)। इसके लिये आयोग ने शिक्षा को उत्पादिता से जोड़ने का सुझाव देते हुए विज्ञान और कार्य-अनुभव को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की, और शिक्षा व्यवसायीकरण की, विशेषकर माध्यमिक स्कूल स्तर पर, संस्तुति की है (१-२२)। उत्पादिता की दृष्टि से ही उसने विश्वविद्यालय स्तर पर कृषि और शिल्प-विज्ञान (टेकनालोजी) की शिक्षा पर अधिक जोर देने का भी सुझाव दिया है (१-३२)।

(२) सबके लिये अच्छी शिक्षा का समान अवसर उपलब्ध होना चाहिये। इसीलिये कमीशन ने लोकशिक्षा की एक समान स्कूल प्रणाली (कामन स्कूल सिस्टम) विकसित करने का सुझाव दिया है जिससे प्रचलित शिक्षा-प्रणाली जिस सामाजिक अलगाव और वर्ग-भेद को बढ़ा रही है उसमे बचा जा सके (१-३५)। अध्याय-९ अनुच्छेद-३७ में तो उसने काफी फीस लेने वाले पब्लिक स्कूलों और लोकनिधि से लगभग निःशुल्क चलने वाले घटिया स्तर के स्कूलों के एक साथ समाज में चलने रहने की स्थिति को अलोकतांत्रिक और समतापूर्ण आदर्श से मेल न खाने वाला बनाया है, और इस स्थिति को दूर करने के लिये आगे चलकर अध्याय १० में 'पड़ोसी स्कूल' की संस्तुति की है संस्तुति की है कि की कोई फीस न ली जाए।

(३) सामाजिक एकता दृढ़तर हो, जिससे वर्गों के बीच बढ़ती हुई खाईं पटे। इस प्रयोजन की सिद्धि के लिये शिक्षा आयोग ने सिफारिश की है कि 'किसी न किसी प्रकार की सामाजिक और राष्ट्रीय सेवा सभी विद्यार्थियों के लिये अनिवार्य बना दी जाय और सभी स्तरों पर वह शिक्षा का एक अभिन्न अंग हो (१-४०)।

(४) शिक्षा और लोकतंत्र दोनों ही दृष्टियों से आवश्यक है कि शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर से उच्चतम स्तर तक शिक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषाएं रहें और राज्यों का शासन प्रादेशिक भाषाओं में ही चले। इसीलिये सारे देश में शिक्षा के लिये एक ही माध्यम पर जोर देना (चाहे वह हिन्दी हो या अंग्रेजी) बुद्धिमानी नहीं होगी। अंग्रेजी अथवा विश्व की दूसरी भाषाओं का अध्ययन छोड़ा न जाय, परन्तु किसी स्तर पर भी वे शिक्षा का माध्यम न रहें। इसीलिये उसने यह भी सिफारिश की है कि विश्वविद्यालय स्तर की उच्च शिक्षा के लिए भी प्रादेशिक भाषाओं में पुस्तकें तैयार की जायें और इसके लिये देर से देर लगभग दस वर्ष का समय लिया जाय (१-५३) अंग्रेजी माध्यम की उसने केवल अखिल भारतीय संस्थाओं के लिये सलाह दी है और वह भी अपवाद रूप से फिलहाल के लिये है (१-५५) अंतर्राष्ट्रीय आदान प्रदान के अध्याय-१ अनुच्छेद-५७ के अन्तर्गत कमीशन ने अंग्रजी को 'पुस्तकालय भाषा' के रूप में, सबसे महत्वपूर्ण माध्यम मानकर उसकी पढ़ायी को जारी रखने की संस्तुति की है। उसे कोई क्रान्तिकारी भी शायद ही अस्वीकार करे।

(५) शिक्षा संस्थाओं में नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा प्रारम्भ की जाय और इस प्रकार की शिक्षा को स्कूलों कार्यक्रमों का

क्रमशः

(साभार भूदानयज्ञ अगस्त १९७१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना निलाम

ठेका वसूली रजिस्ट्रेशन शुल्क रिक्शा तांगा, बौगी, गाड़ी तथा चालक लाईसेन्स शुल्क परिषद्, सहारनपुर द्वारा।

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि जिला परिषद्, सहारनपुर की ओर से जिले के ग्रामीण क्षेत्र में किराये पर चलने वाली रिक्शा, तांगा, बौगी, गाड़ी और चालकों की लाईसेन्स शुल्क वसूली का ठेका दिनांक १८ अगस्त, १९७१ ई० को १-३० बजे कार्यालय जिला परिषद् सहारनपुर में निलाम किया जायेगा। अतः जो सज्जन ठेका लेना चाहे वह निश्चित तिथि व समय पर उपस्थित होकर बोली दें।

शरायत निलाम

१-यह ठेका जिला परिषद् सहारनपुर के उपनियमों के अन्तर्गत इस वर्ष के लिये तांगा रिक्शा, बोगी और गाड़ी के पंजीकरण शुल्क की वसूली का होगा। नये रजिस्ट्रेशन पर १२-०० प्रति तांगा, बोगी या गाड़ी, रिक्शा और पुराने रजिस्ट्रेशन के रया करने पर १०-०० रु० प्रति तांगा, रिक्शा, बोगी या गाड़ी है। चालक लाइसेन्स ओर बैज के लिये २-०० रु० प्रति चालक शुल्क भी वसूल करके ठेकेदार ही अपनी कीमत से परिषद् द्वारा लाइसेन्स छपवाकर ओर बैज बनवाकर देगा।

२-ठेके को अवधि १-४-७१ से ३१-३-७२ तक (आर्थिक वर्ष) की होगी।

३-प्रत्येक बोली बोलने वाले को नीलाम आरम्भ होने से पूर्व अकन १०००रु० धरोहर धन के रूप में जमा करने होंगे जो बोली समाप्त होने के पश्चात् वापिस कर दिये जायेंगे परन्तु जिस व्यक्ति के नाम ठेका छोड़ा जायेगा उसके अग्रिम धन में यह रकम मुजरा करदी जायेगी।

४-ठेके की रकम एक चौथाई भाग बोली समाप्त होने के तुरन्त बाद ही जमा करना होगा। यह धन ठेके की अन्तिम किस्त में मुजरा होगा। यह अग्रिम धन जमा न होने की दशा में धरोहर धन अंकन १०००-०० रु० जब्त करके ठेका उसी समय दौबारा नीलाम कर दिया जायेगा।

५-ठेकेदार को ठेके की स्वीकृति सूचना मिलने के तीन दिन के भीतर अनुबन्ध पत्र लिखना होगा जिसका कुल व्यय ठेकेदार को वहन करना होगा। ठेके की प्रथम किस्त का धन (यानी ठेके की रकम का एक चौथाई भाग) प्रत्येक दशा में अनुबन्ध पत्र लिखने से पूर्व जमा करना होगा। इस प्रकार से ठेकेदार को कुल रकम का आधा भाग तथा प्रति भूति का धन अंकन १०००-०० रुपये मुख्य अधिकारी जिला परिषद् के पक्ष में जमा करना होगा। बाकी दो किस्ते क्रमश. दिनांक १-१०-७१ व १-१२-७१ को जमा करनी होगी।

६-अन्य शरायत नीलाम व अनुबन्ध पत्र की शर्तें कार्यालय जिला परिषद् सहारनपुर में कार्यालय काल में किसी भी समय देखी जा सकती हैं।

जसवन्तसिंह
कार्य अधिकारी जिला परिषद
सहारनपुर

उत्तर-प्रदेश के पश्चिमी जिलों में गुरदासपुर बेधक का प्रकोप

सर्व प्रथम यह क्रीड़ा पंजाब में गुरदास पुर स्थान पर पाया गया। इसीलिये इसका नाम गुरदास पुर बेधक पड़ा। वहाँ से इस का आक्रमण व धीरे धीरे उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम इसका प्रकोप देहरादून में हुआ इसको देहरा बोरर के नाम से भी पुकारा जाता है अब इसका प्रकोप निरन्तर बढ़ता जा रहा है। यह अधिकतर शीघ्र पकने वाली जातियों में पाया जाता है। जैसे १३३६ सी० ओ० ५६१ ११५८ आदि यह कीड़ा बहुत ही हानिकारक है। यह तीन अवस्था में पाया जाता है।

१-पहली पीढ़ी-यह अवस्था जून के आखरी सप्ताह से आरम्भ होकर जोलाई के आखरी सप्ताह तक चलती है।

-दुसरी पीढ़ी-यह अवस्था जोलाई के आखरी सप्ताह से शुरु होकर अगस्त के आखरी सप्ताह तक चलती है।

३-तीसरी पीढ़ी-यह अवस्था अगस्त के आखरी हप्ते से शुरु होकर मध्य जुन तक चलती है।

इस तीसरी अवस्था में यह अपना जीवन सुप्तावस्था में व्यतीत करता है। इन तीनों पीढ़ियों में अधिकतर हानि दुसरी पीढ़ी से होती है। तीनों पीढ़ियों को मिलाकर गन्ने में ५० प्रतिशत हानि पहुँचा सकती है।

पहचान-इसके अंडे पती की ऊपरी सतह पर पाये जाते है। यही अन्डों में से छोटी छोटी सुन्डी निकल कर इसी गन्ने में तीस चालीस की संख्या में घुस जाते हैं। इस अवस्था को गिरगेरियस अवस्था कहते हैं। इस अवस्था में लगभग दस दिन रहने के बाद यह सुन्डी अलग २ गन्नों पर बिखर जाती है इस अवस्था को सोलटरी स्टेज कहते हैं। शुरु में गन्ना मुरझाया हुआ दिखाई देता है। तथा गन्ने की बढ़वार रूक जाती है। तथा गन्ने में शाखायें फुटनी शुरु हो जाती है।

रोकथाम-इसकी रोकथाम के लिये यान्त्रिक विधि ही सबसे अच्छी है। इसमें जोलाई और अगस्त के महीने में ग्रसित गन्नों को १०-१५ दिनों के अन्तर पर खेतों से निकाल देना चाहिए। चाहिए। निकाल कर जला देना चाहिए। जिससे इसके कीड़े मर जाते हैं। या जमीन में दाब देने चाहिये।

रसायनिक रोकथाम का प्रयोग चल रहा है। अभी तक कोई सन्तोषजनक सफलता नहीं मिली है। लेकिन एलडिन का छिड़काव जोलाई अगस्त में करने से इसका प्रकोप लगभग ५० प्रतिशत कमी हो जाती है।

गन्ना बिकास परिषद्,
सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृप्या नगर को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने हेतु
नगरपालिका को सहयोग प्रदान करें !

नगर को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने हेतु नगरपालिका, महारनपुर ने विशेष अभियान आरम्भ किया है। प्रत्येक क्षेत्र में स्वास्थ्य निरीक्षक निम्नलिखित स्थानों पर उनके सामने दिये गये समय पर उपस्थित रहेंगे जनता से निवेदन है कि सफाई से सम्बन्धित प्रत्येक आपत्ति इन्हें नोट करा दें, ताकि अविलम्ब आपत्ति दूर की जा सकें।

यह भी सुविधा उपलब्ध होगी की यदि आपके समीप का सार्वजनिक नल अथवा बिजली का बल्ब है या खराब हो गया है या नाली का ढक्कन टूट गया हैं तो उक्त कर्मचारियों को नोट कराया जा सकता है।

★ कृप्या कूड़ा करकट निश्चित स्थान पर ही डालिये।
★ अपने बच्चों को नगर पालिका की पाठशालाओं में भेजिये।
★ लाउडस्पीकर पालिका की स्वीकृति के बगैर न बजायें।

स्वास्थय निरीक्षकों के क्षेत्र में ही उनसे मिलने का स्थान

समय—प्रातः ८ से ८–३० बजे के मध्य

	श्री सी० बी नथानी	श्री बी० के० जैन	श्री जी० के० सक्सेना	श्री आर० एस० गुप्ता
	फाउन्टैन	खालापार	खान आलमपुरा	ढोली खाल
सोमवार	बड़तलायादगार	चौकी नवाबगंज	जनकपुरी निकट डा० पी० के सिंह कोठी	मार्डन बैकरी
मंगलवार	चौक	,,		,,
बुधवार	चौक फव्वारा	नुमायश कैम्प	डा० देमराज दुकान	चौक बंजारन
वृहस्पतिवार		चकरोता रोड़ शापिंग	नुमायश कैम्प	
शुक्रवार	नखासा बाजार	सरगोधा डेरी	बेरी बाग	नेहरू मार्किट
शनिवार	गली चौधरियान	के पास पुल दाल मंडी	चौक	का चौराहा
	श्री एम० पी० जैन	श्री एस० डी० गुप्ता	श्री आर० के० गोयल	श्री वी० पी० गुप्ता
	पुरानी मण्डी	रानी बाजार	खलासी लाईन	सीविल लाईन
सोमवार	चौक आर्य कन्या पाठशाला	रायवाला चौक	लेबर कालोनी वाटर वर्क्स के पास	चौक घन्टाघर पास गांधी आश्रम
मंगलवार				
बुधवार	कारखाना	गालिब स्कूल	ठा० अत्तर सिंह सदस्य को चक्की के पास	कोर्ट रोड़ सामने सीविल कोर्ट
वृहस्पतिवार	बाबू बशीर साहब	चौक		
शुक्रवार	डा० सत्यपाल की दुकान निकट चौकी शहबहलोल	चिलकाना बस स्टैण्ड	अम्बाला रोड़ खुरजा मिल के सामने	चौक हकीकत नगर मन्दिर

नगर निवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाओं सहित।

लतीफुर्रहमान
अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका सहारनपुर

मंगल किरण जैन
(अध्यक्ष)
नगर पालिका सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्र० १–ऐसी कौन सी वस्तु है जिसे मनुष्य ले तो सकता है लेकिन दे नहीं सकता ।

–महेन्द्रपाल ग्रोवर

उ०–कोई भी गाढ़ा स्वार्थ हो सकता है ।

प्र० २–संसार में सबसे अच्छी और सबसे बुरी वस्तु कौन सी है ।

–सर्वेश किशन माथुर

उ०–(अ) ईश्वर को प्राप्त करना (ब) ईश्वर को प्राप्त न करना सबसे बुरी वस्तु है ।

प्र० ३–जिन्दगी का रूप क्या है ?

–मोहनलाल

उ०–दूसरों में अपना स्वरूप देखना ।

प्र० ४–हिन्दू समाज में जब नारी के लिए पति ही ईश्वर है तो वह मन्दिर क्यों जाती है ?

उ०–क्योंकि प्रथम पति का अस्तित्व स्थापित रहे । क्योंकि ईश्वर भक्ति से ही उसको पतिवृत धर्म पालन करने की प्रेरणा मिलती है ।

प्र० ५–बुजुर्ग लोग कहते हैं कि भगवान की मूर्ति के खिलाफ झाड़ी तक का एक पत्ता भी नहीं हिलता तो फिर पाप को पाप महा पाप को महा पाप क्यों कहा जाता है । जबकि कराने वाला स्वयं भगवान होता है ।

–रामसिंह त्यागी

उ०–क्योंकि भगवान ने गीता में कहा है कि तुम कर्म करो, कर्म फल की आशा मत करो । इसलिए सांसारिक जीवन में पाप-पुण्य करते रहना स्वाभाविक है । इसी से पाप-महापाप की कड़ी तैयार होती है ।

प्र० ६–सत्य और असत्य को नापने का क्या पैमाना है ?

–चन्द्रपालसिंह बी. एस. सी.

उ०–हमारे शास्त्र और हमारी आत्मा ही सत्य और असत्य को नापने की विशेष कसौटी है ।

प्र० ७–सम्पादक महोदय मैं कहानियां और रोचक कलाएं पढ़ता हूँ तो तुरन्त याद हो जाती है और उन्हीं को निरन्तर पढ़ने को जी चाहता है । लेकिन कोर्स की किताबें पढ़ने को मन नहीं करता ?

–अरुण अग्रवाल सहारनपुर

उ०–प्रिय अग्रवाल जी आशा है कि आप अपनी कोर्स की किताबों के अध्ययन में अति रुचि लेकर गाढ़ा अध्ययन करने में दीवाने बनने का संकल्प लेंगे । तभी आपकी रुचि रोचक कला कृति कहानियों से हट सकेगी ।

प्र० ८–सम्पादक जी जब मनुष्य समाज की भलाई के लिए कुछ अच्छे काम करता है तो उस पर अनेकों दोष थोपे जाते हैं । ऐसा क्यों ?

–अरुण अग्रवाल सहारनपुर

उ०–प्रिय अग्रवाल आज तक अपने देश में जितने भी महान पुरुष बने हैं उन्हें समाज ने पहले अपमानित किया और फिर सम्मानित जैसे ईसा, गान्धी, राम आदि ?

प्र० ९–उच्च शिक्षित वर्ग असन्तुष्ट एवं निराश क्यों है ?

–चन्द्रपालसिंह करतार

उ०–भारतीय शिक्षा प्रणाली में विशेष दोष का होना ही शिक्षित वर्ग का असन्तुष्ट एवं निराश होना है ।

प्र० १०–धर्म और अधर्म क्या हैं ?

अरुण अग्रवाल सहारनपुर

उ०–उत्थान का मार्ग धर्म है, और जो नर से नारायणत्व की ओर ले जाये । और जो मार्ग पतन की ओर ले जाता है वह अधर्म है ।

प्र० ११–जो धन आपके पास आता है वह कहाँ जाता है ?

रुपिन्द्रपाल सिंह सहारनपुर

उ०–प्रिय सिंह अभी तुम हमारे कार्य से माध्मे प्राप्त धन से अनभिज्ञ हो, निकट का सम्पर्क स्थापित करके ठीक २ समझो ।

प्र० १२–आजकल विद्यार्थियों का चरित्र क्यों गिरता जा रहा है ।

सुरेन्द्र कुल श्रेष्ठ, सहारनपुर

उ०–क्योंकि विद्यार्थी अपने को ठीक ठीक पहचानने में भूल करता है । दृष्टि अपनी ओर न रखकर दूसरों की ओर ही रखता है ।

प्र० १३–भारत का विदेशों में सम्मान क्यों होता जा रहा है ?

अनिल कुमार सहारनपुर (विशेष सहयोगी)

उ०–प्रिय कुमार जी भारत तो पूर्व से ही विदेशों का शिरोमणी था आज कोई नई बात नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी सहारनपुर इलैक्ट्रिक सप्लाई कं० लि०

पंजीकृत कार्यालय : रामनगर

सहारनपुर

स्वतन्त्र दिवस के उपलक्ष में अपने समस्त उपभोक्ताओं को शुभ कामना सन्देश प्रस्तुत करती है।

कम्पनी के उपभोक्ताओं को परार्मश दिया जाता है कि वे अपने यहाँ लगे हुवे मीटर, मीटर टरमीनल, कटआउट इत्यादि की सीले न तोड़े। यदि सीले किसी कारण वश कम्पनी के कर्मचारी तोड़ने के उपरान्त न लगा सके तो इसकी यथा लिखित सूचना कम्पनी को तुरन्त दें।

इसके अतिरिक्त यदि किसी उपभोक्ता को कोई शिकायत कम्पनी के कर्मचारी अथवा कार्य के सम्बन्ध में हो तो वह निम्न हस्ताक्षर कर्त्ता से सम्पर्क स्थापित करें।

यदि किसी भी सज्जन को कोई शिकायत होगी तो पहले उसकी पूरी जाँच की जायेगी और उचित कार्यवाही की जायेगी।

कृत दी सहारनपुर इलैक्ट्रिक सप्लाई कं० लि०

हरिशचन्द्र जैन
चीफ एकाउन्टेन्ट

वी० के० जैन
रेजिडेन्ट इन्जीनियर

प्लाटस बिकाऊ

न्यू जवाहर पार्क बेहट रोड,

सहारनपुर पर

१—यह कालौनी टाऊन प्लानर उ० प्र० से स्वीकृत है।

२—जमीन की सतह सड़क से ऊँची है।

३—अपने प्लाट शीघ्र बुक करावें।

मिलने का पता:—

गणेशीलाल बनवारीलाल

खुमरान पुल, सहारनपुर

१५ अगस्त के पावन अवसर पर हम अपने समस्त संरक्षकों का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

मै० मोलढ़मल जैन एन्ड सन्स

मंगौलर वाले

हर प्रकार के लोहे व बिल्डिंग मैटीरियल व हर प्रकार की सीमेंट की चादरों के उचित मूल्यों के लिए सिविल लाइन रुड़की व ६२ मंडी मंगलौर में पधारें।

सम्बन्धित फर्म:—

जैना एस्बैस्टो सीमेन्ट एजैन्सी

रुड़की (उ० प्र०)

एस० आर० वर्मा के लिए अशोककुमार शर्मा द्वारा अशोक प्रिंटिंग प्रेस, सहारनपुर में मुद्रित, तथा प्रधान कार्यालय बोमनजी रोड, पुल दाल मण्डी, सहारनपुर से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम० सं० नाम व पता

एल० रजि० नं० १५५५

रजि० नं० २०२१६/७०

राष्ट्रीयता, नैतिकता, आध्यात्मवाद एवं विशुद्ध समाजवादी विचारधारा का दिशा बोधक !

अरिदमन

सम्पादक : एस० आर० वर्मा (भारतीय) मासिक अङ्क सितम्बर (१९७१), संयुक्त सम्पादक : के० पी० सिंह

स्वयं शुद्धि

ले० राजेन्द्र कुमार शर्मा बी० एस० सी० (सह सम्पादक)

महान् विभूतियां हमारे देश में सदैव से उत्पन्न होती आई हैं। ये हो सकता है कि कभी उनकी अधिकता हो गई हो और कभी न्यूनता। ऐसा क्यों हुआ कि महान् विभूतियों की हार भी समय के अनुसार बदलती आई। इसके कई कारण हो सकते हैं। या तो हमारे समाज ने उन्हें श्रद्धेय न माना हो या फिर वे अपने आप को श्रद्धेय बनाने में असमर्थ प्रमाणित हुए हों। जब भी मनुष्य अपने भावी जीवन के लिए कोई पद चुनता है तो उस पद प्राप्ति के लिए अनेकों उत्तर दायित्वों को संम्भालना होता है। प्रथम बात तो यही है कि यदि पद-के मार्ग में समाज द्वारा कोई वाद खडा होता है तो उसका आंकन करने के लिए उसमें आत्म-बल आत्म-विश्वास होना आवश्यक है। आत्म बल और आत्म विश्वास सुसंस्कृत मनुष्य में ही मिल सकते हैं। ऐसा मनुष्य पूर्ण रूपेण शुद्ध होना चाहिए। अल्प माया में होने के कारण न तो उसे आम जनता के साथ रखा जा सकता और न ही उसे वर्ग विशेष में विराजित करके सम्मानित किया जा सकता।

वास्तव में यदि साहित्यिक दृष्टि को ध्यान में रक्खा जाय तो भी हम किसी से कम नहीं, परन्तु वह हमारे लिए व्यर्थ है क्योंकि हम उनका अध्ययन नहीं कर सकते अध्ययन न करने का भी कारण है कि हमारे ऊपर केवल मन शासन करता हैं, आत्मा तो केवल एक सेविका रुप में रह गई है। मन सदैव यह चाहता है कि कम से कम कष्ट उठाकर अधिक से अधिक आनन्द प्राप्त किया जाए। इसीलिए हमें ऐसी कविताओं की गद्य खण्डों की, उपन्यासों की, कहानियों और नाटकों की आवश्यकता होती है जो केवल पढने मात्र के लिए हों, अध्ययन के लिए नही। स्वाध्याय की भूख हमारी इसी सीमा तक समाप्त हो जाती है।

अध्ययन के बिना ज्ञान निरी असम्भव सी प्रतीत होती है। ज्ञान रहित मनुष्य वाद विवाद भली प्रकार नहीं कर सकता। यदि करता है तो अपनी दुर्बलता छुपाने के लिए उसे शीघ्र ही "तू तू, मैं-मैं" पर उतर आना पड़ता है जो उसके लिए छुटकारा पाने का

प्रधान कार्यालय : बोमनजी रोड़, पुल दालमन्डी, सहारनपुर, उपकार्यालय, निकट राजू प्रिंटर्स, पटरी पांव धोई, किशनपुरा, सहारनपुर, (उत्तर प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोत्तम उपाय है । यह तथा 'किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं, अपितु सभी इससे ग्रस्त हैं । इसका कारण यही है कि हम सुसंस्कृत नहीं हैं, हमारे संस्कार ठीक नहीं हैं । हमारे मन में ये बात जागृत ही नहीं होती कि अध्ययन किया जाए क्योंकि मन के अंकुश के अनुगामी जो ठहरे । यदि भाग्यवश किसी ने सोचा भी तो उसका वातावरण दूषित कर दिया जाता है और अन्त में उसे यही कहने को मिलता है कि काश हम उस आवेश में प्रवाहित हो जावें तो आध्यात्मिकता में काफी ऊंचा स्थान प्राप्त कर लेते । इस प्रकार कई एक महा-विभूतियों का अन्त हो जाता है ।

यह कहना भी उचित न होगा कि सब दोष नवीन उत्पन्न सदाचारी के वाता-वरण का है । समाज भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि इसी समाज ने तो हमारे अतीत को श्रृंगारित किया है । यही समाज हमारी गौरवान्वित झलकियों का जन्म दाता है । दोषी तो स्वयं कर्त्ता भी है । वह मिट्टी का माधो तो नहीं कि जैसे चाहा, ऐंठ दिया । वह भी ईश्वर की सृष्टि है बुद्धि जीव है । फिर से यही कहना पड़ता है कि वह सुसंस्कृत नहीं है । उसके संस्कार दूषित हैं । यह बात नहीं कि हमें इसका आभास नही होता ।

हमारे संस्कार कैसे हैं ? हम मानव जीवन-को सार्थक कर रहे हैं अथवा नहीं । मनुष्यों द्वारा बनाए गये कर्म नियमों का हमें पग-पग पर अनुभव होता रहता है किन्तु उसको प्रकट करना अथवा उसके बारे में कुछ कहना आत्म बल के ऊपर आधारित होता है ।

सामान्य रूप से दैनिक कार्यों व्यवहारों में हमें आत्मबल की परख होती रहती है, फिर भी उन तथ्यों को हम स्वयं से छुपाने की चेष्टा करते हैं । "ऐसे तो चलता ही है" कहकर टाल देते हैं । इसका कारण यही है कि हम स्वयं भी स्वयं नहीं हैं । इसीलिए तो कर्त्तव्य परायण नहीं हो सके । "स्वयं" शब्द को सार्थक तभी किया जा सकता है जबकि शुद्धिकरण की झलक उस पर स्पष्टतया पड़ रही हो । शुद्धि किसकी हो ? हम प्रायः यह भूल जाते हैं अथवा "परिस्थिति वश" अज्ञान बने रहते हैं कि ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ श्रम परिणति मानव है और मानव का अस्तित्व आत्मा के अस्तित्व और विकास पर ही आधारित होता है । स्पष्ट है कि बिना आध्यात्मिक विकाश के "स्वयं" का कुछ भी तात्पर्य नहीं है । अत: स्वय को तभी शुद्ध माना जा सकता है जबकि आत्मा-शुद्ध हो ।

उपरोक्त पंक्तियों में "परिस्थिति वश" शब्द आया है । वास्तविकता तो यह है कि "परिस्थिति" नामक शब्द का आविर्भाव केवल उन्हीं मनुष्यों के लिये हुआ है जो आत्मा को मन की सेविका के रूप में भी अंगीकार नहीं कर सकते । वस्तुतः आत्मा तो धैर्य का आगार होती है । मन का अनु-सरण करने वाला व्यक्ति भावुक होता है तथा आत्मा का अनुगामी धैर्य युक्त होता है । वह परिस्थितियों का कायल नहीं होता इससे इन्कार भी नहीं किया जा सकता है कि "परिस्थिति" अत्यधिक नगण्य वस्तु है परन्तु तथ्य है कि स्वयं शुद्ध पुरुष इसको ध्यान में रखते हुए धैर्य के साथ जीवन-नैया

क्रमश :—

सम्पादकीय

"युवा विवेचन"

किसी भी राष्ट्र का सर्वतोमुखी उत्थान केवल युवा वर्ग से ही सम्भव हो सकता है । युवा वर्ग को भली प्रकार तभी समझा जा सकता है जबकि 'युवा' शब्द की संज्ञा से परिचित हो जाएं ।

युवा वही होता है जो सांसारिक अथवा सामाजिक अड़चनों को एक झंझट के रूप में देखकर अपने आपको हतभागी अथवा हताश न समझ ले बल्कि वह उन्हें चेतावनी के रूप में स्वीकार करे ।

उपरोक्त चेतावनी से हीं 'युवा-असन्तोष' की उत्पत्ति होती है । यदि किसी भी वर्ग के समक्ष कोई चेतावनी होती है तो समझो कि वह असन्तुष्ट हैं । दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि अवश्य ही कोई परिवर्तन हुआ चाहता है अर्थात् असन्तोष को दूर करने का अवश्य-मेव कोई सुख-वर्धक समाधान सामने आने वाला है, क्योंकि कोई भी मनुष्य अधिक समय के लिए स्वयं को दुखी देखना नहीं चाहता जो कि असन्तोष का ही दूसरा रूप है ।

सुन्दरतम परिवर्तन के लिए असन्तोष की उत्पत्ति आवश्यक है । यह भी निर्विवाद

हमारा मनोरथ भारत को अच्छा बनाना नहीं है हम स्वयं अच्छे बनें यह हमारा मनोरथ है ।
(गाँधी जी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य है कि इस कार्य में जितना अधिक सहयोग युवा वर्ग का होता है उतना अन्य का नहीं। मनुष्यों ने अपने जीवन को आयु के अनुसार ही वर्गीकृत कर लिया है। 'युवावस्था' बाद की आयु के दौरान मनुष्य भाषणादि कर सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि तब कथनात्मक अथवा उपदेशात्मक कार्य प्रयोगात्मक कार्य से कहीं अधिक होता है, परन्तु युवावस्था में प्रयोगात्मक कार्य की अधिकता होती है। सर्व-योगेन यह कहा जा सकता है कि युवावस्था में किसी वाद-विशेष का ही नहीं, अपितु सभी विभागों का निर्वाह सन्तोषजनक होता है।

उपरोक्त तथ्य उस स्थिति में अपभ्रंश सा लगने लगता है जबकि हम अपनी वास्तविकता को खो बैठते हैं या यों कह लीजिए कि हम उसका सामना करना नहीं चाहते। इसके भी कई कारण हो सकते हैं एक तो यही कि हमारा अपना दैनिक कार्यक्रम इस प्रकार से परिवर्तित होता रहता है कि उसमें वास्तविकता को परखने की आवश्यकता ही नहीं होती।

युवा वर्ग की एक महत्त्वपूर्ण शाखा है—'विद्यार्थी वर्ग'। इस वर्ग में अनेकों कार्यकर्त्ता ऐसे मिल जाएंगे जिन्होंने कुःसाधनों से स्वार्थसिद्धि तो की है परन्तु विषयात्मक परिभाषाओं से तो अनभिज्ञ होते हैं।

दूसरों की अथवा अपने पारिवारिक अंगों की दृष्टि में तो हम पूर्ण-रूपेण प्राज्ञ बने रहते हैं किन्तु कभी अपने गिरेबान में झांककर देखा है कि क्या वास्तव में ही हम उस सम्मान के अधिकारी हैं जो दूसरों के द्वारा हमें दिया जाता है। सच्चे मायनों में अधिकतर उत्तर नकारात्मक ही होगा। यह सम्मान, प्रतिष्ठा, सब कुछ अप्रत्यक्ष प्रपंचों का ही फल होता है।

विद्यालयों में समितियां बनती हैं, संगठन होते हैं, अनेक संस्थाओं का भी श्रीगणेश होता है, इन सब के अध्यक्ष भी विद्यार्थी ही चुने जाते हैं, और इन सबके बदले में 'विद्यार्थी वर्ग' जो दूसरों को देता है वह बड़ा ही घृणेय है। इतने दिन हमारी शिक्षा प्रणाली को चलते हुए हो गए, क्या सुधार किए हैं हमने इसमें ? क्या हमारी शिक्षा-प्रणाली पूर्ण-रूपेण सबल है और रुचि-पूर्ण है ? यदि नहीं तो क्यों हमारे विद्यार्थियों ने अपना उत्तरदायित्व समझते हुए स्वयं को निष्क्रिय बनाए रखा, उसने क्यों कोई प्रयोगात्मक कदम नहीं उठाया ? वह क्यों ऐसी शिक्षा-प्रणाली के मध्य पिसता रहा जिसके अवलम्ब से वह लक्ष्य हीन हो जाता है ? इसका उत्तर केवल एक ही है और वह कटु सत्य है कि विद्यार्थी-वर्ग स्वयं अपना मार्ग प्रशस्त नहीं कर सका। उसके द्वारा निर्मित मार्ग अस्थायी सिद्ध हुआ बिल्कुल रेत की दीवार के सदृश। उसे सदैव किसी अनुभवी महापुरुष के सरंक्षण की आवश्यकता पड़ती रही। इसका कारण यह है कि वह विद्यालये-स्थितः समितियों का गठन तो कर सकता है, अध्यक्ष पद को सुशोभित कर सकता है, केवल अठ्ठारह-उन्नीस वर्षीय चंचलता का आवरण ओढ़कर उच्छृंखलता का जामा पहनकर। वह नहीं चाहता कि मैं सच्चे पुरुष के दायित्वों को भली प्रकार समझ सकूं, राष्ट्र-धर्म की महानता को वह स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि तथानुष्ठिते उसे अपने लड़कपन के अधिकार छिनते हुए प्रतीत होते हैं जो कि बिल्कुल खोखले होते हैं। राष्ट्र-धर्म की तुलना में उनका कोई भी मूल्य नहीं रह जाता। प्रत्येक नागरिक के लिए राष्ट्र धर्म ही सबसे मुख्य होता है।

विद्यार्थी जीवन अध्ययन के लिए होता है। भावी उत्तरदायी नागरिक बनने के लिए हमें अध्ययन से बहुत कुछ सीखना चाहिए। जब हम उसके प्रकाण्ड पण्डित हो जाएं तो तब उसे क्रियात्मक रूप भी दिया जा सकता है। हिंसात्मक अथवा अक्रियात्मक कार्यों से राष्ट्र का हित नहीं बल्कि अहित होता है। ऐसी अवस्था में हम निश्चिन्त रूप से अद्वितीय शक्ति को गन्दे पानी की तरह बहा रहे हैं। हमें निर्माणात्मक कदम उठाने चाहिए जिससे राष्ट्र धर्म के प्रति भी उत्तरदायित्वों का निर्वाह होता चले। विद्यार्थी-वर्ग के साथ-साथ युवा वर्ग का भी सर ऊंचा उठ सके। राष्ट्र धर्म इसीलिए महान् माना जाता है कि इसमें कई जातियों, कई सम्प्रदायों, तथा कई वर्गों का समावेश होते हुए भी यह अखिल होता है। इसका अस्तित्व इसकी विशालता से ही है। मनुष्य भी तभी महान हो सकता है जब कि वह संकीर्णता से विरक्त होकर विशालता की ओर अग्रसर होता है अर्थात् राष्ट्र धर्म का पालन करता है। युवा-वर्ग का भी यह परम कर्त्तव्य है।

साथ ही साथ मेरी उस 'अध्यापक वर्ग से भी प्रार्थना है कि वे युवकों के लिए जो भारी परिश्रम करते हैं और कुछ समय पश्चात् चार दिवारी इमारत से डिग्री सुशोभित करते हुए छात्रों को विदाई देते हैं, अच्छा हो कि 'डिग्री से

अपने को पहचानने के लिये मनुष्य को अपने से बाहर निकलकर तटस्थ बनकर अपने को देखना है। **(गांधी जी)**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व वे युवकों को 'डाइरेक्शन' प्रदान करें, शिक्षा से पहले दीक्षा दें जिससे कि भारत समृद्धशाली आधार पर संसार के सम्मुख अपना बिगुल बजा सके। और दिन प्रति दिन लुप्त होती हुई अपनी संस्कृति को पुनः जीवित कर सके।

'देश-भक्त-युवक-समाज' ने अपने लगभग तीन वर्षों के समय में युवा वर्ग के लिए जो 'बीस-सूत्री कार्य-क्रम' तैयार किया है उसके आधार पर समूचे भारत में वैचारिक क्रान्ति एवं क्रियात्मक क्रान्ति का आविर्भाव हो सकेगा। आशा है युवा-वर्ग इस मैदान में तन-मन-धन से युक्त होकर पदार्पण करके संस्था को अखिल भारतीय स्तर की ओर अग्रसर करने में अपने जीवन का बहुमूल्य भाग प्रदान कर सकेगा। आशा और विश्वास-युक्त 'देश भक्त-युवक समाज'।

—::—

देश भक्त युवक समाज की विशेष बैठक सम्पन्न !

दिनांक १५ अगस्त १९७१ को सहारनपुर में एक विशेष गोष्ठी गांधी पार्क में स्थित बापू जी की प्रतिमा के चबूतरे पर सम्पन्न हुई।

गोष्ठी में भाग लेने वाले नवयुवक, पत्रकार, बहिनें, शिशु एवं व्यक्तियों की संख्या लगभग १०० थी। संस्था तथा सामाजिक विकास हेतु कई एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से इस सभा में पारित किये गये। अध्यक्ष-पद पर जिले के वरिष्ठ व्यक्ति एवं उच्च समाज सेवक श्री बलराम जी भाई आसीन हुए। सभा में भाषण इत्यादि कार्य क्रम में भाग लेने वालों की सूचि इस प्रकार है:—

१—श्री नरेन्द्र सिंह यादव अध्यक्ष (संस्था)
२—श्री साधूराम वर्मा संस्थापक, मंत्री
३—डा० जयगोपाल भूतपूर्व सदस्य विधान सभा
४—बहन श्रीमती सरला देवी
५—श्री गंगाराम बाल्मीकि
६—श्री मोहन सिंह सह सम्पादक
७—श्री बलराम जी भाई

वैसे तो सभी महानुभावों ने कई एक तथ्यों को प्रकाश में लाने का प्रयत्न किया।

सबसे आकर्षक बिन्दु रहा युवा वर्ग के असन्तोष का। विद्यार्थी वर्ग की लक्ष्य हीनता के विषय में भी ध्यान आकृष्ट कराया गया। ऐसी क्या परिस्थितियाँ हैं जो हमारे विद्यार्थी को हिंसात्मक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। युवा-वर्ग अथवा विद्यार्थी वर्ग को इस मार्ग से च्युत करने के लिए किस प्रकार के निर्देशन की आवश्यकता होगी यह सब बातें विचारणीय हैं

इस बात पर भी बल दिया गया कि संस्था के कार्य कर्ता जिले भर में घूमकर विशेष सदस्यता अभियान चलाएं एवं ११ व १२ जनवरी १९७२ को दो दिवसीय जिला स्तरीय सम्मेलन करने का भी निश्चय किया गया।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए भाई बलराम जी के कहने का तात्पर्य था कि जब 'भ्रष्टाचार अधिक बढ़ जाता है तो वह शिष्टाचार का रूप ले लेता है। अतः हमें तुच्छ आदतों जैसे नशाबाजी, धूम्र पान आदि को किंचित् भी प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए ताकि भ्रष्टाचार की उत्पत्ति न हो जो वह शिष्टाचार में बदल सके। आधुनिक शिक्षा में जो दोष हैं उन्होंने उन सबको भी प्रकाशोन्मुख किया।

संस्थापक के रूप में श्री वर्मा जी ने इस बात पर बल दिया कि हम सब सहयोगी होते हुए अपने कर्म क्षेत्र के द्वारा युवा वर्ग को एक नया मोड़ देने का प्रयत्न करेंगे।

संस्था के अध्यक्ष यादव साहब ने अपने ओजस्वी भाषण के द्वारा तथ्य प्रस्तुत किया कि 'नौजवान कथनी की अपेक्षा करनी पर अधिक विश्वास रखता है। उसके उत्साह की कोई सीमा नहीं होती। वह अपने आपको कार्यरत देखना चाहता है। इसीलिए उसकी आवश्यकता पूरी की जानी चाहिए अर्थात् उसे कोई ठोस काम सौंपा जाए।

अन्त में सभी ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर राष्ट्रीय गान का अनुसरण किया तथा देश-प्रेम-पूर्ण आह्वान किए। जैसे ही सभा विसर्जित हुई लगभग ५० नवयुवक श्री यादव जी तथा वर्मा जी के साथ चले और वीनस टाकिज पर लगे हुए एक अश्लील चित्र को हटवाने के लिए वहाँ के मैनेजर साहब से निवेदन किया। मैनेजर ने वैसा ही करने के लिए नम्रता पूर्वक विश्वास दिलाया।

जिस प्रकार रात्रि तारागणों को प्रकाश देती है उसी प्रकार संकट भी मनुष्य को प्रकाश देता है।
—अज्ञात

बिना विचारे एक भी बात न बोलना एक भी शब्द न निकालना एक भी काम न करना।
(गाँधी जी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीने की कला

ले०—अनिलकुमार एम० एस० सी० (पूर्वार्द्ध) जे. वी. जैन कालेज, सहारनपुर

क्या आप चिन्ता से पीड़ित हैं ?

जी हाँ । यह प्रश्न आपसे ही सम्बन्धित है । यदि आपका उत्तर हां में हो तो आप आज से ही चिन्ता छोड़ दीजिये क्योंकि चिन्ता चिता के समान है । चिन्ता और चिता में अन्तर बताते हुए एक कवि कहता है कि चिता दहत निर्जीव को चिन्ता जीव समेत । चिता की अग्नि तो मृत व्यक्ति को ही जलाती है परन्तु चिन्ता उस अग्नि के समान है जो जीवित व्यक्ति को ही जला डालती है । चिन्ता के कुप्रभाव से मुस्कराते और हंसते हुए चेहरे मुरझाकर क्षीणकाय हो जाते हैं, हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ठ शरीर जर्जर हो जाते हैं । एक किवदन्ती है कि एक वृद्धा का पुत्र अत्यन्त ही हृष्ट-पुष्ट था । जैसी भी मिलती वैसी ही रोटी खाकर मस्त रहता था । चिन्ता से मुक्त था, किसी की परवाह नहीं करता था । दिन-दिन उसका स्वास्थ्य अच्छा होता जा रहा था । राजा ने उस व्यक्ति को देखकर मन्त्री से पूछा कि इस निर्धन व्यक्ति के इतना बलवान होने का राज क्या है । मन्त्री ने पता लगा कर राजा को बतलाया कि वह व्यक्ति किसी भी प्रकार की चिन्ता से मुक्त है । राजा को विश्वास नहीं हुआ । राजा ने मन्त्री से कहा कि इस बारे में प्रमाण प्रस्तुत करो । मन्त्री ने राजा को विश्वास दिलाने के लिए उस व्यक्ति को राजदरबार में बुलाया और कहा कि तुमको कल से एक घण्टे के लिए राजदरबार में नियमित रूप से आना होगा और इसके बदले में तुम्हें एक अशरफी प्रतिदिन मिलेगी । आज्ञा का पालन न होने पर उसे दण्ड भोगना होगा अगले दिन से वह व्यक्ति आज्ञा का पालन करने के लिये नियमित रूप से प्रतिदिन एक घन्टे के लिये आने लगा । कुछ ही दिन के बाद उस व्यक्ति का स्वास्थ्य गिरने लगा । उसका चेहरा मुरझाये हुए पुष्प के समान रहने लगा । पता लगाने पर राजा को ज्ञात हुआ कि जिस दिन से उसे राजाज्ञा का पालन करना पड़ रहा है उसी दिन से उसे हर समय आज्ञा पालन की चिन्ता बनी रहती है । यही चिन्ता है जिसने उसके शरीर की आभा और चमक को कम कर दिया । राजा ने तुरन्त अपनी आज्ञा वापिस ले ली । कुछ दिनों बाद उस व्यक्ति को फिर वही स्वास्थ्य प्राप्त हो गया ।

चिन्ता मे मनुष्य का मस्तिष्क बहुधा असंतुलित हो जाता है । चिन्ता युक्त मस्तिष्क भले-बुरे, ठीक-गलत, लाभप्रद या हानिप्रद मे अन्तर नही कर पाता है । वह हर समस्या को लेकर निराशावादी दृष्टिकोण अपनाता है । आज यदि हम देखें तो प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी चिन्ता से पीड़ित है । यदि आप विद्यार्थी हैं तो आपको यह चिन्ता सदैव सताती है कि आप परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर सकेंगे या नहीं : यदि दुकानदार हैं तो आपको यह चिन्ता होगी कि आप अधिक धन किस प्रकार कमायें : यदि आप नौकरी करते हैं तो आप सोचते होगे कि न जाने कब आपकी नौकरी खत्म हो जाये । हमारी अधिकांश चिंताओं का कारण ऐसी ही निराधार मूर्खता है । हम उन बातों के बारे में परेशान होते रहते हैं जिनसे कभी वास्तविकता का सामना नहीं होता । कुछ यात्री जहाज रवाना होने से पहले ही खराब मौसम की संभावना करने लगते हैं । उन्हें जहाज हमेशा तूफानों से घिरा किसी चट्टान अथवा किसी दूसरे जहाज से टकरा गया जान पड़ता है । उन्हें रवाना होने से पहले ही समुद्री रोग लग जाता है । इसके विपरीत इन बातों से दूर रहने वाले हंस-खेलकर समय बिता देते हैं । क्योंकि वे जानते हैं कि जब हालात बिगड़े, तभी उनसे निपट लेना काफी है ।

चिन्ता एक कुरूपता है, जिसका एक भी अंग सुन्दर नहीं है । यह आध्यात्मिक अल्प दृष्टि है जो छोटी-छोटी चीजों को टटोलकर बड़ा बनाती है । इसके प्रभाव से हमारी कल की रोटी का साइज घट जाता है । हजारों लोग बेकार की चिंता में फंसकर अपना बहुमूल्य समय नष्ट करते रहते हैं लेकिन कोई भी इस चिन्ता के मूल कारण को खोलकर उसे मिटाने की चेष्टा नहीं करता ।

चिन्ता हमारे देश की विशेष उपज है । यूरोप की भाषाओं में इस अर्थ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई शब्द ही नहीं। चिन्ता मनुष्य को जीते जी चिता पर लिटा देती है। धर्म-शास्त्र कहते हैं कि लोभ, मोह, और स्वार्थ का त्याग करो : लेकिन हम इनमें फंसकर चिन्ता सहे जाते हैं। जीवन के तमाम आदर्श को त्याग कर हमने पैसे को भगवान बना लिया है और पैसा चिन्ता का मूल है। झूठी मान-प्रतिष्ठा भी चिन्ता का एक बड़ा कारण है। हमारी हमेशा यही इच्छा रहती है कि हम दूसरों से ज्यादा कीमती वस्त्र पहनें ताकि लोग हमें हमारी हैसियत से ज्यादा समझें। यही झूठी शान हमारी चिन्ता का मूल कारण है। इन चीज़ों के अभाव से उतना कष्ट नहीं होता जितना उनके न होने के अहसास से होता है। लोगों की नजरों में धनी जचना चिन्ता का एक बड़ा कारण है और लोगों की ये नजरें हमें इतनी महंगी पड़ती हैं।

चिन्ता से मुक्ति पाने का उपाय है चिन्ता का परिशोधन अर्थात् चिन्ता का पूरी तौर पर मथन करने के बाद चिन्ता दूर हो जाती है तथा समस्या पर मनुष्य विचार करने के बाद किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुंच सकता है। कुछ चिन्ताओं के अवसर पर दूसरा तरीका यह हो सकता है कि चिन्ता की स्थिति को ही टाल दिया जाये। चिन्ता के लिये निद्रा औषधि का काम करती है। चिन्ता के समय यदि हम सो जायें तो भी कभी २ हम और चिन्ता से मुक्ति पा जाते हैं।

अतः यदि आप भी चिन्ता से पीड़ित हैं तो चिन्ता छोड़ो और काम करो। इसके लिये आप यह सोच सकते हैं कि केवल चिन्ता करने से कुछ नहीं हो सकता है। जो बीत चुका, जो तुम्हारे बश में नहीं है, या भावी अमंगल के लिये चिन्तित होना व्यर्थ है। इससे हमारा कुछ भी भला नहीं होगा, उल्टे मानसिक और शारीरिक शक्ति नष्ट होगी।

मैं चिन्ता नहीं करता, एक सन्त का कहना है:—क्योंकि जिसकी मैं चिन्ता करूँ, वह शायद होगा नहीं और जो होने वाला है उसे मैं चिन्ता से रोक नही सकता।

———

जय शङ्कर

कृष्णा न्यू हिन्दुस्तान ट्रान्सपोर्ट कं० (रजि०)

बोमनजी रोड़, सहारनपुर

कार्यालय :— फून, ३८५१
घर ,, ४७५६

राकेट सर्विस

सहारनपुर से भगवानपुर, रुड़की, मंगलौर, पुरकाजो, लन्ढौरा, इकबालपुर, झबरेडा, धनौरी, बहादराबाद, ज्वालापुर, हरिद्वार, ऋषिकेश, सुलतानपुर लक्सर, रायसी।

हमारे व्यंवहार से आपको अवश्य ही सन्तुष्ट होना पड़ेगा। रात को यहां पर माल और सुबह प्रभात के समय अपने निश्चित स्थान पर प्राप्त कर लेवें। दिगर माल पहाड़ जोशीमठ, उत्तर काशी वगैरा, का भी बुक किया जाता है। आप सदैव हमारी ट्रान्सपोर्ट को याद रखियेगा।

मैनेजर :—--

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री बलजीत सिंह काहालों एम. ए. अंग्रेजी एम. ए. अर्थशास्त्र एल. एल. बी. बी. टी. प्रधानाचार्य गुरु नानक इन्टर कालेज अम्बाला रोड़ सहारनपुर

आपका जन्म पच्छिमी पाकिस्तान में लायलपुर नामक स्थान पर हुआ था। आपने बी० एस० सी० खालसा कालेज अमृतसर से पास करने के पश्चात् एम० ए० मेरठ कालेज मेरठ से किया। आपने १९६० में बी० टी० के० वी० डिग्री कालेज माछरा जिला मेरठ से की। आपकी रुचि खेल कूद में आदि से ही थी अपने समय में फुट बाल व हाकी में विशेष स्थान प्राप्त किया था। आपके जीवन की विशेषता यह भी रही कि आपने समय २ पर ननकाना साहब पच्छिमी पाकिस्तान में जनता की सेवा की।

आपके जीवन की वर्तमान विशेषता अब भी यह है कि आप निर्धन छात्रों को अपने व्यक्तिगत रूप में आर्थिक सहायता समय नुकूल करते रहते हैं। आप एक उदार हृदय के व्यक्ति हैं। आप अपने जीवन में सत्य को विशेष स्थान देने में तनिक भी संकोच नहीं करते हैं। आप विद्यालय की चार दीवारी में सदैव अनुशासन को बनाये रखने में अपनी दृष्टि पनी रखते हैं। इतना ही नहीं परिवार में भी आप इस विषय की ओर अपना ध्यान बनाये रखते हैं। किसी भी बात पर सैद्धान्तिक मतभेद होने पर आप अपना खाना तक छोड़कर अनुशासन को बनाये रखने में अपने व्यक्तित्व से पारिवारिक सदस्यों को प्रभावित किये बिना आप चैन से नहीं बैठते आप विद्यालय को दिन प्रति दिन आदर्शता की ओर ले जाने मे जो महान् प्रयास कर रहे हैं वह किसी से छिपा हुआ नहीं है। आपका शिक्षा सम्बन्धि अनुभव लगभग इक्कीस वर्ष का हो चुका है।

जहाँ तक प्रश्न है शिक्षण संस्थालय गुरु नानक इन्टर कालेज का इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि पिछले दो वर्षो में सस्था का शिक्षण कार्य व कमेटी का प्रबन्ध सराहनीय रहा, जनता की रुचि विद्यालय की ओर बढ़ी तथा कमेटी प्रधानाचार्य जी के प्रति छात्रों अभिभावकों के प्रति विशेष रुचि दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है।

संस्था उन्नति के शिखर की ओर अग्रसर है।

—::—

इलाके की जनता व छात्रों में भारी असन्तोष !

सहारनपुर—मुरादाबाद लाईन पर चुडियाला और इकबालपुर स्टेशन के बीच में हाल्ट का होना अति आवश्यक है क्योंकि समीपस्त स्थानों के छात्रगण अपनी शिक्षा प्राप्त करने के लिये माध्यमिक विद्यालयों में जाते है उनको आगमन में अत्यन्त कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है यदि यह हाल्ट हो गया तो उनकी अधिकांश समस्याये सुलझ जायेगी और यह कार्य राष्ट्र निर्माण में अत्यधिक सहायक होगा इससे शिक्षा में उन्नति होगी और समीपस्त स्थानों की जन समाज के आर्थिक सामाजिक शारीरिक उन्नति होगी व्यापारी वर्ग को काफी लाभ होगा। पूर्व से भी कई बार सूचना प्रकाशित हो चुकी विभाग इस ओर शीघ्र ध्यान दें, तथा छात्रों की समस्या का समाधान करे। अभी एक सप्ताह पूर्व जो आदेश रेलवे जनरल मैनेजर देहली से सम्पादक को प्राप्त हुआ है जिसमें लिखा है कि हम बहुत शीघ्र ही चुड़ियाला व इकबालपुर के मध्य हाल्ट बनाने पर विचार कर रहे हैं। तो जनता की अभिलाषा और भी शीघ्र पूरा करने में शीघ्रता करे।

पत्र के अतिरिक्त संरक्षक:

१. श्री सेठ पूरनचन्द साहनी मिल मालिक शूगर फैक्ट्री देवबन्द, इकबालपुर (सहारनपुर), २—श्री जगपालसिंह डायरेक्टर (केन) सुन्हैटी आलापुर (सहारनपुर) ३—श्री प्रेमसिंह वर्मा, डी. एम. ई. (भारतीय सेना), ४—श्री केहरसिंह प्रधान भलसवागाज (सहारनपुर), ५—श्री महेन्द्र प्रताप एडवोकेट, रुड़की (सहारनपुर), ६—श्री रामसिंह प्रधान, खानपुर(सहारनपुर, ७—श्री विशलचन्द जैन भू० पू० आ० मजिस्ट्रेट, सहारनपुर, ८—श्रीमती राजदुलारी गर्ग (सहारनपुर), ९—बाबू ज्योतिप्रसाद चुड़ियाला (सहारनपुर), ११—राजमाता सरस्वती देवी लढौरा स्टेट (सहारनपुर), ११—नवीन प्रकाशन, बड़तला यादगार, (सहारनपुर), १२—श्री बाबू रफलसिंह एडवोकेट, कचहरी रोड़ रुड़की (सहारनपुर), श्री बलबीरसिंह ग्राम तेजलहेड़ा जिला (मुजफ्फरनगर. १४—श्री विक्रमसिंह अध्यापक सुन्हैटी खेव, (सहारनपुर), १५—श्री पवनसिंह, नेता लुन्ढ़ा (सहारनपुर, १६—श्री गुरु नानक इन्टर कालेज अम्बाला रोड़ सहारनपुर, १७—श्री इस्लामिया इन्टर कालेज सहारनपुर।

यदि प्रकाश दुनिया को देना चाहते हो तो स्वयं जलना पड़ेगा। (अज्ञात)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन परिचय

आपका जन्म एक साधारण गांव में हुआ था आपका पूरा नाम राम किशन परिवार के सभी व्यक्तियों की सूझ बूझ से रक्खा गया था। आप बचपन से ही अपने मित्रों की छोटी २ बैठकें किया करते थे जैसे ही आपने अपने परिवार की विशेष जिम्मेदारी का भार आपने अपने कन्धों पर सम्भाला तो आपने अपने कुशल व्यवहार से अपनी प्रतिभा से समाज की अनेकों कमियों के सम्मुख चार चांद लगा दिये।

आप अपने ग्राम खानपुर के ग्राम सभा के प्रधान चुने गए। आपने एक बार रायसी स्थान पर १९५०–५१ में डाकुओं के मुकाबले में पुलिस की बहुत बड़े पैमाने पर सहायता की थी जिसके फल स्वरूप आपको एक बन्दूक भी इनाम की प्राप्त हुई थी। आप अपने इलाके की जनता में एक विशेष सम्मान प्राप्त किये हुए हैं। आप हर प्रकार से सम्पन्न हैं अपने को कष्ट देकर भी दूसरों का हित करते रहना आपका परम धर्म है। ईश्वर आपको दिन प्रतिदिन उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करें आप अस्तित्व पत्र के संरक्षक भी निरन्तर चले आ रहे हैं। आपने देश भक्त युवक समाज के कार्यालय हेतु एक अच्छा कमरा अपने पैसे से ही बनाकर देने का संस्था को पूर्ण विश्वास भी दिलाया है।

शुभ सूचना

देश भक्त युवक समाज की मासिक बैठक प्रत्येक मास की १८ तारीख को ठीक ४ बजे गाँधी पार्क में बापू प्रतिमा के निकट हुआ करेगी। तथा प्रत्येक मास के प्रथम रविवार को ठीक ४ बजे भी संस्था की बैठक निरन्तर होती रहेगी। संस्था का वार्षिक सम्मेलन दिनांक ११–१२ जनवरी १९७२ को होगा। स्थान बाद में घोषित होगा। (सम्पादक)

अधिक अन्न उत्पादन से ही देश आत्म निर्भर हो सकता है। इसके लिये कृषि के सर्वोत्तम साधनों की आवश्यकता है। ऐसी ही सर्वाधिक विश्वासनीय साधन हैं।

शक्ति का प्रतीक :— अच्छी और लहलाती फसलो के लिए :—

मैक्कॉरमिक

इन्टर नेशनल ट्रैक्टर बी–२७५

३५ हार्स पावर एवं चार सिलिन्डर वाला एक शक्तिशाली ट्रैक्टर।

रस्टन डीजल इन्जन

६ से ३० हार्स पावर तक के बड़े इन्जन काले तेल से चलाये जाते हैं। और शीघ्र ही स्टार्ट हो जाते हैं।

इनके अतिरिक्त :—स्टेन्डर्ड बैटरी बोको मोटर्स, हनलपिल्लो ट्रैक्टर के टायर ट्यूब्स तथा पुर्जे भी मिलते हैं।

वर्मा एण्ड कम्पनी कोर्ट रोड सहारनपुर

सत्य पर आरूढ़ हो जाओ इस बात की चिन्ता न करो कि अधिकाँश जन्ता तुम्हारे विरुद्ध है। (स्वामी राम तीर्थ)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय राजनीति की नई दिशाएं

ले० बुद्ध प्रकाश डी० लिट्० कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

(गतांक से आगे)

राष्ट्रीय एकता लोगों की दृष्टि में कोई अमूर्त कल्पना या भावना मात्र नहीं है, यह देश के करोड़ों नर-नारियों के सामाजिक और आर्थिक जीवन को उँचा उठाने के सामूहिक संकल्प का पर्याय है। लोग आर्थिक विषमता और सामाजिक भेदभाव से उब गए हैं और इन्हें दूर कर या कम कर ऐसी व्यवस्था बनाना चाहते हैं जिसमें अधिक से अधिक लोग आराम से रहें और हरेक को उन्नति का अवसर मिले।

इसलिए जिधर से भी उन्हें ऐसी संभावना का संकेत मिलता है वे उधर ही खिंच पडते हैं यह बात अलगहै कि वह संभावना यथार्थ सिद्ध हो या भ्रान्त। यही कारण है कि नई कांग्रेस इतनी बढ़ी हैं और साम्यवादी मार्क्सवादीदल ने भी उन्नति की है। किन्तु साम्यवादी दलों की सफलता कांग्रेस के मुकाबले में कुछ भी नहीं है जो इस बात को जाहिर करती है कि लोगों को वादों और सिद्धान्तों में इतनी रुचि नहीं है जितनी अपना असली लक्ष्य प्राप्त करने में। चुनाव से पहिले इस बात का काफी शोर हुआ कि नई कांग्रेस साम्यवादियों की लग्गू भग्गू है, किन्तु लोगों ने इस ओर कुछ ध्यान नही दिया और इसे बेकार समझा निचले सामाजिक और आर्थिक वर्गो, हरिजनों और पिछड़ी जातियों और अल्पसंख्य को ने इस विषय में एक व्यावहारिक और परीक्षणात्मक दृष्टिकोण का परिचय दिया। यह ठीक है कि राजाओं की वृत्तियां बन्द होने से वित्त-व्यवस्था में मामूली सा ही फर्क पड़ेगा। किन्तु लोगों की दृष्टि में यह एक विशाल परिवर्तन का प्रतीक बन गया और इसे लागू करने में जो बाधाएँ आई उनसे जनमानस को बड़ा धक्का लगा। इसी प्रकार सम्पत्ति के सीमा-निर्धारण की बात सुनकर लोग झन्झना उठे और उन्हें एक महान् सामाजिक क्रान्ति के द्वार खुलते से दिखाई दिए। जब ऐसी आशाएँ जाग्रत हो जाती है, भावनाएं उभर उठती हैं, तो लोग कानून बारीकियों या तार्किक युक्तियों की उलझन में नहीं पड़ते।

(४) किन्तु भारतीय जनता किसी प्रकार की अधिनायकशाही को नहीं चाहती और सैनिक शासन की कल्पना से बहुत बिदकती हैं। अतः जहाँ उसने क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता और उग्रवाद का तिरस्कार किया और बिडला टाटा आदि को नमस्कार किया, वहाँ अवकाश-प्राप्त सैनिक अधिकारियो को भी अपने से भी दूर रखा, भारतीय जनता के हृदय मे अपनी सेना का सम्मानलेकिन वह उसे अपने ही क्षेत्र तक सीमित रखना चाहती है और प्रशासन में उसकी दिलचस्पी को पसन्द नहीं करती इसलिए जनरल करिअप्पा और हरबख्श सिंह बड़े प्रख्यात और योग्य व्यक्ति होते हुए भी, राजनीति के सँघर्ष में सफल नहीं हो पाए।

(५) भारतीय जनता प्रशासन और राजनीति में एकता, दृढता और स्थिरता चाहती है जिसके लिए एक मजबूत दल की जरूरत है अनेक दलों की खिचडी इसे नही रुचती और उनके झगड़ों और पचडों से, कम से कम राज्यों में, वह तंग आ चुकी है। इसलिए इस चुनाव में जब पुरानी कांग्रेस,जनसंघ, स्वतंत्र और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी और कहीं २ भारतीय क्रान्ति दल का संयुक्त मोर्चा बना तो लोग हक्का-बक्का रह गए क्योंकि न इनकी रीति नीति में समानता न गति-विधि में एकरूपता। अकसर अनेक स्थानों पर ये आपस में ही झगड पड़ते थे दिल्ली को जनसंघ अपनी सल्तनत समझे रहे थे। तो गुजरात में पुरानी कांग्रेस हिलने को तैय्यार न थी और बम्बई में सं. सो.पा. टससे मस न होती थी। लोग घबराए कि जब इनका आज ही यह हाल है तो बाद में क्या होगा। मुझे विश्वास है कि यदि मोर्चा न बनता और दल अलग अलग अपने पैरों पर खड़े होकर लड़ते तो उनमें से कुछ अब से कहीं अधिक सफलता प्राप्त करते और शायद नई कांग्रेस की जीत इतनी बड़ी न होती। इसमें शक नहीं है कि पुरानी कांग्रेस में कुछ अनुभवी और योग्य व्यक्ति थे जिनका लोगों में काफी आदर था लेकिन इस गठबन्धन से यह सिद्ध हो गया कि वे अपनी आजादी खोकर उन दलों के साथ नत्थी हो गए हैं जिन्हें लोग निहित स्वार्थों का पिट्ठु समझते है। इससे पुरानी कांग्रेस को सख्त हानि पहुंची है।

क्रमशः

सत्य के लिए आपको शरीर भी त्यागना पड़े तो सानंद त्याग दीजिए यही अन्तिम ममता है जो भंग होती हैं। (स्वामी रामतीर्थ)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश भक्त युवक समाज की विचार गोष्ठी

दिनांक ५ सितम्बर १९७१ को गाँधी पार्क सहारनपुर में गांधी जी की प्रतिमा के नीचे देश भक्त युवक समाज की एक विचार गोष्ठी हुई जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किये गये।

प्रस्ताव नं० १—श्रद्धेय श्री स्वामी विवेकानन्द जी के स्मारक की नगर सहारनपुर में स्थापना-

यह प्रस्ताव श्री साधूराम वर्मा संस्थापक देशभक्त युवक समाज ने सभा के समक्ष प्रस्तुत किया एवं अपने ४५ मिनट के भाषण में समस्त नवयुवकों को प्रेरणा दी कि वे इस स्मारक को समस्त पश्चिमी उत्तरी भारत का एक दर्शनीय स्मारक बनाने में अपना सक्रिय सहयोग दें और आज ही दृढ़ संकल्प लें।

प्रस्ताव न० २—

श्री वर्मा जी ने ही दूसरा प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि देश भक्त युवक समाज का एक वार्षिक सम्मेलन जनवरी मास में बुलाया जाये। संस्था के अध्यक्ष श्री नरेन्द्रसिंह यादव ने ११ और १२ जनवरी तिथि निश्चित की जो स्वामी जी जन्म तिथि भी है। अतः देशभक्त यु० स० का वार्षिक सम्मेलन ११ और १२ जनवरी १९७२ को होना निश्चय हुआ। स्थान बाद को घोषित किया जायेगा।

प्रस्ताव न० ३—

संस्था (देशभक्त युवक समाज) का स्थाई ध्वज एवं चिन्ह का निर्धारण: -

यह प्रस्ताव श्री मोहनसिंह ने सभा के समक्ष प्रस्तुत किया एवं नवयुवकों को अपने भाषण में बताया कि वे परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए मिट भले ही जायें किन्तु झुकें नहीं हमें अपने राष्ट्र एवं अपने समाज के लिए उसके चिन्ह एवं ध्वज की मर्यादा की रक्षा के लिए हर समय तैयार रहना है। इस प्रस्ताव में यह तय किया गया कि ध्वज एवं चिन्ह के नमूने जनता से एकत्रित किये जायें एवं उचित चिन्ह का चयन किया जाये।

(श्री कर्णसिंह जी अध्यापक) ने स्वामी जी के जीवनवृत्त पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए उनके जीवन के मुख्य आकर्षण नवयुवकों के समक्ष रखते हुए अपने हृदय से उन्होंने भी स्वामी जी की प्रतिमा की स्थापना करने के समर्थन में अपने जीवन का बहुमूल्य समय लगाने का वचन दिया तथा जनता से मांग करते हुए कहा कि स्मारक, कार्यालय, पुस्तकालय, व्यायामशाला एवं चार दिवारी (Boundry) हेतु एक लाख रुपये वास्तव में कम होगा। अन्त में उन्होंने कहा कि यह कार्य हम सभी नव युवकों के लिए कुछ बड़ा नहीं है। अतः कम से कम एक लाख रुपये शीघ्र एकत्र करने की योजना तैयार की जाये।

विशेष नोट :—

१—उपरोक्त स्मारक सम्बन्धित सम्पूर्ण विधिवत योजना भावी अंक में प्रकाशित हो सकेगी।

२—देश भक्त युवक समाज के सभी सदस्य वार्षिक सम्मेलन की दिनांक ११-१२ जनवरी १९७२ को अपनी डायरी में नोट करें अलग से कोई सूचना उनको नहीं दी जा सकेगी भावी अंकों में पत्र में ही वे कार्यक्रम फिर से नोट कर सकेगें। सम्पादक

ओबराय इन्डस्ट्रीज

देहरादून सफेद मार्बल चिप्स निर्माता

रसायनिक चूना

तथा

चूना पत्थर के विक्रेता

सम्पर्क स्थापित करें :—

Phone 3445
Crusher kiln 4138
Gram :— Salco

अवनीश ओबराय
१० म्यूनिसिपल रोड
देहरादून

जिस समय मनुष्य विश्व आत्मा को निजी आत्मा अनुभव करता है तो सारा विश्व उसके शरीर के समान सेवा करता है। (स्वामी राम तीर्थ)

संजय प्रिंटर्स, सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहक संख्या, नाम व पता

एल० रजि० नं० १५५५

रजि० नं २०२१६/७०

राष्ट्रीयता, नैतिकता, आध्यात्मवाद एवं विशुद्ध समाजवादी विचारधारा का दिशा बोधक !

अरिदम

सम्पादक: साधूराम वर्मा (भारतीय)

मासिक अङ्क अक्टूबर (१९७१)

संयुक्त सम्पादक: कुंवर पाल सिंह

"देश भक्त युक्त समाज" का प्रबल समर्थक तथा युवावर्ग का पथ प्रदर्शक

देश भक्ति ही सर्वोच्च धर्म है !

वर्ष २ अङ्क १४

हिन्दी-मासिक

मास अक्टूबर १९७१

★

मूल्य १ प्रति, ४० पैसे
वार्षिक शुल्क ६ रुपये
वर्ष में दो विशेषांक सहित

वन्दना !

दीपावली अंक

भारत मां करता मैं तुमको वन्दन
अर्चन करने को लाया हूं पुष्प और लोहित चन्दन
राज महल से भवन दिये हैं
वीर सिंह से जन्म किये हैं
हरा भरा यह देश तुम्हारा कानन हैं नन्दन
अन्न वस्त्र करती तुम दान
हीरे मोती की तुम खान
छाया में हम तेरी हैं फिर कैसा दुःख क्रन्दन
पर्वत से नदियां इठलाती
आतीं जग की तपन बुझातीं
करती है मां सारी जगतीं नित तेरा वन्दन
देती शीतल मस्त पवन
कलियो सा विकसाती मन
"भृंग" सदा पुष्पों पर करते मधुर मधुर गुंजन

रचियता: विनोद कुमार 'भृंग'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रधान कार्यालय: बोमनजी रोड़, पुल दालमण्डी, सहारनपुर, उपकार्यालय: निकट राजू प्रिंटर्स, पटरी पांव धोई, किशनपुरा, सहारनपुर।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपील !

सम्पादकीयः

स्वामी विवेकानन्द स्मारक व्यायाम शाला एवं पुस्तकालय को सफल बनायें

स्वामी विवेकानन्द के नाम से ऐसा कौन व्यक्ति हो सकता है जो परिचित न हो। गंगा यमुना की पवित्र भूमि में जिन्होंने घूम-घूम कर अपने उद्गारों को विकसित किया। जिन के विचारों से भारत की जनता ही नही अन्य देश भी प्रभावित हो उठे।

ऐसे वीर देश भक्त को उनकी माता ने जन्म दिया, धन्य है वह माता व पिता और उनके गुरु श्री राम कृष्ण परम हंस, जिनकी छत्र छाया में वे अपने को महान उन्नति के शिखर पर ले गये, जिनके शब्दों में विशेष प्रभाव था जो सत्यता, पवित्रता, और निःस्वार्थता के उपासक थे जिन्होंने गुरू के चरणों में रह कर अपने को इतना स्थिर किया कि बड़ी से बड़ी कठिनाई में में भी बहके तक नहीं।

स्वामी जी का पूर्ण विश्वास था कि सेवा के द्वारा ही मानव जाति का उत्थान करना ही श्रेष्टकर है। स्वामी जी का विश्वास था कि वही राष्ट्र उन्नति के शिखर पर पहुंचे जिसके पुत्रो में आत्म विश्वास था, वही शक्ति शाली बने। स्वामी जी ने शिकागो विश्वधर्म सम्मेलन के पश्चात अमेरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, लंका तथा अन्य अनेक देशों का भ्रमण किया और वहाँ वेदान्त केन्द्र की स्थापना की।

स्वामी जी ने जिस कार्य का श्रीगणेश किया था उससे देश के नागरिको में देश प्रेम की भावना जाग्रत हुई और धीरे धीरे स्वतन्त्रता प्राप्ति में उसने योग दान दिया था। स्वामी जी का विश्वास था भाव से श्रद्धा के साथ कार्य करते जाओ और सर्वोपरि, पवित्र धुन के पक्के बनो। तुम्हारा भविष्य उज्जवल होगा—यह विश्वास रक्खो। तुममें अपने आदर्श के प्रति दृढ़ निष्ठा होनी चाहिये।

स्वामी जी ने भारत को आहवान करते हुये एक बार कहा था—

ऐ भारत भूलना नहीं कि तुम्हारा स्त्रियों का आदर्श सीता सावित्रि, दमयन्ती है, भूलना नहीं कि तुम जन्म से ही माता के लिये बलि-स्वरूप रक्खे गये हो भूलना नहीं कि नीच अज्ञानी दरिद्र चमार और मेहतर तुम्हारे रक्त मांस हैं। तुम्हारे भाई हैं; ऐ वीर साहस का अवलम्बन करो गौरव से बोलो कि मैं भारत वासी हूं, प्रत्येक भारत वासी मेरा भाई है। इतना ही नही उन्होंने कहा कि हमारा सबसे उत्तम कार्य तब होता है, हमारा सबसे अधिक प्रभाव तब पड़ता है जब हममें स्वार्थ भावना नहीं रहती। पूर्ण रुपेण निरपेक्ष हो जाओं सम्पूर्णतः उदासीन हो जाओ। तभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम यथार्थ कार्य कर सकते हो। अपवित्र भावना उतनी ही बुरी होती है, जितना कि अपवित्र कार्य, संसार चाहता है चरित्र। संसार को आज ऐसे लोगों की आवश्यकता है जिनके हृदयमें निःस्वार्थ प्रेम प्रज्वलित हो रहा है। ऐ महान आत्माओं जागो! संसार दुखाग्नि से जला जा रहा है। क्या तुम सोये रह सकते हो?

अब समय आ गया है कि स्थिति को हम भली भाँति देखें व समझें। अपने-२ विचारों को क्रिया रुप में लायें सतर्क रहकर परिपक्व बुद्धि से दृढ़ निश्चिय करके हम कंधे से कंधा मिलाकर प्रत्येक व्यक्ति अपने निजि कार्य के रुप में इसमहान यज्ञ में आहुति देकर इसे पूरा करें, हमारे जींवन में यही आनन्ददायक एवं गौरव शाली कार्य होगा। इस पवित्र कार्य को उचित दिशा देने हेतु जनता जनार्दन आपका पूर्णत: स्वागत करने हेतु तत्पर है। जिसके लिए हमको नगर-२ ग्राम-२ और घर-२ पहुंचकर स्वामी जो स्मारक कार्य-क्रम को उतनी ही रूचि के साथ पूरा करने का दृढ़ संकल्प लेना है जितना कि दक्षिण में कन्या कुमारी स्मारक के निर्माण कार्य में जनता ने अपना सहयोग प्रदान कर उसे पूरा किया है।

जिस देश के तपस्वी, मेहनती लोग त्याग तप से नहीं गिरते, सती स्त्रियां सत से नहीं गिरती बालक चरित्र से नहीं गिरते, वही देश पवित्र आध्यात्मिक प्रेम, सच्ची मित्रता, निष्कलंक सौन्दर्य भक्ति वीरता और समृद्धि का पवित्र अथल बन जाता है। वही भगवान का तीर्थ बन जाता है। वहां हिंसा, शोषण, और पाप नही रहते। वहां साम्यवाद और सम्पत्ति-वाद, जातिवाद और वर्ग वाद के संकीर्ण संघष स्वतः सहअस्तित्व, श्रद्धा भक्ति और विश्वास के सागर में विलीन हो जाते हैं स्वामी जी के जीवन चरित्र से जो प्रेरणा हम सब को मिल रही है वही हमारे समाज-राष्ट्र के उत्थान में विशेष रूप से सहायक है। उनकी रूचि, उनकी सत्यता उनकी पवित्रता और उनकी निःस्वार्थ भावना क्या हमको प्रभावित नही कर रही है। क्या आज का नवयुवक उससे प्रेरणा प्राप्त कर एक महान देश भक्त नहीं बन सकता? वह देश वह समय और वह तिथि सदैव हमारी आंखों से ओझल नहीं हो सकतीं जहां पर स्वामी जी ने अपने देश भारत की योग्यता को ठीक-२ प्रमाणित कर सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था! क्या उस अमेरिका और शिकागों को हम भूलेंगे।

इस महान यज्ञ में आहुति देने हेतु ऐसे व्यक्तियों नव युवकों महिलाओं सस्थाओं संघ परिपदों एव संगठनों की आवश्यकता है, जिनकी संकल्प-शक्ति योगात्मक चिन्तना शक्तिशाली हो, जिसके अन्दर प्रबल योगात्मक योग्यता है। क्योंकि वे ही इस कार्य हेतु दृढ़ निश्चिय होगें। उनके मनमें संशय या भय तनिक मात्र भी नहीं होगा भले ही जनता उनकी हंसी उड़ाये उन्हें पागल कहे, ऐसे व्यक्ति आगे चलकर हीसिद्ध पुरुष कहलाये। ऐसे ही व्यक्तियों ने समय-२ पर समाज और राष्ट्र के समक्ष अपनी स्थिर और पवित्र बुद्धि का चमत्कार दिखाया। उनका जीना और मरना समाज और राष्ट्र के लिए ही था। उन्होंने अपनी इच्छाओं, इन्द्रियों के विषय भोगों को ठीक तीर की तरह अपने ओर खींचा अपने को शून्यवत किया और ठीक जीवन रूपी आदर्श लक्ष्य की ओर निशाना लगाया, वे सफल हुए उन्होंने ही अनेकता में एकता के दर्शन किये। वे हीं सिद्ध कहलाये। क्योंकि पूर्व से ही उन्होंने अपने जीवन को दांव पर लगाया हुआ था। उन्होंने अपने को मिटाया और फिर संसार को प्रकाश दिया। तब उनके जीवन से सुगन्ध उत्पन्न हुई क्योंकि उन्होंने भारतीय सर्वोच्च जीवन दर्शन अध्यात्मको ही श्रेष्ठ जीवन का आधार माना था।

स्वामी जी का विशाल स्तर पर जो स्मारक दक्षिण मे बनकर तैयार हुआ है वह उत्तरी भारत की जनता से विशेष दूरी पर है, सम्पूर्ण भारत की निष्ठा एवं आस्था प्राप्त जनता लाभ उठाने से वंचित रह सकती है। इसी को आधार मानकर छोटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तर पर देश भक्त युक्त समाज नामक संस्था ने इस कार्य क्रम को गांधी पार्क सहारनपुर में होने वाली कई बैठकों के पश्चात बहुत गम्भीर विचार के साथ यह निर्णय लिया कि स्वामी जी का स्मारक-प्रतिमा, व्यायामशाला, पुस्तकालय, कार्यालय की स्थापना की जाये। साथ-२ इस योजना के पीछे एक ठोंस लक्ष्य और भी है कि स्वामी जी के आदर्श साहित्य को कम से कम दस हजार व्यक्तियों महिलाओं संस्थाओं-संगठनों में दिया जाये जिस से कि हमारी संस्कृति को विशेष बल प्रदान हो सके।

विधिवत् एक समिति का गठन किया गया है। सभी धन बैंक में जमा होगा। जो सज्जन चैक द्वारा अथवा अन्य रूप से सीधा धन बैंकभेजें वे संस्था कार्यालय से सम्पूर्ण विवरण पत्र द्वारा प्राप्त करलें। इस योजना के पूरा होने में लगभग दो वर्ष का समय लगेगा। और दो लाख रुपये के लगभग व्यय होगा।

अच्छा होगा कि अधिकांश नवयुवक अपने एक-२ दिन के वेतन को देकर विशेष हाथ बटायेगें!

इसी कार्य क्रम को सुचारु रुप देने हेतु १२ जनवरी १९७२ को एक दिन का भारी सम्मेलन नगर सहारनपुर अथवा नकुड़ कस्बा में होगा सभी सज्जन समय को नोट करलें।

विद्यालयों के आचार्य भी इस पवित्र कार्य में विशेष रूचि लेते हुए छात्रों का सहयोग प्रदान कराने में प्रयत्नशील हैं।

अतः विशेष अधिकारी गण स्वतः रूचि के साथ अपने-२ ढ़ग से आर्थिक सहयोग एकत्र करने की रूपरेखा तैयार कर अपना हृदय से योगदान देकर कृतार्थ करेगें। धन कार्यालय को सीधा मंत्री के नाम भेजकर अनुग्रहीत करें। जो सज्जन इस कार्य हेतु अपना मानसिक व शारीरिक सहयोग देने के इच्छुक बने वे अपना पत्र सीधा कार्यालय देश भक्त युवक समाज बोमनजी रोड़, पुल दाल मन्डी अथवा उप कार्यालय किशनपुरा नदी पांव धोई निकट राजू प्रेस सहारनपुर को पत्र व्यवहार करें। दो हजार से अधिक धन राशि दान देने पर स्मारक पर नाम पता लिखा जाना आवश्यक होगा। धन्यवाद!

—सम्पादक

पत्र के अतिरिक्त संरक्षक

१ श्री सेठ पूरनचन्द साहनी मिल मालिक शुगर फैक्ट्री देवबन्द इकबालपुर, (सहारनपुर)।
२ श्री जगपालसिंह डायरेक्टर (केन) सुनहैटी आलापुर (स०पुर)
३ श्री प्रेमसिंह वर्मा, डी. एम. ई (भारतीय सेना)।
४ श्री केहरसिंह प्रधान मलसवागाज (सहारनपुर)।
५ श्री महेन्द्र प्रताप एडवोकेट रूड़की (सहारनपुर)।
६ श्री रामकिशन प्रधान, खानपुर (सहारनपुर)।
७ श्री विशालचन्द जैन भू० पू० आ० मजिस्ट्रेट (सहारनपुर)
८ श्रीमती राजदुलारी गर्ग (सहारनपुर)।
१० बाबू ज्यतिप्रसाद चुड़ियाला (सहारनपुर)।
११ राजमाता, सरस्वती देवी लंढौरा स्टेट (सहारनपुर)।
१२ नवीन प्रकाशन, बड़तला यादगर, (सहारनपुर)।
१३ श्रीबाबू रफलसिंह अकोढ़ा एडवोकेट, कचहरी रुड़की (स०पुर)
श्री बलबीरसिंह ग्राम तेजलहेड़ा जिला मुजफ्फरनगर)।
१४ श्री विक्रमसिंह अध्यापक चुनहैटी शेख, (सहारनपुर)।
१५ श्री पवनसिंह नेता लुन्ढा (सहारनपुर)।
१६ श्री गुरू नानक इण्टर कालेज अम्बाला रोड़, सहारनपुर।
१७ श्री इस्लामिया इन्टर कालेज सहारनपुर।
१८ ब्रज भूषण हाई स्कूल एवं हरप्रसाद स्वरूप देवी इन्टर कालेज सहारनपुर।
१९ श्री महेन्द्रसिंह त्यागी, ग्राम तिवड़ा (सहारनपुर)।

विशेष सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा हाई स्कूल परीक्षा १९६५ अनुक्रमांक ५४८२७ का प्रमाण-पत्र वास्तव में खो गया है कौशल किशोर माहेश्वर पुत्र आत्मज श्री होती लाल माहेश्वरी चौक बोहरान हाथरस जिला अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन अन्दर चाहिये

ले० स्वामी योगीराज नानजी
अध्यक्ष, गद्दीसन्त मलूकदास जी, इलाहाबाद (पो० कड़ा)

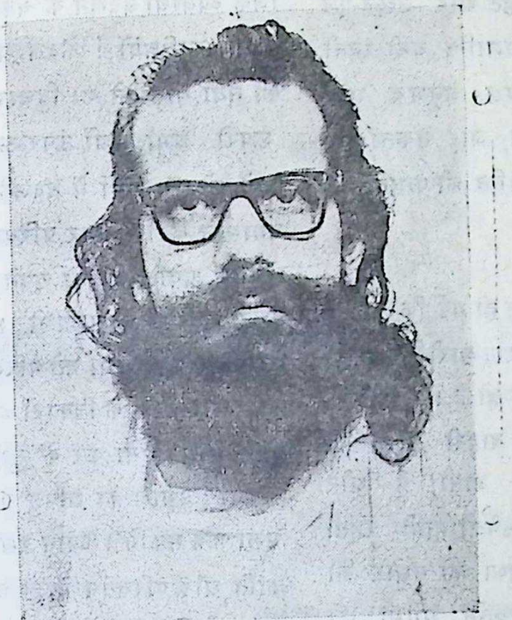

ले० स्वामी योगीराज नानजी

आज एक प्रकार की चिल्लाहट सभी क्षेत्रों से निरन्तर सुनने को मिलती रहती है। वर्षों से इस ध्वनि को सुन रहा हूं। सभी परिवर्तन चाहते हैं। सभी कुछ न कुछ बदलना चाहते हैं। बहुत से भौतिक परिवर्तन तो हमें स्पष्ट दिखलाई पड़ रहे हैं। कभी मनुष्य चलने के लिये पैरों का ही प्रयोग करता था। फिर उसने साइकिल को चलने का साधन बनाया। उसके बाद मोटर साइकिल और मोटरें आई। अब हवाई जहाज चलने के लिये प्रयोग में लाये जा रहे हैं। पहले मनुष्य के विनाश के लिए प्रयोग में लाये जा रहे हैं। पहले मनुष्य के विनाश के लिए पत्थर और लौहे के हथियार प्रयोग किये जाते थे। फिर बन्दूक और तोपों का युग आया। बाद में बमों से मानव-हत्या का कार्य किया जाने लगा। और अब परमाणु बमों तक परिवर्तन किये जा चुके हैं। नक्षत्र लोकों की यात्रा का मानव-स्वप्न भी पूरा हो रहा है।

इन समस्त परिवर्तनों और भविष्य में होने वाले परिवर्तनों की कल्पना को मैं खुली आंखों देख और समझ रहा हूं। देख रहा हूं कि समस्त मानव-शक्ति परिवर्तन में जुटी हुई है। वर्तमान की भौतिक सुविधाओं और उपलब्धियों के प्रति उसके मन में असंतोष है यही असंतोष की भावना भविष्य में नये परिवर्तनों को जन्म दे रही है। राजनीतिज्ञ राजनीति में परिवर्तन चाहता है। समाज सुधारक पुरानी सामाजिक व्यवस्था को बदलना चाहता है। अर्थशास्त्री अर्थ-व्यवस्था को एक नया मोड़ देना चाहता है। धर्म-गुरु अशुभ कर्मों को शुभ कर्मों में परिणित करने में जुटा हुआ है। अर्थात सभी के मस्तिष्क पर परिवर्तन का भूत सवार है। सबको परिवर्तन चाहिये, ऊपरी परिवर्तन वाह्यपरिवर्तन और बस।

परिवर्तन की इस बढ़ती हुई भावना को मात्र बुरा बताने के अभिप्राय से यह चर्चा नहीं कर रहा हूं। किन्तु जब मेरी दृष्टि इन परिवर्तनों का उपयोग करने वालों की ओर जाती है तो पाता हूं कि मानव-मन, जो इन परिवर्तनों का इच्छुक है, स्वार्थ और घृणा तथा ईर्ष्या और परिग्रह से घिरा हुआ है, तब सहज ही मन में यह प्रश्न उठता है कि क्या स्वार्थ और घृणा में प्रशिक्षित मन इन परिवर्तनों का सदुपयोग कर सकेगा ? क्या ईर्ष्या और परिग्रह की भावना के रहते हुए इन परिवर्तनों का मानव-विकास में सहयोगी बनना सम्भव हो सकेगा ? क्या यह विकास के स्थान पर विनाश का कारण तो नहीं बन जायेगा ? और क्या बाहरी परिवर्तन हुए मनुष्य की आनन्द और शांति प्राप्त करने की मांग को पूरा कर सकेगा ? वर्तमान समय के ये बड़े महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिन पर विचार करने की महती आवश्यकता है

वैसे तो यह सारी सृष्टि ही परिवर्तन-शील है। निरन्तर परिवर्तन होते ही रहते हैं किन्तु इस परिवर्तनशील जगत के मूल में कोई ऐसा तत्व भी है जो अपरिवर्तनशील है सब कुछ बदलने पर भी जो नहीं बदलता। उस तत्व का न तो विकास ही होता है और न विनाश ही। उस अपरिवर्तनशील और स्वयं प्रकाश्य परम सत्ता पर यह विनाशशील स्वप्नवत जगत धुरी के ऊपर घूमने वाले पहिये की तरह चक्कर काटता रहता है। धुरी स्थिर रहती है, इसीलिए पहिया चल भी पाता है।

मानव शरीर भी इसी तत्व रूपी धुरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर टिका हुआ है। उसमें जो चेतना है उसी के कारण उसमें गति है। अध्यात्म शास्त्र इसी तत्व को आत्मा या परमात्मा के नाम से सम्बोधित करता है। शरीर और आत्मा में भेद यह है कि शरीर जन्म और मृत्यु के बीच की स्थिति है और आत्मा जन्म से पहले भी है, जन्म और मृत्यु के बीच भी है और मृत्यु के उपरान्त भी है। अर्थात आत्मा में न जन्म है, न मृत्यु हैं। वह उत्पत्ति और विनाश से परे है और शरीर उत्पत्ति और विनाश के बीच में है। आत्मा अमर है और शरीर मृत है। उस अमर और मृत का- चेतना और जड़ का संयोग ही शारीरिक जीवन के नाम से पुकारा जाता है।

प्राणी अपने जीवन में एक बहुत बड़ी भूल करता है। भूल यह है कि वह जड़ को ही चेतन और जो मृत है उसे ही वास्तविक जीवन मान लेता है। जिसका परिणाम यह होता है कि उसमें घोर शारीरिक दृष्टि या देह-भाव की गहरी धारणा बन जाती है। इसको अध्यात्मशास्त्र में देहाध्यास कहा गया है। देहाध्यास के कारण उसकी आत्मिक दृष्टि बन नहीं पाती। इस प्रकार आत्मा से जो उसका वास्तविक स्वरूप है, उसका सम्बन्ध टूट सा जाता है, सत्य और सौन्दर्य से वह बहुत दूर चला जाता है, जिसका परिणाम यह निकला है कि उसकी भूल के कारण आध्यात्मिक स्वभाव को विकसित होने का अवसर ही नही मिल पाता देहाध्यास, आध्यात्मिक स्वभाव के स्वतन्त्रता पूर्वक अन्दर से बाहर की ओर प्रवाहित होने में चट्टानों का काम करता है। व्यवधान से मानव जीवन का सहज आध्यात्मिक स्वभाव शरीर के अन्दर ही कैद हो जाता है जैसे किसी मधुमक्खी को मुट्ठी के अन्दर बन्द कर लेने पर वह हथेली की चहारदीवारी में भनभनाती रहती है या किसी बन्दर को पिंजड़े में बन्द कर देने पर वह मुक्त होने के लिये उछल-कूद मचाये रहता हैं। ठीक इसी प्रकार देह-भाव के घेरे में घिरा हुआ आध्यात्मिक स्वभाव मुक्त होकर बाहर प्रवाहित होने के लिये अन्दर भनभनाहट और उछल-कूद मचाया रहता है। इस भनभनाहट और उछल-कूद के कारण अन्दर सतत् अशान्ति बनी रहती है। इस अशांति का प्रत्यक्ष अनुभव आज के मानव जीवन में किया जा सकता है, यद्यपि मानव प्रकृति अशान्ति को पसन्द नही करती।

अब यह बात सुस्पष्ट हो गई कि आन्तरिक अशांति का मूल कारण शारीरिक दृष्टि या देह-भाव की प्रधानता ही है। इसी देह-भाव के कारण मनुष्य में बाहरी परिवर्तनों की भावना प्रबल होती जाती है और आन्तरिक परिवर्तन की उपेक्षा होती रहती है। बाहरी परिवर्तन मनुष्य को संसार की ओर और आन्तरिक परिवर्तन आत्मा की ओर ले जाता है। देह-भाव की इस प्रधानता के ही कारण प्राणों में आत्मा का अज्ञान बना रहता है। यही अज्ञान जीवन में स्वार्थ ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, काम और परिग्रह आदि विकारो के रूप में प्रकट होता है इन विकारों के रहते हुये बाह्य परिवर्तनों के सदुपयोग की सम्भावना करना रात्रि के अंधकार मे सूय को खोजने के जैसा ही है। फिर सदुपयोग के अभाव में इनका दुरुपयोग ही तो होगा, जो विकास और अभ्युदय के स्थान पर विनाश और पतन का ही कारण बन जायेगा।

"ओ वाह्य परिवर्तनों में उलझे और भटके हुए प्राणियों ! इस बात को स्पष्ट रूप से समझ लो कि बिना आन्तरिक परिवर्तन के तुम्हें जीवन में सत्य, शान्ति और सौन्दर्य का दर्शन नहीं हो सकेगा। ऐ अज्ञान में विनाश के पथ पर अग्रसर होने वालों बिना आत्म-ज्ञान के आये प्रेम, दया, निष्कामता और अपरिग्रह आदि दिव्य गुण कभी तुम्हारे जीवन में नहीं आ सकते। ऐ राजनीतिज्ञों ! नीति के बदलने से कुछ न होगा। ऐ समाज सुधारकों ! मात्र सामाजिक व्यवस्था बदलने के चक्कर में न पड़ो। ऐ अर्थ शास्त्रियों ! केवल आर्थिक व्यवस्था को नया मोड़ देने का विचार छोड़ दो। ऐ ऊपरी धर्मात्माओं ऊपर-ऊपर से अशुभ कर्मों को शुभ कर्मों में बदलने का निरर्थक प्रयास न करो। अगर परिवर्तन ही तुम्हें सचमुच अपेक्षित है तो अपने कुटिल और कपटी मन को बदल डालो। स्वार्थ और घृणा की भावनाओं को परिवर्तन कर डालो काम और क्रोध के विकारों को रूपान्तरित कर डालो। ऐसा कर के तुम न केवल अपना और समाज का अपितु सारे विश्व का भला कर सकोगे। ध्यान रखो कि आन्तरिक कांति और परिवर्तन में ही मानव जीवन की सफलता निहित है।

आन्तरिक कांति के जीवन में घटित होते ही शरीर को ही सत्य मानने वालों देह-भाव की कमजोर दीवाल ढह जाती है जिसके गिरते ही सहज अध्यात्मिक स्वभाव मुक्त होकर अन्दर से बहार की ओर प्रवाहित होने लगता है। इस परिवर्तन से एक ओर तो प्राणी की अपने वास्तविक स्वरूप में गहरी स्थिति हो जाती है जिससे उसका जीवन आनन्द से भर जाता है, दूसरी ओर अन्दर का यही आनन्द मनुष्य के बाहर उस के व्यवहार कि जीवन में प्रेम, दया, अहिंसा सहिष्णुता, अपरिग्रह आदि रूपों में प्रकट होता है। व्यवहार में एक दिव्य गुणों का प्राकट्य और अन्दर आनन्द और शांति की उपलब्धि ही एक सफल मानव जीवन की द्योतक है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के क्रान्तिकारियों, देश भक्तों एक हो ।

हमारी जाति भारत है । **हमारा तीर्थ भारत है ।**

जीतना मैं त्याग करता गया उतना ही गौरव तथा आनन्द का अनुभव करता गया ।
नेताजी बोस

शरीर का मरना मृत्यु नहीं, मृत्यु है पाप एवं वासना :—
चन्द्र शेखर आजाद

देशभक्त युवक समाज का प्रचार कार्य-क्रम

देश भक्त युवक समाज का कार्य क्रम भारत की जनता का अपना काम है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत की समस्त जनता को बिना किसी भेद भाव के एक मंच पर संगठित करना है और वह है देशभक्ति का मच। **देश भक्ति ही हमारा सर्वोच्च धर्म हैं। देश भक्ति राष्ट्रीय एकता तथा राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण ही देश भक्त युवक समाज का महान उद्देश्य है।**

देश भक्त युवक समाज के कर्मठ कार्य कर्त्ता साहित्य तथा प्रतिज्ञा पत्र बेचकर मजदूरी करके स्वालम्बन तथा स्वाभिमान का प्रचार करते हैं। प्रचारक वारी २ से प्रत्येक मोहल्ले में छोटी २ समाओं का आयोजन करें। जिनके माइक इत्यादि पर व्यय न करना पड़े। केवल एक दरी टाट की व्यवस्था कर ली जाय। कार्य कर्त्ता एक टाट या चादर अपने साथ भी रखने का प्रयास करें।

इन छोटी २ समाओं में राष्ट्र प्रेम राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण समाज सुधार तथा स्वच्छता का प्रचार किया जाय। हमें एक नए समाज का निर्माण करना है। एक समांगी राष्ट्रीय जीवन का निर्माण करना है। जिसमें गरीब अमीर, किसान मजदूर हिन्दू, मुस्लिम, साम्यवादी पूंजीवादी, नक्सलवादी काम करें और नये भारत का निर्माण करें। स्थानीय कार्य कर्त्ता अपनी सुविधानुसार स्वतन्त्रता पूर्वक अपने ढङ्ग से कार्य करें।

प्रत्येक मास के प्रथम रविवार को नगर या ग्राम की सभा का आयोजन किया जाय। इसमें बैठने के लिये सब लोग अपने साथ तोलिया लेकर आये। इस सभा के प्रचारक तथा कार्य कर्त्ता रचनात्मक कार्य तथा स्वच्छता की योजना भी पूरी करें। विभिन्न समस्याओं पर बातचीत हो। इसमें भी माईक की प्राय आवश्यकता न पड़े। सभा सदैव निश्चित स्थान पर तथा निश्चित समय पर सम्पन्न की जाय।

२६ जनतरी के दिन सांयकाल नगर या ग्राम के लोग बाहर मैदान में एकत्रित हों भारत माता तथा देश भक्ति के चित्र रखें। पुष्प पत्ते चढ़ाएं। सब मिलकर सामूहिक प्रार्थना करें। देशभक्ति श्रद्धाजंली दें तथा अन्त में राष्ट्र गान किया जाय।

महिलाएं भी एक दिन जैसे १५ अगस्त या २६ जनवरी की प्रातः एक स्थान पर एकत्र हों। भारत माता का चित्रा सजाएं रानी झांसी जैसे देश भक्तों के चित्र रखें पुष्प चढाये, दीपक जलाएं, उस दिन सब महिलायें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई एक साथ प्रार्थना करें। आसन की अवस्था में या घुटनों के बल बैठकर हाथ जोड़कर सामूहिक प्रार्थना करें।

"ऐ दुनिया के मालिक! हे सृष्टि के रचने वाले! हमारे देश के गौरव की आन की, एकता की रक्षा कर। हमें ऐसी शक्ति दे कि हम मिलकर राष्ट्र का निर्माण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकें । राष्ट्र के प्रति देश के प्रति अपने कर्त्तव्य को पूरा कर सकें । हमसे कोई ऐसा काम न हो जिससे राष्ट्र के चरित्र, गौरव, एकता तथा आन को कलंक लगे ।

हमें शक्ति दो, साहस दो, साधन दो ताकि हम अपनी तथा अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए सदैव तैयार रहें । अबला न बने । दूसरे देश के लोग क्या करते हैं इससे हमारी एकता कभी निर्बल न हो ।

हम देश के महान् शहीदों को, क्रान्तिकारी देश भक्तों को, वीर सैनिकों को नतमस्तक होकर नमस्कार करती हैं । हम इस पवित्र मिट्टी को नतमस्तक होकर नमस्कार करते हैं । हम इस मिट्टी से बने हैं । इसी में मिल जायेंगे । हम बार २ इस मिट्टी में खिलते हैं और खिलते रहेंगे ।

यह बलिदान की धरती है । यह हमारी माँ है भारत माता और अन्त में यही हमें शरण देती है । और अन्त में यह भारत माता हमें अपने आंचल में ढक लेती है जैसे माता अपने बालक को ढक लेती है ।

हमारी जाति भारत है । हम रा धर्म भारत है ।

भजन भाषण का आयोजन किया जाये । देश भक्तों को श्रद्धाञ्जली दी जाये । राष्ट्रीय आन्दोलन तथा स्वतन्त्रता का इतिहास एक सुन्दर पुस्तक के रूप में सब को बांटा जाये । प्रारम्भ में राष्ट्रीय ध्वज लहराया जाय तथा राष्ट्रीय गान किया जाय ।

दशहरे के दिन सब लोग हरिजन बस्तियों में जाये तथा उनसे मिले । वहां रामायण का पाठ सुनें । होली के दिन मुसलमान भाई हिन्दुओं के साथ गुलाल खेलें । यदि गुलाल भी न खेलें तो सांयकाल हिन्दु मुस्लिम सब एक स्थान पर एकत्र होकर हिन्दु मुसलिम मिलें । ईद के दिन सब हिन्दू भाई मुसलमानों से मिलने जायें सब एक स्थान पर एकत्र हों तथा ईद मिलन हो ।

बालकों युवकों युवतियों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाये ।

चरित्र वान बालक युवक युवती ही राष्ट्र की सच्ची सम्पत्ति हैं । उनके चरित्र विकास से ही राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण होगा तब देश की समस्त समस्यायें हल हो जायेगी ।

माता पिता पडौसी अध्यापक बालकों को सदाचार, संयम तथा त्याग का उपदेश दें । केवल शब्दो से नहीं अपने जीवन से दें । जो हम उन्हें सिखाना चाहते हैं उसे स्वयं अपने जीवन में ढाल लें ।

बालक एक अबोध यात्री है । उसको जैसा मार्ग दिखाया जायेगा वैसा ही बन जायेगा । उसके जीवन को दूषित करके दुर्गन्ध भव भी बनाया जा सकता है, उसे दिव्य जीवन की ओर प्रेरित करके उज्जवल भी बनाया जा सकता है । शरीर के सुख भोग व्यसन, गन्दी मित्रता, मादक पदार्थ उसे पतन की ओर ले जाकर उसके जीवन को निस्तेज तथा पापी बना देगें । आध्यात्मिक प्रेम, त्याग पर आधारित दिव्य मित्रता, भक्ति तथा संयम का जीवन उसे सत्य, पवित्रता तथा सुन्दरता के महान् आदर्शों की ओर अग्रसर कर देंगे ।

युवकों ! सदैव सदाचार धर्म, संयम तथा त्याग के मार्ग पर चलो । भूलकर भी मोहवश इन्द्रियों के सुख स्पर्श द्वारा मित्रता की पवित्रता कलंकित न करो । पवित्रता परम पावन परमात्मा की सुन्दर देन है । सच्ची मित्रता का आधार पवित्रता ही है । भूलकर भी शरीर मंदिर के किसी अंग को अपवित्र न करो । तुम्हारे पवित्र हृदय में तुम्हारे त्याग में, तुम्हारे संयम में ही भगवान रहते हैं । अपवित्रता से भगवान दूर चले जाते हैं ।

बालको ! प्रतिदिन भगवान की भक्ति करो । एकान्त में प्रातः या श्याम खुली वायु में घंटो भक्ति तथा प्राणायाम करो । यदि समय न मिले तो सोने से पूर्व भगवान की भक्ति करो । सदैव सैनिक की भांति सीधे चलो । गहरी श्वांस लो ।

बालकों युवकों को सदैव खुली वायु में पृथक सोने की आदत डाली जाये । यदि किसी दिन पृथक खाट बिस्तर की व्यवस्था न हो तो रात्रि में बैठकर भक्ति प्राणायाम तथा अध्ययन करें । बैठकर भी सो सकते हैं । भूमि, बैंच या तख्त पर सो सकते हैं । तख्त पर सोना उत्तम है ।

मैं जिस चीज को कल्याणकारी मानता हूं, उसके लिए यदि जान भी देनी पड़े तो उससे अच्छी मौत और क्या हो सकती है । ,गान्धो जी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन सदैव थोड़ा २ ग्रास लेकर चबाना चाहिये । दावतों से बचो। दूषित भोजन से बचो। यदि किसी दिन समय कम हो या भोजन ठीक न हो तो उपवास करो। यदि मन में कभी कोई विकार आए तो उपवास करो, प्राणायाम करो भक्ति करो। नीबू जल पीओ या फलाहार करो। सप्ताह में एक समय उपवास अवश्य करें।

युवक युवत्तियां कुछ धन बैंकों में एकत्र

कुवरपालसिंह एम० एस०

सैद्धांतिक विशेषज्ञ देशभक्त युवक समाज

सहारनपुर

नलकूप विभाग में लापरवाही

सहारनपुर, नलकूप विभाग सम्बन्धि एक आश्चर्य जनक सूचना जनता व सर- के कानों तक भेजना जरूरी हो गया है नलकूप न० ४९ जो ग्राम चुड़ियाला विकास क्षेत्र भगवानपुर से सम्बन्धित है पर ग्राम सुन्हैटी आलापुर की लगभग हजारों बीघा भूमि ऐसी पड़ी है कि जिसमें उपरोक्त नलकूप का पानी पक्की गूल के अभाव के कारण उन किसानों को नहीं मिल रहा है जबकि विभाग को अनेकों बार उनकी शिकायत बार २ पहुंचती रहती है किन्तु तनिक भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है आशा है उच्च अधिकारी शीघ्र एक पक्की गूल का निर्माण करेंगे।

रेलवे विभग ध्यान दें।

सहारनपुर:—विश्वासूत्रों से ज्ञात होता है कि जो शिकायक जनता की रेलवे विभाग डिविजन मुरादाबाद से सम्बन्धित एक लम्बे समय से चली आ रही है उसकी ओर अभी तक कोई ध्यान विभाग ने नहीं दिया है, जनता अपनी सुविधा हेतु एक रेलवे हाल्ट इकबालपुर व चुड़ियाला स्टेशनों के मध्य चाहती है। जिस के लिए केन्द्रीय रेलवे बोर्ड निरन्तर विचार भी कर रहा है। यदि विभाग की यही ढीली नीति रही तो निकट भविष्य में विद्यार्थी वर्ग व इलाके की संघर्ष समिति विभाग को अपने तरीके से विवश करने की योजना तैयार कर रही है। अतः विभाग शीघ्र से पूरा करे। कठिनाई दूर करे।

दीपावली के शुभ अवसर पर!

किसान को-आपरेटिव शुगर फैक्टरी लिमिटेड

सरसावा (सहारनपुर)

के प्रबन्धक की आर० एन० सक्सैना पी० सी० एस०

की

ओर से

समस्त किसान वर्ग, श्रमिक वर्ग, तथा अन्य समस्त जनता जनार्दन को ऐसे पावन पर्व अवसर पर शुभ कामना अर्पित करते हुये आशा व विश्वास के साथ सहकारिता समाज वाद. को प्रोत्साहित करने के लिये इस सरकारी चीनी मिल सफेद दानेदार उत्तम चीनी का प्रयोग कर दीपावली को धूमधाम से मनायें!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री ठा० यशपालसिंह भू० पू० संसद सदस्य की मृत्यु के पीछे विशेष रहस्य !

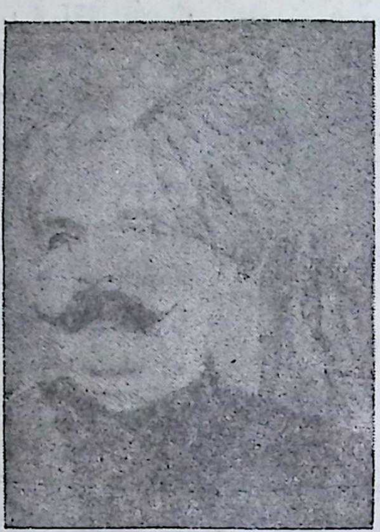

श्रीं स्वर्गीय कुंवर यशपालसिंह

कृपया पाठक गरा ध्यान दें !

अस्तित्व ठीक समय पर निरन्तर प्रकाशित होकर आपकी सेवा में डाक द्वारा प्रत्येक मास की १५-१६ दिनांक तक पहुंचता है। जिन ग्राहकों के पास उपरोक्त समय पर न पहुंचे वे कृपया निकट के डाकघर में खोजें यदि फिर भी प्राप्त करने से वंचित रहें तो एक पोस्टकार्ड अस्तित्व कार्यालय को लिखें जिससे कि दूसरी प्रति भेजी जा सके। यदि आपकी शिकायत ऐसा करने से पूर्व अथवा बाद को होगी तो कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

२—जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क छ: रुपये अथवा संरक्षक शुल्क, अतिसंरक्षक शुल्क : कार्यालय को नहीं पहुंचा उनका नया वर्ष मास सितम्बर से चालू हो गया है वे कृपया अपनी जिम्मेदारी को शीघ्र पूरा करें, पत्र उनको निरन्तर भेजा जायेगा जब तक कि वे पत्र द्वारा अपनी लिखित जानकारी नहीं भेजेंगे।

सहारनपुरः—विश्वस्त सूत्रों द्वारा ज्ञात हुआ है कि दिनांक ४-१०-७१ को ठा० यशपालसिंह भू० पू० संसद सदस्य की मृत्यु का कारण एक रहस्यपूर्ण कारण बताया जा रहा है ग्राम जनता तथा उनके परिवार में यह भारी चिन्ता तेजी से फैल गई है कि वास्तव में उनके किसी परिचित मित्र के हाथों से ही उनको कुछ खिला पिलाकर उनकी मृत्यु का मुख्य कारण बताया जा रहा है। सरकार इस घटना की शीघ्र जांच कराये।

★ ★

सहारनपुर :–

दिनांक ४-१०-७१ ई० को ग्राम रेड़ी (सहारनपुर) मे रात्रि के १० बजे एक सौ व्यक्तियों की एक विशेष सभा हुई जिसमें श्री कुँवर पालसिंह जी सैद्धान्तिक विशेषज्ञ दे.भ.यु.स.ने अपने १ घन्टे के भाषण में ग्राम की सफाई, सच्चाई और देशभक्ति पर विशेष बल देते हुये वहां की जनता से अपील की कि वे देशभक्त युवक समाज के संगठन को देहात में सुदृढ बनाने में अपना सहयोग दें। अपने ५० मिनट के भाषण में संस्थापक साधूराम वर्मा ने भी ग्राम की जनता को विधिवत बताया कि हम देश भक्ति को सर्वोच्च स्थान दें। उन्होंने जापान देश की ओर संकेत करते हुए बताया कि वहां पर १० वर्ष के बच्चे को सच्ची देश भक्ति का पाठ पढाया जाता है, इसी प्रकार इजराइल के बच्चे २ में देशभक्ति कूट २ भरी है किन्तु यदि आज भारत से कोई विचार अथवा भावना ह्रास की ओर जा रही हैं तो वह केवल देशभक्ति ही हैं, संसार के अन्य देश में हम अभी देशभक्ति मे बहुत पीछे है। अन्त में उन्होंने अपनी संस्था के लगभग साढ़े तीन वर्षों के कार्य क्रम को समझाते हुये क्रमशः बताते हुये कहा कि देश भक्त युवक समाज आप सभी नवयुवक सहर्ष को अपनायें। वहीं पर संस्था की एक शाखा का संगठन किया गया जिसमें अध्यक्ष मंत्री संरक्षक बनायें गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पावली की शुभ कामनाओं सहित

आपकी सेवा में प्रस्तुत

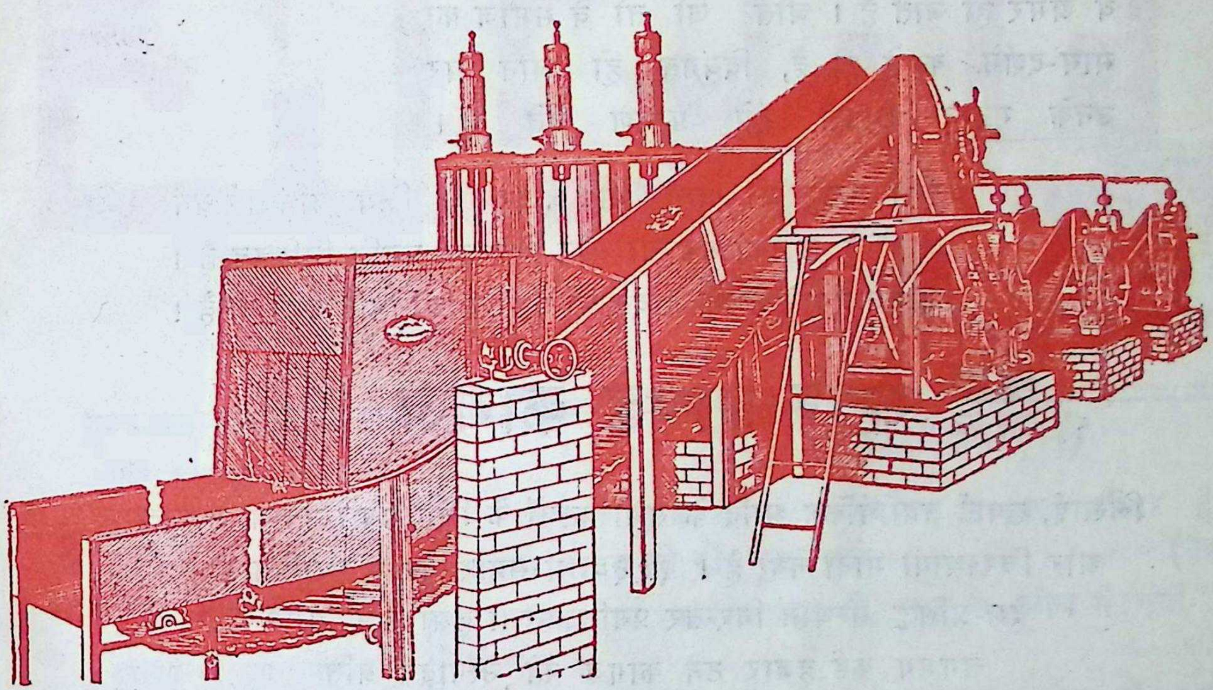

बुद्धूमल प्रतापसिंह

बी० पी० इन्जीनियरिंग वर्क्स

बोमन जी रोड, सहारनपुर

फोन न० ३६६३

Engineers, Moulders, Fabaricators & Suppliers

of all shorts of Iron & Steel products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली के शुभ अवसर पर

आज की सभ्यता में

कागज के बिना हमारा काम नहीं चल सकता, क्योंकि यह हमारे जीवन का अनिवार्य अंग बन गया !

जो व्यक्ति समाज के लिए अनिवार्य बन जाते हैं, वे अमर हो जाते हैं। जीते जो तो वे समाज का मार्ग-दर्शन करते ही हैं, दिवंगत हो जाने पर उनके महान् आदर्श हमें प्रकाश देते हैं।

इसी तरह जो वस्तु भी जीवन के लिये अनिवार्य बन जाती है, उसकी अमरता और निरन्तर प्रगति निश्चित है। कागज हमारे दैनिक जीवन की ऐसी ही अनिवार्य वस्तु तो है।

स्टार ब्राण्ड कागज

लिखाई, छपाई तथा पैकिंग आदि के सभी कामों के लिए सबसे उत्तम, मजबूत और चिरस्थायी माना गया है। १९३८ में सहारनपुर में स्थापित यह देश प्रसिद्ध संस्थान निरन्तर प्रगति करता हुआ इस समय लगभग कई हजार टन कागज का उत्पादन प्रति मास करता है। घास और लकडी का उपभोग कच्चे माल के रुप में होता है।

★ ★ ★ ★

कागज के देश प्रसिद्ध निर्माता:—

स्टार पेपर मिल्स लिमिटेड

सहारनपुर :: उत्तर प्रदेश

मुख्य कार्यालय : २७ ब्रावोर्न रोड़, कलकत्ता—१

सम्पादक-प्रोपराइटर एस० आर० वर्मा द्वारा संजय [illegible] में छपवाकर, प्रधान कार्यालय अस्तित्व वोमन जी रोड़, पुल दाल मन्डी सहारनपुर से प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहक संख्या, नाम व पता

एल० रजि० नं० १५५५

रजि० न २०२१६/७०

राष्ट्रीयता, नैतिकता, आध्यात्मवाद एवं विशुद्ध समाजवादी विचारधारा का दिशा बोधक !

अग्निदेव

सम्पादक
साधूराम वर्मा (भारतीय)

मासिक अङ्क नवम्बर (१९७१)

संयुक्त सम्पादकः
कुंवर पाल सिंह (भारतीय)

"देश भक्त युवक समाज"

का

प्रवल समर्थक तथा युवावर्ग का पथ प्रदर्शक

देश भक्ति ही सर्वोच्च धर्म है।

वर्ष २ अङ्कन ३

हिन्दी मासिक

मास नवम्बर १९७१

मूल्य १ प्रति, ४० पैसे
वार्षिक शुल्क ६ रुपये
वर्ष में दो विशेषांक सहित

अनमोल मोती

मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात मन्दिर है, इसलिये साकार देवता मानव की ही पूजा करो। (स्वामी विवेकानन्द)

ब्रह्मचार्य अर्थात ब्रह्म की सत्य के शोध में चर्या अर्थात् तत्सम्बन्धी आचार। (महात्मा गांधी)

मन वाणी और शरीर से सम्पूर्ण संयम में रहने का नाम ही ब्रह्मचर्य है। (स्वामी महावीर)

हमारा उद्देश्य है संसार का भला करना, न कि अपने नाम का ढोल पीटना। (स्वामो विवेकानन्द)

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति।

परमात्मा की प्राप्ति के इच्छुक ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं।

भगवान श्री कृष्ण (गीता)

दूसरों की मुक्ति के लिए तुम्हें यदि नरक में भी जाना पड़े तो सहर्ष जाओ। (स्वामी विवेकानन्द)

ब्रह्मचर्य तपसा देवा मृत्यमपाघ्नत।

ब्रह्मचर्य रुपी तपो बल से ही विद्वान लोगों ने मृत्यु को जीता है। ऊंचा आदर्श सामने रखना और उनके लिये संयमी जीवन का आचरण यही ब्रह्मचर्य है। अपवित्र भावना उतनी ही बुरी है, जितना अपवित्र कार्य संयत कामना से उच्चतम प्राप्त होता है। (स्वामी विवेकानन्द)

प्रधान कार्यालय:-बोमनजी रोड़, पुल दालमण्डी, सहारनपुर, उपकार्यालय निकट राजू प्रिंटर्स, पटरी पांव धोई, किशनपुरा, सहारनपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

यह धरती है बलिदान की आवाजें हिन्दुस्तान की

भारत और पाकिस्तान के बीच सीमाओं पर युद्ध के बादल मंडरा रहें हैं इसमें तनिक भी संदेह नहीं।

भारत सदैव शान्ति का अग्रदूत रहा है, महाराणा प्रताप, शिवाजी, गांधी जवाहर नेता जी और भगतसिंह जैसे वीरों ने इस पुण्य भारत भूमि की लाज बचाने में अपने को बलिदान किया। पाकिस्तान ने जो युद्ध की तैयारी की है वह केवल अपने लिए ही अपने मार्ग में कांटों का जाल बिछा डाला है। उसने विशाल वन के सोते हुए शेर को जगा डाला है जिसने सदैव बकरी की तरह से सूखी घास और कांटे चाव-२ कर अपने शरीर से दूध पिलाया है। भारत की शक्ति पाकिस्तान से ४गुणी होते हुए भी उसने यह नहीं सोचा कि इस युद्ध का परिणाम क्या होगा। याहिया खां शारीरिक शक्ति पर विश्वास रखता है और बौद्धिक शक्ति को तुच्छ मानता है। अब समय आ गया है मेरे देश का बच्च-२ अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये अपने प्राणों को न्यौछावर करने के लिये तैयारी के साथ मैदान में उतरेगा। युद्ध किसी भी समय हो सकता है। जिसके लिये प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वार्थ को त्याग कर राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बंध कर अस्त्रों शस्त्रों से लैस होकर शत्रु के सामने विवेकानन्द, दयानन्द, गांधी और टैगोर शिवाजी और राणा प्रताप की इस पवित्र भूमि की रक्षा के लिये और हमको इसकी विशेष रक्षा के लिये अन्तिम समय तक बलिदान होने तक भी इसकी ही रक्षा करनी है। हम शत्रु के सामने जुझते-२ मिट भले ही जायें किन्तु पीछे हटना हमारा कर्तव्य नहीं होगा। मेरे देश का बच्चा-२ जब तक अपनी प्यारी मातृभूमि के लिये अपने प्राणों को न्यौछावर तक नहीं कर लेगा, तब तक चैन से नहीं बैठेगा, हम अपने वतन पर मिटेंगे मरेंगे और जीयेंगे यही हमारा अन्तिम ध्येय होगा।

ऐ भारत के नवयुवकों जागो! उठो आगे बढ़ो। तुम पड़े सो रहे हो और शत्रु ने श्री नगर की उस पार की घाटी में उस झन्डे को गाड़ने की हिम्मत करने का प्रयास किया है जो तेरी भारत माता के जिगर का एक कतरा है। तेरी आन और शान का स्तम्भ है। अत: मैं समस्त भारत के नवयुवकों युवतियों का आहवान करता हूं। कि सभी नवयुवक मुकाबला करने पर अपने का तैयार करें सतर्क रहें और परस्थिति को शाघ्र ही अपने अनुकूल बना डाले तभी हमारी विजय सम्भव हो सकेगी।

उत्तरी भारत का विवेकानन्द स्मारक पुस्तकालय, व्यायामशाला एवं शिक्षा-दीक्षा केन्द्र

दक्षिण में जो स्वामी विवेकानन्द जी का स्मारक पाद शीला पर बनकर तैयार हुआ है वह बहुत बड़े पैमाने पर एक लम्बे समय से विशेष धन एकत्रकर उसको पूरा किया गया है जो सदैव विश्व के नर-नारियों के लिये प्रेरणादायक सिद्ध होता रहेगा। देश भक्त युवक समाज नामक संस्था के अर्न्तगत जो ट्रस्ट बना है उसके द्वारा उत्तरी भारत की इस विशाल स्तर की योजना हेतु जो दृढ संकल्प है इसके लिये धनराशी कम से कम दो लाख रुपये की लागत का अनुमान हैं। जिसके लिये सभी शिक्षण संस्थाओं' कारखानों, व्यापारी वर्ग, आदि से निवेदन है कि वह अपने श्रम द्वारा आर्थिक सहयोग अधिक से अधिक देकर योजना को सफल बनायें और स्वामी जी के आदर्शों मान्यताओं, तथा अन्य विशेषताओं को सदैव हम-हमारी भावी पीढ़ी अपनी आँखों से ओझल न कर सकेगी। जनता इस गम्भीर योजना को पूरा कराने में अपना पूरा सहयोग प्रदान कराने में तत्परता दिखायेगी। इस योजना के पूरा होने से जनता को बड़ा लाभ होगा जैसे भारतीय संस्कृति को विशेष बल प्रदान हो सकेगा। नवयुवकों में देश भक्ति की भावनाओं का उदय होगा वे स्वामी जी के आदर्शों के प्रति नतमस्तक होंगे उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर अपने को समाज को-और राष्ट्र को एक ऐसे समय में नया मोड़ दे सकेंगें जबकी वास्तव में समाज राष्ट्र भारतीय संस्कृति के प्रतिकूल कगार पर खड़ा दिखायी पड़ रहा हैं।

ऐसे महापुरुष के साहित्य से स्मारक से भारतीय जनता अवश्य ही अपने को उनके बताये हुए मार्ग के अनुकूल ढाल सकेगी। जिसके लिये जिले सहारनपुर में उपयुक्त स्थान पर उनके स्मारक तथा अन्य कार्यक्रम की योजना को तैयार किया जा रहा है, और जनता का सहयोग भी प्राप्त होना शुरू हो गया है। इसी सम्बन्ध में स्वामी जी के जन्म दिवस पर १२ जनवरी १९७२ को एक सम्मेलन देश भक्त युवक समाज द्वारा सहारनपुर नगर में सम्पन्न होने जा रहा है जिसमें भिन्न-२ प्रोगाम सम्पन्न होंगें। बाहर से पधारने वाले महानुभावों के व्याख्यान होगें, कार्यकताओं का सम्मेलन, नवयुवक सम्मेलन, आदि की योजना को भी तैयार किया जा रहा है। अतः जो सज्जन अपनी ओर से आर्थिक सहयोग सीधा बैंक भेजना उचित समझे वेदी-हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक लि० सहारनपुर को भेज सकते है। जो संस्थाये अपनी ओर से चैक आदि भेजें वे भी बैंक को ही भेजकर संस्था कार्यालय को अपनी पत्र द्वारा अवश्य ही सूचना भेजे। जो सज्जन स्वामी जी के विशेष भक्त अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी विवेकानन्द

—ग्रनील कुमार "भारतीय" सहारनपुर

भारतवर्ष सदा से ही ऋषि-मुनियों का देश रहा है। समय-समय पर ग्रनेक महात्माग्रों ने इस जन्मभूमि को ग्रपने उपदेशों तथा ग्रमृत-वाणी से सुशोभित किया। विवेकानन्द भी उन्हीं महान पुरूषों में एक थे जिन्होंने न केवल भारत को वल्कि समस्त विश्व को ग्रपने ज्ञान के प्रकाश से ग्रालौकित किया।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म सन् १८६३ की १२ जनवरी को प्रातः छः वजे कलकत्ता महानगरी में हुग्रा। इनके वचपन का नाम नरेन्द्र था। नरेन्द्र वचपन से ही बड़े शरारती थे। नरेन्द्र की माता का नाम श्रीमती भुवनेश्वरी देवी तथा पिता का नाम श्री विश्वनाथ दत्त था। पाँच वर्ष की ग्रवस्था में इन्हें 'मेट्रोपोलिटन इन्सटीच्यूट' नामक स्कूल में भेजा गया। नरेन्द्र को पुस्तक-ज्ञान में कोई विशेष रुचि न थी ग्रतः कक्षा में ये मध्यम वर्ग के ही छात्र थे। १६ वर्ष की ग्रवस्था में स्कूल की शिक्षा पूरी कर १८७९ में ये कलकक्ता के 'जनरल ग्रसेम्वली' कालेज में दाखिल हो गये।

'होनहार विरवान के होत चीकने पात' के ग्रनुसार नरेन्द्र को बचपन में ही धर्म के प्रति बहुत जिज्ञासा थी। ईश्वर के ग्रस्तित्व की खोज की जिज्ञासा कालेज जीवन में ही शुरू हो गयी। इसी जिज्ञासा को शान्त करने के लिये ये रामकृष्ण परमहंस के पास गए तो उन्होंने कहा, 'तू कोई साधारण मनुष्य नहीं है। भगवान ने तुझे मानव-जाति के कल्याण के लिए भेजा है।

पिता की मृत्यु के पश्चात नरेन्द्र ने परमहंस जी से सन्यास की दीक्षा ली। सन् १८८६ में रामकृष्ण परमहंस का स्वर्गवास हो जाने के बाद विवेकानन्द ने दो वर्ष तक शास्त्रो का गम्भीर ग्रध्ययन किया। फिर देश-भर की यात्रा। ३१ मई, १८९३ को वे शिकागो में विश्व-भर के विभिन्न धर्मों के सम्मेलन में भाग लेने के लिये रवाना हो गये। इस सम्मेलन मे उन्होंने जो भाषण दिया उससे बड़े-बड़े विद्वान ग्राश्चर्य चकित रह गये। उसके बाद ग्रमरीका में विभिन्न स्थानों पर इनके व्याख्यान होने लगे। यह क्रम दो वर्ष तक चलता रहा। इसके पश्चात् विवेकानन्द जी ने विश्व के कई ग्रन्य देशों-इग्लैंड, स्विटजर, इटली, फ्रांस, जर्मनी इत्यादि देशों की यात्रा की ग्रौर इन देशों में हिन्दू धर्म की विशेषताग्रों का प्रचार करने के पश्चात स्वदेश लौट ग्राये। कलकत्ता में स्वामी जी ने 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की। स्वामीं जी मनुष्य-मात्र की सेवा करने का उपदेश दिया करते। उन्होंने कहा-'मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात् मंदिर है, इसलिये साकार देवता मानव देवता की ही पूजा करो।'

स्वामी जी फिर एक वार विश्व के कई देशों की यात्रा को निकल पड़े। स्वदेश लौटने पर वे कलकत्ता में वैलूर मठ में रहने लगे। ८ जुलाई १९०२ को रात्री के ९ वजे उन्होंने बैठे-बैठे ही देह-त्याग किया। उस समय माला उनके हाथ में थी ग्रौर मुख से ग्रो३म नाम की ध्वनि निकल रही थी।

यह योजना जिले सहारनपुर के किसी उपयुक्त स्थान को प्रकाशमय सुशोभित कर जनकल्याण के लिये विशेष लाभदायक सिद्ध होगी। उनमें सच्ची देश भक्ति की भावना का बीज डाल कर उनको विश्व भर के प्राणियों हेतु तैयार करेगी। छोटे २ बच्चों को शिक्षा दीक्षा केन्द्र में ही रखते हुये उनके जीवन सम्वन्धी सभी ग्रावश्यकताग्रो की पूर्ति ग्रमुक स्थान से पूरी होगी। उनको योग विद्या ब्रह्मचर्य, साधना सम्बन्धी विशेष शिक्षा दीक्षा से सम्पूर्ण किया जा सकेगा जो भारतीय संस्कृति के ग्रनुकूल ही होगा।

ग्रत एव उत्तरी भारत की इस विशेष योजना के पूरा करने में सभी महानु भावों का विशेष ग्रार्थिक सहयोग प्राप्त होना ग्रावश्यकहै। जो सज्जन स्वामी जी के भक्त है उनके प्रति निष्ठा रखते हैं वे इस योजना में सहायक बन ग्रपना पत्र सीधा देशभक्त युवक समाज कार्यालय, बोमनजी रोड, पुल दाल मन्डी ग्रथवा उपकार्यालय, निकट राजू प्रेस, पाँव धोई नदी किशनपुरा सहारनपुर को शीघ्र पत्र व्यवहार कर ग्रपना ग्रधिकार कार्य योजना सम्वन्धी प्राप्त करेंगे ग्रौर स्वामी जी के प्रति विशेष ग्रास्था का परिचय देंगे।

सम्पादकीय पृष्ट २ का शेष

को घोषित करें कृपा वे ग्रपनी रुचि एवं ग्रार्थिक सहयोग के सम्बन्ध में पत्र द्वारा ग्रपना विवरण सीधा देशभक्त युवक समाज कार्यालय बोमनजी रोड़ पुल दाल मन्डी सहारनपुर को भेजकर ग्रन्य जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति जो भूमिका दान करने पर तत्पर हो ग्रपना विवरण पत्र द्वारा भेजेंगे। इस योजना को पूरा करने में एक लम्बे समय की ग्रावश्यकता है। जो कई वर्षों में ग्रपना उचित रुप लेगी। ग्राशा है कि सभी भारतीय इसको पूरा करने में ग्रपना सहयोग प्रदान करेंगें ग्राशा ग्रौर विश्वास के साथ ग्राप सबका ग्रपना देश भक्त युवकसमाज, केन्द्र सहारनपुर उत्तर प्रदेश।

—डा० राम कुमार वर्मा

दुश्मनी दोस्ती में छिपकर रहती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी जगत

—माँगेराम चौहांन भाँकला

नारी, सेवा को अपना अधिकार समझती है। इसलिये देवी है। वह त्याग करना जानती है इसलिये सम्राज्ञी है। विश्व उसके वात्सल्य आँचल में स्थान पा सकता है। इसलिये जगन्माता है। व्यक्ति, परिवार, समाज, देश, संसार सभी को अपना-अपना भाग मिलता है। नारी से फिर वह सब कुछ दान करने वाली महिमामयी नारी सदा अपने सामने हाथ पसारे हुये इन भूलोक वासियों से क्या मांगे और क्यों मांगे। जीवन की सरला युक्त दृढ़ता और त्यागमयी, उपभोग कोमला युक्त, और प्रियता गुण नारी का एक ऐसा सुन्दर सरस चित्र प्रस्तुत करते है। जो सर्वांग में पूर्ण है। जिसे संसार से कुछ लेना नहीं है। वह हमारी देवी अन्नपूर्णा है जो देना ही जानती है। लेने की आकाँक्षा नहीं।

प्राचीन भारत में नारी अपना स्थान मांगने नहीं गयी थी, मंच पर खड़े होकर अपने अभावों की मांग पेश करने की आवश्यकता उसे कभी प्रतित नहीं हुई। वह सम्पूर्ण संसार को अपनी निःस्वार्थ सेवा औरत्याग के सुधा प्रवाह से आप्ल वित कर सकी थी। अवश्य ही युग परिवर्तन के साथ हमारे आचार विचार में और हमारे अभावों आवश्यकताओं में परिवर्तन होना अनिवार्य है। परन्तु जीवन के मौलिक सिधान्तों में विभेद होना कंदापि इष्ट नहीं। सृष्टि की रचना में नारी और पुरुष दोनो का ही महत्व है। वे एक दूसरे के पूरक हैं। और इसी रूप में उनके जीवन की सार्थकता भी है।

प्राचीन र्सस्कृति में गृहस्थ जीवन को एक यज्ञ का स्वरुप किया गया था और उस यज्ञ में स्त्री अर्द्धांगिनी के रूप में पुरुष का सहयोंग प्रदान करती थी। इसी यज्ञ की भावना जब अर्न्तमुखी हो जाती है तब नारी का समस्त जीवन ही यज्ञमय होकर एक पवित्र साघना का रुप धारण कर लेता है। राम ने यदि व्रत धारण किया था, पितृ वचन पालन का, तो सीता ने उस यश की पूर्ति हेतु उसका अनुगमन किया। प्रजा पालक राम क्या सीता की त्याग भावना के अभाव में राम राज का ऐसा सुन्दर चित्र समुपस्थित करने में समर्थ होते। वह उनके जीवन की अर्द्धांगिनी थी त्याग में ही उसका गौरव था और अपने प्राप्य को उसने कठिन तपस्या करके ही पाया था। राज्याधिकारियों के समक्ष फरियाद करके नहीं।

क्या आज की माता कोई भी निश्चित आदर्श लेकर अपनी सन्तान का पालन करने में प्रवृत्त होती है। आज भारतवर्ष दरिद्र है।—इसलिये नहीं कि उसके पास धन तथा शस्य का अभाव है वरन उस पवित्र पतनीत्व और मातृत्व का कुभाव हो गया है। जिसकी दिव्यता पर प्राचीन भारत की समृद्ध शान्त और प्रौन्नत अवस्था आश्रित थी। आज की भारतीय नारी में उसअध्यात्मिक तत्त्व का प्रायः अभाव है जिसके एक मात्र धरातल पर जगत की पावन सलफतायें निर्भर हैं।

कुछ भी हों भारतीय रारी के सभी स्वरुपों में एक सात्विकता थी एक सौम्यता थी, एक दिव्यत्त्व था जो समाज के शिरोभाग को वसीभूत करता था औरइस स्थान प्राप्ती हेतु उसे कोई संघर्ष नहीं करना पड़ता था।

वीर पुकार

—विनोद कुमार "भृग" सहारनपुर

भारत माँ के वीर सपूतो आगे वढ़ते जाता है
कदम कदम पर डगर डगर पर तनिक नहीं घबराना है
आओ युवकों चलें सुने क्या
माता हमसे कहती आज
मेरे वीर सुपुत्रों रखना
तुम मेरे अंचल की लाज
हृदय हमारा गदगद करके
भाव अनेके उनेक उठाता है
अपना उच्च तिरंगा झंडा
जव नभ में फहराता है
इस झंड़े का गौरव रखना इसका मान वढ़ाना है
कदम कदम पर डगर डगर पर तनिक नहीं घबराना है
जाग उठो ऐ हिन्दवासियों
नहीं तुम्हें अव सोना है
दुष्मन के अव सैन्य-क्षेत्र में
भरण वीज अब वोना है
रणक्षेत्र में लड़कर रणचंडी
का खप्पर भरना है
वीर वाहिनी पर दुश्मन की
वज्र सरिस गिर पड़ना है
विजय पताका भारत की ऊंची नभ में फहराना है
कदम कदम पर डगर डगर पर तनिक नहीं घवराना है
जिस धरती पर जन्म लिया है
उस हित रक्त वहाना है
तुम्हें देश कल्याण हेतु
हंस हंसकर वलि हो जाना है
वीर "शिवा" औ "राणा" जैसे
शूरवीर कहलाना है
भामासाह सा देशभक्त
दानी तुमको वन जाना है
अमर शहीदों के पथ को सादर तुमको अपनाना है
कदम कदम पर डगर डगर पर तनिक नहीं घवराना है

जब तुम अपनो आंखें उस परमातमा से बन्द कर लेते हो तब दुश्मन आते हैं। —स्वामी रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे जागने भर की देर है

क्रमशः

—ले० स्वामी योगीराज नानकचन्द
अध्यक्ष, गद्दी मलूकदास, इलाहाबाद

कल वाले प्रश्नकर्त्ता सज्जन आज पुनः आ गये हैं। मुझसे प्रश्न करने की आज्ञा मांग रहे हैं। सहर्ष मैंने उन्हें अनुमति दे दी हैं। वह मुझसे पूंछ रहे हैं, 'महाराज जी ! कल आपने कहा था कि सत्य की अनुभूति का मार्ग खोजना या पाना नहीं है। अब मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि वह मार्ग कौनसा है जिस पर सत्य के साक्षात्कार के लिये जाना पड़ता है ?'

मैं उन्हें समझा रहा हूं कि उनका प्रश्न ही गलत है। उन्हें तो यह पूंछना चाहिये था कि वह कौन सा मार्ग है जिसके द्वारा सत्य में [आया जाता है । सत्य के साधक को कहीं जाना नहीं होता। स्वयं के अन्दर आने का जो साहस कर सकता है वही सत्य के साक्षात्कार की शर्त को भी पूरा कर पाता है। जो मरना जानता है जीवन उसी का हो जाता है। जो मिटता है पल्लवित और पुष्पित होने का सौभाग्य उसे ही मिलता है। सत्य की अनुभूति के इच्छुक को मिटना होता है, मरना होता है और आना होता है। उसे जाना या भटकना नहीं पड़ता।'

अपने से बाहर जाकर परमात्मा या सत्य को पाने के लिये प्रयास करने का तो मतलब यही हो जाता है कि वर्तमान में नहीं है। उसे भविष्य ने कहीं छिपा रखा है और साधक उसे जाकर कुछ काल के बाद प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है। अर्थात उससे काल की दूरी मान ली गई है। एक बात और भी है। बाहर जाने से यह भी तो संकेत मिलता है कि वह ईश्वर साधक जिसका दर्शन करना चाहता है उस स्थान पर विद्यामान नहीं है, जहां वह इस समय खड़ा है अर्थात उससे देश की दूरी मान ली गई है। अब तनिक निष्पक्ष मन से विचार करो कि क्या सर्वव्यापक अविनाशी परमात्मा से देश-काल की दूरी सम्भव हो सकती है ? क्या वह तुम्हारे में और तुम उसमें नहीं हो ? यह हो सकता है कि तुम्हारा अपना कोई मन गढन्त और काल्पनिक ईश्वर हो जो अपने में अविनाशी और सर्वव्यापक न हो। उससे तुम्हारी देश और काल की दूरी भले ही हो सकती है। किन्तु यह सम्भव नहीं हो सकता कि जिस सर्वव्यापक और अविनाशी परम सत्ता की चर्चा वेद, उपनिषद गीता और अत्यन्त लोकप्रिय ग्रंथ रामचरित मानस में की गयी हैं, उससे देश और काल की दूरी सिद्ध हो सके। रामायण में जिस हरी को समान रुप से व्यापक बतलाया गया है 'हरि व्यापक सर्वत्र समाना', उसी को गीता मे समस्त भूत प्राणियों के हृदय में स्थित कहा गया है 'ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।, जो व्यापक हरि हर जगह समान रुप से अर्थात न्यूनाधिक न होकर विद्यमान है वही अन्तर्यामी ईश्वर हमारे इतना निकट है कि वह हमारे हृदय में स्थित है। फिर भला बताओ तो सही कि उसके दर्शन के लिये कहीं जानां एक खरा और प्रत्यक्ष भ्रम नहीं है तो क्या है ?

सँत कवि कबीरदास ने कहा था कि 'जल में मीन पियसी मोहे सुन-सुन आवे हाँसी सम्भवतः कबीर को यह उक्ति ईश्वर के लिये भटकने वाले साधकों के कान तक नहीं पहुंचती है। जल में ही रहने वाली मीन यदि दूसरी मछली से यह कहे कि मैं प्यासी हूं तो इस अज्ञान युक्त वाणी को सुनकर किसे हंसी न आयेगी ? ऐसी स्थिति में आवश्यकता तो मात्र इस बात की है कि मीन का यह अज्ञान मिटा दिया जाये कि उसे जल के लिये कहीं और जाना है। इस अज्ञान के मिटाते ही मीन जब यह अनुभव दर लेगी कि वह तो जल में ही है तब उसकी प्यास भी अपेक्षित किया के करते ही तत्काल मिट जायेगी। यही बात मैं भी ईश्वर दर्शन के पिपासुओं को समझाता रहता हूं कि ईश्वर रुपी-जल तुम्हारे चारों और मौजूद है और अपनी प्यास को बुझाने के लिये तुम्हें कहीं जाना नहीं है।

समस्त जाने को छोड़ना और अन्दर आने के लिये अपने को तैयार करना ही साधना है। कहीं जाने की इच्छा और भविष्य की आशा ही तो बन्धन है। इस इच्छा और आशा को लेकर जो साधना प्रारम्भ की जायेगी वह कभी बन्धनों से मुक्त नहीं कर सकती, क्योंकि जो साधना बन्धनों के गर्भ निकली है वह मुक्ति कैसे दे सकती है ? घोड़े के गर्भ से घोड़ा और हाथी के गर्भ से हाथी का ही जन्म होता है। यही प्रकृति का नियम है। यही देवी विधान है। जो इसकी अवहेलना करता है वह गहन अंधकार के कूप में जा गिरता है। यह न कभी बदला है न बदल सकता है। जिस साधना का प्रारम्भ बन्धन से होगा उसका परिणाम भी बन्धन ही होगा। जैसे प्रारम्भ होगा परिणाम भी तदनुसार ही होगा। यह नहीं हो सकता कि प्रारम्भ गलत हो और उसका परिणाम अशुभ न निकले। जो साधक प्रारम्भ की ओर ध्यान नहीं देता परिणाम में उसे ही असफलता का मुंह देखना पड़ता है।

रिब्ज कला प्रतियोगीता
में भाग लिजीये
एवं
पुरुस्कार जितीये
आखरी तारीख ३१ दिसम्बर

आप अपना बनाया हुआ किसी भी शैली में चित्र एवं ५० पैसे के डाक टिकट निम्न पत्ते पर भेजें।

संरक्षक: अजन्ता आर्ट अकादमी
बी० के० देबे ६/११०३ जाफर नवाज
वितरक रिब्ज मेटीरीयल सहारनपुर।

यदि तुम शत्रु चाहते हो तो दूसरे से आगे बढ़ो, यदि मित्र तो दूसरे को अपने से आगे बढ़ने दो। -काल्टन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचारभूमि

संस्थापक
देशभक्त युवक समाज द्वारा
अन्य जिलों में वैचारिक क्रान्ति की तीव्र दिशा

डी० ए० वी० इन्टरमीडिएट कालेज देहरादून

जे० पी० जोशी (प्रधानाचार्य)

फोन न० ४३२०

पत्रांक.............. दिनाक:-२४-८-७१

आज दिनांक २४-८-७१ को मेरे विद्यालय के लगभग तीन हजार छात्रों के सम्मुख श्री साधूराम जो वर्मा सम्पादक आस्ततव व संस्थापक देश भक्त युवक समाज सहारनपुर ने अपना ओजस्वी एवं गम्भीर भाषण केवल राष्ट्रीयता एवम् नैतिकता पर दिया।

भाषण बहुत लम्बे समय तक न हो सका किन्तु थोड़े समय में उन्होंने जो कुछ अपने शब्दों द्वारा बताया वह कुछ अपने में विशेषता का परिचायक था। श्री वर्मा जी अन्य विद्यालयों में भी इसी प्रकार जो कार्यक्रम संस्था की प्रगति का लेकर चल रहें हैं वह सराहनीय है।
ईश्वर उनकी प्रगति में सहायक सिद्ध हो, यही शुभ कामना है।

(जे० पी० जोशी)
प्रधानाचार्य
डी० ए० वी० इन्टर कालेज
देहरादून

पाठक गण

अशुद्धि, शुद्धि में

अस्तित्व पत्र के पृष्ठ पर पिछला जो अङ्कन १४ प्रकाशित हो चुका था उसके स्थान पर अब वर्ष दो अङ्कन ३ शुद्धि करदी गई है।

खोया-पाया

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा हा० स्कूल पूरक परीक्षा सन् १९६५ अनुक्रमाकं ३८२ का प्रमाण पत्र वास्तव में खो गया है यदि किसी सज्जन को मिले तो निम्न पते पर पहुचाने का कष्ट करें। लाजवीर सिंह आत्मज श्री हरकेश सिंह लेवर कालोनी डाकघर के निकट शारदा नगर सहारनपुर (उ० प्र०)

रुड़की बिजली विभाग ध्यान दे

सहारनपुर, ग्राम कैड़ी (सहारनपुर)

जनता की भारी शिकायत है कि अनेकों प्रार्थना पत्र बिजली विभाग रूड़की को ग्राम के किसानों के पहुंचे किन्तु आज तक एक भी नलकूप को बिजली नहीं मिल सकी। भारी लापरवाहीं और विलम्ब से वहाँ की जनता निराश हो चुकी है उधर ग्राम के अन्दर भी विशेष आवश्यकता है। आशा है कि अधिकारी इस ओर शीघ्र ध्यान देकर उनकी कठिनाई को दूर करेगें।

मंडल कांग्रेस की मीटिंग सम्पन्न

सहारनपुर २३ अक्टूबर मंडल काँग्रेस वार्ड ५ की मीटिंग श्री मंगल किरण जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई मंडल के मंत्री नरेन्द्र कौशिक ने काँग्रेस की सदस्यता लेने को अपील की सैकड़ो नवयुवक कार्य कर्ताओं के अतिरिक्त बैठक में डा० जयगोपाल, प्रो० नरेन्द्रसिंह यादव व श्री गोर्धन त्यागी आदि नेता उपस्थित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

०७१२१६

जीवन परिचय

श्री जादोराम शर्मा प्राचार्य
(एम० ए० एल० टी०)

वृज भूषण हाई स्कूल एवं हरप्रशाद स्वरुप देवी इन्टर कालेज सहारनपुर। आपकी जन्मतिथि ४-११-१९१६ है। आपने बचपन से ही अपने शान्ति प्रिय स्वभाव का परिचय दिया है। आपने कुछ समय तक सरकारी विभाग में सेवा कार्य कर अपने कर्त्तव्य का सुचारु रूप से पालन किया। कुछ समय पश्चात आपने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दिया और अपना ध्यान निर्धन जनसमूह की ओर मोड़ दिया। आपकी नियुक्ति प्रधाना चार्य के पद पर ८-७-१९४७ को उपर्युक्त विद्यालय में हुई। आपका स्वभाव आपके सर्वगुण सम्पन्न ता का द्योतक है।

आप शांतिप्रिय होते हुए भी समाज के जीते जागते एक ऐसे उदाहरण है जिनसे कि प्रत्येक भावी नवयुवक को प्रभावित होना चाहिए। आपका अनुशासन सराहनीय है। आपके विद्यालय का परीक्षाफल सदैव संतोष-जनक रहा। आपकी ख्याती नगर के वरिष्ठ व्यक्तियों में है। आपका अस्तित्व एवं व्यक्तित्व समाज में प्रभावशाली है।

विद्यालय समीति एवं अध्यापक वर्ग की आपसे हरप्रकार से पूर्ण संतुष्टी है। आपका विद्यालय आपके प्रयास से उन्नति के पथ की ओर अग्रसर है। ईश्वर आपकी दीर्घायु करे। देश भक्त युवक समाज भी आपसे विशेष आशाँए रखता है अस्तित्त्व परिवार की शुभ-कामनाएं आपके साथ हैं।

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्रश्न—माननीय सम्पादक जी यदि आपको एक मास के लिए नगरपालिका सहारनपुर का अध्यक्ष बना दिया जाय तो आपका पहला कदम क्या होगा?

(बाबूराम कक्षा ९ भलस्वागांज)

उत्तर—प्रश्न के लिखने से पूर्व तो तुमने बहुत विचारा होगा किन्तु तुम मुझे अभी नगरपालिका अध्यक्ष के लिए क्षमा ही करो। यदि हो सके तो मैं बिना अध्यक्ष बने ही स्वामी विवेकानन्द स्मारक व्यायामशाला विशाल पुस्तकालय बनवाने हेतु तल्लीन हूं।

प्रश्न—कृपया बताए कि स्वामी विवेकानन्द स्मारक पुस्तकालय एवं व्यायामशाला आदि के पूर्ण होने में कितना समय लगेगा? व शिक्षा दीक्षा केन्द्र में।

हंसराज ग्राम बहादुरपुर

उत्तरः—लगभग तीन चार वर्ष।

प्रश्न नं० (ल)—आज के युग में मानव अध्यात्मवाद से पीछे क्यों हट रहा है?

रामसिंह चौहान

उत्तरः-प्रिय चौहान जी, इसका कारण केवल यही है कि, मानव अपने को भूल गया है। जिसका आधार शिक्षा- समाज और सरकार की व्यवस्था है।

प्र० नं० (म)—सम्पादक जी, सहारनपुर में उस संस्था के कितने सदस्य हैं जिनके आप तीन वर्षों से दीवाने बने हुये हैं?

अशोक शर्मा

उ०—प्रिय शर्मा जी देश भक्त युवक समाज संस्था के सदस्य तो नगर सहारनपुर से ६०० के लगभग ही हैं।

प्र०—संस्था ने लगभग तीन वर्षों में कितना कार्य किया और कहां पर?

पन्नालाल सहारनपुर

उ०—तीन वर्षों में कईं प्रदेशों में प्रचार किया गया साहित्य कोवितरण किया, नव-युवकों में देश प्रेम की भावना एवं विचारों को बढावा दिया। कईं शाखाओं का गठन भी किया गया। चाय धूम्रपान शराब मांस अश्लील चलचित्रों के विरुद्ध घोर प्रचार किया गया वाद विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया देश भक्तों की जयन्ति-यां मनाई गई। छोटे बड़े विद्यालयों में हम कुछ कार्य कर्ताओं ने जाकर राष्ट्रीयता, नैतिकता, एकता, प्रेम, सत्य-अहिंसा पर तथा धूम्रपान, चाय शराब मांस पर विशेष भाषण भी हजारों नव युवकों के समक्ष दिये गये जिसका परिणाम यह हुआ कि कुछ नव युवक संस्था के कार्य से प्रभावित होकर अपने जीवन का विशेष भाग संस्था की प्रगति में लगाने पर संकल्प के साथ जुट गये, जो जगह जगह पर पैदल घूम २ कर बीस सूत्री प्रतिज्ञा पत्र के द्वारा सदस्यता का अभियान चला रहे हैं। जिससे कि निकट भविष्य में विशाल स्तर पर सम्मेलन बुलाया जा सके।

प्रश्न - श्रीमान जी अस्तित्त्व पत्र में आप किस प्रकार के लेख या कविताए प्रकाशित करते हैं?

कृष्णपालसिंह सम्बलवेड़ी

उत्तरः—नैतिकता, राष्ट्रीयता, एकता अध्यात्मवाद नव युवकों के लिए प्रेरणादायक कहानी, नाटक एवं विशुद्ध समाजवाद सम्बधी लेख, कविताएं प्रकाशित की जाती हैं।

दुष्टाभार्या, दुष्टपुत्र, कुटिलराजा, दुष्टमित्र, दूषित सम्बन्ध और दुष्ट देश को तो दूर से ही छोड़ देना चाहिए। वेदव्यास (महाभारत शान्ति पर्व)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न—सम्पादक जी मैं ट्रैक्टर मैकेनिक बनना चाहता हूं। मेरे योग्य उपयुक्त स्थान बताएं ?

नरेश कुमार शर्मा लकसर

उत्तर: – ट्रैक्टर ट्रेनिङ्ग सैन्टर हिसार.

प्रश्न—महोदय देश भक्त युवक समाज का वार्षिक सम्मेलन कब, कहां और किसकी अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

कटारसिंह—बहादुरपुर

उत्तर—दिनांक १२ जनवरी १९७२ को होगा स्थान सहारनपुर अध्यक्षता कौन करेंगे यह अभी से नहीं बताया जा सकता है।

अन्तरिम जिला परिषद की ढ़ीली नीति

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि प्राइमरी कन्या पाठशाला पठौरी बक्ल ब्लाक नागल में श्री मति दौलती अप्रशिक्षित अध्यापिका प्रधान, और प्रशिक्षित अध्यापिका सहायक पद पर अमुक पाठशाला में कार्य कर रही है। ग्राम जनता की शिकायत है कि वे तीनों अध्यापिका समय पर नहीं आती हैं। छात्र पाठशाला में १९ के लगभग ही होते हैं कभी २ कुछ अधिक भी हो जाते हैं इतना ही नहीं एक अध्यापिका का प्राय पाठशाला में अनुपस्थित रहना आदि नाटकीय दृश्य विचित्र है। विभाग के उच्च अधिकारीगण कृपया शीघ्र इस समस्या का समाधान करे गे।

बंगला सहायता कोष

सहारनपुर:—विश्वस्त सूत्रों द्वारा ज्ञात हुआ है कि एस० डी० आई० द्वारा मास सितम्बर १९७१ के वेतन में से ब्लाक नागल के प्र० अध्यापकों से ४) प्रतिअध्यापक काटा गया किन्तु किसी भी अध्यापक को बगंला कोष रसीद नहीं मिली इसके अलावा ४) कार्यालय से भी प्रति अध्यापक काटा गया जबकि रसीद का मिलना अनिवार्य था। क्या जिला परिषद अपनी ओर से समस्त अध्यापक वर्ग को इस असन्तोष कार्य के सम्बन्ध में ठीक २ जानकारी दे सकेगी।

रेलवे विभाग, मुख्य कार्यालय देहली ने जो अपना उत्तर हाल्टकी स्थापना के सम्बन्ध में ग्राम-सुन्हैटी आलापुर व कुआं बहादरपुर की जनता को दिया।

NORTHERN RAILWAY

No. 51-RD/795 Dated 6-9-1971

From:- The General Manager (Coml),
Baroda House,
New Delhi.

To:- Shri S.R. Verme,
Editor, Asttatav,
Bomonji Road,
Pul Dhalmandi,
Saharanpur (U. P.)

Dear Sir,

Sub:—Provision of a new halt between Chodiala and Iqbalpur stations.

The public represcntation in Hindi addressed to the Minister for Railways, Railway Board, New Delhi hes been received from the Railway Board for disposal and further Communication will follow as soon as possible.

Yours faithfully,

for General Managar Coml.

रुड़की बिजली विभाग की विशेष लापरवाही

सहारनपुर–ग्राम सुनहैटी आलापुर (विकास क्षेत्र भगवान पुरी के व्यक्तियों की कठिनाई को अनुभव करते हुये विभाग के अधिकारी गण का ध्यान अमुक ग्राम की ओर खींचा जा रहा है जब कि उस गांव के चारों ओर बिजली पहुंच गयी है और केवल एक खम्भा लगाने के बाद ही गाँव में बिजली की पूर्ति की जा सकती है किन्तु अभी तक कोई ध्यान अधिकारयों का उस ओर नहीं पहुचा है, आशा की जाती है कि अधिकारी इस ओर ध्यान दें।

सनसनी खेज सूचना

रुड़की बैंक के एक कैशियर की उन विशेष गलतियों की ठीक २ छानबीन की जा रही है जो वास्तव में समाज के नवयुवकों से अनैतिक रिश्ता रखती हैं। सम्पादक की गहराई पूर्ण खोज इस घटना का पूर्ण प्रमाण है। अस्सी प्रतिशत अनैतिक सम्बन्धि आँकड़े अमुक नवयुवक के अभी तक प्राप्त हो चुके हैं। पूरा विवरण भावी अंक में पढ़िये।

जो मनुष्य तोल कर बात नहीं करता उसे कठोर बातें सुननी पड़ती हैं। सादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी पुराना पड़ गया ?

—ले० सम्पादक राममूर्ति

गाँधीजी ने जीते जी जो सवाल उठाये थे क्या वे हल हो गये ? अगर हल हो गये तो गाँधी की अब कोई जरुरत नहीं। अगर उन सवालों के कोई नये जवाब निकल आये हो तब भी गाँधी की जरूरत नहीं है। हम मान लेंगे कि गाँधी आये, और जो करना था करके गये। हम नये जमाने में हैं, नये जमाने की बात सोचेंगे; गाँधी से अपने को क्यों बांधें ?

लेकिन गाँधी के जाने के इतने वर्ष बाद भी हम देख रहे हैं कि जो सवाल गाँधी ने उठाये थे वे आज जनता के सवाल बन गये हैं और वह उनका हल पाने के लिए अधीर हो रही है।

जनता के सवाल क्या हैं ? अधिक नहीं, कुछ ही सवालों को चुन लें देश के करोड़ों लोगों के सामने सबसे बड़ा सवाल है रोटी का। कल- कारखाने बने, व्यापार बढ़ा, नयी-नयी नौकरियां निकली, फिर भी बेरोजगारी की संख्या बढ़ती ही जा रही है। सौ में केवल एक आदमी है जिसकी एक दिन की आमदनी ढाई रुपये या इससे ज्यादा है। साठ फीसदी लोग तो सारी जिन्दगी आधा पेट खाकर बिता देने को विवश हैं। नीचे की बढ़ती हुई गरीबी, ऊपर की बढ़ती हुई अमीरी: यह खाई चौड़ी होती ही जा रही है। क्या हमने सोचा कि ऐसा क्यों है ? एक के-बाद-दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं का क्या हुआ ? क्या गरीबी मिटी विषमता घटी ? इतने दिन बाद अब योजना के जानकार लोग भी कहने लगे हैं कि सामान्य आदमी को योजना का प्रशाद नहीं मिला। योजना रोजगार की बननी चाहिए; खेती-उद्योग की बननी चाहिए; योजना बनाने का काम विकेंद्रित होना चाहिए मूल दोष योजना की कल्पना में ही था।

गांधीजी ने क्या कहा था ? गांधीजी ने कहा था कि हमारे देश में जीवन की इकाई गांव है, जिला या राज्य नहीं। इसलिए गांव को ही विकास इकाई मानना चाहिए। गांव में नया ज्ञान और नये साधन पहुंचने चाहिए ताकि गांव वाले हर खेत का उत्पादन बढ़ायें और हर घर का उद्योगीकरण करें। अपने कच्चे माल से अपने ही हाथों पक्का माल तैयार करें। लेकिन यह नहीं हुआ। हुआ यह कि हमने उनको साधन दिया जो सम्पन्न थे, और उनके भरोसे उत्पादन बढ़ाया। अगर वैसा हुआ होता तो क्या होता ? सारे देश में एक नया जीवन दिखायी देता; करोड़ों हाथ उत्पादन करते और मुंह भोग लगाते दिखायी देते; भूख मिटती, विषमता घटती, दिमाग खुलता, समस्याओं से जूझने के लिए नया पुरुषार्थ जगता, देश में नयी चेतना, नया संगठन, नयी एकता दिखायी देती। विदेशी अर्थनीति से शहर मुक्त होते और शहरी अर्थनीति के शोषण से गांव। ऐसे मुक्त स्वायत्त गाँवों का महासंघ भारत होता, और उन्हीं के सर्वसम्मत प्रतिनिधियों के हाथों में सरकार रहती। न आज की दलबन्दी होती, न राजनीति व्यवसाय बनती।

गरीबों के देश में हमने औद्योगिक नगरों के रूप में कुछ इनेगिने अमीरी के 'पाकेट' बनाये और मान लिया कि देश 'आधुनिक' हो रहा है। हमने विकास में जनता को नहीं शरीक किया। उसे छोड़कर यंत्रों, विशेषज्ञों, अफसरों और पूंजीपतियों (पूंजी सरकारी या निजी) के मेल से दौलत पैदा की गयी। स्वभावत: जनता वंचित रह गयी। सारी दौलत उन्हींके पास चली गयी जिन्होंने जनता को अलग रखा था। यह इसलिए हुआ कि हमने उत्पादन की सारी पद्धति, और उसके यंत्र आदि केन्द्रित रखे, और श्रम के स्थान पर पूंजी को प्रधानता दी। अपनी परम्परा और परिस्थिति के अनुसार नयी पद्धति और यांत्रिकी नहीं विकसित की। गांधीजी की स्वदेशी को हमने भुला दिया।

गांधीजी ने दरिद्रनारायण की बात कही थी। 'अन्तिम व्यक्ति' को विकास का मापदंड माना था। यह कहा था कि अगर पूंजी का कोई मालिक है, तो श्रमिक भी अपने श्रम का मालिक है, दोनों मालिकों की समान हैसियत है। गांधी जी कहते थे कि जिनके हाथ में सम्पत्ति है वह सचमुच स्वामी नहीं, 'ट्रस्टी' है जिसे अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करने का अधिकार नहीं है। ऐसी व्यवस्था में शोषण के लिए कहां स्थान है ? हम अपनी योजनाओं से स्वामित्व, मुनाफाखोरी, और शोषण की व्यवस्था जरा भी नहीं बदल सके।

दूसरा प्रश्न शिक्षण का लीजिए। शिक्षण में ही किसी देश का भविष्य है। लेकिन हमारे शिक्षण की जो दुर्गति है वह इस बात का अन्तिम प्रमाण है कि देश के कर्णधारों के सामने भविष्य का कोई चित्र नहीं है। गांधीजी ने नये समाज के लिए नयी तालीम की बात कही थी—ऐसी नयी तालीम, जो विद्यार्थी को उत्पादक बनाये, उसके दिमाग को खोले चरित्र को ऊंचा उठाये, और उसे प्रकृति और समाज के साथ जोड़े। लेकिन हमने नया समाज बनाने की बात ही नहीं सोची तो शिक्षा को नयी क्यों बनाते ? गुलामी का झंडा बदला, किन्तु गुलामी की शिक्षा नहीं बदली। परिणाम सामने है—हाथ से बेकार, दिमाग से गुलाम, स्वास्थ्य से जर्जर संस्कारों से शून्य युवक और युवती ! देश के भविष्य की हत्या करनेवाली शिक्षा 'चल रही' है।

वास्तव में स्वतंत्र भारत के नेताओं और शासकों ने देश को ऐसी दिशा दे दी जो गांधी की दिशा नहीं थी। उन्होंने मान

बातचीत का पहला अंश सत्य, द्वितीय सुन्दर समय बूझ, तृतीय सुन्दर विनोद और चतुर्थ वाक् चतुर्य।

—सर डब्यू० टोम्पिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri 079216

पत्र के संरक्षक

१ श्री सेठ पूरनचन्द साहनी मिल मालिक शूगर फैक्ट्री देवबन्द इकबालपुर, (सहारनपुर)।
२ श्री जगपालसिंह सुन्हैटी ग्रालापुर (सहारनपुर)
३ श्री प्रेमसिंह वर्मा, डी० एम० ई० (भारतीय सेना)।
४ श्री केहरसिंह प्रधान भलसवागाज (सहारनपुर)।
५ श्री महेन्द्र प्रताप एडवोकेट रुडकी (सहारनपुर)।
६ श्री रामकिशन प्रधान, खानपुर (सहारनपुर)।
७. श्री विशालचन्द जैन भू० पू० ग्रा० मजिस्ट्रेट (सहारनपुर)
८ श्री मती राजदुलारी गर्ग (सहारनपुर)।
९ वाबू ज्योति प्रसाद चुड़ियाला (सहारनपुर)।
१० श्री नवीन प्रकाशन, वड़तला यादगार. (सहारनपुर)।
११ श्री वाबू रफलसिंह ग्रकोढ़ा, एडवोकेट, कचहरी रुड़की (सहारनपुर)।
१२ श्री बलधीरसिंह ग्राम तेजलहेड़ा जिला मुजफ्फरनगर)।
१३ श्री विक्रमसिंह ग्रध्यापक चुन्हैटी शेख, (सहारनपुर)।
१४ श्री पवनसिंह नेता लुन्ढा (सहारनपुर)।
१५ श्री गुरु नानक इण्टर कालेज ग्रम्बाला रोड़, (सहारनपुर)।
१६ श्री इस्लामिया इन्टर कालेज सहारनपुर।
१७ व्रज भूषण हाई स्कूल एवं हरप्रसाद स्वरूप देवी इन्टर कालेज सहारनपुर।
१८ श्री महेन्द्रसिंह त्यागी, ग्राम तिवड़ा (सहारनपुर)।
१९ श्री लाला त्रिलोकचन्द सुलतानपुर कुन्हारी (सहारनपुर)।
२० श्री एस. ग्रार. सिंह भू. पू. डीन ग्राफ स्टूडेन्टस रुड़की विश्व विद्यालय, वर्तमान पोलारिश होटल रुड़की (स० पुर)

लिया कि देश का भविष्य सरकार में है, समाज में नहीं। उनका सारा समय सरकार वनाने-विगाड़ने में लगता रहा है, समाज वनाने में नहीं। जो कभी समाज के सेवक ग्रौर स्वतंत्रता के सेनानी थे वे सत्ता में चले गये। यह सोच कर गये। कि उनका राज्य कल्याणकारी होगा। कल्याणकारी राज्य में गांधी के रचनात्मक कार्य की क्या जरूरत? लेकिन सत्ता में जाकर वे स्वयं भ्रष्ट हुए, ग्रौर समाज को कुसंस्कारों ग्रौर समस्याग्रों के जंगल में भटकने को छोड़ दिया। मरने के पहले ग्रपने ग्रन्तिम वसीयतनामे में गांधी जी ने कांग्रेस के लोगों को सलाह दी थी कि सरकार दूसरों के हाथ छोड़ कर उन्हें समाज में जाना चाहिए। शिव का स्थान इन्द्रासन पर नहीं गणों के साथ श्मशान में है। नेता इन्द्रासन का वैभव छोड़ कर शिव वनने को तैयार नहीं थे। गांवीजी को चिंता थी कि स्वतंत्रता तो मिल गयी किन्तु गांव-गांव, शहर-शहर का 'स्वराज्य' कैसे होगा? स्वराज्य सरकार के कानून से नहीं होता; उसके लिए समाज की शक्ति चाहिए —लोक-शक्ति चाहिए। वह जानते थे कि जब राज्य की शक्ति बढ़ती है तो जनता की शक्ति घटती है। वह गांव ग्रौर शहर में लोक शक्ति को संघटित करना चाहते थे ग्रौर राज्यशक्ति को क्रमशः सीमित। हमने इसका ठीक उलटा किया। इसी कारण से हम ग्राँखों के सामने देख रहे हैं कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों वाद जनता कितनी ग्रसहाय, हताश, ग्रौर पुरुषार्थहीन हो गयी है। उसमें ग्रपनी समस्याग्रों से जूझने की शक्ति नहीं रह गयी है। जीवन में जैसे कोई मूल्य ही नही रह गये हैं। चारों ग्रोर ग्रन्याय ग्रभाव, ग्रौर ग्रज्ञान का वोलवाला है, फिर भी जनता ग्रचेत है, ग्रत्यंत संकुचित स्वार्थों ग्रौर संघर्षों में डूवी हुई।

पिछले चौवीस वर्षों में क्या देश में कुछ हुग्रा नही? हुग्रा, वहुत कुछ हुग्रा। भव्य भवन वने, सड़के वनी, रेलें निकली, हवाई जहाज चले, वड़े-वड़े कारखाने खडे हुए, विज्ञान संस्थान स्थापित हुए, बाजार शौकीनी के सामानों से पट गये, लेकिन…? लेकिन मनुष्य नही वना। उसका कोई सवाल नही हल हुग्रा। उसके संस्कार ऊंचे नही उठे। नेता उसे चुनाव की घूंटी ग्रौर वादों के टॉनिक पर पालते रहे। लेकिन वह ग्राज भी वंचित, वहिष्कृत कुसंस्कृत है। सही दिशा में दो-चार कदम भी तो उठे होते।

समाजवाद की चर्चा है। पूजीवाद वढ़ता ही जा रहा है। शान्ति की ग्रपील है। हिंसा नही रुकती।

साभार:—सम्पादकीय भूदान ग्रक्टूबर ७१

सम्पादकः-प्रोपराइटर साधू राम वर्मा द्वारा नवरंग प्रिन्टर्स जाफर नवाज, में छपवाकर, प्रधान कार्यालय ग्रस्तित्व बोमनजी रोड़, पुल दाल मन्डी सहारनपुर से प्रकाशित किया।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stock Verification-2024

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar